संघ लोक सेवा आयोग

परीक्षा नोटिस सं. 05/2011-सीएसपी **दिनांक 19.02.2011**

(आवेदन प्रपत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख 21.03.2011)

सिविल सेवा परीक्षा, 2011

(आयोग की वेबसाइट - http://www.upsc.gov.in)

एफ. सं. 1/8/2010-प. 1 (ख)-भारत के असाधारण राजपत्र दिनांक **19 फरवरी, 2011** में कार्मिक औ प्रशिक्षण विभाग द्वारा प्रकाशित नियमों के अनुसार नीचे उल्लिखित सेवाओं औ
सेवा आयोग द्वारा **12 जून, 2011** को सिविल सेवा परीक्षा की प्रारंभिक परीक्षा ली जाएगी.

(i) भारतीय प्रशासनिक सेवा
(ii) भारतीय विदेश सेवा
(iii) भारतीय पुलिस सेवा
(iv) भारतीय डाक एवं तार लेखा औ
(v) भारतीय लेखा परीक्षा औ
(vi) भारतीय राजस्व सेवा (सीमा शुल्क औ
(vii) भारतीय रक्षा लेखा सेवा, ग्रुप 'क'
(viii) भारतीय राजस्व सेवा (आयकर), ग्रुप 'क'
(ix) भारतीय आयुध कारखाना सेवा, ग्रुप 'क' (सहायक कर्मशाला प्रबंधक, प्रशासनिक)
(x) भारतीय डाक सेवा, ग्रुप 'क'
(xi) भारतीय सिविल लेखा सेवा, ग्रुप 'क'
(xii) भारतीय रेलवे यातायात सेवा, ग्रुप 'क'
(xiii) भारतीय रेलवे लेखा सेवा, ग्रुप 'क'
(xiv) भारतीय रेलवे कार्मिक सेवा, ग्रुप 'क'
(xv) रेलवे सुरक्षा बल में ग्रुप 'क' के सहायक सुरक्षा आयुक्त के पद
(xvi) भारतीय रक्षा संपदा सेवा, ग्रुप 'क'
(xvii) भारतीय सूचना सेवा (कनिष्ठ ग्रेड), ग्रुप 'क'
(xviii) भारतीय व्यापार सेवा, ग्रुप 'क' (ग्रेड-III)
(xix) भारतीय कारपोरेट विधि सेवा, ग्रुप 'क'
(xx) सशस्त्र सेना मुख्यालय सिविल सेवा, ग्रुप 'ख' (अनुभाग अधिकारी ग्रेड)
(xxi) दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन व दीव एवं दादरा व नगर हवेली सिविल सेवा, ग्रुप 'ख'
(xxii) दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन व दीव एवं दादरा व नगर हवेली पुलिस सेवा, ग्रुप 'ख'
(xxiii) पांडिचेरी सिविल सेवा, ग्रुप 'ख'
(xxiv) पांडिचेरी पुलिस सेवा, ग्रुप 'ख'.

- ❒ परीक्षा के परिणाम के आधार पर भरी जाने वाली रिक्तियों की संख्या लगभग 880 है वृद्वि हो सकती है
- ❒ सरकार द्वारा निर्धारित रीति से अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़ी श्रेणियों तथा शारीरिक रूप से अक्षम श्रेणियों के उम्मीदवारों के लिए रिक्तियों का आरक्षण किया जाएगा.

नोट (I) सिविल सेवा परीक्षा 2011 में सम्मिलित सेवाओं की सूची अस्थाई है

नोट (II) : शारीरिक रूप से विकलांग वर्ग के लिए उपयुक्त पाई गई सेवाएं तथा उन सेवाओं में उनके लिए कार्यात्मक वर्गीकरण तथा शारीरिक अपेक्षाएं निम्नलिखित है :

क्रम संख्या	सेवा का नाम	श्रेणी (श्रेणियों) जिसके लिए पहचान की गई	*कार्यात्मक वर्गीकरण	*शारीरिक अपेक्षाएं
1.	भारतीय प्रशासनिक सेवा	(i) लोकोमोटर अक्षमता	बीए, ओएल, ओए, बीएच, एमडब्ल्यू	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, एच, आरडब्ल्यूटी
		(ii) दृष्टि बाधित	पीबी	
		(iii) श्रवण बाधित	पीडी	
2.	भारतीय विदेश सेवा	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, आरडब्ल्यू, सी, एमएफ, एसई
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
3.	भारतीय राजस्व सेवा (सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क), ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओएल, ओए	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एल, एसई, एमएफ, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) श्रवण बाधित	एचएच	
4.	भारतीय डाक एवं तार लेखा औ वित्त सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल,	एस, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
5.	भारतीय लेखा परीक्षा तथा लेखा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल	एस,एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
6.	भारतीय रक्षा लेखा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एसई, आरडब्ल्यू, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
7.	भारतीय राजस्व सेवा (आयकर), ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, सी
		(ii) श्रवण बाधित	एचएच	

महत्त्वपूर्ण

1. परीक्षा के लिए उम्मीदवार अपनी पात्रता सुनिश्चित कर लें :

परीक्षा के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि वे परीक्षा में प्रवेश हेतु सभी पात्रता शर्तो को पूरा करते है
करने की शर्त के अध्यधीन पूर्णत: अनंतिम होगा ।
उम्मीदवार को मात्र प्रवेश पत्र जारी किए जाने का अर्थ यह नहीं होगा कि उसकी उम्मीदवारी आयोग द्वारा अंतिम रूप से सुनिश्चित कर दी गई है
उम्मीदवारों के साक्षात्कार/व्यक्तित्व परीक्षण में अर्हक घोषित किए जाने के बाद ही मूल दस्तावेजों के संदर्भ में आयोग द्वारा पात्रता की शर्तों की जांच की जाती है

2. आवेदन कै

(क) उम्मीदवार **http://www.upsconline.nic.in** वेबसाइट का इस्तेमाल करके ऑनलाइन आवेदन करें। ऑनलाइन आवेदन करने संबंधी विस्तृत अनुदेश उपर्युक्त वेबसाइट पर उपलब्ध है
(ख) उम्मीदवार, आयोग द्वारा उसकी परीक्षाओं के लिए निर्धारित सामान्य आवेदन प्रपत्र में ऑफलाइन आवेदन भी कर सकते है III में उल्लिखित)
से ₹ 30/- (तीस रूपए मात्र) के नकद भुगतान पर खरीदा जा सकता है
के लिए केवल एक ही बार प्रयोग में लाया जा सकता है
यदि उम्मीदवारों को विनिर्दिष्ट प्रधान डाकघरों/डाकघरों से आवेदन प्रपत्र प्राप्त करने में कोई कठिनाई हो, तो उन्हें तत्काल संबंधित डाकपाल अथवा संघ लोक सेवा आयोग के "प्रपत्र आपूर्ति निगरानी प्रकोष्ठ" की दूरभाष सं. 011-23389366/फै
(ग) उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है II (क) में दिए गए "ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र भरने के लिए अनुदेश" औ II (ख) में दिए गए "ऑफलाइन आवेदन प्रपत्र भरने के लिए अनुदेश" सावधानीपूर्वक पढ़ लें ।

3. आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख :

(क) ऑनलाइन :

ऑनलाइन आवेदन पत्र 21 मार्च, 2011 को रात्रि 11 बजकर 59 मिनट तक भरे जा सकते है बाद लिंक निष्कि य हो जाएगा ।

(ख) ऑफलाइन :

सभी ऑफलाइन आवेदन पत्र दस्ती या पोस्ट/स्पीड पोस्ट या कुरियर द्वारा "परीक्षा नियंत्रक, संघ लोक सेवा आयोग,धौ " के पास 21 मार्च, 2011 या उससे पहले पहुंच जाने चाहिएं ।
उम्मीदवारों को यह नोट कर लेना चाहिए कि निर्दिष्ट काउंटर (काउंटरों) पर सिर्फ 5 बजे तक दस्ती रूप में एक बार में केवल एक ही आवेदन पत्र प्राप्त किया जाएगा औ
जाएंगें ।
तथापि, विदेशों में या इस नोटिस के पै
में, केवल डाक/स्पीड पोस्ट द्वारा (दस्ती या कुरियर द्वारा नहीं) आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख 28 मार्च, 2011 है

4. गलत उत्तरों के लिये दंड :

उम्मीदवार यह नोट कर लें कि वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न पत्रों में उम्मीदवार द्वारा दिए गए गलत उत्तरों के लिए दंड (ऋणात्मक अंकन) दिया जायेगा ।

5. उम्मीदवारों के मार्गदर्शन हेतु सुविधा काउन्टर :

उम्मीदवार अपने आवेदन पत्र उम्मीदवारी आदि से संबंधित किसी भी प्रकार के मार्गदर्शन/जानकारी/स्पष्टीकरण के लिए कार्यदिवसों में प्रात: 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे के बीच आयोग परिसर में गेट 'सी' के निकट संघ लोक सेवा आयोग के सुविधा काउंटर पर व्यक्तिगत रूप से अथवा दूरभाष सं.011-23385271/ 011-23381125/011-23098543 पर संपर्क कर सकते है

6. मोबाइल फोन प्रतिबंधित:

(क) जहां परीक्षा आयोजित की जा रही है
यंत्रों की अनुमति नहीं है
परीक्षाओं से विवर्जन सहित अनुशासनिक कार्रवाई की जाएगी ।
(ख) उम्मीदवारों को उनके हित में सलाह दी जाती है
कोई भी प्रतिबंधित सामग्री न लाएं, क्योंकि इनकी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती ।

7. उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है
उनकी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती । आयोग इस संबंध में किसी नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं होगा ।

उम्मीदवारों को ऑनलाइन आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है

क्रम संख्या	सेवा का नाम	श्रेणी (श्रेणियों) जिसके लिए पहचान की गई	*कार्यात्मक वर्गीकरण	*शारीरिक अपेक्षाएं
8.	भारतीय आयुध कारखाना सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
9.	भारतीय डाक सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, आरडब्ल्यू, एसई, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	बी, एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	

"सरकार ऐसे कार्यबल के लिए प्रयत्नशील है

क्रम संख्या	सेवा का नाम	श्रेणी (श्रेणियों) जिसके लिए पहचान की गई	*कार्यात्मक वर्गीकरण	*शारीरिक अपेक्षाएं
10.	भारतीय सिविल लेखा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
11.	भारतीय रेलवे लेखा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
12.	भारतीय रेलवे कार्मिक सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	बी, एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
13.	भारतीय रक्षा संपदा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एमएफ, पीपी, केसी, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) नेत्रहीनता या अल्प दृष्टि	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
14.	भारतीय सूचना सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	बी, एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
15.	भारतीय व्यापार सेवा, ग्रुप 'क' (ग्रेड-III)	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एमएफ, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
16.	भारतीय कारपोरेट विथि सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, बीएल	एसटी, आरडब्ल्यू, एसई, एस, बीएन, एच
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
17.	सशस्त्र सेना मुख्यालय सिविल सेवा, ग्रुप 'ख' (अनुभाग अधिकारी ग्रेड)	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एमएफ, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
18.	दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन एवं दीव तथा दादरा एवं नागर हवेली सिविल सेवा, ग्रुप 'ख'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एमएफ, एच, सी
		(ii)दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
19.	दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन एवं दीव तथा दादरा एवं नागर हवेली पुलिस सेवा, ग्रुप 'ख'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, पीपी, केसी, एमएफ, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) श्रवण बाधित	एचएच	
20.	पांडिचेरी सिविल सेवा, ग्रुप 'ख'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	

* कार्यात्मक वर्गीकरण तथा शारीरिक अपेक्षाओं का विस्तृत विवरण कृपया इस नोटिस के पै

2. (क) परीक्षा के केन्द्र : परीक्षा निम्नलिखित केन्द्रों पर आयोजित की जाएगी :

अगरतला	भोपाल	गंगटोक	कोच्चि	पटना	श्रीनगर
अहमदाबाद	चंडीगढ़	है	कोहिमा	पुडुचेरी	तिरुवनंतपुरम
ऐजल	चेन्नई	इम्फाल	कोलकाता	पोर्ट ब्लेयर	तिरुपति
अलीगढ़	कटक	ईटानगर	लखनऊ	रायपुर	उदयपुर
इलाहाबाद	देहरादून	जयपुर	मदुरै	रांची	विशाखापटनम
औ	दिल्ली	जम्मू	मुम्बई	संबलपुर	
बंगलौ	धारवाड	जोधपुर	नागपुर	शिलांग	
बरेली	दिसपुर	जोरहाट	पणजी (गोवा)	शिमला	

आयोग यदि चाहे तो, परीक्षा के उपर्युक्त केन्द्रों तथा उसके प्रारंभ होने की तारीख में परिवर्तन कर सकता है. यद्यपि परीक्षा हेतु उम्मीदवारों को उनकी पसंद का केन्द्र आवंटन करने का हर संभव प्रयत्न किया जाएगा फिर भी आयोग अपनी विवक्षा पर परिस्थितिवश किसी उम्मीदवार को कोई भिन्न केन्द्र आवंटित कर सकता है. परन्तु, दृष्टिहीन उम्मीदवारों को यह परीक्षा इन 7 में से किसी एक परीक्षा केन्द्र अर्थात दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता, लखनऊ, चेन्नई, मुंबई और दिसपुर पर ही देनी होगी. इस परीक्षा में प्रवेश प्राप्त उम्मीदवारों को परीक्षा की समय–सारणी तथा स्थान अथवा स्थानों के बारे में सूचित किया जाएगा.

उम्मीदवारों को नोट करना चाहिए कि केन्द्र परिवर्तन हेतु उनके अनुरोध को सामान्यतः स्वीकार नहीं किया जाएगा. किन्तु यदि कोई उम्मीदवार अपने आवेदन प्रपत्र में परीक्षा के लिए निर्दिष्ट केन्द्र में परिवर्तन चाहता है तो उसे इस बात का पूरा औचित्य बताते हुए कि वह परीक्षा केन्द्र में परिवर्तन क्यों चाहता है, एक पत्र परीक्षा नियंत्रक, संघ लोक सेवा आयोग को भेजना चाहिए. ऐसे अनुरोधों पर गुण–दोष के आधार पर विचार किया जाएगा. किन्तु 20 अप्रैल, 2011 के बाद प्राप्त अनुरोधों पर किसी भी स्थिति में विचार नहीं किया जाएगा और न ही ऐसे पत्रों का उत्तर दिया जाएगा.

(ख) परीक्षा की योजना :

सिविल सेवा परीक्षा की दो अवस्थाएं होंगी (नीचे परिशिष्ट– I खंड–I के अनुसार).

(i) प्रधान परीक्षा के लिए उम्मीदवारों के चयन हेतु सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा (वस्तुपरक) तथा

(ii) उपर्युक्त विभिन्न सेवाओं और पदों में भर्ती हेतु उम्मीदवारों को चयन करने के लिए सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा (लिखित तथा साक्षात्कार).

केवल प्रारंभिक परीक्षा के लिए अब आवेदन प्रपत्र आमंत्रित किए जाते हैं. जो उम्मीदवार प्रधान परीक्षा में प्रवेश के लिए आयोग द्वारा पात्र घोषित किए जाएंगे उनको विस्तृत आवेदनप्रपत्र में पुनः आवेदन करना होगा, जो कि उनको भेजे जाएंगे. प्रधान परीक्षा संभवतः अक्तूबर/नवम्बर, 2011 में होगी.

3. पात्रता की शर्तें :

(i) राष्ट्रीयता :

(1) भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा का उम्मीदवार भारत का नागरिक अवश्य हो.

(2) अन्य सेवाओं के उम्मीदवार को या तो
(क) भारत का नागरिक होना चाहिए, या
(ख) नेपाल की प्रजा, या
(ग) भूटान की प्रजा, या
(घ) ऐसा तिब्बती शरणार्थी जो भारत में स्थायी रूप से रहने के इरादे से पहली जनवरी, 1962 से पहले भारत आ गया हो, या
(ङ) कोई भारतीय मूल का व्यक्ति जो भारत में स्थायी रूप से रहने के इरादे से पाकिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, पूर्वी अफ्रीकी देशों, कीनिया, उगांडा, संयुक्त गणराज्य तंजानिया, जाम्बिया, मालावी, जैरे, इथियोपिया तथा वियतनाम से प्रव्रजन कर के आया हो.

परन्तु (ख), (ग), (घ) और (ङ) वर्गों के अंतर्गत आने वाले उम्मीदवार के पास भारत सरकार द्वारा जारी किया गया पात्रता (एलिजीबिलिटी) प्रमाणपत्र होना चाहिए.

एक शर्त यह भी है कि उपर्युक्त (ख), (ग) और (घ) वर्गों के उम्मीदवार भारतीय विदेश सेवा में नियुक्ति के पात्र नहीं होंगे. ऐसे उम्मीदवार को भी उक्त परीक्षा में प्रवेश दिया जा सकता है जिसके बारे में पात्रता प्रमाणपत्र प्राप्त करना आवश्यक हो, किन्तु भारत सरकार द्वारा उसके संबंध में पात्रता प्रमाणपत्र जारी किए जाने के बाद ही उसको नियुक्ति प्रस्ताव भेजा जा सकता है.

(ii) आयु–सीमाएं :

(क) उम्मीदवार की आयु **1 अगस्त, 2011** को पूरे 21 वर्ष की हो जानी चाहिए, किन्तु 30 वर्ष की नहीं होनी चाहिए अर्थात उसका जन्म **2 अगस्त, 1981** से पहले और **1 अगस्त, 1990** के बाद का नहीं होना चाहिए.

(ख) ऊपर बताई गई अधिकतम आयु–सीमा में निम्नलिखित मामलों में छूट दी जाएगी :

(i) यदि उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति का हो तो अधिक से अधिक 5 वर्ष.

(ii) अन्य पिछड़ी श्रेणियों के उन उम्मीदवारों के मामले में अधिकतम तीन वर्ष तक जो ऐसे उम्मीदवारों के लिये लागू आरक्षण को पाने के पात्र हों.

(iii) ऐसे उम्मीदवारों के मामले में, जिन्होंने 01 जनवरी, 1980 से 31 दिसम्बर, 1989 तक की अवधि के दौरान साधारणतया जम्मू और कश्मीर राज्य में अधिवास किया हो, अधिकतम 5 वर्ष तक.

(iv) किसी दूसरे देश के साथ संघर्ष में या किसी अशांतिग्रस्त क्षेत्र में फौजी कार्यवाही के दौरान विकलांग होने के फलस्वरूप सेवा से निर्मुक्त किए गए रक्षा कार्मिकों को अधिक से अधिक 3 वर्ष.

(v) जिन भूतपूर्व सैनिकों (कमीशन प्राप्त अधिकारियों तथा आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/ अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित) ने **1 अगस्त, 2011** को कम से कम 5 वर्ष की सैनिक सेवा की हो और जो (i) कदाचार या अक्षमता के आधार पर बर्खास्त न होकर अन्य कारणों से कार्यकाल के समापन पर कार्यमुक्त हुए हैं, (इनमें वे भी सम्मिलित हैं जिनका कार्यकाल **1 अगस्त 2011** से एक वर्ष के अंदर पूरा होना है), या (ii) सैनिक सेवा से हुई शारीरिक अपंगता, या (iii) अक्षमता के कारण कार्यमुक्त हुए हैं, उनके मामले में अधिक से अधिक 5 वर्ष तक.

(vi) आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/ अल्पकालीन सेवा के कमीशन प्राप्त अधिकारियों के उन मामलों में जिन्होंने **1 अगस्त, 2011** को सैनिक सेवा के 5 वर्ष की सेवा की प्रारंभिक अवधि पूरी कर ली है और जिनका कार्यकाल 5 वर्ष से आगे भी बढ़ाया गया है तथा जिनके मामले में रक्षा मंत्रालय एक प्रमाणपत्र जारी करता है कि वे सिविल रोजगार के लिए आवेदन कर सकते हैं और चयन होने पर नियुक्ति प्रस्ताव प्राप्त करने की तारीख से तीन माह के नोटिस पर उन्हें कार्यभार से मुक्त किया जाएगा. अधिकतम 5 वर्ष.

(vii) नेत्रहीन, मूक–बधिर तथा शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के मामले में अधिकतम 10 वर्ष तक.

टिप्पणी–I : अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़े वर्गों से संबंधित वे उम्मीदवार, जो उपर्युक्त पैरा 3 (ii) (ख) के किन्हीं अन्य खंडों अर्थात, जो भूतपूर्व सैनिकों, जम्मू तथा कश्मीर राज्य में अधिवास करने वाले व्यक्तियों, दृष्टिहीन, मूक–बधिर एवं शारीरिक रूप से अपंग आदि की श्रेणी के अंतर्गत आते हैं, दोनों श्रेणियों के अंतर्गत दी जाने वाली संचयी आयु सीमा–छूट प्राप्त करने के पात्र होंगे.

टिप्पणी–II : भूतपूर्व सैनिक शब्द उन व्यक्तियों पर लागू होगा जिन्हें समय–समय पर यथासंशोधित भूतपूर्व सैनिक (सिविल सेवा और पद में पुनः रोजगार) नियम, 1979 के अधीन भूतपूर्व सैनिक के रूप में परिभाषित किया जाता है.

टिप्पणी–III : आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/अल्पकालीन सेवा के कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित वे भूतपूर्व सैनिक तथा कमीशन अधिकारी, जो स्वयं के अनुरोध पर सेवामुक्त हुए हैं, उन्हें उपर्युक्त पैरा 3 (ii) (ख) (v) तथा (vi) के अधीन आयु सीमा में छूट नहीं दी जाएगी.

टिप्पणी–IV : उपर्युक्त पैरा 3(ii) (ख) (vii) के अंतर्गत आयु में छूट के बावजूद शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवार की नियुक्ति हेतु पात्रता पर तभी विचार किया जा सकता है जब वह (सरकार या नियोक्ता प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, द्वारा निर्धारित शारीरिक परीक्षण के बाद) सरकार द्वारा शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवारों को आवंटित संबंधित सेवाओं/पदों के लिए निर्धारित शारीरिक एवं चिकित्सा मानकों की अपेक्षाओं को पूरा करता हो.

ऊपर की व्यवस्था को छोड़कर निर्धारित आयु–सीमा में किसी भी हालत में छूट नहीं दी जा सकती.

आयोग जन्म की वह तारीख स्वीकार करता है जो मैट्रिकुलेशन या माध्यमिक विद्यालय छोड़ने के प्रमाण पत्र या किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा मैट्रिकुलेशन के समकक्ष माने गए प्रमाणपत्र या किसी विश्वविद्यालय द्वारा अनुरक्षित मैट्रिकुलेटों के रजिस्टर में दर्ज की गई हो और वह उद्धरण विश्वविद्यालय के समुचित प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित हो या उच्चतर माध्यमिक परीक्षा या उसकी समकक्ष परीक्षा प्रमाणपत्र में दर्ज हो. ये प्रमाणपत्र सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए आवेदन करते समय ही प्रस्तुत करने हैं.

आयु के संबंध में कोई अन्य दस्तावेज जैसे जन्म कुंडली, शपथपत्र, नगर निगम से और सेवा अभिलेख से प्राप्त जन्म संबंधी उद्धरण तथा अन्य ऐसे ही प्रमाण स्वीकार नहीं किए जाएंगे.

अनुदेशों के इस भाग में आये ''मैट्रिकुलेशन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा प्रमाणपत्र'' वाक्यांश के अंतर्गत उपर्युक्त वैकल्पिक प्रमाणपत्र सम्मिलित हैं.

टिप्पणी–I : उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि आयोग जन्म की उसी तारीख को स्वीकार करेगा जो कि आवेदन–पत्र प्रस्तुत करने की तारीख को मैट्रिकुलेशन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा प्रमाणपत्र या समकक्ष परीक्षा के प्रमाणपत्र में दर्ज है और इसके बाद उसमें परिवर्तन के किसी अनुरोध पर न तो विचार किया जाएगा न ही उसे स्वीकार किया जायेगा.

टिप्पणी–II : उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि उनके द्वारा परीक्षा में प्रवेश के लिए जन्म की तारीख एक बार लिख भेजने और आयोग द्वारा उसके स्वीकृत हो जाने के बाद, बाद में या किसी परीक्षा में उसमें किसी भी आधार पर कोई परिवर्तन करने की अनुमति नहीं दी जायेगी.

टिप्पणी–III : उम्मीदवारों को प्रारंभिक परीक्षा के लिए आवेदन प्रपत्र के कॉलम 3 में जन्म तिथि भरते समय उचित सावधानी बरतनी चाहिए. यदि बाद में किसी अवस्था में, जांच के दौरान उनके द्वारा भरी गई जन्म तिथि की उनके मैट्रिक या समकक्ष परीक्षा के प्रमाणपत्र में दी गई जन्म तिथि से कोई भिन्नता पाई गई तो आयोग द्वारा उनके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी.

(iii) न्यूनतम शैक्षिक योग्यता :

उम्मीदवार के पास भारत के केन्द्र या राज्य विधानमंडल

रंगाबाद
र

द्वारा निगमित किसी विश्वविद्यालय की या संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 के खंड 3 के अधीन विश्वविद्यालय के रूप में मानी गई किसी अन्य शिक्षा संस्था की डिग्री अथवा समकक्ष योग्यता होनी चाहिए.

टिप्पणी–I : कोई भी उम्मीदवार जिसने ऐसी कोई परीक्षा दे दी है जिसमें उत्तीर्ण होने पर वह आयोग की परीक्षा के लिए शैक्षिक रूप से पात्र होगा परन्तु उसे परीक्षा फल की सूचना नहीं मिली है तथा ऐसा उम्मीदवार भी जो ऐसी अर्हक परीक्षा में बैठने का इरादा रखता है, प्रारंभिक परीक्षा में प्रवेश पाने का पात्र होगा. सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए अर्हक घोषित किए गए सभी उम्मीदवारों को प्रधान परीक्षा के लिए आवेदन प्रपत्र के साथ–साथ उत्तीर्ण होने का प्रमाण प्रस्तुत करना होगा. जिसके प्रस्तुत न किए जाने पर ऐसे उम्मीदवारों को प्रधान परीक्षा में प्रवेश नहीं दिया जाएगा. प्रधान परीक्षा के लिए आवेदन–प्रपत्र **जुलाई/अगस्त, 2011** माह में किसी समय मंगाए जाएंगे.

टिप्पणी–II : विशेष परिस्थितियों में संघ लोक सेवा आयोग ऐसे किसी भी उम्मीदवार को परीक्षा में प्रवेश पाने का पात्र मान सकता है जिसके पास उपर्युक्त अर्हताओं में से कोई अर्हता न हो, बशर्ते कि उम्मीदवार ने किसी संस्था द्वारा ली गई कोई ऐसी परीक्षा पास कर ली हो जिसका स्तर आयोग के मतानुसार ऐसा हो कि उसके आधार पर उम्मीदवार को उक्त परीक्षा में बैठने दिया जा सकता है.

टिप्पणी–III : जिन उम्मीदवारों के पास ऐसी व्यावसायिक और तकनीकी योग्यताएं हों, जो सरकार द्वारा व्यावसायिक और तकनीकी डिग्रियों के समकक्ष मान्यताप्राप्त हैं वे भी उक्त परीक्षा में बैठने के पात्र होंगे.

टिप्पणी–IV : जिन उम्मीदवारों ने अपनी अंतिम व्यावसायिक एमबीबीएस अथवा कोई अन्य चिकित्सा परीक्षा पास की हो लेकिन उन्होंने सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा का आवेदनप्रपत्र प्रस्तुत करते समय अपना इण्टर्नशिप पूरा नहीं किया है तो वे भी अनन्तिम रूप से परीक्षा में बैठ सकते हैं, बशर्ते कि वे अपने आवेदन–प्रपत्र के साथ संबंधित विश्वविद्यालय/संस्था के प्राधिकारी से इस आशय के प्रमाणपत्र की एक प्रति प्रस्तुत करें कि उन्होंने अपेक्षित अंतिम व्यावसायिक चिकित्सा परीक्षा पास कर ली है. ऐसे मामलों में उम्मीदवारों को साक्षात्कार के समय विश्वविद्यालय/संस्था के संबंधित सक्षम प्राधिकारी से अपनी मूल डिग्री अथवा प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने होंगे कि उन्होंने डिग्री प्रदान करने हेतु सभी अपेक्षाएं (जिनमें इण्टर्नशिप पूरा करना भी शामिल है) पूरी कर ली हैं.

(iv) अवसरों की संख्या :

सिविल सेवा परीक्षा में बैठने वाले प्रत्येक उम्मीदवार को जो अन्यथा पात्र हों चार बार बैठने की अनुमति दी जाएगी.

परन्तु अवसरों की संख्या से संबद्ध यह प्रतिबंध अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के अन्यथा पात्र उम्मीदवारों पर लागू नहीं होगा.

परन्तु आगे यह और भी है कि अन्य पिछड़ी श्रेणियों के उम्मीदवारों को, जो अन्यथा पात्र हों, स्वीकार्य अवसरों की संख्या सात होगी. यह रियायत/छूट केवल वैसे अभ्यर्थियों को मिलेगी जो आरक्षण पाने के पात्र हैं.

बशर्ते यह भी कि शारीरिक रूप से विकलांग उम्मीदवार को उतने ही अवसर अनुमत होंगे जितने कि उसके समुदाय के अन्य उन उम्मीदवारों को जो शारीरिक रूप से विकलांग नहीं हैं या इस शर्त के अध्याधीन है कि सामान्य वर्ग से संबंधित शारीरिक रूप से विकलांग उम्मीदवार सात अवसरों के पात्र होंगे. यह छूट शारीरिक रूप से विकलांग उन उम्मीदवारों को उपलब्ध होगी जो कि ऐसे उम्मीदवारों पर लागू होने वाले आरक्षण को प्राप्त करने के पात्र होंगे.

टिप्पणी :

1. प्रारंभिक परीक्षा में बैठने को परीक्षा में बैठने का एक अवसर माना जाएगा.

2. यदि उम्मीदवार प्रारंभिक परीक्षा के किसी एक प्रश्न पत्र में वस्तुतः परीक्षा देता है तो उसका परीक्षा के लिए एक प्रयास समझा जाएगा.

3. अयोग्यता/उम्मीदवारी के रद्द होने के बावजूद उम्मीदवार की परीक्षा में उपस्थिति का तथ्य एक प्रयास गिना जाएगा.

(v) परीक्षा के लिए आवेदन करने पर प्रतिबंध :

कोई उम्मीदवार किसी पूर्व परीक्षा के परिणाम के आधार पर भारतीय प्रशासनिक सेवा अथवा भारतीय विदेश सेवा में नियुक्त हो जाता है और उस सेवा का सदस्य बना रहता है तो वह इस परीक्षा में प्रतियोगी बने रहने का पात्र नहीं होगा.

यदि ऐसा कोई उम्मीदवार सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011 के समाप्त होने के पश्चात भारतीय प्रशासनिक सेवा/भारतीय विदेश सेवा में नियुक्त हो जाता है तथा वह उस सेवा का सदस्य बना रहता है, तो वह सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा, 2011 में बैठने का पात्र नहीं होगा चाहे उसने प्रारंभिक परीक्षा, 2011 में अर्हता प्राप्त कर ली हो.

यह भी व्यवस्था है कि सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा, 2011 के प्रारंभ होने के पश्चात किन्तु उसके परीक्षा परिणाम से पहले किसी उम्मीदवार की भारतीय प्रशासनिक सेवा/भारतीय विदेश सेवा में नियुक्ति हो जाती है और वह उसी सेवा का सदस्य बना रहता है तो सिविल सेवा परीक्षा, 2011 के परिणाम के आधार पर उसे किसी सेवा/पद पर नियुक्ति हेतु विचार नहीं किया जाएगा.

(vi) शारीरिक मानक :

सिविल सेवा परीक्षा, 2011 में प्रवेश के लिए उम्मीदवारों को दिनांक 19 फरवरी, 2011 के भारत के राजपत्र (असाधारण) में प्रकाशित परीक्षा की नियमावली के परिशिष्ट–3 में दिए शारीरिक परीक्षा के बारे में विनियमों के अनुरूप शारीरिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए.

4. शुल्क :

(क) ऑनलाइन आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को कम किये गए ₹ 50/- (रुपये पचास मात्र) फीस के रूप में (अ.जा./अ.ज.जा./महिला/विकलांग उम्मीदवारों को छोड़कर जिन्हें कोई शुल्क नहीं देना होगा) या तो स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा में नकद जमा करके या स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की नेट बैंकिंग सेवा का उपयोग करके या वीजा/मास्टर क्रेडिट/डेबिट कार्ड का उपयोग करके भुगतान करना होगा.

(ख) ऑफलाइन (सामान्य आवेदन प्रपत्र द्वारा) आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को एक केन्द्रीय भर्ती शुल्क स्टॉम्प द्वारा रु. 100/- (केवल सौ रुपये) की फीस अदा करनी होगी. केन्द्रीय भर्ती शुल्क टिकट (डाक टिकट नहीं) डाकघर से प्राप्त करें और आवेदन प्रपत्र पर इसके लिए निर्धारित स्थान पर चिपका दें. जारी करने वाले डाकघर की तारीख की मोहर सहित उस टिकट को इस तरह से रद्द किया जाए कि रद्द करने की मोहर की छाप आंशिक रूप से आवेदन प्रपत्र पर भी किंतु आवेदन प्रपत्र में दिये गये स्थान के अंदर, अपने आप आ जाए. रद्द किए गए टिकट पर छाप स्पष्ट होनी चाहिए ताकि तारीख तथा जारी करने वाले डाकघर की पहचान स्पष्ट रूप से हो सके.

विदेश में रहने वाले उम्मीदवारों को निर्धारित शुल्क भारत के उच्च आयुक्त, राजदूत या विदेश में स्थित प्रतिनिधि के कार्यालय में, जैसी भी स्थिति हो इस अनुरोध के साथ जमा करना होगा ताकि वह ''051–लोक सेवा आयोग–परीक्षा शुल्क'' के लेखा शीर्ष में जमा हो जाए और आवेदन पत्र के साथ उसकी रसीद लगा कर भेजनी चाहिए.

सभी महिला उम्मीदवारों तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/शारीरिक रूप से विकलांग वर्गों से संबद्ध उम्मीदवारों को शुल्क के भुगतान से छूट प्राप्त है। तथापि, अन्य पिछड़े वर्ग के उम्मीदवारों को शुल्क में छूट प्राप्त नहीं है तथा उन्हें निर्धारित पूर्ण शुल्क का भुगतान करना होगा।

शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को शुल्क के भुगतान से छूट है बशर्ते कि वे इन सेवाओं/पदों के लिए चिकित्सा आरोग्यता (शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को दी गई किसी अन्य विशेष छूट सहित) के मानकों के अनुसार इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर भरी जाने वाली सेवाओं/पदों पर नियुक्ति हेतु अन्यथा रूप से पात्र हों. शुल्क में छूट का दावा करने वाले शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्ति को अपने विस्तृत आवेदन प्रपत्र के साथ अपने शारीरिक रूप से अक्षम होने के दावे के समर्थन में, सरकारी अस्पताल/चिकित्सा बोर्ड से प्राप्त प्रमाण–पत्र की प्रमाणित प्रति प्रस्तुत करनी होगी.

टिप्पणी : शुल्क में छूट के उपर्युक्त प्रावधान के बावजूद शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवार को नियुक्ति हेतु तभी पात्र माना जाएगा जब वह (सरकार या नियुक्ति प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, द्वारा निर्धारित ऐसी किसी शारीरिक जांच के बाद), सरकार द्वारा शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवार को आवंटित की जाने वाली संबंधित सेवाओं/पदों के लिए शारीरिक और चिकित्सा मानकों की अपेक्षाओं को पूरा करते हों.

''केन्द्रीय भर्ती शुल्क टिकट'' के स्थान पर किसी भी हालत में डाक टिकटें स्वीकार नहीं की जाएंगी.

उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि **भारतीय पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट, मनीआर्डर, रेखांकित चेक, चलमुद्रा नोट या ट्रेजरी चालान इत्यादि** आयोग द्वारा स्वीकार नहीं किए जाएंगे तथा ऐसे आवेदन पत्रों को शुल्क रहित माना जाएगा तथा उन्हें एकदम अस्वीकृत कर दिया जाएगा.

टिप्पणी–I : जिन आवेदन–पत्रों के साथ निर्धारित शुल्क संलग्न नहीं होगा (शुल्क माफी के दावे को छोड़कर), उनको एकदम अस्वीकृत कर दिया जाएगा.

टिप्पणी–II : किसी भी स्थिति में आयोग को भुगतान किए गए शुल्क की वापसी के किसी भी दावे पर न तो विचार किया जाएगा और न ही शुल्क को किसी अन्य परीक्षा या चयन के लिए आरक्षित रखा जा सकेगा.

टिप्पणी–III : यदि कोई उम्मीदवार 2010 में ली गयी सिविल सेवा परीक्षा में बैठा हो और अब इस परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए आवेदन करना चाहता हो, तो उसे परीक्षाफल या नियुक्ति प्रस्ताव की प्रतीक्षा किए बिना ही अपना आवेदनपत्र भेज देना चाहिए ताकि वह निर्धारित तारीख तक आयोग के कार्यालय में पहुंच जाए.

टिप्पणी–IV : प्रधान परीक्षा में जिन उम्मीदवारों को प्रवेश दिया जायेगा, उनको पुनः रु. 200 (केवल दो सौ रुपये) के शुल्क का भुगतान करना होगा.

5. आवेदन कैसे करें :

(क) उम्मीदवार **http://www.upsconline.nic.in** वेबसाइट का इस्तेमाल करके ऑनलाइन आवेदन करें। ऑनलाइन आवेदन पत्र भरने के लिए विस्तृत अनुदेश उपर्युक्त वेबसाइट पर उपलब्ध है

(ख) उम्मीदवार, आयोग द्वारा अपनी परीक्षाओं के लिए निर्धारित सामान्य (कॉमन) आवेदन पत्र में ऑफलाइन आवेदन भी कर सकते है

मशीनों पर प्रोसेस किया जा सकता है

प्रपत्र, एक सूचना विवरणिका के साथ, जिसमें प्रपत्र भरने के लिए सामान्य अनुदेश पावती कार्ड एवं आवेदन प्रपत्र भेजने के लिए एक लिफाफा शामिल है उक्त नोटिस के परिशिष्ट–III में सूचीबद्ध), देश भर के **निर्दिष्ट प्रधान डाकघरों/डाकघरों से ₹ 30 (केवल तीस रूपये) नगद भुगतान करके प्राप्त किया जा सकता है** प्रपत्र केवल निर्दिष्ट किए गए प्रधान डाकघरों से ही खरीदने चाहिएं, किसी अन्य एजेंसी से नहीं । **यह प्रपत्र एक परीक्षा के लिए केवल एक बार ही प्रयोग में लाया जा सकता है** ऑफलाइन आवेदन करने के इच्छुक उम्मीदवार, केवल सूचना विवरणिका के साथ दिए गए प्रपत्र का ही प्रयोग करें तथा उन्हें किसी भी स्थिति में प्रपत्र की छायाप्रति/प्रतिलिपि/अनधिकृत मुद्रित प्रति का प्रयोग नहीं करना चाहिए । चूंकि इस प्रपत्र की इलेक्ट्रानिक मशीन द्वारा जांच (स्कै

जाती है

उचित सावधानी बरतनी चाहिए । आवेदन प्रपत्र भरते समय, **कृपया इस नोटिस के परिशिष्ट–II (ख) में दिए गए विस्तृत अनुदेशों को देखें।** उम्मीदवारों को पावती कार्ड में संगत स्थानों पर अपनी आवेदन प्रपत्र संख्या औ

कार्ड पर ₹ 6/- (छ रूपये मात्र) का डाक टिकट लगाकर उसे आवेदकों को आवेदन प्रपत्र के साथ संघ लोक सेवा आयोग को भेजना होगा। यदि कोई आवेदक, वांछित मूल्य का डाक टिकट नहीं लगाता है

तथा आयोग पावती कार्ड आवेदक को प्राप्त न होने के लिये जिम्मेदार नहीं होगा । उसके बाद विधिवत रूप से भरा हुआ आवेदन प्रपत्र एवं पावती कार्ड सूचना विवरणिका के साथ दिए गए **विशेष लिफाफे में डाक से भेज देना चाहिए ।** उक्त लिफाफा परीक्षा नियंत्रक, संघ लोक सेवा आयोग, धौ

नई दिल्ली–110069 को भेजने से पहले उम्मीदवार को उस पर परीक्षा का नाम अर्थात **सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011** भी लिखना चाहिए ।

(ग) सभी उम्मीदवारों को चाहे वे पहले से सरकारी नौकरी में हों या सरकारी औद्योगिक उपक्रमों में हों या इसी प्रकार के अन्य संगठनों में हों या गैर–सरकारी संस्थाओं में नियुक्त हों, अपने आवेदन प्रपत्र आयोग को सीधे भेजने चाहिए. अगर किसी उम्मीदवार ने अपना आवेदन प्रपत्र अपने नियोक्ता के द्वारा भेजा हो और वह संघ लोक सेवा आयोग में देर से पहुंचा हो तो उस आवेदन प्रपत्र पर विचार नहीं किया जायेगा भले ही वह नियोक्ता को आखिरी तारीख के पहले प्रस्तुत किया गया हो.

जो व्यक्ति पहले से सरकारी नौकरी में स्थायी या अस्थायी हैसियत से काम कर रहें हों या किसी काम के लिए विशिष्ट रूप से नियुक्त कर्मचारी हों, जिसमें आकस्मिक या दैनिक दर पर नियुक्त व्यक्ति शामिल नहीं हैं, उनको अथवा जो लोक उद्यमों के अधीन कार्यरत हैं उनको यह परिवचन (अण्डरटेकिंग) प्रस्तुत करना होगा कि उन्होंने लिखित रूप से अपने कार्यालय/विभाग के अध्यक्ष को सूचित कर दिया है कि उन्होंने इस परीक्षा के लिए आवेदन किया है.

उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि यदि आयोग को उनके नियोक्ता से उनके उक्त परीक्षा के लिए आवेदन करने/परीक्षा में बैठने से सम्बद्ध अनुमति रोकते हुए कोई पत्र मिलता है तो उनका आवेदन पत्र अस्वीकृत किया जा सकता है/उनकी उम्मीदवारी रद्द कर दी जा सकती है.

टिप्पणी–1 : उम्मीदवार को अपने आवेदन प्रपत्र में परीक्षा के लिए केन्द्र भरते समय सावधानी पूर्वक निर्णय लेना चाहिए. एक ही उम्मीदवार के अलग–अलग केन्द्र देते हुए एक से अधिक आवेदन प्रपत्र, किसी भी स्थिति में, स्वीकार नहीं किए जाएंगे, यदि कोई उम्मीदवार एक से अधिक पूरे भरे हुए आवेदन प्रपत्र भेजे तो भी आयोग अपने विवेक से केवल एक ही आवेदन प्रपत्र स्वीकार करेगा तथा इस संबंध में आयोग का निर्णय अंतिम होगा.

यदि कोई उम्मीदवार आयोग द्वारा प्रेषित प्रवेश प्रमाण पत्र में दर्शाये गये केन्द्र से इतर केन्द्र में बैठता है तो उस उम्मीदवार के प्रश्न पत्रों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा तथा उसकी उम्मीदवारी भी रद्द की जा सकती है.

टिप्पणी–2 : चूंकि इन आवेदन प्रपत्रों की जांच संगणक पद्धति द्वारा की जाएगी, उम्मीदवारों को अपने आवेदन पत्र को सावधानीपूर्वक ठीक से भरना चाहिए. आवेदन प्रपत्र भरने के लिए आवश्यक अनुदेश परिशिष्ट–II (ख) में देखें. आवेदन पत्र का कोई संबंधित कॉलम खाली न छोड़ा जाये. अधूरे या गलत भरे हुए आवेदन पत्रों को एकदम अस्वीकृत कर दिया जायेगा और किसी भी अवस्था में अस्वीकृति के संबंध में अभ्यावेदन या पत्र व्यवहार को स्वीकार नहीं किया जायेगा.

उम्मीदवारों को अपने आवेदन प्रपत्रों के साथ आयु तथा शैक्षिक योग्यता, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ी श्रेणी, शारीरिक रूप से अक्षम और शुल्क में छूट आदि का प्रमाणपत्र प्रस्तुत नहीं करना होगा. केवल प्रधान परीक्षा के समय इनकी जांच की जायेगी. परीक्षा में आवेदन करने वाले उम्मीदवार यह सुनिश्चित कर लें कि वे परीक्षा में प्रवेश पाने के लिये पात्रता की सभी शर्तें पूरी करते हैं. परीक्षा के उन सभी स्तरों, जिनके लिये आयोग ने उन्हें प्रवेश दिया है अर्थात प्रारंभिक परीक्षा, प्रधान (लिखित) परीक्षा तथा साक्षात्कार परीक्षण, में उनका प्रवेश पूर्णतः अनंतिम होगा तथा उनके निर्धारित पात्रता की शर्तों को पूरा करने पर आधारित होगा. यदि प्रारंभिक परीक्षा, प्रधान (लिखित) परीक्षा तथा साक्षात्कार परीक्षण के पहले या बाद में सत्यापन करने पर यह पता चलता है कि वे पात्रता की किन्हीं शर्तों को पूरा नहीं करते हैं तो आयोग द्वारा परीक्षा के लिये उनकी उम्मीदवारी रद्द कर दी जाएगी.

यदि उनके द्वारा किये गये दावे सही नहीं पाये जाते हैं तो उनके खिलाफ आयोग द्वारा सिविल सेवा परीक्षा, 2011 की नियमावली के नियम 14 की शर्तों जो कि नीचे उद्धृत हैं, के अनुसार अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है.

जिस उम्मीदवार ने :

(i) निम्नलिखित तरीकों से अपनी उम्मीदवारी के लिए समर्थन प्राप्त किया है अर्थात् :
(क) गैर कानूनी रूप से परितोषण की पेशकश करना, या
(ख) दबाव डालना, या
(ग) परीक्षा आयोजित करने से संबंधित किसी भी व्यक्ति को ब्लैकमेल करना, अथवा उसे ब्लैकमेल करने की धमकी देना, अथवा

(ii) नाम बदल कर परीक्षा दी है, अथवा

(iii) किसी अन्य व्यक्ति से छद्म रूप से कार्य साधन कराया है, अथवा

(iv) जाली प्रमाणपत्र या ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किए हैं. जिनमें तथ्यों को बिगाड़ा गया हो, अथवा

(v) गलत या झूठे वक्तव्य दिए हैं या किसी महत्वपूर्ण तथ्य को छिपाया है, अथवा

(vi) परीक्षा के लिए अपनी उम्मीदवारी के संबंध में निम्नलिखित साधनों का उपयोग किया है. अर्थात् :

(क) गलत तरीके के प्रश्न–पत्र की प्रति प्राप्त करना,

(ख) परीक्षा से संबंधित गोपनीय कार्य से जुड़े व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करना

(ग) परीक्षकों को प्रभावित करना, या

(vii) परीक्षा के समय अनुचित साधनों का प्रयोग किया हो, या

(viii) उत्तर पुस्तिकाओं पर असंगत बातें लिखना या भद्दे रेखाचित्र बनाना, अथवा

(ix) परीक्षा भवन में दुर्व्यवहार करना, जिसमें उत्तर–पुस्तिकाओं को फाड़ना, परीक्षा देने वालों को परीक्षा का बहिष्कार करने के लिए उकसाना अथवा अव्यवस्था तथा ऐसी ही अन्य स्थिति पैदा करना शामिल है, अथवा

(x) परीक्षा चलाने के लिए आयोग द्वारा नियुक्त कर्मचारियों को परेशान किया हो या अन्य प्रकार की शारीरिक क्षति पहुंचाई हो, या

(xi) परीक्षा के दौरान मोबाइल फोन/पेजर या किसी अन्य प्रकार का इलैक्ट्रॉनिक उपकरण या यंत्र अथवा संचार यंत्र के रूप में प्रयोग किए जा सकने वाला कोई अन्य उपकरण प्रयोग करते हुए या अपने पास रखे पाया गया हो; या

(xii) परीक्षा की अनुमति देते हुए उम्मीदवारों को भेजे गये प्रमाण–पत्रों के साथ जारी अनुदेशों का उल्लंघन किया है; अथवा

(xiii) उपर्युक्त खंडों में उल्लिखित सभी/किसी भी कार्य के द्वारा आयोग को अवप्रेरित करने का प्रयत्न किया हो, तो उन पर आपराधिक अभियोग (क्रिमिनल प्रॉसीक्यूशन) चलाया जा सकता है और उसके साथ ही उसे–

(क) आयोग द्वारा किसी उम्मीदवार को उस परीक्षा के लिये अयोग्य ठहराया जा सकता है जिसमें वह बैठ रहा है; और/अथवा

(ख) उसे स्थाई रूप से अथवा एक विशेष अवधि के लिए

(i) आयोग द्वारा ली जाने वाली किसी भी परीक्षा अथवा चयन के लिए

(ii) केन्द्रीय सरकार द्वारा उसके अधीन किसी भी नौकरी से वारित किया जा सकता है.

(ग) यदि वह सरकार के अधीन पहले से ही सेवा में है तो उसके विरुद्ध उपयुक्त नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है.

किंतु शर्त यह है कि इस नियम के अधीन कोई शास्ति तब तक नहीं दी जाएगी जब तक :

(i) उम्मीदवार को इस सम्बन्ध में लिखित अभ्यावेदन, जो वह देना चाहे, प्रस्तुत करने का अवसर न दिया गया हो और

(ii) उम्मीदवार द्वारा अनुमत समय में प्रस्तुत अभ्यावेदन पर, यदि कोई हो, विचार न कर लिया गया हो.

6. आवेदन–प्रपत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख :

(क) ऑनलाइन :

ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र **21 मार्च, 2011, रात्रि 11.59 बजे** तक भरे जा सकते हैं जिसके पश्चात लिंक निरूपयोज्य होगा.

(ख) ऑफलाइन :

(i) पूरी तरह से भरे हुए ऑफलाइन आवेदन प्रपत्र दस्ती या पोस्ट/स्पीड पोस्ट या कुरियर द्वारा **''परीक्षा नियंत्रक, संघ लोक सेवा आयोग, धौलपुर हाउस, शाहजहां रोड, नई दिल्ली–110069 को 21 मार्च, 2011** या इससे पहले पहुंच जाने चाहिए.

(ii) असम, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा, सिक्किम, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति जिले और चम्बा जिले के पांगी उपमंडल, अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह अथवा लक्षद्वीप और विदेशों में रह रहे उम्मीदवारों से केवल डाक द्वारा (डाक/स्पीड पोस्ट द्वारा) प्राप्त होने वाले आवेदन प्रपत्रों के मामले में अंतिम तारीख **28 मार्च, 2011 सिर्फ 5 बजे तक है** . उपर्युक्त क्षेत्रों/प्रदेशों में रहने वाले उम्मीदवारों से आवेदन प्रपत्र प्राप्त करने के लिए दिया गया अतिरिक्त समय–सीमा का लाभ केवल **डाक/स्पीड पोस्ट** द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों के मामले में ही दिया जाएगा. वैयक्तिक रूप से अथवा कूरियर सेवा से प्राप्त आवेदन प्रपत्रों के मामलों में आवेदकों के निवास स्थान पर ध्यान दिए बिना अतिरिक्त समय सीमा का लाभ नहीं मिलेगा.

अतिरिक्त समय सीमा के लाभ का दावा करने वाले उम्मीदवारों को आवेदन के कालम 13 में अपने आवासीय पते में उस विशेष क्षेत्र अथवा प्रदेश, (अर्थात् असम, मेघालय, जम्मू एवं कश्मीर आदि) जहां वे रह रहे हैं, के क्षेत्र कोड का उल्लेख स्पष्ट रूप से करना चाहिए. यदि वे ऐसा नहीं कर पाते तो उन्हें अतिरिक्त समय का लाभ उठाने की अनुमति नहीं दी जाएगी.

टिप्पणी–I : उम्मीदवार स्पष्ट रूप से यह समझ लें कि आयोग उनका आवेदन प्रपत्र प्राप्त न होने अथवा किन्हीं अन्य कारणों से विलम्ब से प्राप्त होने के लिए किसी भी परिस्थिति में उत्तरदायी नहीं होगा. निर्धारित अंतिम तिथि के बाद प्राप्त होने वाले किसी भी आवेदन पत्र पर किसी भी परिस्थिति में विचार नहीं किया जाएगा और विलम्ब से प्राप्त होने वाले सभी आवेदन प्रपत्रों को तुरन्त अस्वीकार कर दिया जाएगा. अतः वे यह सुनिश्चित कर लें कि उनके आवेदन पत्र निर्धारित अंतिम तिथि तक आयोग के कार्यालय में पहुंच जाएं.

टिप्पणी–II: उम्मीदवार अपने आवेदन प्रपत्र आयोग के काउन्टर पर व्यक्तिगत रूप से जमा करके उसकी समुचित रसीद प्राप्त कर सकते हैं. आयोग के अन्य किसी पदधारी को जमा करने के लिए दिए गए आवेदनपत्रों के संबंध में आयोग उत्तरदायी नहीं होगा.

टिप्पणी–III: उम्मीदवारों को यह नोट कर लेना चाहिए कि निर्दिष्ट काउंटर पर सिर्फ 5 बजे तक एक बार में केवल एक ही आवेदन प्रपत्र प्राप्त किया जाएगा न कि बड़ी संख्या में.

टिप्पणी–IV: कूरियर सेवा अथवा कूरियर जैसी अन्य सेवा के माध्यम से प्राप्त आवेदन प्रपत्रों को आयोग के काउंटर पर ''दस्ती रूप से'' जमा किए गए आवेदन प्रपत्रों के रूप में माना जाएगा.

7. आवेदनों की पावती :

उम्मीदवार से आवेदन प्रपत्र प्राप्त होने के तत्काल बाद उम्मीदवार द्वारा आवेदन प्रपत्र के साथ जमा किए गए पावती कार्ड को उनके आवेदन की प्राप्ति के प्रमाणस्वरूप आयोग कार्यालय द्वारा विधिवत मुहर लगाकर पावती कार्ड उम्मीदवार को भेज दिए जाएंगे. यदि कोई उम्मीदवार 30 दिनों के अंदर पावती प्रमाण पत्र नहीं पाता है, तो उसे अपने आवेदन प्रपत्र संख्या एवं परीक्षा का नाम और वर्ष दर्शाते हुए आयोग से अविलंब संपर्क करना चाहिए. जो उम्मीदवार स्वयं आयोग के काउंटर पर अपने आवेदन प्रपत्र जमा कराते हैं उन्हें काउंटर पर ही पावती पत्र जारी कर दिया जाएगा. केवल इस तथ्य से कि उम्मीदवार का आवेदन प्रपत्र आयोग द्वारा प्राप्त कर लिया गया है इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि परीक्षा के लिए उसकी उम्मीदवारी को स्वीकार कर लिया गया है. उम्मीदवारों को उनके परीक्षा में प्रवेश अथवा उनका आवेदन प्रपत्र अस्वीकृत किये जाने के बारे में शीघ्रातिशीघ्र सूचित कर दिया जायेगा.

8. आयोग के साथ पत्र–व्यवहार :

निम्नलिखित को छोड़कर आयोग अन्य किसी भी मामले में उम्मीदवार के साथ पत्र–व्यवहार नहीं करेगा.

(i) इस परीक्षा के प्रत्येक उम्मीदवार को उसके आवेदन प्रपत्र के परिणाम की सूचना यथाशीघ्र दे दी जाएगी. परीक्षा में प्रवेशित उम्मीदवारों को अनुक्रमांक दर्शाते हुए प्रवेश प्रमाण पत्र प्रेषित किया जायेगा. प्रवेश प्रमाण पत्र पर उम्मीदवार के फोटोग्राफ का समावेश होगा. यदि किसी उम्मीदवार को परीक्षा प्रारंभ होने से **तीन सप्ताह** पूर्व प्रवेश प्रमाण पत्र अथवा उसकी उम्मीदवारी से संबद्ध कोई अन्य सूचना न मिले तो उसे आयोग से तत्काल संपर्क करना चाहिए. ऐसी किसी सूचना के प्राप्त होने पर प्रवेशित उम्मीदवार को प्रवेश प्रमाण पत्र अथवा उसकी अनुलिपि भेज दी जायेगी. इस संबंध में जानकारी आयोग परिसर में स्थित सुविधा काउन्टर पर व्यक्तिगत रूप से अथवा दूरभाष संख्या 011–23385271/ 011–23381125/011–23098543 से भी प्राप्त की जा सकती है. **यदि किसी उम्मीदवार से प्रवेश प्रमाण पत्र प्राप्त न होने के संबंध में कोई सूचना आयोग कार्यालय में परीक्षा प्रारंभ होने से कम से कम तीन सप्ताह पूर्व तक प्राप्त नहीं होती है तो प्रवेश प्रमाण पत्र प्राप्त न होने के लिये वह स्वयं ही जिम्मेदार होगा.** यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रवेश प्रमाण पत्र उम्मीदवार द्वारा आवेदन प्रपत्र में दिए गए पते की फोटो कापी लेकर प्रेषित किये जायेंगे. अतः उम्मीदवार ये सुनिश्चित कर लें कि उनके द्वारा आवेदन प्रपत्र में दिया गया पता पिन कोड सहित पूर्ण है.

सामान्यतः किसी भी उम्मीदवार को परीक्षा में प्रवेश प्रमाणपत्र के बिना बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी. प्रवेश प्रमाण पत्र प्राप्त होने पर इसकी सावधानीपूर्वक जांच कर लें तथा किसी प्रकार की विसंगति/त्रुटि होने पर आयोग को तुरंत इसकी जानकारी दें.

उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि परीक्षा में उनका प्रवेश उनके द्वारा आवेदन प्रपत्र में दी गई जानकारी के आधार पर अनंतिम रहेगा. यह आयोग द्वारा पात्रता की शर्तों के सत्यापन के अध्यधीन होगा. **केवल इस तथ्य का कि किसी उम्मीदवार को उक्त परीक्षा के लिए प्रवेश प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया है यह अर्थ नहीं होगा कि आयोग द्वारा उसकी उम्मीदवारी अंतिम रूप से ठीक मान ली गई है या किसी उम्मीदवार द्वारा अपने प्रारंभिक परीक्षा के आवेदन प्रपत्र में की गई प्रविष्टियां आयोग द्वारा सही और ठीक मान ली गई हैं. उम्मीदवार ध्यान रखें कि आयोग उम्मीदवार के सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा में अर्हता प्राप्त कर लेने के बाद ही उसकी पात्रता की शर्तों का मूल प्रलेखों से सत्यापन का मामला उठाता है, आयोग द्वारा औपचारिक रूप से उम्मीदवारी की पुष्टि कर दिये जाने तक उम्मीदवारी अनंतिम रहेगी.** उम्मीदवार उक्त परीक्षा में प्रवेश का पात्र है या नहीं है इस बारे में आयोग का निर्णय अंतिम होगा. उम्मीदवार ध्यान रखें कि प्रवेश प्रमाण पत्र में कहीं–कहीं नाम तकनीकी कारणों से संक्षिप्त रूप से लिखे जा सकते हैं.

(ii) उम्मीदवार को आयोग से एक से अधिक प्रवेश प्रमाण–पत्र प्राप्त होने की स्थिति में, परीक्षा देने के लिए, उनमें से केवल एक ही प्रवेश प्रमाण पत्र का उपयोग करना चाहिए तथा अन्य आयोग के कार्यालय को लौटा दिए जाने चाहिए.

(iii) उम्मीदवार को इस बात की व्यवस्था कर लेनी चाहिए कि उसके आवेदन प्रपत्र में उल्लिखित पते पर भेजे गये पत्र आदि, आवश्यक होने पर, उसको बदले हुए पते पर मिल जाया करें. पते में किसी प्रकार का परिवर्तन होने पर आयोग को उसकी सूचना यथाशीघ्र दी जानी चाहिए. आयोग ऐसे परिवर्तनों पर ध्यान देने का पूरा–पूरा प्रयत्न करता है, किन्तु इस विषय में वह कोई जिम्मेदारी स्वीकार नहीं कर सकता.

(iv) उम्मीदवारों को सूचित किया जाता है कि प्रारंभिक परीक्षा केवल प्राक्चयन परीक्षण है; इसलिए आयोग द्वारा इस सम्बन्ध में सफल या असफल उम्मीदवारों को कोई अंक–पत्र नहीं भेजा जाएगा और कोई पत्र–व्यवहार नहीं किया जाएगा.

(v) यदि उम्मीदवार को निपटान की चूक के कारण किसी दूसरे उम्मीदवार से संबंधित प्रवेश प्रमाण पत्र मिल जाये तो उसे आयोग को तुरंत सही प्रवेश प्रमाण पत्र जारी करने के निवेदन के साथ लौटा दिया जाना चाहिए. उम्मीदवारों को यह नोट कर लेना चाहिए कि उन्हें किसी दूसरे उम्मीदवार को जारी प्रवेश प्रमाण पत्र के आधार पर परीक्षा देने की अनुमति नहीं दी जाएगी.

महत्त्वपूर्ण : आयोग के साथ सभी पत्र–व्यवहार में नीचे लिखा ब्यौरा अनिवार्य रूप से होना चाहिए.

1. परीक्षा का नाम और वर्ष.
2. आवेदन प्रपत्र संख्या
3. अनुक्रमांक नंबर (यदि प्राप्त हुआ हो).
4. उम्मीदवार का नाम (पूरा तथा मोटे अक्षरों में).
5. आवेदन प्रपत्र में दिया डाक का पूरा पता.

ध्यान दें–I : जिन पत्रों में यह ब्यौरा नहीं होगा, संभव है कि उन पर ध्यान न दिया जाए.

ध्यान दें–II : उम्मीदवारों को अपने आवेदन प्रपत्र की संख्या भविष्य में संदर्भ के लिए नोट कर लेनी चाहिए. उन्हें सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा की उम्मीदवारी के संबंध में इसे दर्शाना होगा.

9. शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए आरक्षित रिक्तियों के लिए आरक्षण का लाभ लेने के लिए पात्रता वही होगी जो "अक्षम व्यक्ति (समान अवसर, अधिकार संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम 1995" में है.

बशर्ते कि शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवारों को शारीरिक अपेक्षाओं/कार्यात्मक वर्गीकरण (सक्षताओं/अक्षमताओं) के संबंध में उन विशेष पात्रता मानदण्डों को पूरा करना भी अपेक्षित होगा जो इसके संवर्ग नियंत्रण प्राधिकारी द्वारा निर्धारित अभिज्ञात सेवा/पद के अपेक्षाओं की संगत हो.

उदाहरणार्थ, शारीरिक अपेक्षाएं और कार्यात्मक वर्गीकरण निम्न में से एक या अधिक हो सकते हैं :–

कोड	**शारीरिक अपेक्षाएं**
एमएफ (MF)	1. हस्तकौशल (अंगुलियों से) द्वारा निष्पादित किए जाने वाले कार्य.
पीपी (PP)	2. खींच कर तथा धक्के द्वारा किए जाने वाले कार्य.
एल (L)	3. उठाकर किए जाने वाले कार्य.
केसी (KC)	4. घुटने के बल बैठकर तथा क्राउंचिंग द्वारा किए जाने वाले कार्य.
बीएन (BN)	5. झुककर किए जाने वाले कार्य.
एस (S)	6. बैठकर (बेंच या कुर्सी पर) किए जाने वाले कार्य.
एसटी (ST)	7. खड़े होकर किए जाने वाले कार्य.
डब्ल्यू (W)	8. चलते हुए किए जाने वाले कार्य.
एसई (SE)	9. देखकर किए जाने वाले कार्य.
एच (H)	10. सुनकर या बोलकर किए जाने वाले कार्य.
आरडब्ल्यू (RW)	11. पढ़कर तथा लिखकर किए जाने वाले कार्य.
सी (C)	12. वार्तालाप
कोड	**कार्यात्मक वर्गीकरण**
बीएल (BL)	1. दोनों पैर खराब लेकिन भुजाएं नहीं.
बीए (BA)	2. दोनों भुजाएं खराब क. दुर्बल पहुंच ख. पकड़ की दुर्बलता ग. एटेक्सिक (गति विभ्रमी)
बीएलए (BLA)	3. दोनों पैर तथा दोनों भुजाएं खराब.
ओएल (OL)	4. एक पैर खराब (दायां या बायां) (क) दुर्बल पहुंच (ख) पकड़ की दुर्बलता (ग) ऐटेक्सिक (गति विभ्रमी)
ओए (OA)	5. एक भुजा खराब (दाईं या बाईं) (क) दुर्बल पहुंच (ख) पकड़ की दुर्बलता (ग) ऐटेक्सिक (गति विभ्रमी)
ओएएल (OAL)	6. एक भुजा और एक पैर प्रभावित
एमडब्लयू (MW)	7. मांसपेशीय दुर्बलता तथा सीमित शारीरिक शक्ति
बी (B)	8. नेत्रहीन
एलवी (LV)	9. आंशिक दृष्टि
एच (H)	10. सुनना

टिप्पणी : उपर्युक्त सूची संशोधन के अध्यधीन है.

10. किसी भी उम्मीदवार को समुदाय संबंधी आरक्षण का लाभ, उसकी जाति को केन्द्र सरकार द्वारा जारी आरक्षित समुदाय संबंधी सूची में शामिल किए जाने पर ही मिलेगा । यदि कोई उम्मीदवार सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा के अपने प्रपत्र में यह उल्लेख करता है

कालांतर में अपनी श्रेणी को आरक्षित सूची की श्रेणी में तब्दील करने के लिए आयोग को लिखता है

आयोग द्वारा ऐसे अनुरोध को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं किया जाएगा ।

जबकि उपर्युक्त सिद्वांत का सामान्य रूप से पालन किया जाएगा, फिर भी कुछ ऐसे मामले हो सकते है जिनमें किसी समुदाय विशेष को आरक्षित समुदायों की किसी भी सूची में शामिल करने के संबंध में सरकारी अधिसूचना जारी किए जाने औ

आवेदन पत्र जमा करने की तारीख के समय के बीच थोड़ा बहुत अंतर (अर्थात् 2–3 महीने) हुआ हो । ऐसे मामलों में, समुदाय को सामान्य से आरक्षित समुदाय में परिवर्तित करने संबंधी अनुरोध पर आयोग द्वारा मै

के आधार पर विचार किया जाएगा ।

11. आवेदनों की वापसी :

उम्मीदवार द्वारा अपना आवेदन प्रपत्र प्रस्तुत कर देने के बाद उम्मीदवारी वापस लेने से संबद्ध उसके किसी भी अनुरोध को किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा.

(विनय प्रकाश सिंह)
संयुक्त सचिव
संघ लोक सेवा आयोग

परिशिष्ट–1

खंड– I

परीक्षा की योजना

इस प्रतियोगिता परीक्षा में दो क्रमिक चरण हैं.

(1) प्रधान परीक्षा के लिए उम्मीदवारों के चयन हेतु सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा (वस्तुपरक) तथा

(2) विभिन्न सेवाओं तथा पदों पर भर्ती हेतु उम्मीदवारों का चयन करने के लिए सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा (लिखित तथा साक्षात्कार).

2. प्रारंभिक परीक्षा में वस्तुपरक (बहुविकल्पीय प्रश्न) प्रकार के दो प्रश्न पत्र होंगे तथा खंड–II के उपखंड (क) में दिए गए विषयों में अधिकतम 400 अंक होंगे. यह परीक्षा केवल प्राक्चयन परीक्षण के रूप में होंगी. प्रधान परीक्षा में प्रवेश हेतु अर्हता प्राप्त करने वाले उम्मीदवार द्वारा प्रारंभिक परीक्षा में प्राप्त किए गए अंकों को उनके अंतिम योग्यता क्रम को निर्धारित करने के लिए नहीं गिना जाएगा. प्रधान परीक्षा में प्रवेश दिये जाने वाले उम्मीदवारों की संख्या उक्त वर्ष में विभिन्न सेवाओं तथा पदों में भरी जाने वाली रिक्तियों की कुल संख्या का लगभग बारह से तेरह गुना होगी. केवल वे ही उम्मीदवार जो आयोग द्वारा किसी वर्ष की प्रारंभिक परीक्षा में अर्हता प्राप्त कर लेते हैं उक्त वर्ष की प्रधान परीक्षा में प्रवेश के पात्र होंगे बशर्ते कि वे अन्यथा प्रधान परीक्षा में प्रवेश हेतु पात्र हों.

3. प्रधान परीक्षा में लिखित परीक्षा तथा साक्षात्कार परीक्षण होगा. लिखित परीक्षा में खंड–II के उप खंड (ख) में दिए गए विषयों में परम्परागत निबन्धात्मक शैली के 9 प्रश्न पत्र होंगे. खंड II (ख) के पैरा 1 के नीचे नोट (II) भी देखें.

4. जो उम्मीदवार प्रधान परीक्षा के लिखित भाग में उतने न्यूनतम अर्हक अंक प्राप्त कर लेगा जितने आयोग अपने निर्णय से निश्चित करे उन्हें आयोग व्यक्तित्व परीक्षण हेतु खंड–II में उप खंड "ग" के अनुसार साक्षात्कार के लिए बुलाएगा, किन्तु भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के प्रश्न पत्रों में केवल अर्हता प्राप्त करनी होगी. खंड–II (ख) के पैरा के नीचे टिप्पणी (II) भी देखें. इन प्रश्न पत्रों में प्राप्त अंकों को योग्यता क्रम निर्धारित करने में गिना नहीं जाएगा. साक्षात्कार के लिए बुलाए जाने वाले उम्मीदवारों की संख्या भरी जाने वाली रिक्तियों की संख्या से लगभग दुगनी होगी. साक्षात्कार के लिए 300 अंक होंगे. (कोई न्यूनतम अर्हक अंक नहीं है).

इस प्रकार उम्मीदवारों द्वारा प्रधान परीक्षा (लिखित भाग तथा साक्षात्कार) में प्राप्त किए गए अंकों के आधार पर उनका अंतिम योग्यता क्रम निर्धारित किया जायेगा. परीक्षा में उम्मीदवारों की स्थिति तथा विभिन्न सेवाओं और पदों के लिए उनके द्वारा दिए गए वरीयता क्रम को ध्यान में रखते हुए उन्हें विभिन्न सेवाओं में आवंटित किया जायेगा.

खंड–II

1. प्रारंभिक तथा प्रधान परीक्षा की रूपरेखा तथा विषय :

क. प्रारंभिक परीक्षा :

परीक्षा में दो अनिवार्य प्रश्न पत्र होंगे जिसमें प्रत्येक प्रश्न पत्र 200 अंकों का होगा।

नोट :

(i) दोनों ही प्रश्न–पत्र वस्तुनिष्ठ **(बहुविकल्पीय)** प्रकार के होंगे ।

(ii) प्रश्न–पत्र हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में तैयार किए जाएंगे । तथापि, दसवीं कक्षा स्तर के अंग्रेजी भाषा के **बोधगम्यता** कौशल से संबंधी प्रश्नों का परीक्षण, प्रश्नपत्र में केवल अंग्रेजी भाषा के उष्रणों के माध्यम से, हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराए बिना किया जाएगा ।

(iii) पाठ्यक्रम संबंधी विवरण खंड–III के भाग–क में दिया गया है ।

(iv) प्रत्येक प्रश्नपत्र दो घंटे की अवधि का होगा । तथापि, नेत्रहीन उम्मीदवारों को प्रत्येक प्रश्न पत्र में बीस मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाएगा ।

ख. प्रधान परीक्षा :

लिखित परीक्षा में निम्नलिखित प्रश्न पत्र होंगे :

प्रश्न पत्र–I	संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं में से उम्मीदवारों द्वारा चुनी गई कोई एक भारतीय भाषा	300 अंक
प्रश्न पत्र–II	अंग्रेजी	300 अंक
प्रश्न पत्र–III	निबंध	200 अंक
प्रश्न पत्र–IV	सामान्य अध्ययन	प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए 300 अंक
प्रश्न पत्र–V		प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए 300 अंक
प्रश्न पत्र–VI, VII और VIII	नीचे पैरा 2 में दिए गए ऐच्छिक विषयों की सूची में से चुने जाने वाले कोई दो विषय, प्रत्येक विषय के दो प्रश्न पत्र होंगे.	प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए 300 अंक
प्रश्न पत्र–IX और X		प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए 300 अंक

साक्षात्कार परीक्षण 300 अंकों का होगा.

टिप्पणी

(i) भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के प्रश्न पत्र मैट्रिकुलेशन अथवा समकक्ष स्तर के होंगे जिनमें केवल अर्हता प्राप्त करनी होगी. इन प्रश्न पत्रों में प्राप्त अंकों को योग्यता क्रम निर्धारित करने में नहीं गिना जाएगा.

(ii) सभी उम्मीदवारों के पेपरों नामश: 'निबंध', 'सामान्य अध्ययन' तथा 'वैकल्पिक विषयों' का मूल्यांकन 'भारतीय भाषाओं' तथा 'अंग्रेजी' के उनके अर्हक पेपरों के मूल्यांकन के साथ ही किया जाएगा लेकिन केवल उन्हीं उम्मीदवारों के 'निबंध', 'सामान्य अध्ययन', तथा 'वैकल्पिक विषयों' के प्रश्न पत्रों का मूल्यांकन किया जाएगा जो 'भारतीय भाषा' तथा 'अंग्रेजी' के अर्हक प्रश्न पत्रों में आयोग द्वारा अपने विवेक से निर्धारित न्यूनतम स्तर प्राप्त कर लेंगें। अत: 'भारतीय भाषा' तथा 'अंग्रेजी' में निर्धारित न्यूनतम स्तर प्राप्त करने में असफल उम्मीदवारों के 'निबंध', 'सामान्य अध्ययन' तथा 'वैकल्पिक विषयों' के अंक बताए नहीं जाएंगे।

(iii) तथापि भारतीय भाषाओं का प्रथम प्रश्न पत्र उन उम्मीदवारों के लिए अनिवार्य नहीं होगा जो उत्तर पूर्वी राज्यों अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम तथा नागालैंड के निवासी हैं तथा उन उम्मीदवारों के लिए भी जो सिक्किम राज्य के निवासी हैं.

(iv) भाषा के प्रश्न पत्रों में उम्मीदवार निम्न प्रकार से लिपि का प्रयोग करेंगे.

भाषा	लिपि
असमिया	असमिया
बंगला	बंगला
बोडो	देवनागरी
डोगरी	देवनागरी
गुजराती	गुजराती
हिन्दी	देवनागरी
कन्नड़	कन्नड़
कश्मीरी	फारसी
कोंकणी	देवनागरी
मैथिली	देवनागरी
मलयालम	मलयालम
मणिपुरी	बंगाली
मराठी	देवनागरी
नेपाली	देवनागरी
उड़िया	उड़िया
पंजाबी	गुरुमुखी
संस्कृत	देवनागरी
संताली	देवनागरी या आलचिकी
सिन्धी	देवनागरी या अरबी
तमिल	तमिल
तेलुगु	तेलुगु
उर्दू	फारसी

टिप्पणी : संताली भाषा के लिए प्रश्न पत्र देवनागरी लिपि में छपेंगे किन्तु उम्मीदवारों को उत्तर देने के लिए देवनागरी या ओलचिकि लिपि के प्रयोग का विकल्प होगा.

2. प्रधान परीक्षा के लिए ऐच्छिक विषयों की सूची

कृषि विज्ञान
पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान
नृविज्ञान
वनस्पति विज्ञान
रसायन विज्ञान
सिविल इंजीनियरी
वाणिज्य शास्त्र तथा लेखा विधि
अर्थशास्त्र
वैद्युत इंजीनियरी
भूगोल
भू–विज्ञान
इतिहास
विधि
प्रबंध
गणित
यांत्रिक इंजीनियरी
चिकित्सा विज्ञान
दर्शन शास्त्र
भौतिकी
राजनीति विज्ञान तथा अन्तर्राष्ट्रीय संबंध
मनोविज्ञान
लोक प्रशासन
समाज शास्त्र
सांख्यिकी
प्राणि विज्ञान

निम्नलिखित में से किसी **एक** भाषा का साहित्य : अरबी, असमिया, बंगला, बोडो, चीनी, डोगरी, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पाली, फारसी, पंजाबी, रूसी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू.

टिप्पणी (i) उम्मीदवारों को निम्नलिखित विषय एक साथ लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी.

(क) राजनीति विज्ञान **तथा** अंतर्राष्ट्रीय संबंध तथा लोक प्रशासन
(ख) वाणिज्य शास्त्र **तथा** लेखा विधि तथा प्रबंध
(ग) मानव विज्ञान **तथा** समाजशास्त्र
(घ) गणित तथा सांख्यिकी
(ङ) कृषि विज्ञान **तथा** पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान
(च) प्रबंध **तथा** लोक प्रशासन
(छ) इंजीनियरी विषयों जैसे सिविल इंजीनियरी, वैद्युत इंजीनियरी तथा यांत्रिक इंजीनियरी में एक से अधिक विषय नहीं.
(ज) पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान **तथा** चिकित्सा विज्ञान

(ii) परीक्षा के लिए प्रश्न पत्र परम्परागत निबंध शैली के होंगे.

(iii) प्रत्येक प्रश्न पत्र तीन घंटे की अवधि का होगा. तथापि दृष्टिहीन उम्मीदवारों को प्रत्येक प्रश्न–पत्र के लिए तीस मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाएगा.

(iv) प्रश्न पत्रों के उत्तर भारतीय भाषाओं के प्रश्न पत्रों अर्थात उपर्युक्त प्रश्न पत्रों 1 और 2 को छोड़कर संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किसी भी एक भाषा में अथवा अंग्रेजी में देने की उम्मीदवारों को छूट होगी.

(v) संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं में से किसी एक भाषा में 3 से 9 तक के प्रश्न पत्रों के उत्तर देने का विकल्प लेने वाले उम्मीदवार यदि चाहे तो केवल तकनीकी शब्दों के यदि कोई हैं, विवरण का उनके द्वारा चुनी गई भाषा के साथ अंग्रेजी रूपान्तरण कोष्ठकों में दे सकते हैं.

किन्तु उम्मीदवार ध्यान रखें कि यदि वे उक्त नियम का दुरूपयोग करते हैं तो इसके कारण उनके अन्यथा मिलने वाले कुल अंकों में से कटौती कर ली जाएगी, अत्यांतिक मामले में उनकी उत्तर पुस्तिका (एं) अनाधिकृत माध्यम में होने के कारण मूल्यांकित नहीं की जाएगी.

(vi) भाषा संबंधी प्रश्न पत्रों को छोड़कर बाकी सभी प्रश्न पत्र हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे.

(vii) पाठ्यक्रम का पूरा विवरण खंड III के भाग "ख" में दिया गया है.

"सामान्य अनुदेश (प्रारंभिक तथा प्रधान परीक्षा)"

(i) उम्मीदवारों को प्रश्नपत्रों के उत्तर स्वयं लिखने चाहिएं. किसी भी परिस्थिति में उन्हें उत्तर लिखने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी. तथापि दृष्टिहीन उम्मीदवारों को लेखन सहायक (स्क्राइब) की सहायता से परीक्षा में उत्तर लिखने की अनुमति होगी.

(ii) केवल सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए, उन उम्मीदवारों को जो चलने में असमर्थ हैं तथा प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से पीड़ित हैं और जहां उनकी यह असमर्थता, उनकी कार्य–निष्पादन क्षमता (लेखन) (न्यूनतम 40% अक्षमता) को प्रभावित करती है, उन्हें प्रत्येक घण्टे में 20 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाएगा. तथापि ऐसे उम्मीदवारों को स्क्राइब लेने की अनुमति नहीं होगी.

टिप्पणी–1 : किसी लेखन सहायक (स्क्राइब) की योग्यता की शर्तें, परीक्षा हाल में उसके आचरण तथा वह सिविल सेवा परीक्षा के उत्तर लिखने में दृष्टिहीन उम्मीदवारों की किस प्रकार और किस सीमा तक सहायता कर सकता है इन सब बातों का नियमन संघ लोक सेवा आयोग द्वारा जारी अनुदेशों के अनुसार किया जाएगा. इन सभी या इनमें से किसी एक अनुदेश का उल्लंघन होने पर दृष्टिहीन उम्मीदवार की उम्मीदवारी रद्द की जा सकती है. इसके अतिरिक्त संघ लोक सेवा आयोग लेखन सहायक के विरूद्ध अन्य कार्रवाई भी कर सकता है.

टिप्पणी –2 : इन नियमों का पालन करने के लिए किसी उम्मीदवार को तभी दृष्टिहीन उम्मीदवार माना जाएगा यदि दृष्टिदोष का प्रतिशत 40 या इससे अधिक हो, दृष्टि दोष की प्रतिशतता निर्धारित करने के लिए निम्नलिखित कसौटी को आधार माना जाएगा.

सुधारों के बाद

	स्वस्थ आंख	खराब आंख	प्रतिशतता
वर्ग 0	6/9–6/18	6/24 से 6/36 तक	20%
वर्ग I	6/18–6/36	6/60 से शून्य तक	40%
वर्ग II	6/60–4/60 अथवा दृष्टि का क्षेत्र 10–20°	3/60 से शून्य तक	75%
वर्ग III	3/60–1/60 अथवा दृष्टि का क्षेत्र 10°	एफ.सी. एक फुट से शून्य तक	100%
वर्ग IV	एफ.सी. 1 फुट से शून्य तक दृष्टि का क्षेत्र 100°	एफ.सी. 1 फुट से शून्य तक दृष्टि का क्षेत्र 100°	100%
एक आंख वाला व्यक्ति	6/6	एफ.सी. 1 फुट से शून्य तक	30%

टिप्पणी– 3 : दृष्टिहीन उम्मीदवारों को स्वीकार्य छूट प्राप्त करने के लिए संबंधित उम्मीदवार को **प्रधान परीक्षा के आवेदन पत्र के** साथ निर्धारित प्रपत्र में केन्द्र/राज्य सरकार द्वारा गठित बोर्ड से इस आशय का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा.

टिप्पणी –4 : (i) दृष्टिहीन उम्मीदवारों को दी जाने वाली छूट निकटदृष्टिता से पीड़ित उम्मीदवारों को देय नहीं होगी.

(ii) आयोग अपने विवेक से परीक्षा के किसी भी एक या सभी विषयों में अर्हक अंक निश्चित कर सकता है.

(iii) यदि किसी उम्मीदवार की लिखावट आसानी से न पढ़ी जा सके तो उसको मिलने वाले अंकों में से कुछ अंक काट लिए जायेंगे.

(iv) सतही ज्ञान के लिए अंक नहीं दिए जाएंगे.

(v) परीक्षा के सभी विषयों में कम से कम शब्दों में की गई संगठित, सूक्ष्म और सशक्त अभिव्यक्ति को श्रेय मिलेगा.

(vi) प्रश्न पत्रों में यथा आवश्यक एस.आई. (S.I.) इकाईयों का प्रयोग किया जाएगा.

(vii) उम्मीदवार प्रश्न पत्रों के उत्तर देते समय केवल भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप (जैसे 1, 2, 3, 4, 5, 6 आदि) का ही प्रयोग करें.

(viii) उम्मीदवारों को संघ लोक सेवा आयोग की परंपरागत (निबंध) शैली के प्रश्न पत्रों के लिए साइंटिफिक (नान प्रोग्रामेबल) प्रकार के कैलकुलेटरों का प्रयोग करने की अनुमति है. यद्यपि प्रोग्रामेबल प्रकार के कैलकुलेटरों का प्रयोग उम्मीदवार द्वारा अनुचित साधन अपनाया जाना माना जाएगा. परीक्षा भवन में केलकुलेटरों को मांगने या बदलने की अनुमति नहीं है.

यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि उम्मीदवार वस्तुपरक प्रश्न पत्रों (परीक्षण पुस्तिका) का उत्तर देने के लिए कैलकुलेटरों का प्रयोग नहीं कर सकते. अत: वे उन्हें परीक्षा भवन में न लाएं.

ग. साक्षात्कार परीक्षण :

1. उम्मीदवार का साक्षात्कार एक बोर्ड द्वारा होगा जिसके सामने उम्मीदवार के परिचयवृत्त का अभिलेख होगा. उससे सामान्य रुचि की बातों पर प्रश्न पूछे जायेंगे. यह साक्षात्कार इस उद्देश्य से होगा कि सक्षम और निष्पक्ष प्रेक्षकों का बोर्ड यह जान सके कि उम्मीदवार लोक सेवा के लिए व्यक्तित्व की दृष्टि से उपयुक्त है या नहीं. यह परीक्षा उम्मीदवार की मानसिक क्षमता को जांचने के अभिप्राय: से की जाती है. मोटे तौर पर इस परीक्षा का प्रयोजन वास्तव में न केवल उसके बौद्धिक गुणों को अपितु उसके सामाजिक लक्षणों और सामाजिक घटनाओं में उसकी रुचि का भी मूल्यांकन करना है. इसमें उम्मीदवार की मानसिक सतर्कता, आलोचनात्मक ग्रहण शक्ति, स्पष्ट और तर्क संगत प्रतिपादन की शक्ति, संतुलित निर्णय की शक्ति, रुचि की विविधता और गहराई, नेतृत्व और सामाजिक संगठन की योग्यता, बौद्धिक और नैतिक ईमानदारी की भी जांच की जा सकती है.

2. साक्षात्कार में प्रति परीक्षण (क्रास एग्जामिनेशन) की प्रणाली नहीं अपनाई जाती. इसमें स्वाभाविक वार्तालाप के माध्यम से उम्मीदवार के मानसिक गुणों का पता लगाने का प्रयत्न किया जाता है, परन्तु वह

वार्तालाप एक विशेष दिशा में और एक विशेष प्रयोजन से किया जाता है.

3. साक्षात्कार परीक्षण उम्मीदवारों के विशेष या सामान्य, ज्ञान की जांच करने के प्रयोजन से नहीं किया जाता, क्योंकि उसकी जांच लिखित प्रश्न पत्रों से पहले ही हो जाती है. उम्मीदवारों से आशा की जाती है कि वे न केवल अपने विद्यालय के विशेष विषयों में ही पारंगत हों बल्कि उन घटनाओं पर भी ध्यान दें जो उनके चारों ओर अपने राज्य या देश के भीतर और बाहर घट रही हैं तथा आधुनिक विचारधारा और नई–नई खोजों में भी रूचि लें जो कि किसी सुशिक्षित युवक में जिज्ञासा पैदा कर सकती है.

खंड-III

परीक्षा का पाठ्य विवरण

भाग–क

प्रारंभिक परीक्षा

प्रारंभिक परीक्षा में अब 200-200 अंकों के दो अनिवार्य प्रश्नपत्र होंगे

प्रश्नपत्र-I (200 अंक) अवधि : दो घंटे

- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनाएं.
- भारत का इतिहास और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन.
- भारत एवं विश्व भूगोल – भारत एवं विश्व का प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक भूगोल
- भारतीय राज्यतन्त्र और शासन – संविधान, राजनैतिक प्रणाली, पंचायती राज, लोक नीति, अधिकारों संबंधी मुद्दे, आदि।
- आर्थिक और सामाजिक विकास – सतत विकास, गरीबी, समावेशन, जनसांख्यिकी, सामाजिक क्षेत्र में की गई पहल आदि।
- पर्यावरणीय पारिस्थितिकी जैव–विविधता और मौसम परिवर्तन संबंधी सामान्य मुद्दे, जिनके लिए विषयगत विशेषज्ञता आवश्यक नहीं है।
- सामान्य विज्ञान

प्रश्नपत्र–II (200 अंक) अवधि : दो घंटे

- बोधगम्यता
- संचार कौशल सहित अंतर – वैयक्तिक कौशल
- तार्किक कौशल एवं विश्लेषणात्मक क्षमता
- निर्णय लेना और समस्या समाधान
- सामान्य मानसिक योग्यता
- आधारभूत संख्यनन (संख्याएं और उनके संबंध, विस्तार क्रम आदि) (दसवीं कक्षा का स्तर), आंकड़ों का निर्वचन (चार्ट, ग्राफ, तालिका, आंकड़ों की पर्याप्तता आदि – दसवीं कक्षा का स्तर)
- अंग्रेजी भाषा में बोधगम्यता कौशल (दसवीं कक्षा का स्तर)

टिप्पणी 1 दसवीं कक्षा स्तर के अंग्रेजी भाषा में बोधगम्यता कौशल (प्रश्नपत्र–II के पाठ्यक्रम में अंतिम मद) से संबद्ध प्रश्नों का परीक्षण, प्रश्नपत्र में केवल अंग्रेजी भाषा के उद्धरणों के माध्यम से, हिंदी अनुवाद उपलब्ध कराए बिना किया जाएगा।

टिप्पणी 2 प्रश्न बहुविकल्पीय, वस्तुनिष्ठ प्रकार के होंगे।

भाग– ख

प्रधान परीक्षा

प्रधान परीक्षा का उद्देश्य उम्मीदवार की जानकारी और स्मरण शक्ति का परीक्षण करना ही नहीं बल्कि उनकी समग्र बौद्धिक प्रतिभा और अवबोधन क्षमता को आंकना है.

इस परीक्षा के वैकल्पिक विषयों के प्रश्न पत्र लगभग आनर्स डिग्री स्तर के होंगे अर्थात् बैचलर डिग्री से कुछ अधिक और मास्टर डिग्री से कुछ कम. इंजीनियरी और विधि के मामले में यह स्तर बैचलर डिग्री का होगा.

अनिवार्य विषय

अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाएं

इन प्रश्न पत्रों का उद्देश्य अंग्रेजी/संबंधित भारतीय भाषा में अपने विचारों को स्पष्ट तथा सही रूप में प्रकट करना तथा गंभीर तर्क पूर्ण गद्य को पढ़ने और समझने में उम्मीदवार की योग्यता की परीक्षा करना है.

प्रश्न पत्रों का स्वरूप आमतौर पर निम्न प्रकार का होगा.

अंग्रेजी

(1) दिए गए गद्यांश को समझना.

(2) संक्षेपण

(3) शब्द प्रयोग तथा शब्द भंडार.

(4) लघु निबंध

भारतीय भाषाएं

(1) दिए गए गद्यांशों को समझना.

(2) संक्षेपण.

(3) शब्द प्रयोग तथा शब्द भंडार.

(4) लघु निबंध.

(5) अंग्रेजी से भारतीय भाषा तथा भारतीय भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद.

टिप्पणी–1 : भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के प्रश्न पत्र मैट्रिकुलेशन या समकक्ष स्तर के होंगे जिनमें केवल अर्हता प्राप्त करनी है.

इन प्रश्न पत्रों के प्राप्तांक योग्यता क्रम के निर्धारण में नहीं गिने जायेंगे.

टिप्पणी–2 : अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं के प्रश्न पत्रों के उत्तर उम्मीदवारों को अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में (अनुवाद प्रश्नों को छोड़कर) देने होंगे.

निबन्ध

उम्मीदवारों को किसी एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा. विषयों के सम्बन्ध में विकल्प दिया जाएगा. उनसे यह अपेक्षा की जाएगी कि वे अपने विचारों को क्रमबद्ध करते हुए निबन्ध के विषय से निकटता बनाए रखें और अपनी बात संक्षेप में लिखें. प्रभावशाली व सटीक अभिव्यक्तियों के लिए श्रेय दिया जाएगा.

सामान्य अध्ययन

सामान्य मार्ग-निर्देश

इस प्रश्न पत्र में प्रश्नों का स्वरूप और स्तर इस प्रकार का होगा कि कोई सुशिक्षित व्यक्ति बिना कोई विशेष अध्ययन किए इनके उत्तर दे सकेगा. प्रश्न इस प्रकार के होंगे कि इनसे विभिन्न विषयों के बारे में अभ्यर्थी की सामान्य जागरूकता की परीक्षा होगी, जिसकी सिविल सेवाओं में वृत्ति से प्रासंगिकता रहेगी. इन प्रशनों से अभ्यर्थी की ऐसे सभी मुद्दों की आधारभूत समझ की तथा द्वन्द्वयुक्त सामाजिक आर्थिक लक्ष्यों, उद्देश्यों और मांगों के विश्लेाण की तथा उन पर राय कायम करने की योग्यता की परीक्षा हो सकेगी.

अभ्यर्थी को प्रासंगिक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित उत्तर देने होंगे.

प्रश्नपत्र-1

1. आधुनिक भारत का इतिहास एवं भारतीय संस्कृतिः

आधुनिक भारत के इतिहास के अंतर्गत उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग मध्य से देश का इतिहास होगा एवं इसमें स्वतंत्रता आंदोलन तथा सामाजिक सुधारों को रूप देने वाले महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संबंध में भी प्रश्न पूछे जाएंगे. भारतीय संस्कृति

2. भारत का भूगोल :

इस भाग के अंतर्गत भारत का संविधान

3. भारत ज ा संविधा-ा एवं भारतीय राज्य व्यवस्था :

इस भाज ुे अंतर्जत भारत ज ा संविधा-ा तथा साथ ही सांविधा-िज, विधिज, प्रशास-िज एवं देश में प्रचलित राज-ैतिज-प्रशास-िज व्यवस्था से उभर-ो वाले अ-य मुद्दे होंजे.

4. समसामयिज राष्ट्रीय मुद्दे एवं सामाजिज प्रासंजिज ता से संबंधित विषय :

इस भाज ज ा अभिप्राय अभ्यर्थी ज ी समसामयिज राष्ट्रीय मुद्दों एवं वर्तमा-ा भारत ुे सामाजिज प्रासंजिज ता ुे विषयों के प्रति, जैसे ज ि -ीचे दिए जा रहे हैं ; जाजरूज ता ज ी परीजा ज र-ा है.

(i) भारतीय अर्थव्यवस्था एवं योज-ा, संसाध-ों ुे जुटाव, संवृद्धि, विज ास तथा रोजजार से संबंधित मुद्दे.

(ii) विज ास ुे लाभों से व्यापज वर्जो ुे सामाजिज एवं आर्थिज बहिष्ज रज से उभर-ो वाले मुद्दे.

(iii) मा-ाव संसाध-ा ुे विज ास एवं प्रबंध से संबंधित अ-य मुद्दे.

(iv) स्वास्थ्य ुे मुद्दे जिसमें ज ि लोज स्वास्थ्य प्रबंध, स्वास्थ्य शिजा एवं स्वास्थ्य ज ी देजभाल से संबंधित -ैतिज सरोज ार, चिजि त्सज ीय अ-ुसंधा-ा तथा भेषज -िर्माज शामिल हैं.

(v) विधि प्रवर्त-ा, आंतरिज सुरजा तथा संबंधित मुद्दे जैसे ज ि सामुदायिज सामंजस्य ज ा परिरजज.

(vi) मा-ावाधिज ारों ुे अ-ुरजज एवं लोज जीव-ा में सत्य-िष्ठा समेत सुशास-ा एवं -ाजरिज ों ुे प्रति उत्तरदायित्व से संबंधित मुद्दे.

(vii) पर्यावरज से जुड़े मुद्दे, पारिस्थितिज परिरजज, प्राज ृतिज संसाध-ों एवं राष्ट्रीय विरासत ज ा संरजज.

प्रश्-ापत्र-2

1. भारत और वि'व :

इस भाज में ऐसे प्रश्-ा होंजे जि-ासे विभिन्न जेत्रों में, जैसे ज ि -ीचे दिए जा रहे हैं; भारत-विश्व संबंध ुे प्रति अभ्यर्थी ज ी जाजरूज ता ज ी परीजा होजी :-

भारत ुे पड़ोसी देशों ुे साथ और जेत्र में संबंधों पर विशेष बल देते हुए विदेशी मामले.

सुरजा एवं रजा संबंधी मामले.

-ााभिज ीय -ीति, मुद्दे एवं द्व-द्व.

विदेशों में भारतवंशी (भारतीय डायस्पोरा) और इसज ा भारत तथा विश्व ज ो योजदा-ा.

2. भारत ज ी विश्व ुे साथ पारस्परिज आर्थिज ज्रि या:

इस भाज में आर्थिज एवं व्यापार ुे मुद्दों पर जैसे ज ि, विदेशी व्यापार, विदेशी -िवेश; तेल, जैस एवं ऊर्जा प्रवाह से संबंधित आर्थिज एवं राज-ाय ुे मुद्दों पर; भारत ुे अ-य देशों एवं अंतराष्ट्रीय संस्थाओं ुे साथ पारस्परिज आर्थिज ज्रि या ज ो प्रभावित ज र-ो वाले अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा ज ोष , विश्व बैंज, विश्व व्यापार संजठ-ा, WIPO आदि पर प्रश्-ा होंजे.

3. विज्ञा-ा एवं प्रौद्योजिज ी, सूच-ाा प्रौद्योजिज ी एवं अंतरिज ुे जेत्र में विज ास

इस भाज में विज्ञा-ा एवं प्रौद्योजिज ी, सूच-ाा प्रौद्योजिज ी, अंतरिज ुे जेत्रों में हुए विज ास एवं ज ंप्यूटर, रोबोटिक्स, -ै-ोटेक-ॉलॉजी, बायोटेक-ोलॉजी तथा बौद्धिज संपदा अधिज ारों से संबंधित मुद्दों ज ी बु-ियादी धारजा ुे प्रति अभ्यर्थी ज ी जाजरूज ता ज ी परीजा ुे लिए प्रश्-ा होंजे.

4. अंतर्राष्ट्रीय मामले एवं संस्थाएं:

इस भाज में वैश्विज मामलों ज ी महत्वपूर्ज घट-ााओं तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ुे विषय में प्रश्-ा होंजे.

5. सांज्यिज ीय विश्लेषज, आलेज एवं रेजाचित्र :

इस भाज से अभ्यर्थी सांज्यिज ीय, आलेजों एवं रेजाचित्रों ुे रूप में प्रस्तुत सूच-ाा से -िष्ज र्ष -िज ाल-ो और उ-ाज ा -िर्वच-ा ज र-ो ज ी योज्यता ज ी परीजा ज ी जाएजी.

ज ृषि विज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

पारिस्थितिज ी एवं मा-ाव ुे लिए उसज ी प्रासंजिज ता, प्राज ृतिज संसाध-ा, उ-ाुे अ-ुरजज ज ा प्रबंध तथा संरजज. सस्य वितरज एवं उत्पाद-ा ुे ज ारज ों ुे रूप में भौतिज एवं सामाजिज पर्यावरज. ज ृषि पारिस्थितिज ी; पर्यावरज ुे संजे तज ुे रूप में सस्य ज्र म. पर्यावरज प्रदूषज एवं फसलों ज ो हो-ो वाले इससे संबंधित जतरे. पशु एवं मा-ा. जलवायु परिवर्त-ा- अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय एवं भूमंडलीय पहल. ज्री-ा हाऊस प्रभाव एवं भूमंडलीय ताप-ा. पारितंत्र विश्लेषज ुे प्रजत उपज रज- सुदूर संवेद-ा एवं भौजोलिज सूच-ाा प्रजालियाँ.

देश ुे विभिन्न ज ृषि जलवायु जेत्रों में सस्य ज्र म. सस्य ज्र म में विस्थाप-ा पर अधिज पैदावार वाली तथा अल्पावधि ज िस्मों ज ा प्रभाव. विभिन्न सस्य-ा एवं ज ृषि प्रजालियों ज ी संज ल्प-ााएँ. जैव एवं परिशुद्धता ज ृषि. महत्वपूर्ज अ-ााज, दलह-ा, तिलह-ा, रेशा, शर्ज रा, वाजिज्यिज एवं चारा फसलों ुे उत्पाद-ा हेतु पैजे ज रीतियाँ.

विभिन्न प्रज ार ुे व-ा रोपज जैसे ज ि सामाजिज वा-िज ी, ज ृषि वा-िज ी एवं प्राज ृतिज व-ाों ज ी मुज्य विशेषताएं तथा विस्तार. व-ा पादपों ज ा प्रसार. व-ाोत्पाद. ज ृषि वा-िज ी एवं मूल्य परिवर्ध-ा. व-ाों ज ी व-ास्पतियों और जंतुओं ज ा संरजज.

जरपतवार, उ-ाज ी विशेषताएं, प्रज ीर्ज-ा तथा विभिन्न फसलों ुे साथ उ-ाज ी संबद्धता; उ-ाज ा जुज-ा; जरपतवारों ज ा संवंधी, जैव तथा रासाय-िज -ियंत्रज. मृदा-भौतिज, रासाय-िज तथा जैविज जुजधर्म. मृदा रच-ाा ुे प्रज्र म तथा ज ारज. भारत ज ी मृदाएँ. मृदाओं ुे ज-िज तथा ज ार्ब-िज संघटज तथा मृदा उत्पादज ता अ-ुरजज में उ-ाज ी भूमिज ा. पौधों ुे लिए आवश्यज पोषज तत्व तथा मृदाओं और पादपों ुे अ-य लाभज र तत्व. मृदा उर्वरता, मृदा परीजज एवं उर्वरज संस्ताव-ाा ुे सिद्धांत. समाज लित पोषज तत्व प्रबंध. जैव उर्वरज. मृदा में -ााइट्रोज-ा ज ी हा-ि, जलमज्-ा धा-ा-मृदा में -ााइट्रोज-ा उपयोज जमता. मृदा में -ााइट्रोज-ा योजिज ीज रज. फास्फोरस एवं पोटैशियम ज ा दज उपयोज. समस्याज-ाज मृदाएँ तथा उ-ाज ा सुधार. ज्री-ा हाऊस जैस उत्सर्ज-ा ज ो प्रभावित ज र-ो वाले मृदा ज ारज. मृदा संरजज, समाज लित जल-विभाज-ा प्रबंध-ा. मृदा अपरद-ा एवं इसज ा प्रबंध-ा. वर्षाधी-ा ज ृषि और इसज ी समस्याएँ. वर्षा पोषित ज ृषि जेत्रों में ज ृषि उत्पाद-ा में स्थिरता ला-ो ज ी प्रौद्योजिज ी.

सस्य उत्पाद-ा से संबंधित जल उपयोज जमता, सिंचाई ज ार्यज्र म ुे मा-ादंड, सिंचाई जल ज ी अपवाह हा-ि ज ो ज म ज र-ो ज ी विधियाँ तथा साध-ा. ड्रिप तथा छिड़ज ाव द्वारा सिंचाई. जलाज्र ांत मृदाओं से जल-िज ास, सिंचाई जल ज ी जुजवत्ता, मृदा तथा जल प्रदूषज पर औद्योजिज बहिस्रावों ज ा प्रभाव. भारत में सिंचाई परियोज-ााएँ.

फार्म प्रबंध-ा, विस्तार, महत्व तथा विशेषताएँ, फार्म आयोज-ाा. संसाध-ों ज ा इष्टतम उपयोज तथा बजट-ा. विभिन्न प्रज ार ज ी ज ृषि प्रजालियों ज ा अर्थशास्त्र. विपज-ा प्रबंध-ा- विज ास ज ी ज ार्य-ीतियाँ,

बाजार आसूच-ाा. ज ीमत में उतार-चढ़ाव एवं उ-ाज ी लाजत ;ज ृषि अर्थव्यवस्था में सहज ारी संस्थाओं ज ी भूमिज ा; ज ृषि ुे प्रज ार तथा प्रजालियाँ और उ-ाज ो प्रभावित ज र-ो वाले ज ारज. ज ृषि ज ीमत -ीति. फसल बीमा.

ज ृषि विस्तार, इसज ा महत्व और भूमिज ा, ज ृषि विस्तार ज ार्यज्र मों ुे मूल्यांज-ा ज ी विधियाँ, सामाजिज-आर्थिज सर्वेजज तथा छोटे-बड़े और सीमांत ज ृषज ों व भूमिही-ा ज ृषि श्रमिज ों ज ी स्थिति. विस्तार ज ार्यज र्ताओं ुे लिए प्रशिजज ज ार्यज्र म. ज ृषि प्रौद्योजिज ी ुे प्रसार में ज ृषि विज्ञा-ा ुे-द्रों ज ी भूमिज ा. जैर सरज ारी संजठ-ा तथा ज्रामीज विज ास ुे लिए स्व-सहायता उपाजम.

प्रश्-ापत्र-2

ज ोशिज ा संरच-ाा, प्रज ार्य एवं ज ोशिज ा चज्र. आ-ुवंशिज उपादा-ा ज ा संश्लेषज, संरच-ाा तथा प्रज ार्य. आ-ुवंशिज ता ुे -ियम. जुजवत्ता संरच-ाा, जुजसूत्र विपथ-ा, सहलज्-ाता एवं जी-ा-वि-िमय, एवं पु-ार्योज-ा प्रज-ा-ा में उ-ाज ी सार्थज ता. बहुजुजिता, सुजुजित तथा असुजुजित. उत्परिवर्त-ा - एवं सस्य सुधार में उ-ाज ी भूमिज ा. वंशाजतित्व, बंध्यता तथा असंयोज्यता, वर्जीज रज तथा सस्य सुधार में उ-ाज ा अ-ुप्रयोज. ज ोशिज ा द्रव्यी वंशाजति, लिंज सहलज्-ा, लिंज प्रभावित तथा लिंज सीमित लजज.

पादप प्रज-ा-ा ज ा इतिहास. ज-ा-ा ज ी विधियाँ, स्व-िषेच-ा तथा संज रज प्रविधियाँ. सस्य पादपों ज ा उद्जम, विज ास एवं उपजाया जा-ाा, उद्जम ुे-द्र, समजात श्रेजी ज ा -ियम, सस्य आ-ुवंशिज संसाध-ा - संरजज तथा उपयोज. पादप प्रज-ा-ा ुे सिद्धांतों ज ा अ-ुप्रयोज, सस्य पादपों ज ा सुधार. आज्विज सूचज एवं पादप सुधार में उ-ाज ा अ-ुप्रयोज. शुद्ध वंशज्र म वरज, वंशावली, समूह तथा पु-ारावर्ती वरज, संयोजी जमता, पादप प्रज-ा-ा में इसज ा महत्व. संज र ओज एवं उसज ा उपयोज. ज ाय संज रज. रोज एवं पीड़ज प्रतिरोध ुे लिए प्रज-ा-ा. अंतराजातीय तथा अंतरावंशीय संज रज ज ी भूमिज ा. सस्य सुधार में आ-ुवंशिज इंजी-ियरी एवं जैव प्रौद्योजिज ी ज ी भूमिज ा. आ-ुवंशिज त: रूपांतरित सस्य पादप.

बीज उत्पाद-ा एवं प्रसंस्ज रज प्रौद्योजिज ियां. बीच प्रमाज-ा, बीज परीजज एवं भंडारज. DNA फिंजरप्रिंटिंज एवं बीज पंजीज रज. बीज उत्पाद-ा एवं विपज-ा में सरज ारी एवं -िजी जेत्रों ज ी भूमिज ा. बौद्धिज संपदा अधिज ार संबंधी मामले.

पादप पोषज, पोषज तत्वों ुे अवशोषज, स्था-ाा-तरज एवं उपापचय ुे संदर्भ में पादप ज ार्यिज ी ुे सिद्धांत. मृदा-जल पादप संबंध.

प्रज ि ज्व एवं पादप-वर्जज ; प्रज ाशसंश्लेषज- आधु-िज संज ल्प-ााएँ और इसज ुे प्रज्र म ज ो प्रभावित ज र-ो वाले ज ारज, आक्सी व अ-ााक्सी श्वस-ा ; C_3 , C_4 एवं CAM ज्रि याविधियाँ. ज ार्बोहाइड्रेट, प्रोटी-ा एवं वसा

उपापचय. वृद्धि एवं परिवर्ध-ा ; दीप्तिजालिता एवं वसंतीजरज. पादप वृद्धि उपादा-ा एवं सस्य उत्पाद-ा में इ-ाजी भूमिजा. बीज परिवर्ध-ा एवं अ-ाुरज जी जार्यिजी; प्रसुप्ति. प्रतिबल जार्यिजी- वातप्रवाह, लवज एवं जल प्रतिबल. प्रमुज फल, बाजा-ा फसल, सब्जियाँ, मसाले एवं पुष्पी फसल. प्रमुज बाजवा-ी फसलों जी पैजेज रीतियाँ. संरजित जृषि एवं उच्च तज-ीजी बाजवा-ी. तुड़ाई जे बाद जी प्रौद्योगिजी एवं फलों व सब्जियों जा मूल्यवर्ध-ा. भूसुदर्श-ीजरज एवं वाजिज्यिज पुष्पजृषि. औषधीय एवं एरोमैटिज पौधे. मा-ाव पोषज में फलों व सब्जियों जी भूमिजा.

पीड़जों एवं फसलों, सब्जियों, फलोद्या-ों एवं बाजा-ा फसलों जे रोगों जा -िदा-ा एवं उ-ाजा आर्थिज महत्व. पीड़जों एवं रोगों जा वर्गीजरज एवं उ-ाजा प्रबंध-ा. भंडारज जे पीड़ज और उ-ाजा प्रबंध-ा. पीड़जों एवं रोगों जी जीव वैज्ञानिज रोजथाम. जा-ापदिज रोग विज्ञा-ा एवं प्रमुज फसलों जी पीड़जों व रोगों जा पूर्वा-ुमा-ा. पादप संजरोध उपाय. पीड़ज -ााशज, उ-ाजा सूत्रज एवं जार्यप्रजार.

भारत में जाद्य उत्पाद-ा एवं उपभोज जी प्रवृत्तियां. जाद्य सुरजा एवं ज-ासंज्या वृद्धि-दृष्टि 2020 अन्न अधिशेष जे जारज. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जाद्य -ीतियां, अधिप्राप्ति, वितरज जी बाध्यताएं.

जाद्यान्नों जी उपलब्धता, जाद्य पर प्रति व्यक्ति व्यय. जरीबी जी प्रवृत्तियाँ, ज-ा वितरज प्रजाली तथा जरीबी रेजा जे -ीचे जी ज-ासंज्या, लज्यो-मुजी ज-ा वितरज प्रजाली (PDS)] भूमंडलीजरज जे संदर्भ में -ीति जार्या-वय-ा. प्रजम बाध्यताएं. जाद्य उत्पाद-ा जा राष्ट्रीय आहार दिशा-िर्देशों एवं जाद्य उपभोज प्रवृति से संबंध. जुधाशम-ा जे लिए जाद्याधारित आहार उपाजम. पोषज तत्वों जी -यू-ाता- सूज्म पोषज तत्व -यू-ाता : प्रोटी-ा ऊर्जा जुपोषज या प्रोटी-ा जैलोरी जुपोषज (PEM या PCM), महिलाओं और बच्चों जी जार्यजमता जे संदर्भ में सूज्म पोषज तत्व -यू-ाता एवं मा-ाव संसाध-ा विजास. जाद्यान्न उत्पादजता एवं जाद्य सुरजा.

पशुपाल-ा एवं पशुचिजित्सा विज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

1. पशु पोषज :

1.1 पशु जे अंदर जाद्य ऊर्जा जा विभाज-ा. प्रत्यज एवं अप्रत्यज उष्मामिति. जार्ब-ा --ााइट्रोज-ा संतुल-ा एवं तुल-ात्मज वध विधियां. रोमंथी पशुओं, सुअरों एवं जुज्जुटों में जाद्य जा ऊर्जामा-ा व्यक्त जर-ो जे सिद्धांत. अ-ुरजज, वृद्धि, सजर्भता, स्त-य स्राव तथा अंडा, ऊ-ा एवं मांस उत्पाद-ा जे लिए ऊर्जा आवश्यजताएं.

1.2 प्रोटी-ा पोषज में -वी-ातम प्रजति. ऊर्जा - प्रोटी-ा संबंध. प्रोटी-ा जुजता जा मूल्यांज-ा. रोमंथी आहार में NPNयौजिजों जा प्रयोज. अ-ुरजज, वृद्धि, सजर्भता, स्त-य स्राव तथा अंडा, ऊ-ा एवं मांस उत्पाद-ा जे लिए प्रोटी-ा आवश्यजताएं.

1.3 प्रमुज एवं लेश ज-िज - उ-ाजे स्रोत, शरीरज्रियात्मज प्रजार्य एवं ही-ाता लजज. विषैले ज-िज. ज-िज अंत:ज्रियाएं. शरीर में वसा-घुल-ाशील तथा जलघुल-ाशील ज-िजों जी भूमिजा, उ-ाजे स्रोत एवं ही-ाता लजज.

1.4 आहार संयोजी - मीथे-ा संदमज, प्रोबायोटिज, ए-जाइम, ऐंटिबायोटिज, हार्मो-ा, ओलिजो शर्जराइड, ऐंटिऑक्सिडेंट, पायसीजारज, संच संदमज, उभयरोधी, इत्यादि. हार्मो-ा एवं ऐंटिबायोटिक्स जैसे वृद्धिवर्धजों जा उपयोज एवं दुष्प्रयोज--वी-ातम संज्ल्प-ााएं.

1.5 चारा संरजज. आहार जा भंडारज एवं आहार अवयव. आहार प्रौद्योगिजी एवं आहार प्रसंस्जरज में अभि-ाव प्रजति. पशु आहार में उपस्थित पोषजरोधी एवं विषैले जारज. आहार विश्लेषज एवं जुजता -ियंत्रज. पाच-ीयता अभिप्रयोज - प्रत्यज, अप्रत्यज एवं सूचज विधियां. चारज पशुओं में आहार ज्रहज प्राजुक्ति.

1.6 रोमंथी पोषज में हुई प्रजति. पोषज तत्व आवश्यजताएं. संतुलित राश-ा. बछड़ों, सजर्भा, जामजाजी पशुओं एवं प्रज-ा-ा सांड़ों जा आहार. दुधारू पशुओं जो स्त-यस्राव चज्र जी विभिन्न अवस्थाओं जे दौरा-ा आहार दे-ो जी युक्तियां. दुग्ध संयोज-ा आहार जा प्रभाव. मांस एवं दुग्ध उत्पाद-ा जे लिए बजरी/बजरे जा आहार. मांस एवं ऊ-ा उत्पाद-ा जे लिए भेंड़ जा आहार.

1.7 शूजर पोषण. पोषज आवश्यजताएं, विसर्पी, प्रवर्तज, विजास-ा एवं परिष्जारज राश-ा. बेचरबी मांस उत्पाद-ा हेतु शूजर - आहार. शूजर जे लिए जम लाजत जे राश-ा.

1.8 जुज्जुट पोषज. जुज्जुट पोषज जे विशिष्ट लजज. मांस एवं अंडा उत्पाद-ा हेतु पोषज आवश्यजताएं. अंडे दे-े वालों एवं ब्रौलरों जी विभिन्न श्रेजियों जे लिए राश-ा संरूपज.

2. पशु शरीर ज्रिया विज्ञा-ा :

2.1 रक्त जी जार्यिजी एवं इसजा परिसंचरज, श्वस-ा; उत्सर्ज-ा, स्वास्थ्य एवं रोजों में अंत:स्रावी ज्रंथि.

2.2 रक्त जे घटज - जुजधर्म एवं प्रजार्य - रक्त जोशिजा रच-ाा - हीमोज्लोबि-ा संश्लेषज एवं रसायि-ाजी - प्लाज्मा प्रोटी-ा उत्पाद-ा, वर्गीजरज एवं जुजधर्म, रक्त जा स्जंद-ा; रक्त स्रावी विजार - प्रतिस्जंदज -रक्त समूह -रक्त मात्रा - प्लाज्मा विस्तारज - रक्त में उभयरोधी प्रजाली. जैव रासायनिज परीजज एवं रोज -िदा-ा में उ-ाजा महत्व.

2.3 परिसंचरज - हृदय जी जार्यिजी, अभिहृद चज्र, हृदध्वनि, हृद्स्पंद, इलेक्ट्रोजार्डियोजाम. हृदय जा जार्य और दजता - हृदय प्रजार्य में आय-ों जा प्रभाव - अभिहृद पेशी जा उपापचय, हृदय जा तंत्रिजा - नियम-ा एवं रासायनिज नियम, हृदय पर ताप एवं त-ााव जा प्रभाव, रक्त दाब एवं अतिरिक्त दाब, परासरज नियम-ा, धम-ी स्पंद, परिसंचरज जा वाहिजाप्रेरज नियम-ा, स्तब्धता, हृद एवं फुफ्फुस परिसंचरज, रक्त मस्तिष्ज रोध - मस्तिष्ज तरल - पजियों में परिसंचरज.

2.4 श्वस-ा - श्वस-ा ज्रिया विधि, जैसों जा परिवह-ा एवं विनिमय - श्वस-ा जा तंत्रिजा नियंत्रज, रसोज्राही, अल्पआक्सीयता, पजियों में श्वस-ा.

2.5 उत्सर्ज-ा - वृक्ज जी संरच-ाा एवं प्रजार्य - मूत्र निर्माज - वृक्ज प्रजार्य अध्यय-ा विधियां - वृक्जीय अम्ल - जार संतुल-ा नियम-ा :मूत्र जे शरीरज्रियात्मज घटज - वृक्ज पात - निश्चेष्ट शिरा रक्ताधिक्य - चूजों में मूत्र स्रवज - स्वेदज्रंथियां एवं उ-ाजे प्रजार्य. मूत्रीय दुष्ज्रिया जे लिए जैवरासायनिज परीजज.

2.6 अंत: स्रावी ज्रंथियां - प्रजार्यात्मज दुष्ज्रिया उ-ाजे लजज एवं -िदा-ा. हार्मो-ों जा संश्लेषज, स्रवज जी ज्रियाविधि एवं नियंत्रज - हार्मो-ीय ज्राही - वर्गीजरज एवं प्रजार्य.

2.7 वृद्धि एवं पशु उत्पाद-ा - प्रसवपूर्व एवं प्रसव पश्चात् वृद्धि, परिपक्वता, वृद्धिवज्र, वृद्धि जे माप, वृद्धि जो प्रभावित जर-े वाले जारज, ज-फार्मेश-ा, शारीरिज जठ-ा, मांस जुजता.

2.8 दुग्ध उत्पाद जी जार्यिजी, ज-ा-ा एवं पाच-ा - स्त-ा विजास जे हार्मो-ीय नियंत्रज जी वर्तमा-ा स्थिति, दुग्ध स्रवज एवं दुग्ध निष्जास-ा, -र एवं मादा ज-ा-ा अंज, उ-ाजे अवयव एवं प्रजार्य. पाच-ा अंज एवं उ-ाजे प्रजार्य.

2.9 पर्यावरजीय जार्यिजी - शरीर ज्रियात्मज संबंध एवं उ-ाजा नियम-ा, अ-ुजूल-ा जी ज्रिया विधि, पशु व्यवहार में शामिल पर्यावरजीय जारज एवं नियामज ज्रियाविधियां, जलवायु विज्ञा-ा - विभिन्न प्राचल एवं उ-ाजा महत्व. पशु पारिस्थितिजी, व्यवहार जी जार्यिजी, स्वास्थ्य एवं उत्पाद-ा पर त-ााव जा प्रभाव.

3. पशुज-ा-ा :

वीर्य जुजता - संरजज एवं जृत्रिम वीर्यसेच-ा - वीर्य जे घटज, स्पर्मेटाजोआ जी रच-ाा, स्जलित वीर्य जा भौतिज एवं रासायनिज जुजधर्म, जीवे एवं पात्रे वीर्य जो प्रभावित जर-े वाले जारज. वीर्य उत्पाद-ा एवं जुजता जो प्रभावित जर-े वाले जारज. संरजज, त-ुजारजों जी रच-ाा, शुज्राजु संज्रेद्रज, त-ूजृत वीर्य जा परिवह-ा. जायों, भेड़ों, बजरों शूजरों एवं जुज्जुटों में जह-ा प्रशीत-ा ज्रियाविधियां. स्त्रीमद जी पहचा-ा तथा बेहतर जर्भाधा-ा हेतु वीर्यसेच-ा जा समय. अमद अवस्था एवं पु-ारावर्ती प्रज-ा-ा.

4. पशुध-ा उत्पाद-ा एवं प्रबंध :

4.1 वाजिज्यिज डेरी फार्मिंज - उन्नत देशों जे साथ भारत जी डेरी फार्मिंज जी तुल-ाा. मिश्रित जृषि जे अधी-ा एवं विशिष्ट जृषि जे रूप में डेरी उद्योज. आर्थिज डेरी फार्मिंज. डेरी फार्म शुरू जर-ाा, पूंजी एवं भूमि आवश्यजताएं, डेरी फार्म जा संजठ-ा. डेरी फार्मिंज में अवसर, डेरी पशु जी दजता जो -िर्धारित जर-े वाले जारज. यूथ अभिलेज-ा, बजट-ा, दुग्ध उत्पाद-ा जी लाजत, जीमत -िर्धारज -ीति, जार्मिज प्रबंध. डेरी जोपशुओं जे लिए व्यावहारिज एवं जिफायती राश-ा विजसित जर-ाा; वर्ष भर हरे चारे जी पूर्ति, डेरी फार्म हेतु आहार एवं चारे जी आवश्यजताएं. छोटे पशुओं एवं सांड़ों, बछियों एवं प्रज-ा-ा पशुओं जे लिए आहार प्रवृतियां; छोटे एवं वयस्ज पशुध-ा आहार जी -ई प्रवृतियां, आहार अभिलेज.

4.2 वाजिज्यिज मांस, अंडा एवं ऊ-ा उत्पाद-ा - भेड़, बजरी, शूजर, जरजोश एवं जुज्जुट जे लिए व्यावहारिज एवं जिफायती राश-ा विजसित जर-ाा. चारा, हरे चारे जी पूर्ति, छोटे एवं परिपक्व पशुध-ा जे लिए आहार प्रवृतियां. उत्पाद-ा बढ़ा-े एवं प्रबंध-ा जी -ई प्रवृतियां. पूंजी एवं भूमि आवश्यजताएं एवं सामाजिज आर्थिज संज्ल्प-ाा.

4.3 सूजा, बाढ़ एवं अ-य -ैसर्जिज आपदाओं से ज्रस्त पशुओं जा आहार एवं उ-ाजा प्रबंध.

5. आ-ुवंशिजी एवं पशु - प्रज-ा-ा :

पशु आ-ुवंशिजी जा इतिहास. सूत्री विभाज-ा एवं अर्धसूत्री विभाज-ा: मेंडल जी वंशाजति; मेंडल जी आ-ुवंशिजी से विचल-ा ;जी-ा जी अभिव्यक्ति; सहलज-ाता एवं जी-ा - विनियम-ा; लिंज -िर्धारज, लिंज प्रभावित एवं लिंज सीमित लजज; रक्त समूह एवं बहुरूपता; जुजसूत्र विपथ-ा; जोशिज द्रव्य वंशाजति. जी-ा एवं इसजी संरच-ाा आ-ुवंशिज पदार्थ जे रूप में DNA;आ-ुवंशिज जूट एवं प्रोटी-ा संश्लेषज ;पु-ार्योजज DNA प्रौद्योगिजी. उत्परिवर्त-ा, उत्परिवर्त-ा जे प्रजार, उत्परिवर्त-ा एवं उत्परिवर्त-ा दर जो पहचा-ा-े जी विधियां, पारज-ा-ा.

5.1 पशु प्रज-ा-ा पर अ-ाुप्रयुक्त समष्टि आ-ुवंशिजी - मात्रात्मज और इसजी तुल-ाा में जुजात्मज विशेषज; हार्डी वी-बर्ज -ियम; समष्टि और इसजी तुल-ाा में व्यष्टि; जी-ा एवं जी-ा प्ररूप बारंबारता; जी-ा बारंबारता जो परिवर्तित जर-े वाले बल; यादृच्छिज अपसरज एवं लघु समष्टियां; पथ जुजांज जा सिद्धांत; अंत-प्रज-ा-ा, अंत-प्रज-ा-ा जुजांज आज्ल-ा जी विधियां, अंत: प्रज-ा-ा प्रजालियां, प्रभावी समष्टि आजार; विभिन्नता संवितरज; जी-ा प्ररूप x पर्यावरज सहसंबंध एवं जी-ा प्ररूप x पर्यावरज अंत:ज्रिया; बहु मापों जी भूमिजा;संबंधियों जे बीच समरूपता.

5.2 प्रज-ा-ा तंत्र - पशुध-ा एवं जुज्जुटों जी -ास्लें, वंशाजतित्व, पु-ारावर्त-ीयता एवं आ-ुवंशिज एवं समलजजीय सहसंबंध, उ-ाजी आज्ल-ा विधि एवं आज्ल-ा परिशुद्धि; वरज जे साध-ा एवं उ-ाजी संजत योज्यताएं; व्यष्टि, वंशावली, जुल एवं जुलांतर्जत वरज; संतति परीजज; वरज विधियां; वरज सूचजों जी रच-ाा एवं उ-ाजा उपयोज; विभिन्न वरज विधियों द्वारा आ-ुवंशिज लब्धियों जा तुल-ाात्मज मूल्यांज-ा; अप्रत्यज वरज एवं सहसंबंधित अ-ुज्रिया; अंत:प्रज-ा-ा, बहि:प्रज-ा-ा, अपज्रेडिंज, संजरज एवं प्रज-ा-ा संश्लेषज; अंत: प्रजनित लाइ-ों जा वाजिज्यिज प्रयोज-ों हेतु संजरज; सामा-य एवं विशिष्ट संयोज-ा योज्यता हेतु वरज; देहली लजजों जे लिए प्रज-ा-ा. सायर इंडेक्स.

6. विस्तार :

विस्तार जा आधारभूत दर्श-ा, उद्देश्य, संज्ल्प-ाा एवं सिद्धांत. जिसा-ों जो ज्रामीज दशाओं में शिजित जर-े जी विभिन्न विधियां. प्रौद्योगिजी पीढ़ी, इसजा अंतरज एवं प्रतिपुष्टि. प्रौद्योगिजी अंतरज में समस्याएं एवं जठि-ााइयां. ज्रामीज विजास हेतु पशुपाल-ा जार्यज्रम.

प्रश्-ापत्र-2

1. शरीर रच-ाा विज्ञा-ा, भेषज जुज विज्ञा-ा एवं स्वास्थ्य विज्ञा-ा :

1.1 ऊतज विज्ञा-ा एवं उतजीय तज-ीज :उतज प्रज्मज एवं H.E अभिरंज-ा जी पैराफी-ा अंत:स्थापित तज-ीज - हिमीजरज माइज्रोटोमी - सूज्मदर्शिजी - दीप्त जेत्र सूज्मदर्शी एवं इलेक्ट्रा-ा सूज्मदर्शी. जोशिजा जी जोशिजाविज्ञा-ा संरच-ाा, जोशिजांज एवं अंतर्वेश-ा; जोशिजा विभाज-ा - जोशिजा प्रजार - ऊतज एवं उ-ाजा वर्गीजरज - भ्रूजीय एवं वयस्ज ऊतज - अंजों जा तुल-ाात्मज ऊतज विज्ञा-ा - संवह-ी. तंत्रिजा, पाच-ा, श्वस-ा, पेशी जंजाली एवं ज-ा-मू-ा तंत्र - अंत:स्रावी ज्रंथियां - अध्यावरज - संवेदी अंज.

1.2 भ्रूज विज्ञा-ा - पजिवर्ज एवं घरेलू स्त-ापायियों जे विशेष संदर्भ जे साथ जशेरुजियों जा भ्रूज विजा-ा - युज्मज ज-ा-ा-निषेच-ा-ज-ा-ा स्तर- जर्भ झिल्ली एवं अपरा-यास - घरेलू स्त-ापायियों में अपरा जे प्रजार - विरूपताविज्ञा-ा - यमल एवं यमल-ा - अंजविजास - ज-ा-ा स्तर व्युत्पन्न - अंतश्चर्मी, मध्यचर्मी एवं बहिर्चर्मी व्युत्पन्न.

1.3 जो - शारीरिजी - जेत्रीय शारीरिजी : वृषभ जे पैरा-ासीय जोटर - लारज्रंथियों जी बहिस्तल शारीरिजी. अव-ेत्रजोटर, जंभिजा, चिबुज - जूपिजा, मा-ासिज एवं शृंजी तंत्रिजा रोध जी जेत्रीय शारीरिजी. पराजशेरुज तंत्रिजाओं जी जेत्रीय शारीरिजी, जुह्य तंत्रिजा, मध्यम तंत्रिजा, अंत:प्रजोष्ठिजा तंत्रिजा एवं बहि: प्रजोष्ठिजा तंत्रिजा - अंतर्जंघिजा, बहिर्जंघिजा एवं अंजुलि तंत्रिजाएं - जपाल तंत्रिजाएं - अधिदृढ़तानिज संज्ञाहरज में शामिल संरच-ााएं - उपरिस्थ लसीजा पर्व - वजीय, उदरीय तथा श्रोजीय जुहिजा जे अंतरांजों जी बहिस्तर शारीरिजी - जतितंत्र जी तुल-ाात्मज विशेषताएं एवं स्त-ापायी शरीर जी जैवयांत्रिजी में उ-ाजा अ-ुप्रयोज.

1.4 जुज्जुट शारीरिजी - पेशी - जंजाली तंत्र - श्वस-ा एवं उड़-े जे संबंध में प्रजार्यात्मज शारीरिजी, पाच-ा एवं अंडोत्पाद-ा.

1.5 भेषज जुज विज्ञा-ा एवं भेषज बलजतिजी जे जोशिजीय स्तर. तरलों पर जार्यजारी औषधें एवं विद्युत अपघट्य संतुल-ा. स्वसंचालित तंत्रिजा तंत्र पर जार्यजारी औषधें. संज्ञाहरज जी आधुनिज संज्ल्प-ााएं एवं वियोजी संज्ञाहरज. ऑटाजॉइड. प्रतिरोजाजु एवं रोजाजु संज्रमज में रसाय-ा चिजित्सा जे सिद्धांत. चिजित्साशास्त्र में हार्मो-ों जा उपयोज-परजीवी संज्रमजों में रसाय-ा चिजित्सा. पशुओं जे जाद्य ऊतजों में औषध एवं आर्थिज सरोजार - अर्बुद रोजों में रसाय-ा चिजित्सा. जीट-ााशजों, पौधों, धातुओं, अधातुओं, जंतुविषों एवं जवज विषों जे जारज विषालुता.

1.6 जल, वायु एवं वासस्था-ा जे संबंध जे साथ पशु स्वास्थ्य विज्ञा-ा - जल, वायु एवं मृदा प्रदूषज जा आज्ल-ा - पशु स्वास्थ्य में जलवायु जा महत्व - पशु जार्य एवं निष्पाद-ा में पर्यावरज जा प्रभाव - पशु जृषि एवं औद्योजीजरज जे बीच संबंध - विशेष श्रेजी जे घरेलू पशुओं, यथा, सजर्भा जौ एवं शूजरी, दुधारू जाय, ब्रायलर पजी जे लिए आवास आवश्यजताएं - पशु वासस्था-ा जे संबंध में त-ााव, श्रांति एवं उत्पादजता.

2. पशु रोज :

2.1 जोपशु, भेड़ तथा अजा, घोड़ा, शूजर तथा जुज्जुट जे संज्रामज रोजों जा रोजजारज, जा-ापादित रोज विज्ञा-ा, रोजज-ा-ा, लजज, मरजोत्तर विजति, -िदा-ा एवं -ियंत्रज.

2.2 जोपशु, घोड़ा, शूजर एवं जुज्जुट जे उत्पाद-ा रोजों जा रोजजारज, जा-ापादित रोज विज्ञा-ा, लजज, -िदा-ा, उपचार.

2.3 घरेलू पशुओं और पजियों जे ही-ाता रोज.

2.4 अंतर्घट्ट-ा, अफरा, प्रवाहिजा, अजीर्ज, निर्जलीजरज, आघात, विषाक्तता जैसी अविशिष्ट दशाओं जा -िदा-ा एवं उपचार.

2.5 तंत्रिजा वैज्ञानिज विजारों जा -िदा-ा एवं उपचार.

2.6 पशुओं जे विशिष्ट रोजों जे प्रति प्रतिरजीजरज जे सिद्धांत एवं विधियां - यूथ प्रतिरजा - रोजमुक्त जेत्र शू-य रोज संज्ल्प-ाा - रसाय-ा रोज -िरोध.

2.7 संज्ञाहरज - स्थानिज, जेत्रीय एवं सार्वदेहिज - संज्ञाहरज पूर्व औषध प्रदा-ा. अस्थिभंज एवं संधिच्युति में लजज एवं शल्य व्यतिजरज. हर्निया, अवरोध, चतुर्थ आमाशयी विस्थाप-ा - सिजेरिय-ा शस्त्रज्र्म. रोमंथिजा - छेद-ा - ज-ादज-ााश-ा.

2.8 रोज जांच तज-ीज - प्रयोजशाला जांच हेतु सामज्री - पशु स्वास्थ्य जे-द्रों जी स्थाप-ाा - रोजमुक्त जेत्र.

3. सार्वजनिज पशु स्वास्थ्य :

3.1 पशुज-य रोग - वर्गीजरज, परिभाषा, पशुज-य रोगों जी व्यापजता एवं प्रसार में पशुओं एवं पजियों जी भूमिजा - पेशाजत पशुज-य रोग.

3.2 जा-ापदिज रोग विज्ञा-ा - सिद्धांत, जा-ापदिज रोग विज्ञा-ा संबंधी पदावली जी परिभाषा, रोग तथा उ-ाजी रोजथाम जे अध्यय-ा में जा-ापदिज रोगविज्ञा-ी उपायों जा अ-ाुप्रयोज. वायु जल तथा जाद्य जनित संज्रमणों जे जा-ापदिज रोग विज्ञा-ीय लजज, OIE विनियम, WTO स्वच्छता एवं पादप - स्वच्छता उपाय.

3.3 पशुचिजित्सा विधिशास्त्र - पशुजुजवत्ता सुधार तथा पशु रोग निवारज जे लिए नियम एवं विनियम - पशुजनित एवं पशु उत्पाद जनित रोगों जे निवारज हेतु राज्य एवं जे-द्र जे नियम -SPCA-पशु चिजित्सा - विधिज मामले - प्रमाजपत्र - पशु चिजित्सा - विधिज जांच हेतु -ामू-ों जे संज्रहज जी सामग्रियां एवं विधियां.

4. दुग्ध एवं दुग्धोत्पाद प्रौद्योजिजी :

4.1 बाजार जा दूध : जच्चे दूध जी जुजता, परीजज एवं जोटि निर्धारज. प्रसंस्जरज, परिवेष्ट-ा, भंडारज, वितरज, विपज-ा, दोष एवं उ-ाजी रोजथाम. नि-ालिजित प्रजार जे दूध जो ब-ाा-ाा:पाश्चुरीजृत, मा-ाजित, टो-ड, डबल टो-ड, निर्जीवाजुजृत, समांजीजृत, पु-ार्निमित पु-ार्संयोजित एवं सुवासित दूध. संवर्धित दूध तैयार जर-ाा, संवर्ध-ा तथा उ-ाजा प्रबंध, योजर्ट, दही, लस्सी एवं श्रीजंड. सुवासित एवं निर्जीवाजुजृत दूध तैयार जर-ाा. विधिज मा-ाज. स्वच्छ एवं सुरजित दूध तथा दुग्ध संयंत्र उपस्जर हेतु स्वच्छता आवश्यजताएं.

4.2 दुग्ध उत्पाद प्रौद्योजिजी : जच्ची सामग्री जा चय-ा, ज्रीम, मक्ज-ा, घी, जोया, छे-ाा, चीज, संघनित, वाष्पित, शुष्जित दूध एवं शिशु आहार, आइसज्रीम तथा जुल्फी जैसे दुग्ध उत्पादों जा प्रसंस्जरज, भंडारज, वितरज एवं विपज-ा;उपोत्पाद, छे-ो-े पा-ी जे उत्पाद, छाछ (बटर मिल्ज), लैक्टोज एवं जेसी-ा. दूध उत्पादों जा परीजज, जोटि - निर्धारज, उ-हें परज-ाा. BISएवं एजमार्ज विनिर्देश-ा, विधिज मा-ाज, जुजता नियंत्रज एवं पोषज जुज. संवेष्ट-ा, प्रसंस्जरज एवं संज्रियात्मज नियंत्रज. डेरी उत्पादों जा लाजत निर्धारज.

5. मांस स्वास्थ्य विज्ञा-ा एवं प्रौद्योजिजी :

5.1 मांस स्वास्थ्य विज्ञा-ा

5.1.1 जाद्य पशुओं जी मृत्यु पूर्व देजभाल एवं प्रबंध, विसंज्ञा, वध एवं प्रसाध-ा संज्रिया; वधशाला आवश्यजताएं एवं अभिजल्प ;मांस निरीजज प्रज्रियाएं एवं पशुशव मांसजंडों जो परज-ाा - पशुशव मांस जंडों जा जोटि निर्धारज - पुष्टिजर मांस उत्पाद-ा में पशुचिजित्सजों जे जर्तव्य और जार्य.

5.1.2 मांस उत्पाद-ा सँभाल-े जी स्वास्थ्यजर विधियाँ - मांस जा बिजड़-ाा एवं इसजी रोजथाम जे उपाय- वधोपरांत मांस में भौतिज-रासायनिज परिवर्त-ा एवं इ-हें प्रभावित जर-े वाले जारज - जुजता सुधार विधियाँ - मांस में मिलावट एवं इसजी पहचा-ा - मांस व्यापार एवं उद्योज में नियामज उपबंध.

5.2 मांस प्रोद्योजिजी :

5.2.1 मांस जे भौतिज एवं रासायनिज लजज - मांस इमल्श-ा - मांसपरीजज जी विधियां - मांस एवं मांस उत्पाद-ा जा संसाध-ा, डिब्बाबंदी, जिरज-ा, संवेष्ट-ा, प्रसंस्जरज एवं संयोज-ा.

5.3 उपोत्पाद - वधशाला उपोत्पाद एवं उ-ाजे उपयोज - जाद्य एवं अजाद्य उपोत्पाद - वधशाला उपोत्पाद जे समुचित उपयोज जे सामाजिज एवं आर्थिज निहितार्थ - जाद्य एवं भैषजिज उपयोज हेतु अंज उत्पाद.

5.4 जुक्जुट उत्पाद प्रौद्योजिजी - जुक्जुट मांस जे रासायनिज संघट-ा एवं पोषज मा-ा - वध जी देजभाल तथा प्रबंध. वध जी तज-ीजें, जुक्जुट मांस एवं उत्पादों जा निरीजज, परिरजज. विधिज एवं BIS मा-ाज. अंडों जी संरच-ाा, संघट-ा एवं पोषज मा-ा. सूज्मजीवी विजृति. परिरजज एवं अ-ाुरजज. जुक्जुट मांस, अंडों एवं उत्पादों जा विपज-ा, मूल्य वर्धित मांस उत्पाद.

5.5 जरजोश/फर वाले पशुओं जी फार्मिंज - जरजोश मांस उत्पाद-ा. फर एवं ऊ-ा जा निपटा-ा एवं उपयोज तथा अपशिष्ट उपोत्पादों जा पु-ाश्चज्रज. ऊ-ा जा जोटिनिर्धारज.

नृ विज्ञान

प्रश्-ापत्र-1

1.1 नृविज्ञान का अर्थ, विषय क्षेत्र एव विजास.

1.2 अन्य विषयों के साथ संबंध : सामाजिक विज्ञान, व्यवहारपरक विज्ञान, जीव विज्ञान, आयुर्विज्ञान, भू-विषयक विज्ञान एवं मानविकी.

1.3 नृविज्ञान की प्रमुख शाखाएं, उनका क्षेत्र तथा प्रासंगिकता :

(क) सामाजिक-सांस्कृतिक नृविज्ञान.

(ख) जैविक विज्ञान.

(ग) पुरातत्व-नृविज्ञान.

(घ) भाषा-नृविज्ञान.

1.4 मानव विकास तथा मनुष्य का आविर्भाव :

(क) मानव विकास में जैव एवं सांस्कृतिक कारक

(ख) जैव विकास के सिद्धांत (डार्विन-पूर्व, डार्विन कालीन एवं डार्विनोत्तर)

(ग) विकास का संश्लेषणात्मक सिद्धांत ; विकासात्मक जीव विज्ञान की रूपावली एवं संकल्पनाओं की संक्षिप्त रूपरेखा (डॉल का नियम, कोप का नियम, गॉस का नियम, समांतरवाद, अभिसरण, अनुकूली विकिरण एवं मोज़ेक विकास)

1.5 नर-वानर की विशेषताएं; विकासात्मक प्रवृत्ति एवं नर-वानर वर्गिकी ;

नर-वानर अनुकूलन; (वृक्षीय एवं स्थलीय) नर-वानर वर्गिकी;

नर-वानर व्यवहार, तृतीयक एवं चतुर्थक जीवाश्म नर-वानर;

जीवित प्रमुख नर-वानर; मनुष्य एवं वानर की तुलनात्मक शरीर-रचना;

नृ संस्थिति के कारण हुए कंकालीय परिवर्तन एवं हल्के निहितार्थ.

1.6 जातिवृत्तीय स्थिति, निम्नलिखित की विशेषताएं एवं भौगोलिक वितरण :

(क) दक्षिण एवं पूर्व अफ्रीका में अतिनूतन अत्यंत नूतन होमिनिड-आस्ट्रेलोपिथिसिन

(ख) होमोइरेक्टसः अफ्रीका (पैरेन्थ्रोपस), यूरोप (होमोइरेक्टस हीडेल बर्जेन्सिस), एशिया (होमोइरेक्टस जावानिकस, होमो इरेक्टस पेकाइनेन्सिस)

(ग) निएन्डरथल मानव-ला-शापेय-ओ-सैंत (क्लासिकी प्रकार), माउंट कारमेस (प्रगामी प्रकार)

(घ) रोडेसियन मानव.

(च) होमो-सैपिएन्स - क्रोमैग्नन, ग्रिमाली एवं चांसलीड.

1.7 जीवन के जीववैज्ञानिक आधार : कोशिका, DNA संरचना एवं प्रतिकृति, प्रोटीन संश्लेषण, जीन, उत्परिवर्तन, क्रोमोसोम एवं कोशिका विभाजन.

1.8 (क) प्रागैतिहासिक पुरातत्व विज्ञान के सिद्धांत/ कालानुक्रम : सापेक्ष एवं परम काल निर्धारण विधियाँ.

(ख) सांस्कृतिक विकास - प्रागैतिहासिक संस्कृति की स्थूल रूपरेखा

(i) पुरापाषाण

(ii) मध्य पाषाण

(iii) नव पाषाण

(iv) ताम्र पाषाण

(v) ताम्र-कांस्य युग

(vi) लोह युग

2.1 संस्जृति जा स्वरूप: संस्जृति और सभ्यता जी संजल्प-ाा एवं विशेषता; सांस्जृतिज सापेजवाद जी तुल-ाा में -ृजाति जेंद्रिजता.

2.2 समाज का स्वरूप : समाज की संकल्पना ; समाज एवं संस्कृति ; सामाजिक संस्थाएँ; सामाजिक समूह; एवं सामाजिक स्तरीकरण.

2.3 विवाह : परिभाषा एवं सार्वभौमिकता ; विवाह के नियम (अंतर्विवाह, बहिर्विवाह, अनुलोमविवाह, अगम्यगमन निषेध); विवाह के प्रकार (एक विवाह प्रथा, बहु विवाह प्रथा, बहुपति प्रथा, समूह विवाह). विवाह के प्रकार्य; विवाह विनियम (अधिमान्य, निर्दिष्ट एवं अभिनिषेधक); विवाह भुगतान (वधू धन एवं दहेज).

2.4 परिवार : परिभाषा एवं सार्वभौमिकता; परिवार, गृहस्थी एवं गृह्य समूह; परिवार्य के प्रकार्य; परिवार के प्रकार (संरचना, रक्त- संबंध, विवाह, आवास एवं उत्तराधिजार के परिप्रेक्ष्य से); नगरीकरण, औद्योगीकरण एवं नारी अधिकारवादी आंदोलनों का परिवार पर प्रभाव.

2.5 -ातेदारी : रक्त संबंध एवं विवाह संबंध ; वंशा-ाुज्रम जे सिद्धांत एवं प्रजार (एजरेजीय, द्वैध, द्विपजीय, उभयरेजीय) ; वंशा-ाुज्रम समूह जे रूप (वंशपरंपरा, जोत्र, फ्रेटरी, मोइटी एवं संबंधी); -ातेदारी शब्दावली (वर्ज-ाात्मज एवं वर्जीजारज); वंशा-ाुज्रम, वंशा-ाुज्रमज एवं पूरज वंशा-ाुज्रमज; वंशा-ाुज्रम एवं सहबंध.

3. आर्थिज संजठ-ा : अर्थ, जेत्र एवं आर्थिज -ृविज्ञा-ा जी प्रासंजिजता; रूपवादी एवं तत्ववादी बहस ; उत्पाद-ा, वितरज एवं समुदायों में विनिमय (अ-ायो-यता, पु-ार्वितरज एवं बाजार), शिजार एवं संज्रहज, मत्स्य-ा, स्विडेनिंज, पशुचारज, उद्या-ाजृषि एवं जृषि पर निर्वाह; भूमंडलीजरज एवं देशी आर्थिज व्यवस्थाएं.

4. राज-ैतिज संजठ-ा एवं सामाजिज नियंत्रज : टोली, ज-ाजाति, सरदारी, राज एवं राज्य ; सत्ता, प्राधिजार एवं वैधता जी संजल्प-ाएं ; सरल समाजों में सामाजिज नियंत्रज, विधि एवं -याय.

5. धर्म : धर्म जे अध्यय-ा में -ृवैज्ञानिज उपाजम (विजासात्मज, म-ोवैज्ञानिज एवं प्रजार्यात्मज) ; एजेश्वरवाद; पवित्र एवं अपाव-ा; मिथज एवं जर्मजांड; ज-ाजातीय एवं जृषज समाजों में धर्म जे रूप (जीववाद, जीवात्मावाद, जड़पूजा, प्रजृतिपूजा एवं जर्जाचह्-ावाद); धर्म, जादू एवं विज्ञा-ा विशिष्ट; जादुई-धार्मिज जार्यजर्ता (पुजारी, शम-ा, ओझा, ऐंद्रजालिज और डाइ-ा).

6. -ृवैज्ञानिज सिद्धांत :

(क) क्लासिजी विजासवाद (टाइलर, मॉर्ज-ा एवं फ्रेजर)

(ज) ऐतिहासिज विशिष्टतावाद (बोआस) ; विसरजवाद (ब्रिटिश, जर्म-ा एवं अमरीजी)

(ज) प्रजार्यवाद (मैलि-ोव्स्जी); संरच-ाा-प्रजार्यवाद (रैडक्लिज-ब्राउ-ा)

(घ) संरच-ाावाद (लेवी स्ट्राश एवं ई लीश)

(च) संस्जृति एवं व्यक्तित्व (बे-ेडिक्ट, मीड, लिंट-ा, जर्डि-ार एवं जोरा-दु-बुवा)

(छ) -ाव-विजासवाद (चिल्ड, व्हाइट, स्टयूवर्ड, शाहलि-स एवं सर्विस)

(ज) सांस्जृतिज भौतिजवाद (हैरिस)

(झ) प्रतीजात्मज एवं अर्थनिरूपी सिद्धांत (ट-र्र, श-ाइडर, एवं जीर्ट्ज़).

(क) संज्ञा-ाात्मज सिद्धांत (टाइलर जांक्लि-ा)

(ख) -ृविज्ञा-ा में उत्तर-आधुनिजतावाद

7. संस्जृति, भाषा एवं संचार : भाषा जा स्वरूप, उद्जम एवं विशेषताएँ ; वाचिज एवं अवाचिज संप्रेषज ; भाषा प्रयोज जे सामाजिज संदर्भ ।

8. -ृ विज्ञा-ा में अ-ाुसंधा-ा पद्धतियाँ :

(ज) -ृविज्ञा-ा में जेत्रजार्य परंपरा

(ज) तज-ीज, पद्धति एवं जार्य विधि जे बीच विभेद

(ज) दत्त संज्रहज जे उपजरज: प्रेजज, साजात्जार, अ-ाुसूचियाँ, प्रश्-ावली, जेस अध्यय-ा, वंशावली, मौजिज इतिवृत्त, सूच-ाा जे द्वितीयज स्रोत, सहभाजिता पद्धति.

(घ) दत्तज विश्लेषज, निर्वच-ा एवं प्रस्तुतीजरज.

9.1 मा-ाव आ-ाुवंशिजी -पद्धति एवं अ-ाुप्रयोज : म-ाुष्य परिवार अध्यय-ा में आ-ाुवंशिज सिद्धांतों जे अध्यय-ा जी पद्धतियाँ (वंशावली विश्लेषज, युग्म अध्यय-ा, पोष्यपुत्र, सह-युग्म पद्धति, जोशिज-ज-ानिज पद्धति, जुजसूत्री एवं जे-द्रज प्ररूप विश्लेषज), जैव रसाय-ी पद्धतियाँ, रोधजमतात्मज पद्धतियाँ, D.N.A. प्रौद्योजिजी एवं पु-ार्योजज प्रौद्योजिजियाँ.

9.2 म-ाुष्य-परिवार अध्यय-ा में मेंडेलीय आ-ाुवांशिजी, म-ाुष्य में एजल उपादा-ा, बहु उपादा-ा, घातज, अवघातज एवं अ-ोज जी-ी वंशाजति.

9.3 आ-ाुवंशिज बहुरूपता एवं वरज जी संजल्प-ाा, मेंडेलीय ज-ा संज्या, हार्डी-वी-ा वर्ज नियम; बारंबारता में जमी ला-े वाले जारज एवं परिवर्त-ा- उत्परिवर्त-ा, विलज-ा, प्रवास-ा, वरज, अंतःप्रज-ा-ा एवं आ-ाुवंशिज च्युति. समरक्त एवं असमरक्त समाजम, आ-ाुवंशिज भार, समरक्त एवं भजि-ी-बंधु विवाहों जे आ-ाुवंशिज प्रभाव.

9.4 जुजसूत्र एवं म-ाुष्य में जुजसूत्री विपथ-ा, ज्रियाविधि:

(ज) संज्यात्मज एवं संरच-ाात्मज विपथ-ा (अव्यवस्थाएँ)

(ज) लिंज जुजसूत्री विपथ-ा- क्लाइ-फेल्टर (xxy), ट-ीर (xo),अधिजाया (xxx),अंतर्लिंज एवं अ-य संलजजात्मज अव्यवस्थाएँ.

(ज) अलिंज सूत्री विपथ-ा- डाउ-ा संलजज, पातो, एडवर्ड एवं ज्रि-दु-शाँ संलजज

(घ) मा-ाव रोजों में आ-ाुवंशिज अध्यज-ा, आ-ाुवंशिज स्ज्रीनिंज, आ-ाुवंशिज उपबोध-ा, मा-ाव DNA प्रोफाइलिंज, जी-ा मैपिंज एवं जी-ोम अध्यय-ा.

9.5 प्रजाति एवं प्रजातिवाद, दूरीज एवं अदूरीज लजजों जी आजारिजीय विभिन्नताओं जा जीववैज्ञानिज आधार. प्रजातीय नि-जष, आ-ाुवंशिजता एवं पर्यावरज जे संबंध में प्रजातीय विशेषज; म-ाुष्य में प्रजातीय वर्गीजरज, प्रजातीय विभेद-ा एवं प्रजाति संजरज जा जीव वैज्ञानिज आधार.

9.6 आ-ाुवंशिज चिह्-ाज जे रूप में आयु, लिंज एवं ज-ासंज्या विभेद - ABO, Rh रक्तसमूह, HLA Hp, ट्रै-सफेरि-ा, Gm, रक्त ए-ज़ाइम. शरीर ज्रियात्मज लजज- विभिन्न सांस्जृतिज एवं सामाजिज-आर्थिज समूहों में Hb स्तर, शरीर वसा, स्पंद दर, श्वस-ा प्रजार्य एवं संवेदी प्रत्यजज.

9.7 पारिस्थितिज -ृविज्ञा-ा जी संजल्प-ााएँ एवं पद्धतियाँ. जैव-सांस्जृतिज अ-ाुजूल-ा- ज-ानिज एवं अज-ानिज जारज. पर्यावरजीय दवाबों जे प्रति म-ाुष्य जी शरीरज्रियात्मज अ-ाुज्रियाएँ : जर्म मरूभूमि, शीत, उच्च तुंजता जलवायु.

9.8 जा-ापदिज रोग विज्ञा-ीय -ृविज्ञा-ा : स्वास्थ्य एवं रोज. संज्रामज एवं असंज्रामज रोज. पोषज तत्वों जी जमी से संबंधित रोज.

10. मा-ाव वृद्धि एवं विजास जी संजल्प-ाा : वृद्धि जी अवस्थाएँ- प्रसव पूर्व, प्रसव, शिशु, बचप-ा, जिशोरावस्था, परिपक्वावस्था, जरत्व.

- वृद्धि और विजास जो प्रभावित जर-े वाले जारज : ज-ानिज, पर्यावरजीय, जैव रासायनिज, पोषज संबंधी, सांस्जृतिज एवं सामाजिज-आर्थिज.
- जालप्रभाव-ा एवं जरत्व. सिद्धांत एवं प्रेजज - जैविज एवं जाला-ाुज्रमिज दीर्घ आयु. मा-ावीय शरीर जठ-ा एवं जायप्ररूप. वृद्धि अध्यय-ा जी ज्रियाविधियाँ.

11.1 रजोदर्श-ा, रजोनिवृत्ति एवं प्रज-ा-ा शक्ति जी अ-य जैव घट-ााओं जी प्रासंजिजता. प्रज-ा-ा शक्ति जे प्रतिरूप एवं विभेद.

11.2 ज-ाांजिजीय सिद्धांत- जैविज, सामाजिज एवं सांस्जृतिज.

11.3 बहुप्रजता, प्रज-ा-ा शक्ति, ज-मदर एवं मृत्युदर जो प्रभावित जर-े वाले जैविज एवं सामाजिज-आर्थिज जारण.

12. -ृविज्ञा-ा जे अ-ाुप्रयोज : जेलों जा -ृविज्ञा-ा, पोषजात्मज -ृविज्ञा-ा, रजा एवं अ-य उपजरजों जी अभिजल्प-ाा में -ृविज्ञा-ा, -यायालयिज -ृविज्ञा-ा, व्यक्तिजत अभिज्ञा-ा एवं पु-ार्रच-ाा जी

पद्धतियाँ एवं सिद्धांत. अ-ुप्रयुक्त मा-ाव आ-ुवंशिजी- पितृत्व -िदा-ा, ज-ा-िज उपबोध-ा एवं सुज-ा-िजी, रोजों एवं आयुर्विज्ञा-ा में DNA प्रौद्योजिजी, ज-ा-ा-जीवविज्ञा-ा में सीरम-आ-ुवंशिजी तथा जोशिजा-आ-ुवंशिजी.

प्रश्-ापत्र-2

1.1 भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता जा विजास-प्राजैतिहासिज (पुरापाषाज, मध्यपाषाज, -वपाषाज तथा -वपाषाज-ताम्रपाषाज). आद्यऐतिहासिज (सिंधु सभ्यता) : हड़प्पा-पूर्व, हड़प्पाजाली-ा एवं पश्च-हड़प्पा संस्कृतियाँ. भारतीय सभ्यता में ज-ाजातीय संस्कृतियों जा योजदा-ा.

1.2 शिवालिज एवं -र्मदा द्रोजी जे विशेष संदर्भ जे साथ भारत से पुरा--ृवैज्ञा-िज साज्य (रामापिथेजस, शिवापिथेजस एवं -र्मदा मा-ाव).

1.3 भारत में -ृजाति-पुरातत्व विज्ञा-ा : -ृजाति-पुरातत्व विज्ञा-ा जी संजल्प-ा; शिजारी, रसदजोजी, मछियारी, पशुचारज एवं कृषज समुदायों एवं जला और शिल्प उत्पादज समुदायों में उत्तरजीवज एवं समांतरज.

2. भारत जी ज-ांिजीय परिच्छेदिजा- भारतीय ज-ासंज्या एवं उ-ाजे वितरज में -ृजातीय एवं भाषायी तत्व. भारतीय ज-ासंज्या- इसजी संरच-ा और वृद्धि जो प्रभावित जर-े वाले जारज.

3.1 पारंपरिज भारतीय सामाजिज प्रजाली जी संरच-ा और स्परूप-वर्जाश्रम, पुरूषार्थ, जर्म, ऋज एवं पु-र्ज-म.

3.2 भारत में जाति व्यवस्था- संरच-ा एवं विशेषताएँ, वर्ज एवं जाति, जाति व्यवस्था जे उद्जम जे सिद्धांत, प्रबल जाति, जाति जतिशीलता, जाति व्यवस्था जा भविष्य, जजमा-ी प्रजाली, ज-ाजाति-जाति सातत्यज.

3.3 पवित्र-म-ोज्रंथि एवं प्रकृति-म-ुष्य-प्रेतात्मा म-ोज्रंथि.

3.4 भारतीय समाज पर बौद्ध धर्म, जै-ा धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म जा प्रभाव.

4. भारत में -ृविज्ञा-ा जा आविर्भाव एवं संवृद्धि-18वीं, 19वीं एवं प्रारंभिज 20वीं शताब्दी जे शास्त्रज्ञ- प्रशासजों जे योजदा-ा. ज-ाजातीय एवं जातीय अध्यय-ों में भारतीय -ृवैज्ञा-िजों जे योजदा-ा.

5.1 भारतीय ज्राम : भारत में ज्राम अध्यय-ा जा महत्व; सामाजिज प्रजाली जे रूप में भारतीय ज्राम; बस्ती एवं अंतर्जाति संबंधों जे पारंपरिज एवं बदलते प्रतिरूप; भारतीय ज्रामों में कृषि संबंध; भारतीय ज्रामों पर भूमंडलीजरज जा प्रभाव.

5.2 भाषायी एवं धार्मिज अल्पसंज्यज एवं उ-ाजी सामाजिज, राज-ैतिज तथा आर्थिज स्थिति.

5.3 भारतीय समाज में सामाजिज-सांस्कृतिज परिवर्त-ा जी देशीय एवं बहिर्जात प्रक्रियाएं : संस्कृतिजरज, पश्चिमीजरज, आधु-िजीजरज; छोटी एवं बड़ी परंपराओं जा परस्पर-प्रभाव; पंचायतीराज एवं सामाजिज परिवर्त-ा; मीडिया एवं सामाजिज परिवर्त-ा.

6.1 भारत में ज-ाजातीय स्थिति- जैव ज-ा-िज परिवर्तिता, ज-ाजातीय ज-ासंज्या एवं उ-ाजे वितरज जी भाषायी एवं सामाजिज-आर्थिज विशेषताएँ.

6.2 ज-ाजातीय समुदायों जी समस्याएँ- भूमि संक्रामज, जरीबी, ऋजज्रस्तता, अल्प साजरता, अपर्याप्त शैजिज सुविधाएँ, बेरोज़ारी, अल्परोज़ारी, स्वास्थ्य तथा पोषज.

6.3 विजास परियोज-ाएँ एवं ज-ाजातीय स्था-ांतरज तथा पु-र्वास समस्याओं पर उ-ाजा प्रभाव. व-ा -ीतियों एवं ज-ाजातियों जा विजास. ज-ाजातीय ज-ासंज्या पर -जरीजरज तथा औद्योजीजीजरज जा प्रभाव.

7.1 अ-ुसूचित जातियों, अ-ुसूचित ज-ाजातियों एवं अ-य पिछड़े वर्जों जे पोषज तथा वंच-ा जी समस्याएँ. अ-ुसूचित जातियों एवं अ-ुसूचित ज-ाजातियों जे लिए सांविधा-िज रजोपाय.

7.2 सामाजिज परिवर्त-ा तथा समजाली-ा ज-ाजाति समाज : ज-ाजातियों तथा जमज़ोर वर्जों पर आधु-िज लोजतांत्रिज संस्थाओं, विजास जार्यक्रमों एवं जल्याज उपायों जा प्रभाव.

7.3 -ृजातीयता जी संजल्प-ा; -ृजातीय द्वन्द्व एवं राज-ैतिज विजास; ज-ाजातीय समुदायों जे बीच अशांति : जेत्रीयतावाद एवं स्वायत्तता जी माँज; छद्म ज-ाजातिवाद; औप-िवेशिज एवं स्वातंत्र्योत्तर भारत जे दौरा-ा ज-ाजातियों जे बीच सामाजिज परिवर्त-ा.

8.1 ज-ाजातीय समाजों पर हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम तथा अ-य धर्मों जा प्रभाव.

8.2 ज-ाजाति एवं राष्ट्र राज्य- भारत एवं अ-य देशों में ज-ाजातीय समुदायों जा तुल-ात्मज अध्यय-ा.

9.1 ज-ाजातीय जेत्रों जे प्रशास-ा जा इतिहास, ज-ाजाति -ीतियाँ, योज-ाएँ, ज-ाजातीय विजास जे जार्यक्रम एवं उ-ाजा जार्या-वय-ा. आदिम ज-ाजातीय समूहों (PTGs) जी संजल्प-ा, उ-ाजा वितरज, उ-ाजे विजास जे विशेष जार्यक्रम। ज-ाजातीय विजास में जैर सरजारी संजठ-ों जी भूमिजा.

9.2 ज-ाजातीय एवं ज्रामीज विजास में -ृविज्ञा-ा जी भूमिजा.

9.3 जेत्रीयतावाद, सांप्रदायिजता, -ृजातीय एवं राज-ैतिज आंदल-ों जो समझ-े में -ृविज्ञा-ा जा योजदा-ा.

व-ास्पति विज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र - 1

1. सूज्मजैविजी एवं पादपरोज विज्ञा-ा :

विषाजु, वाइरॉइड, जीवाजु, फंजाई एवं माइजोप्लाज्मा संरच-ा एवं ज-ा-ा. बहुजुज-ा. कृषि, उद्योज, चिजित्सा तथा वायु एवं मृदा एवं जल में प्रदूषज-ियंत्रज में सूज्मजैविजी जे अ-ुप्रयोज. प्रायो-ा एवं प्रायो-ा घट-ा.

विषाजुओं, जीवाजुओं, माइजोप्लाज्मा, फंजाई तथा सूत्रकृमियों द्वारा हो-े वाले प्रमुज पादप रोज. संक्रमज और फैलाव जी विधियाँ. संक्रमज तथा रोज प्रतिरोध जे आज्विज आधार. परजीविता जी जार्यिजी और -ियंत्रज जे उपाय. जवज आविष. मॉडल-ा एवं रोज पूर्वा-ुमा-ा, पादप संजरोध.

2. क्रिप्टोजेम्स :

शैवाल, जवज, लाइज-ा, ब्रायोफाइट, टेरीडोफाइट - संरच-ा और ज-ा-ा जे विजासात्मज पहलू. भारत में क्रिप्टोजेम्स जा वितरज और उ-ाजा परिस्थितिज एवं आर्थिज महत्व.

3. पुष्पोद्‌भिद :

अ-ावृत बीजी : पूर्व अ-ावृत बीजी जी अवधारजा. अ-ावृतबीजी जा वर्जीजरज और वितरज. साइजेडेलीज, जिंजोऐजीज, जो-ीफेरेलीज और -ीटेलीज जे मुज्य लजज, संरच-ा व ज-ा-ा. साईजेडोफिलिजेलीज, बैन्नेटिटेलीज तथा जार्डेटेलीज जा सामा-य वर्ज-ा. भू वैज्ञा-िज समयमाप-ी, जीवाश्मप्रजार एवं उ-ाजे अध्यय-ा जी विधियाँ. आवृतबीजी: वर्जिजी, शारीरिजी, भ्रूजविज्ञा-ा, पराजाजुविज्ञा-ा और जातिवृत.

वर्जिजी सोपा-ा, वा-ास्पतिज -ामपद्धति जे अंतर्राष्ट्रीय जूट, संज्यात्मज वर्जिजी एवं रसाय-ा-वर्जिजी, शारीरिजी, भ्रूज विज्ञा-ा एवं पराजाजु विज्ञा-ा से साज्य.

आवृत बीजियों जा उद्जम एवं विजास,

आवृत बीजियों जे वर्जीजरज जी विभिन्न प्रजालियों जा तुल-ात्मज विवरज, आवत बीजी जुलों जा अध्यय-ा - मै-ोलिएसी, रै-ा-ुजुलैसी, ब्रैसीजेसी, रोजेसी, फेबेसी, यूफार्बिएसी, मालवेसी, डिप्टेरोजार्पेसी, एपिएसी, एस्क्लेपिडिएसी, वर्बि-ेसी, सोले-ेसी, रूबिएसी, जुजुरबिटेली, ऐस्टेरिसी, पोएसी, ओरजेसी, लिलिएसी, म्यूजेसी एवं ऑजिडेसी. रंध्र एवं उ-ाजे प्रजार, ज्रंथीय एवं अजंथीय ट्राइजोम, विसंजत द्वितीयज वृद्धि, सी-3 और सी-4 पौधों जा शारीर. जाइलम एवं फ्लोएम विभेद-ा, जाष्ठ शारीर.

-ार और मादा युज्मजोद्‌भिद् जा परिवर्ध-ा, पराजज, -िषेच-ा. भ्रूजपोष - इसजा परिवर्ध-ा और जार्य. भ्रूज परिवर्ध-ा जे स्वरूप. बहुभ्रूजता, असंजज-ा-ा, पराजाजु विज्ञा-ा जे अ-ुप्रयोज, पराज भंडारज एवं टेस्ट ट्यूब-िषेच-ा सहित प्रयोजात्मज भ्रूज विज्ञा-ा.

4. पादप संसाध-ा विजास :

पादप ज्राम्य-ा एवं परिचय, कृष्टपौधों जा उद्‌भव, उद्‌भव संबंधी वैवीलोव जे जेंद्र, खाद्य, चारा, रेशों, मसालों, पेय पदार्थों, खाद्य तेलों, औषधियों, स्वापजों, जीट-ाशियों, इमारती लजड़ी, जोंद, रेजि-ों तथा रंजजों जे स्रोतों जे रूप में पौधे, लेटेक्स, सेलुलोस, मंड और उ-ाजे उत्पाद. इत्रसाजी. भारत जे संदर्भ में -ृजुलव-ास्पतिजी जा महत्व. ऊर्जा वृजरोपज, वा-ास्पतिज उद्या-ा और पादपालय.

5. आजारज-ा-ा :

पूर्ज शक्तता, ध्रुवजता, सममिति और विभेद-ा. जोशिजा, ऊतज, अंज एवं जीवद्रव्यज संवर्ध-ा. जायिज संजर और द्रव्य संजर. माइक्रोप्रोपेजेश-ा, सोमाक्लो-ाल विविधता एवं इसजा अ-ुप्रयोज, पराज अजुजित, एम्ब्रियोरेस्क्यू विधियाँ एवं उ-ाजे अ-ुप्रयोज.

प्रश्-ापत्र - 2

1. जोशिजा जैविजी :

जोशिजा जैविजी जी प्रविधियाँ. प्राक्केंद्रकी और सुजेंद्रकी जोशिजाएँ - संरच-ात्मज और परासंरच-ात्मज बारीजियाँ. जोशिजा बाह्य आधात्री अथवा जोशिजा बाह्य आव्यूह (जोशिजा भित्ति) तथा झिल्लियों जी संरच-ा और जार्य - जोशिजा आसंज-ा, झिल्ली अभिजम-ा तथा आशयी अभिजम-ा. जोशिजा अंजजों (हरित लवज सूत्रजजिजाएँ, ईआर, डिक्टियोसोम, राइबोसोम, अंतःजाय, लय-ाजाय, परऑक्सीसोम) जी संरच-ा और जार्य. साइटोस्जेलेट-ा एवं माइक्रोट्यूब्यूल्स, जेंद्रज, जेंद्रिज, जेंद्रकी रंध्र सम्मिश्र. क्रोमेटि-ा एवं -ुक्लियोसोम. जोशिजा संजेत-ा और जोशिजा ज्राही. संजेत पारक्रमज. समसूत्रज और अर्धसूत्रज विभाज-ा, जोशिजा चक्र जा आज्विज आधार. जुजसूत्रों में संज्यात्मज और संरच-ात्मज विभिन्नताएँ तथा उ-ाजा महत्व. क्रोमेटि-ा व्यवस्था एवं जी-ोम संवेष्ट-ा, पॉलिटी-ा जुजसूत्र, बी-जुजसूत्र- संरच-ा व्यवहार और महत्व.

2. आ-ुवंशिजी, आज्विज जैविजी और विजास :

आ-ुवंशिजी जा विजास और जी-ा ब-ाम युज्मविजल्पी अवधारजा (कूट विजल्पी), परिमाजात्मज आ-ुवंशिजी तथा बहुजारज. अपूर्ज प्रभाविता, बहुज-ा-िज वंशाजति, बहुविजल्पी सहलज्-ाता तथा विनिमय - आज्विज मा-ाचित्र (मा-ाचित्र प्रजार्य जी अवधारजा) सहित जी-ा मा-ाचित्रज जी विधियाँ. लिंज जुजसूत्र तथा लिंज सहलज्-ा वंशाजति, लिंज -िर्धारज और लिंज विभेद-ा जा आज्विज आधार. उत्परिवर्त-ा (जैव रासाय-िज और आज्विज आधार) जोशिजाद्रव्यी वंशाजति एवं जोशिजाद्रव्यी जी-ा (-ार बंध्यता जी आ-ुवंशिजी सहित).

-ुक्लीज अम्लों और प्रोटी-ों जी संरच-ा तथा संश्लेषज. आ-ुवंशिज कूट और जी-ा अभिव्यक्ति जा -ियम-ा. जी-ा -ीरवता, बहुजी-ा जुल, जैव विजास - प्रमाज, क्रियाविधि तथा सिद्धांत. उद्‌भव तथा विजास में RNA जी भूमिजा.

3. पादप प्रज-ा-ा, जैव प्रोद्योजिजी तथा जैव सांज्यिजी :

पादप प्रज-ा-ा जी विधियाँ - आप्रवेश, चय-ा तथा संजरज. (वंशावली, प्रतीप संजर, सामूहिज चय-ा, व्यापज पद्धति) उत्परिवर्त-ा, बहुजुजिता, -रबंध्यता तथा संजर ओज प्रज-ा-ा. पादप प्रज-ा-ा में असंजज-ा-ा जा उपयोज. DNA अ-ुक्रमज, आ-ुवंशिज इंजीनियरी - जी-ा अंतरज जी विधियाँ, पारजी-ी सस्य एवं जैव सुरजा पहलू, पादप प्रज-ा-ा में आज्विज चिह्-ाज जा विजास एवं उपयोज. उपजरज एवं तज-ीज - प्रोब, दजिजी ब्लास्टिंज, DNA फिंजर प्रिंटिंज, PCR एवं FISH. मा-ाज विचल-ा तथा विचरज जुजांज (सी बी), सार्थजता परीजज, (जैड-परीजज, टी-परीजज तथा जाई-वर्ज परीजज). प्रायिजता तथा बंट-ा (सामा-य, द्विपदी तथा प्वासों बंट-ा) संबंध-ा तथा समाश्रयज.

4. शरीर क्रिया विज्ञा-ा तथा जैव रसाय-िजी :

जल संबंध, ज-िज-ा पोषज तथा आय-ा अभिजम-ा, ज-िज -यू-ताएँ. प्रजाश संश्लेषज - प्रजाश रसाय-िज अभिक्रियाएँ, फोटो फोस्फोरिलेश-ा एवं जार्ब-ा फिक्सेश-ा पाथवे, C_3, C_4 और जैम दिशामार्ज. फ्लोएम परिवह-ा जी क्रियाविधि, श्वस-ा (जिज्व-ा सहित अवायुजीवीय और वायुजीवीय) - इलेक्ट्रॉ-ा अभिजम-ा श्रृंजला और ऑक्सीजरजी फास्फोरिलेश-ा फोटोश्वस-ा, रसोपरासरजी सिद्धांत तथा ATP संश्लेषज. लिपिड उपापचय, -ाइट्रोज-ा स्थिरीजरज एवं -ाइट्रोज-ा उपापचय. जिज्व, सहजिज्व, ऊर्जा अंतरज तथा ऊर्जा संरजज. द्वितीयज उपापचयजों जा महत्व. प्रजाशज्राहियों जे रूप में वर्जज (प्लैस्टिडियल वर्जज तथा पादप वर्जज), पादप संचल-ा, दीप्तिजालिता तथा पुष्प-ा, बसंतीजरज, जीर्ज-ा. वृद्धि पदार्थ - उ-ाजी रासाय-िज प्रकृति, कृषि बाजवा-ी में उ-ाजी भूमिजा और अ-ुप्रयोज, वृद्धिसंजेत, वृद्धिजतियाँ. प्रतिबल शारीरिजी (ताप, जल, लवजता, धातु). फल एवं बीज शारीरिजी. बीजों जी प्रसुप्ति, भंडारज तथा उ-ाजा अंकुरज. फल जा पज-ा - इसजा आज्विज आधार तथा मैनिपुलेश-ा.

5. परिस्थितिजी तथा पादप भूजोल :

परितंत्र जी संजल्प-ा, पारिस्थितिज जारज. समुदाय जी अवधारजाएँ और जतिजी. पादप अ-ुक्रमज. जीव मंडल जी अवधारजा. पारितंत्र, संरजज. प्रदूषज और उसजा -ियंत्रज (फाइटोरेमिडिएश-ा सहित). पादप सूचज, पर्यावरज (संरजज) अधि-ियम.

भारत में व-ों जे प्ररूप - व-ों जा परिस्थितिज एवं आर्थिज महत्व. व-ारोपज, व-ो-मूल-ा तथा सामाजिज वा-िजी. संजटापन्न पौधे, स्था-िजता, IUCN जोटियाँ, रेड डाटा बुज. जैव विविधता एवं उसजा संरजज, संरजित जेत्र -ेटवर्ज, जैव विविधता पर सम्मेल-ा, जिसा-ों जे अधिजार एवं बौद्धिज संपदा अधिजार, संपोषजीय विजास जी संजल्प-ा, जैव-भू-रासाय-िज चक्र, भूमंडलीय ताप-ा एवं जलवायु परिवर्त-ा, संक्रामज जातियाँ, पर्यावरजीय प्रभाव मूल्यांज-ा, भारत जे पादप भूजोलीय जेत्र.

रसाय-ा विज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

1. परमाजु संरच-ा : क्वांटम सिद्धांत, हाइसे-ावर्ज जा अनिश्चितता सिद्धांत, श्रोडिंजर तरंज समीजरज (जाल अ-ाश्रित) तरंज फल-ा जी व्याज्या, एजल विमीय बॉक्स में जज, क्वांटम संज्याएँ, हाइड्रोज-ा परमाजु तरंज फल-ा. S, P, और D जजजों जी आकृति.

2. रसाय-ा आबंध : आय-ी आबंध, आय-ी यौजिजों जे अभिलजज, जालज ऊर्जा, बा-िहैबर चक्र; सहसंयोजज आबंध तथा इसजे सामा-य अभिलजज. अजुओं में आबंध जी ध्रुवजता तथा उसजे द्विध्रुव अघूर्ज. संयोजी आबंध सिद्धांत, अ-ु-ाद तथा अ-ु-ाद ऊर्जा जी अवधारजा. अजु जजज सिद्धांत (LCAO पद्धति); H2+, H2, He2+ से Ne2, NO, CO, HF एवं CN. संयोजी आबंध तथा अजुजजज सिद्धांतों जी तुल-ा, आबंध जोटि, आबंध सामर्थ्य तथा आबंध लंबाई.

3. ठोस अवस्था : क्रिस्टल पद्धति; क्रिस्टल फलजों, जालज संरच-ाओं तथा यूनिट सेल जा स्पष्ट उल्लेज. ब्रेज जा -ियम, क्रिस्टल द्वारा X-रे विवर्त-ा; क्लोज़ पैजिंज (ससंजुलित रच-ा), अर्धव्यास अ-ुपात -ियम, सीमांत अर्धव्यास अ-ुपात मा-ों जे आजल-ा. Nacl, ZnS, CsCl एवं CaF2 जी संरच-ा. स्टाइजियोमीट्रिज तथा -ॉ-ा-स्टाइजियोमीट्रिज दोष, अशुद्धता दोष, अर्द्धचालज.

4. जैस अवस्था एवं परिवह-ा परिघट-ा : वास्तविज जैसों जी अवस्था जा समीजरज, अंतराअजुज पारस्परिज क्रिया, जैसों जा द्रवीजरज तथा क्रांतिज घट-ा, मैक्सवेल जा जति वितरज, अंतराजुज संघट्ट, दीवार पर संघट्ट तथा अभिस्पंद-ा, ऊष्मा चालजता एवं आदर्श जैसों जी श्या-ाता.

5. द्रव अवस्था : जेल्वि-ा समीजरज, पृष्ठ त-ाव एवं पृष्ठ ऊर्जा, आर्द्रज एवं संस्पर्श जोज, अंतरापृष्ठीय त-ाव एवं जोशिजा क्रिया.

6. ऊष्माजतिजी : जार्य, ऊष्मा तथा आंतरिज ऊर्जा ; ऊष्माजतिजी जा प्रथम -ियम, ऊष्माजतिजी जा दूसरा -ियम; एंट्रॉपी एज अवस्था फल-ा जे रूप में, विभिन्न प्रक्रमों में एंट्रॉपी परिवर्त-ा, एंट्रॉपी उत्क्रमजीयता तथा अ-ुत्क्रमजीयता, मुक्त ऊर्जा फल-ा, अवस्था जा ऊष्माजतिजी समीजरज, मैक्सवेल संबंध; ताप, आयत-ा एवं U, H, A, G, Cp एवं Cv, α एवं β जी दाब -िर्भरता; J-T प्रभाव एवं व्युत्क्रमज ताप; साम्य जे लिए -िजष, साम्य स्थिरांज तथा ऊष्माजतिजीय राशियों जे बीच संबंध, -े-र्स्ट ऊष्मा प्रमेय तथा ऊष्माजतिजी जा तीसरा -ियम.

7. प्रावस्था साम्य तथा विलय-ा : क्लासियस-क्लेपिर-ा समीजरज, शुद्ध पदार्थों जे लिए प्रावस्था आरेज; द्विआधारी पद्धति में प्रावस्था साम्य, आंशिज मिश्रजीय द्रव- उच्चतर तथा -िम्-ातर क्रांतिज विलय-ा ताप; आंशिज मोलर राशियाँ, उ-ाजा महत्व तथा -िर्धारज; आधिक्य ऊष्माजतिजी फल-ा और उ-ाजा -िर्धारज.

8. विद्युत रसाय-ा : प्रबल विद्युत अपघट्यों जा डेबाई हुजेल सिद्धांत एवं विभिन्न साम्य तथा अधिजम-ा जुजधर्मों जे लिए डेबाइ हुजेल सीमांत -ियम. जेल्वे-िज सेल, सांद्रता सेल; इलेक्ट्रोजेमिजल सीरीज़, सेलों जे emf जा माप-ा और उसजा अ-ुप्रयोज; ईंध-ा सेल तथा बैटरियाँ. इलैक्ट्रोड पर प्रक्रम; अंतरापृष्ठ पर द्विस्तर; चार्ज ट्रांस्फर जी दर, विद्युत धारा घ-ात्व; अतिविभव; वैद्युत विश्लेषज तज-ीज; पोलरोज्राफी, एंपरोमिति, आय-ा वरजात्मज इलेक्ट्रोड एवं उ-ाजे उपयोज.

9. रासाय-िज बलजतिजी : अभिक्रिया दर जी सांद्रता पर -िर्भरता, शू-य, प्रथम, द्वितीय तथा आंशिज जोटि जी अभिक्रियाओं जे लिए अवजल और समाजल दर

समीज्रज; उत्ज्रम, समा-तर, ज्रमाजत तथा श्रृंजला अभिज्रियाओं जे दर समीज्रज; शाज-ा श्रृंजला एवं विस्फोट; दर स्थिरांज पर ताप और दाब जा प्रभाव. स्टॉप-फ्लो और रिलेक्सेश-ा पद्धतियों द्वारा द्रुत अभिज्रियाओं जा अध्यय-ा. संघट-ा और संज्रमज अवस्था सिद्धांत.

10. प्रजाश रसाय-ा : प्रजाश जा अवशोषज; विभिन्न मार्जों द्वारा उत्तेजित अवस्था जा अवसा-ा; हाइड्रोज-ा और हेलोज-ों जे मध्य प्रजाश रसाय-ा अभिज्रिया और उ-ाजी क्वांटमी लब्धि.

11. पृष्ठीय परिघट-ा तथा उत्प्रेरजता : ठोस अधिशोषजों पर जैसों और विलय-ों जा अधिशोषज, लैंजम्यूर तथा BET अधिशोषज रेजा; पृष्ठीय जेत्रफल जा -िर्धारज; विषमांजी उत्प्रेरजों पर अभिज्रिया अभिलजज और ज्रियाविधि.

12. जैव अजार्ब-िज रसाय-ा : जैविज तंत्रों में धातु आय-ा तथा भित्ति जे पार आय-ा जम-ा (आज्विज ज्रियाविधि) ; ऑक्सीज-ा अपटेज प्रोटी-ा, साइटोज्रोम तथा फेरोडोक्सि-ा.

13. सम-वय रसाय-ा :

(ज) धातु संजुल जे आबंध सिद्धांत, संयोजजता आबंध सिद्धांत, ज्रिस्टल फील्ड सिद्धांत और उसमें संशोध-ा, धातु संजुल जे चुंबजीय तथा इलेक्ट्रा-िज स्पेक्ट्रम जी व्याज्या में सिद्धांतों जा अ-ुप्रयोज.

(ज) सम-वयी यौजिजों में आइसोमेरिज्म. सम-वयी यौजिजों जा IUPAC -ामजरज; 4 तथा 6 समायोज-ा वाले संजुलों जा त्रिविम रसाय-ा, जिलेट प्रभाव तथा बहु-ाभिजीय संजुल; परा-प्रभाव और उसजे सिद्धांत; वर्ज समतली संजुल में प्रतिस्थाप-िज अभिज्रियाओं जी बलजतिजी; संजुलों जी तापजतिजी तथा बलजतिजी स्थिरता.

(ज) मैटल जार्बो-िलों जी संश्लेषज संरच-ा तथा उ-ाजी अभिज्रियात्मजता; जार्बोक्सिलेट ए-ॉय-ा, जार्बो-िल हाइड्राइड तथा मेटल -ाइट्रोसील यौजिज.

(घ) एरोमैटिज प्रजाली जे संजुल, मैटल ओलेफि-ा संजुलों में संश्लेषज, संरच-ा तथा बंध, एल्जाइ-ा तथा सायक्लोपेंटाडाय-िज संजुल, सम-वयी असंतृप्तता, आक्सीडेटिव योजात्मज अभिज्रियाएँ, -िवेश-ा अभिज्रियाएँ, प्रवाही अजु और उ-ाजा अभिलजज-ा, मैटल-मैटल आबंध तथा मैटल परमाजु जुच्छे वाले यौजिज.

14. मुज्य समूह रसाय-िजी : बोरे-ा, बोराजाइ-ा, फास्फेजी-ा एवं चज्रीय फास्फेजी-ा, सिलिजेट एवं सिलिजॉ-ा, इंटरहैलोज-ा यौजिज; जंधज- -ाइट्रोज-ा यौजिज, -ॉबुल जैस यौजिज.

15. F ब्लॉज तत्वों जा सामा-य रसाय-ा : ल-थे-ाइड एवं एक्टी-ाइड; पृथक्जरज, आक्सीजरज अवस्थाएँ, चुंबजीय तथा स्पेक्ट्रमी जुजधर्म; लैंथे-ाइड संजुच-ा.

प्रश्-ापत्र-2

1. विस्थापित सहसंयोजज बंध : एरोमैटिजता, प्रतिएरोमैटिजता; ए-यूली-ा, एजुली-ा, ट्रोपोलो-स, फुल्वीन, सिड-ो-ा.

2. (ज) अभिज्रिया ज्रियाविधि : जार्ब-िज अभिज्रियाओं जी ज्रियाविधियों जे अध्यय-ा जी सामा-य विधियाँ (जतिज एवं जैर-जतिज दो-ों), समस्था-िजी विधि, ज्रास-ओवर प्रयोज, मध्यवर्ती ट्रेपिंज, त्रिविम रसाय-ा, सज्रियज ऊर्जा, अभिज्रियाओं जा ऊष्माजतिजी -ियंत्रज तथा जतिज -ियंत्रज.

(ज) अभिज्रियाशील मध्यवर्ती : जार्बो-ियम आय-ों तथा जारबे-ाय-ों, मुक्त मूलजों (फ्री रेडिजल) जार्बी-ों बेंजाइ-ों तथा -ाइट्रे-ों जा उत्पाद-ा, ज्यामिति, स्थिरता तथा अभिज्रिया.

(ज) प्रतिस्थाप-ा अभिज्रियाएँ : SN1. SN2 एवं SNi ज्रियाविधियाँ; प्रतिवेशी समूह भाजीदारी, पाइसेल, फ्यूर-ा, थियोफी-ा, इंडोल जैसे हेट्रोसाइक्लिज यौजिजों सहित ऐरोमैटिज यौजिजों जी इलेजट्रोफिलिज तथा -यूक्यिोफिलिज अभिज्रियाएँ.

(घ) विलोप-ा अभिज्रियाएं : E1,E2 तथा E1cb ज्रियाविधियाँ; सेजैफ तथा हॉफम-ा E2अभिज्रियाओं में दिक्वि-यास , पाइरोलिटिज Syn विलोप-ा - चुज्जीव तथा जोप विलोप-ा.

(ड) संजल-ा अभिज्रियाएँ : C=C तथा C≡C जे लिए इलेक्ट्रोफिलिज संजल-ा, C=C तथा C≡N जे लिए -यूक्लियोफिलिज संजल-ा, संयुज्मी ओलिफिल्स तथा जार्बोजिल्स.

(च) अभिज्रियाएँ तथा पु-ार्वि-यास : पि-ाजोल - पि-ाजोलो-ा, हॉफम-ा, बेजम-ा, बेयर विलिजर, फेवोर्स्जी, फ्राइस, क्लेसे-ा, जोप, स्टीवे-ज तथा वाज्-ार - मेरबाइ-ा पु-ार्वि-यास.

(छ) एल्डोल संघ-ा-ा, क्लैसे-ा संघ-ा-ा, डीजम-ा, परजि-ा, -ोवे-ोजेल, विटिज, क्लिमेंस-ा, वोल्फ जिश-ार, जे-िजारों तथा फ़ा-ा-रीक्टर अभिज्रियाएँ, स्टॉब, बैंजोइ-ा तथा एसिलोइ-ा संघ-ा-ा, फिशर इंडोल संश्लेषज, स्ज्राप संश्लेषज, विश्लर--ोपिरास्जी, सैंडमेयर, रेजेर टाइम-ा तथा रेफॉरमास्जी अभिज्रियाएँ.

3. परिरंभीय अभिज्रियाएँ : वर्जीजरज एवं उदाहरज; वुडवर्ड - हॉफमै-ा -ियम - विद्युतचज्रीय अभिज्रियाएँ, चज्री संजल-ा अभिज्रियाएँ (2+2एवं 4+2) एवं सिज्मा - अ-ुवर्त-ी विस्थाप-ा (1,3;3,3 तथा 1,5) FMO उपाजम.

4. **(i) बहुलजों जा -िर्माज और जुजधर्म :** जार्ब-िज बहुलज -पोलिएथिली-ा, पोलिस्टाइरी-ा, पोलीवि-ाइल क्लोराइड, टेफलॉ-ा, -ाइलॉ-ा, टेरीली-ा, संश्लिष्ट तथा प्राजृतिज रबड़.
   (ii) जैव बहुलज : प्रोटी-ा, DNA, RNA जी संरच-ाएँ.

5. अभिजारजों जे सांश्लेषिज उपयोज : O5O4, HIO4 CrO3, Pb(OAc)4, SeO2, NBS, B2H6, Na द्रव अमो-िया, LiALH4, NaBH4, n-Buli एवं MCPBA.

6. प्रजाश रसाय-ा : साधारज जार्ब-िज यौजिजों जी प्रजाश रासाय-िज अभिज्रियाएँ, उत्तेजित और -िम्-ातम् अवस्थाएँ, एजज और त्रिज अवस्थाएँ, -ोरिश टाइप-I और टाइप-II अभिज्रियाएँ.

7. स्पेक्ट्रोमिजी सिद्धांत और संरच-ा जे स्पष्टीजरज में उ-ाजा अ-ुप्रयोज.

(ज) घूर्जी- द्विपरमाजुज अजु; समस्था-िज प्रतिस्थाप-ा तथा घूर्जी स्थिरांज.

(ज) जांपि-िज - द्विपरमाजुज अजु, रैजिज त्रिपरमाजुज अजु, बहुपरमाजुज अजुओं में ज्रियात्मज समूहों जी विशिष्ट आवृत्तियाँ.

(ज) इलेक्ट्रा-िज : एजज और त्रिज अवस्थाएं : n→π* तथा π→π* संज्रमज ; संयुज्मित द्विआबंध तथा संयुज्मित जारबो-िजल में अ-ुप्रयोज -वुडवर्ड - फीशर -ियम ;चार्ज अंतरज स्पेक्ट्रा.

(घ) -ाभिजीय चुम्बजीय अ-ु-ाद (1HNMR) : आधारभूत सिद्धांत; रासाय-िज शिफ्ट एवं स्पि-ा - स्पि-ा अ-यो-य ज्रिया एवं जपलिंज स्थिरांज.

(ड़) द्रव्यमा-ा स्पेक्ट्रोमिति : पैरैंट पीज, बेसपीज, मेटास्टेबल पीज, मैज लैफर्टी पु-ार्वि-यास.

सिविल इंजी-ियरी

प्रश्-ापत्र-1

1. इंजी-ियरी यांत्रिजी पदार्थ सामर्थ्य तथा संरच-ात्मज विश्लेषज

1.1 इंजी-ियरी यांत्रिजी :

मात्रज तथा विमाएं, SI मात्रज, सदिश, बल जी संजल्प-ा, जज तथा दृढ़ पिंड संजल्प-ा, संजामी, असंजामी तथा समतल पर समांतर बल, बल आघूर्ज, मुक्त पिंड आरेज, सप्रतिबंध साम्यावस्था, जल्पित जार्य जा सिद्धांत, समतुल्य बल प्रजाली.

प्रथम तथा द्वितीय जेत्र आघूर्ज, द्रव्यमा-ा जड़त्व आघूर्ज.

स्थैतिज घर्षज

शुद्धजतिजी तथा जतिजी :

जार्तीय -िर्देशांज शुद्धजतिजी, समा-ा तथा असमा-ा त्वरज जे अधी-ा जति, जुरुत्वाधी-ा जति. जजजतिजी, संवेज तथा ऊर्जा सिद्धांत, प्रत्यास्थ पिंडों जा संघट्ट-ा, दृढ़ पिंडों जा घूर्ज-ा.

1.2 पदार्थ-सामर्थ्य :

सरल प्रतिबल तथा विजृति, प्रत्यास्थ स्थिरांज, अजत:भारित संपीडांज, अपरूपज बल तथा बंज-ा आघूर्ज, सरल बंज-ा जा सिद्धांत, अ-ुप्रस्थ जाट जा अपरूपज प्रतिबल वितरज, समसाथ्र्य धरज.

धरज विजेप : मैजाले विधि, मोर जी आघूर्ज जेत्र विधि, अ-ुरूप धरज विधि, एजांज भार विधि, शाफ्ट जी ऐंठ-ा, स्तंभों जा प्रत्यास्थ स्थायित्व. आयलर, रे-ाजाई-ा तथा सीजेट सूत्र.

1.3 संरच-ात्मज विश्लेषज :

जास्टिलिया-ोस प्रमेय I तथा II, धरज और जील संधियुक्त जैंची में प्रयुक्त संजत विजृति जी एजांज भार विधि, ढाल विजेप, आघूर्ज वितरज.

वेल-ा भार और प्रभाव रेजाएँ : धरज जे परिच्छेद पर अपरूपज बल तथा बंज-ा आघूर्ज जे लिए प्रभाव रेजाएँ. जतिशील भार प्रजाली द्वारा धरज चज्रमज में अधिजतम अपरूपज बल तथा बंज-ा आघूर्ज हेतु मा-ादंड. सरल आलंबित समतल जील संधि युक्त जैंची हेतु प्रभाव रेजाएँ.

डाट : त्रिजील, द्विजील तथा आबद्ध डाट- पर्शुजा लघीय-ा एवं तापमा-ा प्रभाव.

विश्लेषज जी आव्यूह विधि : अ-िर्धारित धरज तथा दृढ़ ढांचों जा बल विधि तथा विस्थाप-ा विधि से विश्लेषज.

धरज और ढांचों जा प्लास्टिज विश्लेषज : प्लास्टिज बंज-ा सिद्धांत, प्लास्टिज विश्लेषज, स्थैतिज प्रजाली ; यांत्रिजी विधि.

असममित बंज-ा : जड़त्व आघूर्ज, जड़त्व उत्पाद, उदासी-ा अज और मुज्य अज जी स्थिति, बंज-ा प्रतिबल जी परिजज-ा.

2. संरच-ा अभिजल्प : इस्पात, जंज्रीट तथा चि-ाई संरच-ा

2.1 संरच-ात्मज इस्पात अभिजल्प :

संरच-ात्मज इस्पात : सुरजा जुजज और भार जुजज. जवचित तथा वेल्डित जोड़ तथा संयोज-ा. त-ाव तथा सपीडांज इजाइयों जा अभिजल्प, संघटित परिच्छेद जा धरज, जवचित तथा वेल्डित प्लेट जर्डर, जैंदी जर्डर, बैट-ा एवं लेसिंजयुक्त स्टेंचिय-स.

2.2 जंज्रीट तथा चि-ाई संरच-ा जा अभिजल्प :

मिश्र अभिजल्प जी संजल्प-ा, प्रबलित जंज्रीट : जार्यजारी प्रतिबल तथा सीमा अवस्था विधि से अभिजल्प-IS पुस्तिजाओं जी सिफारिशों, व-ा-वे एवं टू-वे स्लैव जी डिज़ाइ-ा, सोपा-ा स्लैब, आयताजार T एवं L जाट जे सरल एवं सतत धरज. उत्जे-द्रता सहित अथवा रहित प्रत्यज भार जे अंतर्जत संपीडांज इजाइयाँ. विलजित एवं संयुक्त -ीव. जैंटीलीवर एवं जाउंटर फोर्ट प्ररूप प्रतिधारज भित्ति.

जलटंजी : पृथ्वी पर रजे आयताजार एवं जोलाजार टंजियों जी अभिजल्प-ा आवश्यजताएँ.

पूर्व प्रतिबलित जंज्रीट : पूर्व प्रतिबलित जे लिए विधियाँ और प्रजालियाँ, स्थिरज स्था-ा, जार्यजारी प्रतिबल आधारित आ-ाति जे लिए परिच्छेद जा विश्लेषज और अभिजल्प, पूर्व प्रतिबलित हा-ि.

3. तरल यांत्रिजी, मुक्त वाहिजा प्रवाह एवं द्रवचालित मशी-ें

3.1 तरल यांत्रिजी :

तरल जुजधर्म तथा तरल जति में उ-ाजी भूमिजा, तरल स्थैतिजी जिसमें समतल तथा वज्र सतह पर जार्य जर-े वाले बल भी शामिल हैं. तरल प्रवाह जी शुद्धजतिजी एवं जतिजी: वेज और त्वरज, सरिता रेजाएँ, सातत्य समीजरज, अघूर्जी तथा घूर्जी प्रवाह, वेज विभव एवं सरिता फल-ा. सांतत्य, संवेज एवं ऊर्जा समीजरज, -ोवियर स्टोक्स समीजरज, आयलर जति समीजरज, तरल प्रवाह समस्याओं में अ-ुप्रयोज, पाइप प्रवाह, स्लूइस जेट, वियर.

3.2 विमीय विश्लेषज एवं समरूपता :

बजिंघम Pi-प्रमेय, विमारहित प्राचल.

3.3 स्तरीय प्रवाह :

समांतर, अचल एवं चल प्लेटों जे बीच स्तरीय प्रवाह, ट्यूब द्वारा प्रवाह.

3.4 परिसीमा परत :

चपटी प्लेट पर स्तरीय एवं विजुब्ध परिसीमा परत, स्तरीय उपपरत, मसृज एवं रूज परिसीमाएँ, विजर्ष एवं लिफ्ट.

पाइपों द्वारा विजुब्ध प्रवाह : विजुब्ध प्रवाह जे अभिलजज, वेज वितरज एवं पाइप घर्षज जुजज जी विविधता, जलदाब प्रवजता रेजा तथा पूर्ज ऊर्जा रेजा.

3.5 मुक्त वाहिजा प्रवाह :

समा-ा एवं असमा-ा प्रवाह, आघूर्ज एवं ऊर्जा संशुद्धि जुजज, विशिष्ट ऊर्जा तथा विशिष्ट बल, ज्रांतिज जहराई, तीव्र परिवर्ती प्रवाह, जलोच्छाल, ज्रमश: परिवर्ती प्रवाह, पृष्ठ परिच्छेदिजा वर्जीजरज, -ियंत्रज जाट, परिवर्ती प्रवाह समीजरज जे समाजल-ा जी सोपा-ा विधि.

3.6 द्रवचालित यंत्र तथा जलशक्ति :

द्रवचालित टरबाइ-ा, प्रारूप वर्जीजरज, टर्बाइ-ा चय-ा, -िष्पाद-ा प्राचल, -ियंत्रज, अभिलजज, विशिष्ट जति. जलशक्ति विजास जे सिद्धांत .

4. भू-तज-ीजी इंजी-ियरी

मृदा जे प्रजार एवं संरच-ा, प्रवजता तथा जज आजार वितरज, जाढ़ता सीमाएँ.

मृदा जल जोशिजीय तथा संरच-ात्मज प्रभावी प्रतिबल तथा रंध्र जल दाब, प्रयोजशाला -िर्धारज, रिस-ा दाब, बालु पंज अवस्था- जर्त-ा सामर्थ्य परीजज- मोर जूलांब संजल्प-ा- मृदा संह-ा-ा- प्रयोजशाला एवं जेत्र परीजज. संपीड़यता एवं संपिंड-ा संजल्प-ा- संपिंड-ा सिद्धांत- संपीड़यता स्थिरज विश्लेषज. भूदाब सिद्धांत एज प्रतिधारज भित्ति जे लिए विश्लेषज, चादरी स्थूजाभित्ति एवं बंध-ायुक्त ज-ा-ा जे लिए अ-ुप्रयोज. मृदा धारज जमता- विश्लेषज जे उपाजम- जेत्र परीजज- स्थिरज विश्लेषज- भूजम-ा ढाल जा स्थायित्व.

मृदाओं जा अवपृष्ठ ज-ा-ा- विधियाँ.

-ींव- संरच-ा -ींव जे प्रजार एवं चय-ा मापदंड- -ींव अभिजल्प

मापदंड- पाद एवं पाइल प्रतिबल वितरज विश्लेषज, पाइल समूह जार्य- पाइल भार परीजज.

भूतल सुधार प्रविधियाँ.

प्रश्-ापत्र-2

1. -िर्माज तज-ीजी, उपजरज, योज-ा और प्रबंध

1.1 -िर्माज तज-ीजी :

इंजी-ियरी सामज्री :

-िर्माज सामज्री जे, -िर्माज में उ-ाजे प्रयोज जी दृष्टि से, भौतिज जुजधर्म :पत्थर, ईंट तथा टाइल, चू-ा, सीमेंट तथा विविध सुरजी मसाला एवं जंज्रीट. लोह सीमेंट जे विशिष्ट उपयोज, तंतु प्रबलित C.C., उच्च सामर्थ्य जंज्रीट. इमारती लजड़ी : जुजधर्म एवं दोष, सामा-य संरजज, उपचार.

जम लाजत जे आवास, ज-ा आवास, उच्च भव-ों जैसे विशेष उपयोज हेतु सामज्री उपयोज एवं चय-ा.

1.2. -िर्माज :

ईंट, पत्थर, ब्लाजों जे उपयोज जे चि-ाई सिद्धांत- -िर्माज विस्तारज एवं सामर्थ्य अभिलजज.

प्लास्टर, प्वाइंटिंज, फ्लोरिंज, रूफिंज एवं -िर्माज अभिलजजों जे प्रजार.

भव-ों जे सामा-य मरम्मत जार्य.

रहिवासों एवं विशेष उपयोज जे लिए भव-ा जी जार्यात्मज योज-ा जे सिद्धांत- भव-ा जोड उपबंध.

विस्तृत एवं लजभज आजल-ा जे आधारभूत सिद्धांत- वि-िर्देश लेज-ा एवं दर विश्लेषज- स्थावर संपत्ति मूल्यांज-ा जे सिद्धांत.

मृदाबंध जे लिए मशी-री, जंज्रीटजरज एवं उ-ाजा विशिष्ट उपयोज- उपजरज चय-ा जो प्रभावित जर-े वाले जारज- उपजरजों जी प्रचाल-ा लाजत.

1.3 -िर्माज योज-ा एवं प्रबंध :

-िर्माज जार्यजलाप- जार्यज्रम- -िर्माज उद्योज जा संजठ-ा- जुजता आश्वास-ा सिद्धांत.

-ेटवर्ज जे आधारभूत सिद्धांतों जा उपयोज- CPM एवं PERT जे रूप में विश्लेषज-

-िर्माज मॉ-ीटरी, लाजत इष्टतमीजरज एवं संसाध-ा -ियत-ा में उ-ाजा उपयोज. आर्थिज विश्लेषज एवं विधि जे आधारभूत सिद्धांत.

परियोज-ा लाभदायजता-

वित्तीय आयोज-ा जे बूट उपाजम जे आधारभूत सिद्धांत- सरल टौल -ियतीजरज मा-ादंड.

2. सर्वेजज एवं परिवह-ा इंजी-ियरी

2.1 सर्वेजज :

CE जार्य जी दूरी एवं जोज माप-े जी सामा-य विधियाँ एवं उपजरज, प्ले-ा टेबल में उ-ाजा उपयोज, चज्रम सर्वेजज समतल-ा, त्रिजोज-ा, रूपरेजज एवं स्थलाजृतिज मा-ाचित्र,

फोटोज्राममिति एवं दूर-संवेद-ा जे सामा-य सिद्धांत.

2.2 रेलवे इंजी-ियरी :

स्थायी पथ- अवयव, प्रजार एवं उ-ाजे प्रजार्य- टर्-ा एवं ज्रॉसिंज जे प्रजार्य एवं अभिजल्प घटज- ट्रैज जे भूमितीय अभिजल्प जी आवश्यजता- स्टेश-ा एवं यार्ड जा अभिजल्प.

2.3 राजमार्ज इंजी-ियरी :

राजमार्ज संरेज-ा जे सिद्धांत, सड़जों जा वर्जीजरज एवं ज्यामितिज अभिजल्प अवयव एवं सड़जों जे मा-ाज. -ाम्य एवं दृढ़ जुट्टिम हेतु जुट्टिम संरच-ा, जुट्टिम जे अभिजल्प सिद्धांत एवं ज्रियापद्धति. प्ररूपी -िर्माज विधियाँ एवं स्थायीजृत मृदा, WBM, बिटुमे-ी -िर्माज

एवं CC सड़ज्ों ज्े लिए सामग्री. सड़ज्ों ज्े लिए बहिस्तल एवं अधस्तल अपवाह वि-यास- पुलिया संरच-ााएँ. ज्ुट्टिम विजोभ एवं उ-हें उपरिशायी द्वारा मजबूती प्रदा-ा ज्र-ाा. यातायात सर्वेजज एवं यातायात आयोज-ा में उ-ज्े अ-ाुप्रयोज- प्रजालित, इंटरसेक्श-ा एवं घूर्जी आदि ज्े लिए अभिज्ल्प विशेषताएँ- सिज-ाल अभिज्ल्प- मा-ाज् यातायात चि-ह् एवं अंज्-ा.

3. जल विज्ञा-ा, जल संसाध-ा एवं इंजी-ियरी

3.1 जल विज्ञा-ा :

जलीय चज्र, अवजेपज, वाष्पीज्रज, वाष्पोत्सर्ज-ा, अंत:स्यद-ा, अधिभार प्रवाह, जलारेज, बाढ़ आवृत्ति विश्लेषज, जलाशय द्वारा बाढ़ अ-ाुशील-ा, वाहिज्ा प्रवाह मार्जाभिजम-ा- मस्ज्िंजम विधि.

3.2 भू-तल प्रवाह :

विशिष्ट लब्धि, संचय-ा जुजांज्, पारजम्यता जुजांज्, परिरूद्ध तथा अपरिरूद्ध जलप्रवाही स्तर, एक्विटार्ड, परिरूद्ध तथा अपरिरूद्ध स्थितियों ज्े अंतर्जत एज्ज्ूप ज्े भीतर अरीय प्रवाह.

3.3 जल संसाध-ा इंजी-ियरी :

भू तथा धरातल जल संसाध-ा, एज्ल तथा बहुउद्देशीय परियोज-ााएँ, जलाशय ज्ी संचय-ा जमता, जलाशय हानियाँ, जलाशय अवसाद-ा.

3.4 सिंचाई इंजी-ियरी :

(ज्) फसलों ज्े लिए जल ज्ी आवश्यज्ता : जयी उपयोज, ज्ृति तथा डेल्टा, सिंचाई ज्े तरीज्े तथा उ-ाज्ी दजताएँ.

(ज) -ाहरें : -ाहर सिंचाई ज्े लिए आबंट-ा पद्धति, -ाहर जमता, -ाहर ज्ी हानियाँ, मुज्य तथा वितरिज्ा -ाहरों ज्ा संरेज-ा- अत्यधिज् दज ज्ाट, अस्तरित -ाहरें, उ-ज्े डिज़ाइ-ा, रिजीम सिद्धांत, ज्रांतिज् अपरूपज प्रतिबल, तल भार.

(ज) जल-ग्रस्तता : ज्ारज तथा -ियंत्रज, लवजता.

(घ) -ाहर संरच-ााः अभिज्ल्प, दाबोच्चता -ियामज्, -ाहर प्रपात, जलवाही सेतु, अव-ालिज्ा एवं -ाहर विज्ास ज्ा माप-ा.

(ङ) द्विपरिवर्ती शीर्ष ज्ार्य: पारजम्य तथा अपारजम्य -ाींवों पर बाधिज्ा ज्े सिद्धांत और डिजाइ-ा, जोसला सिद्धांत, ऊर्जा जय.

(च) संचय-ा ज्ार्य : बाँधों ज्ी ज्िस्में, डिज़ाइ-ा, दृढ़ जुरूत्व ज्े सिद्धांत, स्थायित्व विश्लेषज.

(छ) उत्प्लव मार्ज : उत्प्लव मार्ज ज्े प्रज्ार, ऊर्जा जय.

(ज) -ादी प्रशिजज : -ादी प्रशिजज ज्े उद्देश्य, -ादी प्रशिजज ज्ी विधियाँ.

4. पर्यावरज इंजी-ियरी

4.1 जल पूर्ति :

जल माँज ज्ी प्राजुक्ति, जल ज्ी अशुद्धता तथा उसज्ा महत्व, भौतिज् रासायनिज् तथा जीवाजु विज्ञा-ा संबंधी विश्लेषज, जल से हो-े वाली बीमारियाँ, पेय जल ज्े लिए मा-ाज्.

4.2 जल ज्ा अंतर्ज्रहज :

जल उपचार : स्ज्ंद-ा ज्े सिद्धांत, ऊर्ज-ा तथा साद-ा, मंद-, द्रुत-, दाब फिल्टर, क्लोरी-ीज्रज, मृदुज्रज, स्वाद, जंध तथा लवजता ज्ो दूर ज्र-ाा.

4.3 वाहित मल व्यवस्था :

घरेलू तथा औद्योजिज् अपशिष्ट, झंझावात वाहित मल- पृथज् और संयुक्त प्रजालियाँ, सीवरों द्वारा बहाव, सीवरों ज्ा डिज़ाइ-ा.

4.4 सीवेज लजज :

BOD, COD, ठोस पदार्थ, विली-ा ऑक्सीज-ा, -ाइट्रोज-ा और TOC, सामा-य जल मार्ज तथा भूमि पर -िष्ज्ास-ा ज्े मा-ाज्.

4.5 सीवेज उपचार :

ज्ार्यज्ारी नियम, इज्ाइयाँ, ज्ोष्ठ, अवसाद-ा टैंज्, च्वापी फिल्टर, ऑक्सीज्रज पोजर, उत्प्रेरित अवपंज् प्रज्रिया, सैप्टिज् टैंज्, अवपंज् निस्तारज, अवशिष्ट जल ज्ा पु-ा: चाल-ा.

4.6 ठोस अपशिष्ट :

जावों और शहरों में संग्रहज एवं विस्तारज, दीर्घज्ाली-ा ज्ुप्रभावों ज्ा प्रबंध.

5. पर्यावरजीय प्रदूषज : अवलंबित विज्ास, रेडियोऐक्टिव अपशिष्ट एवं -िष्ज्ास-ा, उष्मीय शक्ति संयंत्रों, जा-ाों, -ादी घाटी परियोज-ााओं ज्े लिए पर्यावरज संबंधी प्रभाव मूल्यांज्-ा, वायु प्रदूषज, वायु प्रदूषज -ियंत्रज अधिनियम.

वाजिज्य एवं लेजाविधि

प्रश्-ापत्र-1

भाग '1'

लेजाज्रज एवं वित्त

लेजाज्रज, ज्राधा-ा एवं लेजापरीजज

1. वित्तीय लेजाज्रज :

वित्तीय सूच-ाा प्रजाली ज्े रूप में लेजाज्रज; व्यवहारपरज् विज्ञा-ाों ज्ा प्रभाव / लेजाज्रज मा-ाज्, उदाहरजार्थ, मूल्यह्रास ज्े लिए लेजाज्रज, मालसूचियां, अ-ाुसंधा-ा एवं विज्ास लाजतें, दीर्घावधि निर्माज संविदाएं, राजस्व ज्ी पहचा-ा, स्थिर परिसंपत्तियां, आज्स्मिज्ताएं, विदेशी मुद्रा ज्े ले-ा-दे-ा, निवेश एवं सरज्ारी अ-ाुदा-ा, -ाज्दी प्रवाह विवरज, प्रतिशेयर अर्ज-ा.

बो-ास शेयर, राइट शेयर, ज्र्मचारी स्टॉज् विज्ल्प एवं प्रतिभूतियों ज्ी वापसी जरीद (बाई-बैज्) समेत शेयर पूंजी ले-ा-दे-ाों ज्ा लेजाज्रज.

ज्ंप-ाी अंतिम लेजे तैयार ज्र-ाा एवं प्रस्तुत ज्र-ाा.

ज्ंपनियों ज्ा समामेल-ा, आमेल-ा एवं पु-ार्निर्माज.

2. लाजत लेजाज्रज :

लाजत लेजाज्रज ज्ा स्वरूप और ज्ार्य. लाजत लेजाज्रज प्रजाली ज्ा संस्थाप-ा, आय माप-ा से संबंधित लाजत संज्ल्प-ााएं, लाभ आयोज-ाा, लाजत -ियंत्रज एवं -िर्जय-ा.

लाजत -िज्ाल-ा ज्ी विधियां : जॉब लाजत -िर्धारज, प्रज्रिया लाजत -िर्धारज, ज्ार्यज्लाप आधारित लाजत -िर्धारज. लाभ आयोज-ा ज्े उपज्रज ज्े रूप में परिमाज-लाजत-लाभ संबंध.

ज्ीमत -िर्धारज -िर्जयों ज्े रूप में वार्धिज् विश्लेषज / विभेदज् लाजत -िर्धारज, उत्पाद -िर्जय, -िर्माज या ज्रय -िर्जय, बंद ज्र-ो-ा -िर्जय आदि. लाजत -ियंत्रज एंव लाजत-यू-ाीज्रज ज्ी प्रविधियां : योज-ाा एवं -ियंत्रज ज्े उपज्रज ज्े रूप में बजट-ा. मा-ाज् लाजत -िर्धारज एवं प्रसरज विश्लेषज. उत्तरदायित्व लेजाज्रज एवं प्रभाजीय -िष्पाद-ा माप-ा.

3. ज्राधा-ा :

आयज्र : परिभाषाएं; प्रभार ज्ा आधार; ज्ुल आय ज्ा भाज -ा ब-ा-े वाली आय. विभिन्न मदों, अर्थात् वेत-ा, जृह संपत्ति से आय, व्यापार या व्यवसाय से प्राप्तियां और लाभ, पूंजीजत प्राप्तियां, अ-य स्रोतों से आय, -िर्धारिती ज्ी ज्ुल आय में शामिल अ-य व्यक्तियों ज्ी आय. हानियों ज्ा समंज-ा एवं अग्र-ाय-ा.

आय ज्े सज्ल योज से ज्टौतियां.

मूल्य आधारित ज्र (VAT) एवं सेवा ज्र से संबंधित प्रमुज विशेषताएं / उपबंध.

4. लेजा परीजज :

ज्ंप-ाी लेजा परीजा: विभाज्य लाभों से संबंधित लेजा परीजा, लाभांश, विशेष जांच, ज्र लेजा परीजा.

बैंज्िंज, बीमा एवं अ-लाभ संजठ-ाों ज्ी लेजा परीजा; पूर्त संस्थाएं / -ायासें / संजठ-ा.

भाग '2'

वित्तीय प्रबंध, वित्तीय संस्था-ा एवं बाजार

1. वित्तीय प्रबंध :

वित्त प्रज्ार्य : वित्तीय प्रबंध ज्ा स्वरूप, दायरा एवं लज्य: जोजिम एवं वापसी संबंध. वित्तीय विश्लेषज ज्े उपज्रज: अ-ाुपात विश्लेषज, -िधि प्रवाह एवं रोज्ड़ प्रवाह विवरज.

पूंजीजत बजट-ा -िर्जय : प्रज्रिया, विधियां एवं आज्ल-ा विधियां. जोजिम एवं अनिश्चितता विश्लेषज एवं विधियां.

पूंजी ज्ी लाजत : संज्ल्प-ाा, पूंजी ज्ी विशिष्ट लाजत एवं तुलित औसत लाजत ज्ा अभिज्ल-ा. इक्विटी पूंजी ज्ी लाजत -िर्धारित ज्र-े ज्े उपज्रज ज्े रूप में CAPM

वित्तीय-ा -िर्जय : पूंजी संरच-ाा ज्ा सिद्धांत - -िवल आय(NI)उपाजम. -िवल प्रचाल-ा आया(NOI)उपाजम, MMउपाजम एवं पारंपरिज् उपाजम.

पूंजी संरच-ाा ज्ा अभिज्ल्प-ा : लिवरेज ज्े प्रज्ार (प्रचाल-ा, वित्तीय एवं संयुक्त) EBIT-EPS विश्लेषज एवं अ-य ज्ारज्.

लाभांश -िर्जय एवं फर्म ज्ा मूल्यांज्-ा : वाल्टर ज्ा मॉडेल, MMथीसिस, जोर्ड-ा ज्ा मॉडल, लिंट-ार ज्ा मॉडल. लाभांश -ीति ज्ो प्रभावित ज्र-े वाले ज्ारज्.

ज्ार्यशील पूंजी प्रबंध : ज्ार्यशील पूंजी आयोज-ाा. ज्ार्यशील पूंजी ज्े -िर्धारज. ज्ार्यशील पूंजी ज्े घटज् रोज्ड़, मालसूची एवं प्राप्य.

विलय-ाों एवं परिग्रहजों पर एज्ाग्र ज्ंप-ाी पु-ार्संरच-ाा (ज्ेवल वित्तीय परिप्रेज्य)

2. वित्तीय बाजार एवं संस्था-ा :

भारतीय वित्तीय व्यवस्था : विहंजावलोज्-ा.

मुद्रा बाजार : सहभाजी, संरच-ाा एवं प्रपत्र / वित्तीय बैंज्.

बैंज्िंज जेत्र में सुधार. भारतीय रिजर्व बैंज् ज्ी मौद्रिज् एवं ऋज -ीति. -ियामज् ज्े रूप में भारतीय रिजर्व बैंज्.

पूंजी बाजार : प्राथमिज् एवं द्वितीयज् बाजार; वित्तीय बाजार प्रपत्र एवं -ावप्रियात्मज् ऋज प्रपत्र; -ियामज् ज्े रूप में SEBI वित्तीय सेवाएं : म्यूचुअल फंड्स, जोजिम पूंजी, साज मा-ाभिज्रज, बीमा एवं IRDA

प्रश्-ापत्र - 2

भाग '1'

संजठ-ा सिद्धांत एवं व्यवहार, मा-ाव संसाध-ा प्रबंध एवं औद्योजिज् संबंध

संजठ-ा सिद्धांत एवं व्यवहार

1. संजठ-ा सिद्धांत :

संजठ-ा ज्ा स्वरूप एवं संज्ल्प-ाा; संजठ-ा ज्े बाह्य परिवेश - प्रौद्योजिज्ीय, सामाजिज्, राज-ाैतिज्, आर्थिज् एवं विधिज्; सांजठनिज् लज्य - प्राथमिज् एवं द्वितीयज् लज्य, एज्ल एवं बहुल लज्य; उद्देश्याधारित प्रबंध / संजठ-ा सिद्धांत ज्ा विज्ास : क्लासिज्ी, -ावक्लासिज्ी एवं प्रजाली उपाजम.

संजठ-ा सिद्धांत ज्ी आधुनिज् संज्ल्प-ाा : सांजठनिज् अभिज्ल्प, सांजठनिज् संरच-ाा एवं सांजठनिज् संस्ज्ृति.

सांजठनिज् अभिज्ल्प : आधारभूत चु-ाौतियां; पृथज्ज्रज एवं एज्ीज्रज प्रज्रिया; ज्ेंद्रीज्रज एवं विज्ेंद्रीज्रज प्रज्रिया; मा-ाज्ीज्रज/औपचारिज्ीज्रज एवं परस्पर समायोज-ा.

औपचारिज् एवं अ-ाौपचारिज् संजठ-ाों ज्ा सम-वय. यांत्रिज् एवं सावयव संरच-ाा.

सांजठनिज् संरच-ाा ज्ा अभिज्ल्प-ा-प्राधिज्ार एवं -ियंत्रज; व्यवसाय एवं स्टाफ प्रज्ार्य, विशेषज्ञता एवं सम-वय.

सांजठनिज् संरच-ाा ज्े प्रज्ार - प्रज्ार्यात्मज्.

आधात्री संरच-ाा, परियोज-ाा संरच-ाा. शक्ति ज्ा स्वरूप एवं आधार, शक्ति ज्े स्रोत, शक्ति संरच-ाा एवं राज-ाीति. सांजठनिज् अभिज्ल्प एवं संरच-ाा पर सूच-ाा प्रौद्योजिज्ी ज्ा प्रभाव.

सांजठनिज् संस्ज्ृति ज्ा प्रबंध-ा

2. संजठ-ा व्यवहार :

अर्थ एवं संज्ल्प-ाा; संजठ-ाों में व्यक्ति :व्यक्तित्व, सिद्धांत, एवं -िर्धारज्; प्रत्यजज - अर्थ एवं प्रज्रिया. अभिप्रेरज : संज्ल्प-ाा, सिद्धांत एवं अ-ाुप्रयोज.

-ेतृत्व - सिद्धांत एवं शैलियां. ज्ार्यजीव-ा ज्ी जुजता (QWL):अर्थ एवं -िष्पाद-ा पर इसज्ा प्रभाव, इसे बढ़ा-े ज्े तरीज्े. जुजता चज्र (QC)-अर्थ एवं उ-ाज्ा महत्व. संजठ-ाों में द्व-द्वों ज्ा प्रबंध. ले-ा-दे-ा विश्लेषज, सांजठनिज् प्रभावज्ारिता, परिवर्त-ा ज्ा प्रबंध.

भाग '2'

मा-ाव संसाध-ा प्रबंध एवं औद्योजिज् संबंध

1. मा-ाव संसाध-ा प्रबंध (HRM):

मा-ाव संसाध-ा प्रबंध ज्ा अर्थ, स्वरूप एवं जेत्र, मा-ाव संसाध-ा आयोज-ाा, जॉब विश्लेषज, जॉब विवरज, जॉब विनिर्देश-ा, -ियोज-ा प्रज्रिया, चय-ा प्रज्रिया, अभिमुजीज्रज एवं स्थाप-ा, प्रशिजज एवं विज्ास प्रज्रिया, -िष्पाद-ा आज्ल-ा एवं 360° फीडबैज्, वेत-ा एवं मजदूरी प्रशास-ा, जॉब मूल्यांज्-ा, ज्र्मचारी ज्ल्याज, पदोन्नतियां, स्था-ांतरज एवं पृथक्ज्रज.

2. औद्योजिज् संबंध (IR)

औद्योजिज् संबंध ज्ा अर्थ, स्वरूप, महत्व एवं जेत्र, ट्रेड यूनिय-ाों ज्ी रच-ाा, ट्रेड यूनिय-ा विधा-ा, भारत में ट्रेड यूनिय-ा आंदोल-ा, ट्रेड यूनिय-ाों ज्ी मा-यता, भारत में ट्रेड यूनिय-ाों ज्ी समस्याएं. ट्रेड यूनिय-ा आंदोल-ा पर उदारीज्रज ज्ा प्रभाव.

औद्योजिज् विवादों ज्ा स्वरूप : हड़ताल एवं तालाबंदी, विवाद ज्े ज्ारज, विवादों ज्ा -िवारज एवं निपटारा. प्रबंध-ा में ज्ामजारों ज्ी सहभाजिता : दर्श-ा, तर्ज्धार, मौजूदा स्थिति एवं भावी संभाव-ााएं.

-याय -िर्जय एवं सामूहिज् सौदाज्ारी

सार्वजनिज् उद्यमों में औद्योजिज् संबंध, भारतीय उद्योजों में जैरहाजिरी एवं श्रमिज् आवर्त एवं उ-ाज्े ज्ारज और उपचार.

ILO एवं इसज्े प्रज्ार्य.

अर्थशास्त्र

प्रश्-ापत्र- 1

1. उन्नत व्यष्टि अर्थशास्त्र

(ज्) ज्ीमत -िर्धारज ज्े मार्शलिय-ा एवं वालरासियम उपाजम.

(ज) वैज्ल्पिज् वितरज सिद्धांत : रिज्ार्डो, ज्ाल्डोर, ज्लीज्ी

(ज) बाजार संरच-ाा : एज्ाधिज्ारी प्रतियोजिता, द्विअधिज्ार, अल्पाधिज्ार

(घ) आधुनिज् ज्ल्याज मा-ादज्ड : परेटो हिक्स एवं सितोवस्ज्ी, ऐरो ज्ा असंभाव-ाा प्रमेय, ए. ज्े. से-ा ज्ा सामाजिज् ज्ल्याज फल-ा.

2. उन्नत समष्टि अर्थशास्त्र :

-ियोज-ा आय एवं ब्याजदर -िर्धारज ज्े उपाजम : क्लासिज्ी, ज्ी-स (IS-LM) वज्र, -ावक्लासिज्ी संश्लेषज एवं -ाया क्लासिज्ी, ब्याजदर -िर्धारज एवं ब्याजदर संरच-ाा ज्े सिद्धांत.

3. मुद्रा बैंज्िंज एवं वित्त :

(ज्) मुद्रा ज्ी मांज और पूर्ति : मुद्रा ज्ा मुद्रा जुजज् मात्रा सिद्धांत (फिशर, पीज् एवं फ्राइडमै-ा) तथा ज्ी-ा ज्ा मुद्रा ज्े लिए मांज ज्ा सिद्धांत, बंद और जुली अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रा प्रबंध-ा ज्े लज्य एवं साध-ा. ज्ेन्द्रीय बैंज् और जजा-ो ज्े बीच संबंध. मुद्रा ज्ी वृद्धि दर पर उच्चतम सीमा ज्ा प्रस्ताव.

(ज) लोज् वित्त और बाजार अर्थव्यवस्था में इसज्ी भूमिज्ा: पूरी ज्े स्वीज्रज में, संसाध-ाों ज्ा विनिधा-ा और वितरज और संवृद्धि. सरज्ारी राजस्व ज्े स्रोत, ज्रों एवं उपदा-ाों ज्े रूप, उ-ाज्ा भार एवं प्रभाव. ज्राधा-ा ज्ी सीमाएं, ऋज, ज्राउडिंज आउट प्रभाव एवं ऋज ले-े ज्ी सीमाएं. लोज् व्यय एवं इसज्े प्रभाव.

4. अ-तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र :

(ज्) अ-तर्राष्ट्रीय व्यापार ज्े पुरा-े और -ाए सिद्धांत

(i) तुल-ाात्मज् लाभ

(ii) व्यापार शर्तें एवं प्रस्ताव वज्र

(iii) उत्पाद चज्र एवं -िर्जायज् व्यापार सिद्धांत

(iv) व्यापार, संवृद्धि ज्े चालज् ज्े रूप में और जुली अर्थव्यवस्था में अवविज्ास ज्े सिद्धांत.

(ज) संरजज ज्े स्वरूप : टैरिफ एवं ज्ोटा

(ज) भुजता-ा शेष समायोज-ा : वैज्ल्पिज् उपाजम

(i) ज्ीमत ब-ााम आय, -ियत विनिमय दर ज्े अधी-ा आय ज्े समायोज-ा.

(ii) मिश्रित -ीति ज्े सिद्धांत

(iii) पूंजी चलिष्जुता ज्े अधी-ा विनिमय दर समायोज-ा.

(iv) विज्ासशील देशों ज्े लिए तिरती दरें और उ-ाज्ी विवजा, मुद्रा (ज्रेंसी) बोर्ड.

(v) व्यापार -ीति एवं विज्ासशील देश

(vi) BOP, जुली अर्थव्यवस्था समष्टि मॉडल में समायोज-ा तथा -ीति सम-वय.

(vii) सट्टा

(viii) व्यापार जुट एवं मौद्रिज् संघ

(ix) विश्व व्यापार संजठ-ा (WTO): TRIM, TRIPS, घरेलू उपाय, WTO बातचीत ज्े विभिन्न चज्र

5. संवृद्धि एवं विज्ास :

(ज्) (i) संवृद्धि ज्े सिद्धांत : हैरॅड ज्ा मॉडल

(ii) अधिशेष श्रमिज् ज्े साथ विज्ास ज्ा ल्यूइस मॉडल

(iii) संतुलित एवं असंतुलित संवृद्धि

(iv) मा-ाव पूंजी एवं आर्थिज् वृद्धि

(ज) ज्म विज्सित देशों ज्ा आर्थिज् विज्ास ज्ा प्रज्रम : आर्थिज् विज्ास एवं संरच-ाा परिवर्त-ा ज्े विषय में मिर्डल एवं ज्ुजमेंट्स : ज्म विज्सित देशों ज्े आर्थिज् विज्ास में ज्ृषि ज्ी भूमिज्ा.

(ज) आर्थिज् विज्ास तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं -िवेश, बहुराष्ट्रीयों ज्ी भूमिज्ा.

(घ) आयोज-ाा एवं आर्थिज् विज्ास : बाजार ज्ी बदलती भूमिज्ा एवं आयोज-ाा, -िजी- सरज्ारी साझेदारी.

(ङ) ज्ल्याज संज्ेतज् एवं वृद्धि ज्े माप - मा-ाव विज्ास ज्े सूचज्. आधारभूत आवश्यज्ताओं ज्ा उपाजम.

(च) विज्ास एवं पर्यावरजी धारजीयता - पु-ा-ार्वीज्रजीय एवं अपु-ा-ार्वीज्रजीय संसाध-ा, पर्यावरजी अपज्र्ष, अंतर-पीढ़ी इक्विटो विज्ास.

प्रश्न-पत्र -2

1. स्वतंत्रतापूर्व युग में भारतीय अर्थव्यवस्था : भूमि प्रजाली एवं इसजे परिवर्त-ा, ृषि ज ा वाजिज्यीॅ रज, अपवह-ा सिद्धांत, अबंधता सिद्धांत एवं समालोच-ाा. -िर्माज एवं परिवह-ा : जूट, ज पास, रेलवे, मुद्रा एवं साज.

2. स्वतंत्रता जे पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था :

ज. उदारीॅ रज जे पूर्व ज ा युज

(i) वॅील, जाइजिल एवं वी. जे. आर. वी. राव जे योजदा-ा

(ii) ृषि : भूमि सुधार एवं भूमि पट्टा प्रजाली, हरित ्रांति एवं ृषि में पूंजी -िर्माज.

(iii) संघट-ा एवं संवृद्धि में व्यापार प्रवृत्तियां, सरॅारी एवं -िजी जेत्रॅों जी भूमिॅा, लघु एवं ॅुटीर उद्योज.

(iv) राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय : स्वरूप, प्रवृत्तियां, सॅल एवं जेत्रॅीय संघट-ा तथा उ-में परिवर्त-ा.

(v) राष्ट्रीय आय एवं वितरज जो -िर्धारित ॅर-ो वाले स्थूल ॅारॅ, जरीबी जे माप, जरीबी एवं असमा-ाता में प्रवृत्तियां.

ज. उदारीॅ रज जे पश्चात ज ा युज

(i) -ाया आर्थिॅ सुधार एवं ृषि : ृषि एवं WTO, जाद्य प्रसंस्ॅरज, उपदा-ा, ृषि जीमतें एवं ज-ा वितरज प्रजाली, ृषि संवृद्धि पर लोॅ व्यय ॅा समाघात.

(ii) -ाई आर्थिॅ -ाीति एवं उद्योज: औद्योजीॅ रज -िजीॅ रज, विनिवेश जी ॅार्य -ाीति, विदेशी प्रत्यज -िवेश तथा बहुराष्ट्रीयों जी भूमिॅा.

(iii) -ाई आर्थिॅ -ाीति एवं व्यापार : बौद्धिॅ संपदा अधिॅार: TRIPS, TRIMS, GATS तथा -ाई EXIM -ाीति जी विवजाएं.

(iv) -ाई विनिमय दर व्यवस्था : आंशिॅ एवं पूर्ज परिवर्त-ाीयता.

(v) -ाई आर्थिॅ -ाीति एवं लोॅ वित्त : राजॅोषीय उत्तरदायित्व अधिनियम, बारहवां वित्त आयोज एवं राजॅोषीय संघवाद तथा राजॅोषीय समेॅ-ा.

(vi) -ाई आर्थिॅ -ाीति एवं मौद्रिॅ प्रजाली. -ाई व्यवस्था में RBI जी भूमिॅा.

(vii) आयोज-ा: ॅे-द्रीय आयोज-ा से सांॅेतिॅ आयोज-ा तॅ, विॅे-द्रीॅृत आयोज-ा और संवृद्धि हेतु बाजार एवं आयोज-ा जे बीच संबंध : 73 वां एवं 74 वां संविधा-ा संशोध-ा.

(viii) -ाई आर्थिॅ -ाीति एवं रोज़जार : रोज़जार एवं जरीबी, ग्रामीज मज़दूरी, रोज़जार सृज-ा, जरीबी उ-मूल-ा योज-ााएं, -ाई ग्रामीज रोज़जार जारंटी योज-ाा.

वैद्युत इंजी-ियरी

प्रश्न-पत्र - 1

1. परिपथ - सिद्धांत :

विद्युत अवयव, जाल लेजाचित्र, ॅेल्वि-ा धारा -ियम, ॅेल्वि-ा वोल्टता -ियम; परिपथ विश्लेषज विधियां; -ोडीय विश्लेषज; पाश विश्लेषज; आधारभूत जाल प्रमेय तथा अ-ुप्रयोज; जजिॅा विश्लेषज : RL,RCएवं RLC परिपथ; ज्यावॅ्रीय स्थायी अवस्था विश्लेषज; अ-ु-ाादी परिपथ; युग्मित परिपथ; संतुलित त्रिॅला परिपथ. द्विॅारॅ जाल.

2. संॅेत एवं तंत्र :

सतत ॅाल एवं विवक्त-ॅाल संॅेतों एवं तंत्र ॅा -िरूपज; रैजिॅ ॅाल -िश्चर तंत्र, संवल-ा, आवेज अ-ुि्रया; संवल-ा एवं अवॅल अंतर समीॅ रजों पर आधारित रैजिॅ ॅाल -िश्चर तंत्रों ॅा समय जेत्र विश्लेषज. फूरिए रूपांतर, लेप्लास रूपांतर, जैड-रूपांतर, अंतरज फल-ा संॅेतों ॅा प्रतिचय-ा एवं उ-ाॅी प्रतिप्राप्ति. विवक्त ॅालतंत्रों ॅे द्वारा तुल्य रूप संॅेतों ॅा DFT,FFT संसाध-ा.

3. विद्युत चुम्बॅीय सिद्धांत :

मैक्सवेल समीॅ रज, परिबद्ध माध्यम में तरंज संचरज. परिसीमा अवस्थाएं, समतल तरंजों ॅा परावर्त-ा एवं अपवर्त-ा. संचरज लाइ-ें : प्रजामी एवं अप्रजामी तरंजें, प्रति बाधा प्रतितुल-ा, स्मिथ चार्ट.

4. तुल्य एवं इलेक्ट्रॉ-िॅी :

अभिलजज एवं डायोड ॅा तुल्य परिपथ (वृहत एवं लघु संॅेत), द्विसंधि ट्रांजिस्टर, संधि जेत्र प्रभाव ट्रांजिस्टर एवं धातु ऑक्साइड सामिचालॅ जेत्र प्रभाव ट्रांजिस्टर. डायोड परिपथ : ॅर्त-ा, ग्रामी, दिष्टॅारी. अभि-ातिॅ रज एवं अभि-ाति स्थायित्व. जेत्र प्रभाव ट्रांजिस्टर प्रवर्धॅ. धारा दर्पज, प्रवर्धॅ : एॅल एवं बहुचरजी, अवॅल, संि्रयात्मॅ, पु-र्निवेश एवं शक्ति. प्रबंधॅों ॅा विश्लेषज, प्रबंधॅों जी आवृति अ-ुि्रया. संि्रयात्मॅ प्रबंधॅ परिपथ. -िस्यंदॅ, ज्यावॅ्रीय दोलित्र: दोल-ा ॅे लिए ॅसौटी, एॅल ट्रांजिस्टर और संि्रयात्मॅ प्रवर्धॅ वि-यास. फल-ा ज-ित्र एवं तरंज परिपथ. रैजिॅ एवं स्विच-ा विद्युत प्रदाय.

5. अंॅीय इलेक्ट्रॉ-िॅी :

बूलीय बीजावली, बूलीय फल-ा ॅा -यू-ातमीॅ रज; तर्ॅ द्वार, अंॅीय समाॅलित परिपथ ॅुल, (DTL,TTL,ECL,MOS,CMOS) । संयुक्त परिपथ; अंॅजजितीय परिपथ, ॅोड परिवर्तॅ, मल्टी प्लेयक्सर एवं विॅोडित्र.

अ-ुि्रमिॅ परिपथ : चटज-ी एवं थपथप, जजित्र एवं विस्थाप-ा पंजीयॅ. तुलनित्र, ॅालनियामॅ बहुॅंपित्र. प्रतिदर्श एवं धारज परिपथ, तुल्यरूप अंॅीय परिवर्त(ADC)एवं अंॅीय तुल्य रूप परिवर्तॅ (DAC) ।सामिचालॅ स्मृतियां. प्रॅ्रमित युक्तियों ॅा प्रयोज ॅरते हुए तर्ॅ ॅार्या-वय-ा (ROM,PLA,FPGA) ।

6. ऊर्जा रूपांतरज :

वैद्युत यांत्रिॅी ऊर्जा रूपांतरज ॅे सिद्धांत : घूर्जित मशी-ों में बल आघूर्ज एवं विद्युत चुंबॅीय बल. दि.धा. मशी-ें : अभिलजज एवं -िस्पाद-ा विश्लेषज, मोटरों ॅा प्रारंभ-ा एवं जति नियंत्रज. परिजामित्र: प्रचाल-ा एवं विश्लेषज ॅे सिद्धांत; विनियम-ा दजता; त्रिॅला परिजामित्र: त्रिॅला प्रेरज मशी-ें एवं तुल्यॅालिॅ मशी-ें : अभिलजज एवं -िष्पाद-ा विश्लेषज; जति -ियंत्रज.

7. शक्ति इलेक्ट्रॉ-िॅी एवं विद्युत चाल-ा :

सामिचालॅ शक्ति युक्तियां : डायोड, ट्रांजस्टर, थाइरिस्टर, ट्रायॅ, GTO एवं धातु ऑक्साइड सामिचालॅ जेत्र प्रभाव ट्रांजिस्टर-स्थैतिॅ अभिलजज एवं प्रचाल-ा ॅे सिद्धांत, ट्रिजरिंज परिपथ, ॅला -ियंत्रज दिष्टॅारी, सेतु परिवर्तॅ : पूर्ज नियंत्रित एवं अर्द्धनियंत्रित थाइरिस्टर चापर एवं प्रतीपॅों ॅे सिद्धांत, DC-DC परिवर्तॅ, स्विच मोड इ-वर्टर, dcएवं ac मोटर चाल-ा ॅे जतिनियंत्रज जी आधारभूत संॅल्प-ा, विचरजीय चाल चाल-ा ॅे अ-ुप्रयोज.

8. तुल्यरूप संचार :

यादृच्छिॅ चर : संतत, विविक्त; प्रायिॅता, प्रायिॅता फल-ा. सांख्यिॅीय औसत; प्रायिॅता -िदर्श; यादृच्छिॅ संॅेत एवं रव : सम, रव, रवतुल्य बैंड चौड़ाई, रव सहित संॅेत प्रेषज, रव संॅेत अ-ुपात, रैजिॅ cwमॉडुल-ा: आयाम - माडुल-ा: द्विसाइड बैंड, द्विसाइड बैंड - एॅल चै-ाल (DSB-SC)एवं एॅल साइड बैंड. मॉडुल-ा एवं विमाडुल-ा; ॅला और आवृत्ति माडुल-ा : ॅला माडुल-ा एवं आवृति मॉडुल-ा संॅेत, संॅीर्ज बैंड आवृति मॉडुल-ा, आवृति मॉडुल-ा ॅला मॉडुल-ा ॅे लिए ज-ा-ा एवं संसूच-ा, विष्प्रबल-ा, पूर्व प्रबल-ा. संवाहॅ तरंज मॉडुल-ा(CWM) तंत्र : परासंॅ रज अभिग्राही, आयाम मॉडुल-ा अभिग्राही, संचार अभिग्राही, आवृति मॉडुल-ा अभिग्राही, ॅला पाशित लूप, एॅल साइड बैंड अभिग्राही, आयाम मॉडुल-ा एवं आवृति मॉडुल-ा अभिग्राही ॅे लिए सिज-ाल-रव अ-ुपात जज-ा.

प्रश्न-पत्र - 2

1. -ियंत्रज तंत्र :

-ियंत्रज तंत्र ॅे तत्व, जंड आरेज -िरूपज : जुला - पाश एवं बंदपाश तंत्र, पु-र्निवेश ॅे सिद्धांत एवं अ-ुप्रयोज. -ियंत्रज तंत्र अवयव. रैजिॅ ॅाल -िश्चर तंत्र : ॅाल प्रजेत्र एवं रूपांतर प्रजेत्र विश्लेषज. स्थायित्व : राउथ हरविॅ ॅसौटी, मूल बिंदुपथ, बोडे आलेज एवं पोलर आलेज, -ाइक्विएस्ट ॅसौटी, अग्रपश्चता प्रतिॅारॅ ॅा अभिॅल्प-ा. साम-ुपातिॅ PI, PID,-ियंत्रॅ; -ियंत्रज तंत्रों ॅा अवस्था-विचरजीय -िरूपज एवं विश्लेषज.

2. माइॅ्रोप्रोसेसर एवं माइॅ्रोॅंप्यूटर :

PCसंघट-ा, CPU, अ-ुदेश सेट, रजिस्टर सेट,टाइमिंज आरेज, प्रोग्राम-ा, अंतरा-ाय-ा, स्मृति अंतरापृष्ठ-ा, IO अंतरापृष्ठ-ा, प्रोग्राम-ाीय परिधीय युक्तियां.

3. माप-ा एवं मापयंत्रज :

त्रुटि विश्लेषज : धारा, वोल्टता, शक्ति, ऊर्जा, शक्ति जुजॅ, प्रतिरोध, प्रेरॅत्व, धारिता एवं आवृति ॅा माप-ा, सेतु माप-ा. सिज-ाल अ-ुॅूल परिपथ, इलेक्ट्रॉ-िॅ माप-ा यंत्र : बहुमापी, ॅैथोड ॅिरज आसिलोस्ॅोप, अंॅीय बोल्टमापी, आवृति जजित्र, Qमापी, स्पेक्ट्रम विश्लेषॅ, विरूपज मापी ट्रांसड्यूसर, ताप वैद्युत युग्म, थर्मिस्टर, रेजीय परिवर्त-ाीय अवॅल ट्रांसड्यूसर, विॅृति प्रभावी, दाब विद्युत ॅ्रिस्टल.

4. शक्तितंत्र : विश्लेषज एवं -ियंत्रज :

सिरोपरि संचरज लाइ-ों तथा ॅेबलों ॅा स्थायी दशा -िष्पाद-ा, सि्रय एवं प्रतिघाती शक्ति अंतरज एवं वितरज ॅे सिद्धांत, प्रतिर्ॅाई राशियां, बस प्रवेश्यता एवं प्रतिबाधा आव्यूह, लोड प्रवाह; बोल्टता -ियंत्रज एवं शक्ति जुजॅ संशोध-ा; आर्थिॅ प्रचाल-ा; सममित घटॅ; सममित एवं असममित दोष ॅा विश्लेषज. तंत्र स्थायित्व जी अवधारजा: स्विंज वॅ्र एवं समजेत्र ॅसौटी. स्थैतिॅ बोल्ट ऐंपियर प्रतिघाती तंत्र. उच्च वोल्टता दिष्टधारा संचरज जी मूलभूत अवधारजाएं.

5. शक्तितंत्र रजज :

अतिधारा, अवॅल एवं दूरी रजज ॅे सिद्धांत. ठोस अवस्था रिले जी अवधारजा. परिपथ वियोजॅ. अभिॅलित्र सहायता प्राप्त रजज; परिचय, लाइ-ा, बस, ज-ित्र, परिजामित्र रजज, संज्यात्मॅ रिले एवं रजज ॅे लिए अंॅीय संॅेत रजज (DSP) ॅा अ-ुप्रयोज.

6. अंॅीय संचार :

स्पंद ॅोड मॉडुल-ा, अवॅल स्पंद ॅोड मॉडुल-ा, डेल्टा मॉडुल-ा, अंॅीय मॉडुल-ा एवं विमॉडुल-ा योज-ााएं: आयाम, ॅला एवं आवृति ॅुंजीय-ा योज-ााएं. त्रुटि -ियंत्रज ॅूटॅरज: त्रुटिसंसूच-ा एवं संशोध-ा रैजिॅ जंड ॅोड, संवल-ा ॅोड. सूच-ाा माप एवं स्रोत ॅूटॅरज. आंॅड़ा जाल, 7-स्तरीय वास्तुॅला.

भूजोल

प्रश्न-पत्र - 1

भूजोल ॅे सिद्धांत

प्राॅृतिॅ भूजोल

1. भूआॅृति विज्ञा-ा : भूआॅृति विॅास ॅे -ियंत्रॅ ॅारॅ; अंतर्जात एवं बहिर्जात बल; भूपर्पटी ॅा उद्जम एवं विॅास; भू-चुंबॅत्व ॅे मूल सिद्धांत; पृथ्वी ॅे अंतरंज जी प्राॅृतिॅ दशाएं.

भू-अभि-ाति; महाद्वीपीय विस्थाप-ा; समस्थिति; प्लेट विवर्त-िॅी; पर्वतोत्पति ॅे संबंध में अभि-ाव विचार; ज्वालामुजीयता; भूॅंप एवं सु-ाामी; भूआॅृतिॅ चॅ्र एवं दृश्यभूमि विॅास जी संॅल्प-ााएं; अ-ााच्छाद-ा ॅाला-ुॅ्रम; जलमार्ज आॅृतिविज्ञा-ा; अपरद-ा पृष्ठ; प्रवजता विॅास; अ-ुप्रयुक्त भूआॅृति विज्ञा-ा; भूजलविज्ञा-ा, आर्थिॅ भूविज्ञा-ा एवं पर्यावरज.

2. जलवायु विज्ञा-ा : विश्व ॅे ताप एवं दाब ॅटिबंध; पृथ्वी ॅा तापीय बजट; वायुमंडल परिसंचरज, वायुमंडल स्थिरता एवं अ-ास्थिरता. भूमंडलीय एवं स्था-ाीय पव-ा; मा-ास्-ा एवं जेट प्रवाह; वायु राशि एवं वाताग्रज-ा-ा; शीतोष्ज एवं उष्जॅटिबंधीय चॅ्रवात; वर्षज ॅे प्रॅार एवं वितरज; मौसम एवं जलवायु; ॅोपे-ा, थॉर्-विट एवं त्रेवार्धा ॅा विश्व जलवायु वर्जीॅरज; जलीय चॅ्र; वैश्विॅ जलवायु परिवर्त-ा एवं जलवायु परिवर्त-ा में मा-ाव जी भूमिॅा एवं अ-ुि्रया, अ-ुप्रयुक्त जलवायु विज्ञा-ा एवं -ाजरी जलवायु.

3. समुद्र विज्ञा-ा : अटलांटिॅ, हिंद एवं प्रशांत महासाजरों जी तलीय स्थलाॅृति; महासाजरों ॅा ताप एवं लवजता; ऊष्मा एवं लवज बजट, महासाजरी -िजेप; तरंज, धाराएं एवं ज्वार - भाटा; समुद्री संसाध-ा :जीवीय, ज-िज एवं ऊर्जा संसाध-ा; प्रवाल भित्तियां; प्रवाल विरंज-ा; समुद्र तल परिवर्त-ा; समुद्र -ियम एवं समुद्री प्रदूषज.

4. जीव भूजोल : मृदाओं जी उत्पत्ति; मृदाओं ॅा वर्जीॅरज एवं वितरज; मृदा परिच्छेदिॅा; मृदा अपरद-ा; -यू-ाीॅरज एवं संरजज; पादप एवं जंतुओं ॅे वैश्विॅ वितरज ॅो प्रभावित ॅर-े वाले ॅारॅ; व-ा अपरोपज जी समस्याएं एवं संरजज ॅे उपाय; सामाजिॅ वा-िॅी; ृषि वा-िॅी; व-य जीव-ा; प्रमुज जी-ा पूल ॅेंद्र.

5. पर्यावरजीय भूजोल : पारिस्थितिॅी ॅे सिद्धांत; मा-ाव पारिस्थितिॅ अ-ुॅूल-ा; पारिस्थितिॅी एवं पर्यावरज पर मा-ाव ॅा प्रभाव; वैश्विॅ एवं जेत्रीय पारिस्थितिॅ परिवर्त-ा एवं असंतुल-ा; पारितंत्र उ-ाॅा प्रबंध-ा एवं संरजज; पर्यावरजीय -िम्-ाीॅरज, प्रबंध एवं संरजज; जैव विविधता एवं संपोषजीय विॅास; पर्यावरजीय शिजा एवं विधा-ा.

मा-ाव भूजोल

1. मा-ाव भूजोल में संदर्श : जेत्रीय विभेद-ा; प्रादेशिॅ संश्लेषज; द्विभाज-ा एवं द्वैतवाद; पर्यावरजवाद; मात्रात्मॅ ॅ्रांति एवं अवस्थिति विश्लेषज; उग्रसुधार, व्यावहारिॅ, मा-ावीय एवं ॅल्याज उपाजम; भाषाएं, धर्म एवं -िरपेजीॅरज; विश्व ॅे सांस्ॅृतिॅ प्रदेश; मा-ाव विॅास सूचॅ.

2. आर्थिॅ भूजोल : विश्व आर्थिॅ विॅास : माप एवं समस्याएं; विश्व संसाध-ा एवं उ-ाॅा वितरज; ऊर्जा संॅट; संवृद्धि जी सीमाएं; विश्व ृषि: ृषि प्रदेशों जी प्रारूपता; ृषि -िवेश एवं उत्पादॅता; जाद्य एवं पोषज समस्याएं; जाद्य सुरजा; दुर्भिज : ॅारज, प्रभाव एवं उपचार; विश्व उद्योज; अवस्था-िॅ प्रतिरूप एवं समस्याएं; विश्व व्यापार ॅे प्रतिमा-ा.

3. ज-ासंज्या एवं बस्ती भूजोल : विश्व ज-ासंज्या जी वृद्धि और वितरज; ज-ासांज्यिॅी जुज; प्रवास-ा ॅे ॅारज एवं परिजाम; अतिरेॅ - अल्प एवं अ-ुॅूलतम ज-ासंज्या जी संॅल्प-ााएं; ज-ासंज्या ॅे सिद्धांत; विश्व ज-ासंज्या समस्याएं और -ाीतियां; सामाजिॅ ॅल्याज एवं जीव-ा जुजवत्ता; सामाजिॅ पूंजी ॅे रूप में ज-ासंज्या.

ग्रामीज बस्तियों ॅे प्रॅार एवं प्रतिरूप; ग्रामीज बस्तियों में पर्यावरजीय मुद्दे; -ाजरीय बस्तियों ॅा पदा-ुॅ्रम; -ाजरीय आॅारिॅी; प्रमुज शहर एवं श्रेजी आॅार प्रजाली जी संॅल्प-ाा; -ाजरों ॅा प्रॅार्यात्मॅ वर्जीॅरज; -ाजरीय प्रभाव जेत्र; ग्राम -ाजर उपांत; अ-ुषंजी -ाजर; -ाजरीॅरज जी समस्याएं एवं समाधा-ा; -ाजरों ॅा संपोषजीय विॅास.

4. प्रादेशिॅ आयोज-ाा : प्रदेश जी संॅल्प-ाा; प्रदेशों ॅे प्रॅार एवं प्रदेशीॅरज जी विधियां; वृद्धि ॅे-द्र तथा वृद्धि ध्रुव; प्रादेशिॅ असंतुल-ा; प्रादेशिॅ विॅास ॅार्य-ाीतियां; प्रादेशिॅ आयोज-ाा में पर्यावरजीय मुद्दे; संपोषजीय विॅास ॅे लिए आयोज-ाा.

5. मा-ाव भूजोल में मॉडल, सिद्धांत एवं -ियम : मा-ाव भूजोल में प्रजाली विश्लेषज; माल्थस ॅा, मार्क्स ॅा और ज-ासांज्यिॅीय संॅ्रमज मॉडल; ॅ्रिस्टावर एवं लॉश ॅा ॅे-द्रीय स्था-ा सिद्धांत; पेरू एवं बूदेविए; वॉ-ा थू-े-ा ॅा ृषि अवस्था-ा मॉडल; वेबर ॅा औद्योजिॅ अवस्था-ा मॉडल; ओस्तोव ॅा वृद्धि अवस्था माडल; अंत:भूमि एवं बहि:भूमि सिद्धांत; अंतरराष्ट्रीय सीमाएं एवं सीमांत जेत्र ॅे -ियम.

प्रश्न-पत्र - 2

भारत ॅा भूजोल

1. भौतिॅ वि-यास : पड़ोसी देशों ॅे साथ भारत ॅा अंतरिज संबंध; संरच-ाा एवं उच्चावच; अपवाहतंत्र एवं जल विभाजॅ; भू-आॅृतिॅ प्रदेश : भारतीय मा-ास्-ा एवं वर्षा प्रतिरूप, उष्जॅटिबंधीय चॅ्रवात एवं पश्चिमी विजोभ जी ि्रया विधि; बाढ़ एवं अ-ाावृष्टि; जलवायवी प्रदेश; प्राॅृतिॅ व-ास्पति; मृदा प्रॅार एवं उ-ाॅा वितरज.

2. संसाध-ा : भूमि, सतह एवं भौमजल, ऊर्जा, ज-िज, जीवीय एवं समुद्री संसाध-ा; व-ा एवं व-य जीव-ा संसाध-ा एवं उ-ाॅा संरजज; ऊर्जा संॅट.

3. ृषि : अवसंरच-ाा : सिंचाई, बीज, उर्वरॅ, विद्युत; संस्थाजत ॅारॅ : जोत, भू-धारज एवं भूमि सुधार; शस्य-ा प्रतिरूप, ृषि उत्पादॅता, ृषि प्रॅर्ष, फसल संयोज-ा, भूमि जमता; ृषि एवं सामाजिॅ वा-िॅी; हरित ॅ्रांति एवं इसजी सामाजिॅ आर्थिॅ एवं पारिथितिॅ विवजा; वर्षाधी-ा जेती ॅा महत्व; पशुध-ा संसाध-ा एवं श्वेत ॅ्रांति; जल ृषि, रेशम ॅीटपाल-ा, मधुमजिपाल-ा, एवं ॅुॅ्ॅुट पाल-ा; ृषि प्रादेशीॅरज; ृषि जलवायवी जेत्र; ृषि पारिस्थितिॅ प्रदेश.

4. उद्योज : उद्योजों ॅा विॅास : ॅपास, जूट, वस्त्रोद्योज, लोह एवं इस्पात, अलुमिनियम, उर्वरॅ, ॅाजज, रसाय-ा एवं फार्मास्युटिॅल्स, आटोमोबाइल, ॅुटीर एवं ृषि आधारित उद्योजों ॅे अवस्थिति ॅारॅ; सार्वजनिॅ जेत्र ॅे उपॅ्रमों सहित औद्योजिॅ घरा-े एवं संॅुल; औद्योजिॅ प्रादेशीॅरज; -ाई औद्योजिॅ -ाीतियां; बहुराष्ट्रीय ॅंपनियां एवं उदारीॅरज; विशेष आर्थिॅ जेत्र; पारिस्थितिॅ - पर्यट-ा समेत पर्यट-ा.

5. परिवह-ा, संचार एवं व्यापार : सड़ॅ, रेलमार्ज, जलमार्ज, हवाई मार्ज एवं पाइपलाइ-ा -ेटवर्ॅ एवं प्रादेशिॅ विॅास में उ-ाॅी पूरॅ भूमिॅा; राष्ट्रीय एवं विदेशी व्यापार वाले पत्त-ों ॅा बढ़ता महत्व; व्यापार संतुल-ा; व्यापार -ाीति; -िर्यात प्रॅ्रमज जेत्र; संचार एवं

सूच-ना प्रौद्योजिजी में आया विज्ास और अर्थव्यवस्था तथा समाज पर उ-ज्ा प्रभाव; भारतीय अंतरिज ज्ार्यज् रम।

6. सांस्ृ तिज वि-यास : भारतीय समाज ज्ा ऐतिहासिज परिप्रेज्य; प्रजातीय, भाषिज एवं -ृजातीय विविधताएं; धार्मिज अल्पसंज्यज; प्रमुज ज-ाजातियां, ज-ाजातीय जेत्र तथा उ-ज्ी समस्याएं; सांस्ृ तिज प्रदेश; ज-ासंज्या ज्ी संवृद्धि, वितरज एवं घ-ात्व; ज-ासांज्यिज्ीय जुज : लिंज अ-ुपात, आयु संरच-ाा, साजरतादर, ज्ार्यबल, -िर्भरता अ-ुपात, आयुज्ाल; प्रवास-ा (अंत:प्रादेशिज, प्रदेशांतर तथा अंतरराष्ट्रीय) एवं इससे जुड़ी समस्याएं; ज-ासंज्या समस्याएं एवं -ीतिया; स्वास्थ्य सूचज.

7. बस्ती : ज्रामीज बस्ती ज्े प्रज्ार, प्रतिरूप तथा आज्ारिज्ी; -जरीय विज्ास; भारतीय शहरों ज्ी आज्ारिज्ी; भारतीय शहरों ज्ा प्रज्ार्यात्मज वर्जीज्रज; सन्नजर एवं महा-ाजरीय प्रदेश; -जर स्वप्रसार; जंदी बस्ती एवं उससे जुड़ी समस्याएं; -जर आयोज-ाा; -जरीज्रज ज्ी समस्याएं एवं उपचार.

8. प्रादेशिज विज्ास एवं आयोज-ाा : भारत में प्रादेशिज आयोज-ाा ज्ा अ-ुभव; पंचवर्षी योज-ााएं; समन्वित ज्रामीज विज्ास ज्ार्यज्रम; पंचायती राज एवं विज्ेंद्रीज्ृत आयोज-ाा; ज्मा-ा जेत्र विज्ास; जल विभाजज प्रबंध; पिछड़ा जेत्र, मरूस्थल, अ-ाावृष्टि प्रवज, पहाड़ी, ज-ाजातीय जेत्र विज्ास ज्े लिए आयोज-ाा; बहुस्तरीय योज-ाा; प्रादेशिज योज-ाा एवं द्वीप जेत्रों ज्ा विज्ास.

9. राज-ैतिज परिप्रेज्य : भारतीय संघवाद ज्ा भौजोलिज आधार; राज्य पु-र्जठ-ा; -ए राज्यों ज्ा आविर्भाव; प्रादेशिज चेत-ाा एवं अंतर्राज्य मुद्दे; भारत ज्ी अंतर्राष्ट्रीय सीमा और संबंधित मुद्दे; सीमापार आतंज्वाद; वैश्विज मामले में भारत ज्ी भूमिज्ा; दजिज एशिया एवं हिंदी महासाजर परिमंडल ज्ी भू-राज-ीति.

10. समज्ाली-ा मुद्दे : पारिस्थितिज मुद्दे : पर्यावरजीय संज्ट : भू-स्जल-ा, भूज्ंप, सु-ाामी, बाढ़ एवं अ-ाावृष्टि, महामारी; पर्यावरजीय प्रदूषज से संबंधित मुद्दे; भूमि उपयोज ज्े प्रतिरूप में बदलाव; पर्यावरजीय प्रभाव आज्ल-ा एवं पर्यावरज प्रबंध-ा ज्े सिद्धांत; ज-ासंज्या विस्फोट एवं जाद्य सुरजा; पर्यावरजीय -िम्-ीज्रज; व-ो-मूल-ा, मरूस्थलीज्रज एवं मृदा अपरद-ा; ज्ृषि एवं औद्योजिज अशांति ज्ी समस्याएं; आर्थिज विज्ास में प्रादेशिज असमा-ाताएं; संपोषजीय वृद्धि एवं विज्ास ज्ी संज्ल्प-ाा; पर्यावरजीय संचेत-ाा; -दियों ज्ा सहवद्ध-ा, भूमंडलीज्रज एवं भारतीय अर्थव्यवस्था.

टिप्पजी : अभ्यर्थियों ज्ो इस प्रश्-ापत्र में लिए जए विषयों से संजत एज्र अ-िवार्य मा-ाचित्र - आधारित प्रश्-ा ज्ा उत्तर दे-ाा अ-िवार्य है .

भूविज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

1. सामा-य भूविज्ञा-ा :

सौरतंत्र, उल्ज्ापिंड, पृथ्वी ज्ा उद्भव एवं अंतरंज तथा पृथ्वी ज्ी आयु , ज्वालामुजी - ज्रज एवं उत्पाद, ज्वालामुजी पट्टियाँ, भूज्ंप - ज्रज, प्रभाव, भारत ज्े भूज्ंपी जेत्र, द्वीपाभ चाप, जाइयाँ एवं महासाजर -मध्य ज्टज; महाद्वीपीय अपोढ़; समु-द्र अधस्तल विस्तार, प्लेट विवर्तनिज्ी; समस्थिति.

2. भूआज्ृति विज्ञा-ा एवं सुदूर- संवेद-ा :

भूआज्ृति विज्ञा-ा ज्ी आधारभूत संज्ल्प-ाा; अपजय एवं मृदा-िर्माज; स्थलरूप, ढाल एवं अपवाह; भूआज्ृतिज चज्र एवं उ-ज्ी विवजा; आज्ारिज्ी एवं इसज्ा संरच-ााओं एवं आश्मिज्ी से संबंध; तटीय भूआज्ृति विज्ञा-ा; ज-िज पूर्वेजज में भूआज्ृति विज्ञा-ा ज्े अ-ुप्रयोज, सिविल इंजीनियरी; जल विज्ञा-ा एवं पर्यावरजीय अध्यय-ा; भारतीय उपमहाद्वीप ज्ा भूआज्ृति विज्ञा-ा. वायव फोटो एवं उ-ज्ी विवजा-जुज एवं सीमाएं; विद्युत चुम्बज्ीय स्पेक्ट्रम; ज्जा- परिभ्रमज उपज्रह एवं संवेद-ा प्रजलियां; भारतीय दूर संवेद-ा उपज्रह; उपज्रह दत्त उत्पाद; भू-विज्ञा-ा में दूर संवेद-ा ज्े अ-ुप्रयोज; भोजोलिज सूच-ाा प्रधलियां (GIS) एवं विश्वव्यापी अवस्थ-ा प्रजाली (GPS) - इसज्ा अ-ुप्रयोज.

3. संरच-ाात्मज भूविज्ञा-ा :

भूवैज्ञानिज मा-ाचित्रज एवं मा-ाचित्र पठ-ा ज्े सिद्धांत, प्रजेप आरेज, प्रतिबल एवं विज्ृति दीर्घवृत तथा प्रत्यास्थ, सुघट्य एवं श्य-ा पदार्थ ज्े प्रतिबल -विज्ृति संबंध; विरूपित शैली में विज्ृति चिह्-ाज; विरूपज दशाओं ज्े अंतर्जत ज-िजों एवं शैलों ज्ा व्यवहार; वल-ा एवं भ्रंश वर्जीज्रज एवं यांत्रिज्ी; वल-ों, शल्ज्-ों, संरेजजों, जोड़ों एवं भ्रंशों, विषमवि-यासों ज्ा संरच-ाात्मज विश्लेषज; ज्रिस्टल-ा एवं विरूपज ज्े बीच समय संबंध.

4. जीवाश्म विज्ञा-ा :

जाति - परिभाषा एवं -ामपद्धति; जुरू जीवाश्म एवं सूज्म जीवाश्म; जीवाश्म संरजज ज्ी विधियां; विभिन्न प्रज्ार ज्े सूज्म जीवाश्म; सह संबंध, पेट्रोलियम अ-्वेषज, पुराजलवायवी एवं पुरासमुद्रविज्ञा-ीय अध्यय-ों में सूज्म जीवाश्मों ज्ा अ-ुप्रयोज; होमिनिडी एक्विडी एवं प्रोबोसीडिया में विज्ासात्मज प्रवृति; शिवालिज प्राजिजात; जोडंवा-ाा व-स्पतिजात एवं प्राजिजात एवं इसज्ा महत्व; सूचज जीवाश्म एवं उ-ज्ा महत्व.

5. भारतीय स्तरिज्ी :

स्तरिज्ी अ-ुज्रमों ज्ा वर्जीज्रज : अश्मस्तरिज जैवस्तरिज, ज्ालस्तरिज एवं चुम्बज्स्तरिज तथा उ-ज्ा अंतर्संबंध/ भारत ज्ी ज्ैम्ब्रिय-पूर्व शैलों ज्ा वितरज एवं वर्जीज्रज; प्राजिजात, व-स्पतिजात एवं आर्थिज महत्व ज्ी दृष्टि से भारत ज्ी दृश्यजीवी शैलों ज्े स्तरिज वितरज एवं अश्मविज्ञा-ा ज्ा अध्यय-ा; प्रमुज सीमा समस्याएं - ज्ैम्ब्रिय-ा/ज्ैम्ब्रिय-पूर्व, पर्मिय-ा/ट्राइऐसिज, ज्ेटैसियस/ तृतीयज एवं प्लायोसी-ा / प्लीस्टोसी-ा; भूवैज्ञानिज अतीत में भारतीय उपमहाद्वीप में जलवायवी दशाओं, पुराभूजोल एवं अज्-ेय सज्रियता ज्ा अध्यय-ा; भारत ज्ा स्तरिज ढाँचा; हिमालय ज्ा उद्भव.

6. जल भूविज्ञा-ा एवं इंजीनियरी भूविज्ञा-ा :

जल वैज्ञानिज चज्र एवं जल ज्ा ज-ानिज वर्जीज्रज; अवपृष्ठ जल ज्ा संचल-ा; वृहत ज्वार; सरध्रंता, परज्ाम्यता, द्रवचालित चालज्ता, पारजम्यता एवं संचय-ा जुजांज, ऐक्विफर वर्जीज्रज; शैलों ज्ी जलधारी विशेषताएं; भूजल रसायनिज्ी; लवजजल अंतर्वेध-ा; ज्ूपों ज्े प्रज्ार, वर्षाजल संज्रहज; शैलों ज्े इंजीनियरी जुज-धर्म; बांधों, सुरंजों, राजमार्जों, रेलमार्जों एवं पुलों ज्े लिए भूवैज्ञानिज अ-्वेषज; -िर्माज सामज्री ज्े रूप में शैल; भूस्जल-ा - ज्रज, रोज्थाम एवं पु-र्वास; भूज्ंप रोधी संरच-ााएं.

प्रश्-ापत्र -2

1. ज-िज विज्ञा-ा :

प्रजलियों एवं सममिति वर्जों में ज्रिस्टलों ज्ा वर्जीज्रज; ज्रिस्टल संरच-ाात्मज संज्ेत-ा ज्ी अंतर्राष्टीय प्रजाली;ज्रिस्टल सममिति ज्ो -िरूपित ज्र-ो ज्े लिए प्रजेप आरेजों ज्ा प्रयोज; X- ज्रिज ज्रिस्टलिज्ी ज्े तत्व.

शैलज्र सिलिज्ेट ज-िज समूहों ज्े भौतिज एवं रासायनिज जुज; सिलिज्ेटों ज्ा संरच-ाात्मज वर्जीज्रज; आज्-ेय एवं ज्ायांतरित शैलों ज्े सामा-य ज-िज; ज्ार्बो-ेट, फास्फेट, सल्फाइड एवं हेलाइड समूहों ज्े ज-िज; मृत्तिज्ा ज-िज.

सामा-य शैलज्र ज-िजों ज्े प्रज्ाशिज जुजधर्म; ज-िजों में बहुवर्जता, विलोपज्ोज, द्विअपवर्त-ा (डबल रिफ्रेक्श-ा, बाईरेफ्रिंजेंस), यमल-ा एवं परिजेपज.

2. आज्-ेय एवं ज्ायांतरित शैलिज्ी :

मैजमा ज-ा-ा एवं ज्रिस्टल-ा; ऐल्बाइट - ऐ-ॉर्थाइट ज्ा ज्रिस्टल-ा; डायोप्साइड- ऐ-ॉर्थाइट एवं डायोप्साइड - वोलास्टो-ाइट - सिलिज्ा प्रजालियां ; बॉवे-ा ज्ा अभिज्रिया सिद्धांत; मैज्मीय विभेद-ा एवं स्वांजीज्रज; आज्-ेय शैलों ज्ेजठ-ा एवं सरंच-ााओं ज्ा शैलज-ानिज महत्व; ज्रे-ाइट, साइ-ाइड, डायोराइट, अल्पसिलिज एवं अत्यल्पसिलिज समूहों, चा-ॉज्ाइट, अ-ॉर्थोसाइट एवं जारीय शैलों ज्ी शैलवर्ज-ाा एवं शैल ज-ा-ा; ज्ार्बो-ेटाइट्स, डेज्-ा ज्वालामुजी शैल-जेत्र.

ज्ायांतरज प्ररूप एवं ज्ारज; ज्ायांतरी ज्ोटियां एवं संस्तर; प्रावस्था -ियम; प्रादेशिज एवं संस्पर्श ज्ायांतरज संलजजी; ACF एवं AKF आरेज; ज्ायांतरी शैलों ज्ा जठ-ा एवं संरच-ाा; बालुज्ामय, मृज्मय एवं अल्पसिलिज शैलों ज्ा ज्ायांतरज; ज-िज समुच्चय पश्चजतिज ज्ायांतरज; तत्वांतरज एवं ज्रे-ाइटीभव-ा; भारत ज्ा मिज्मेटाइट, ज्जिज्ाश्म शैल प्रदेश.

3. अवसादी शैलिज्ी :

अवसाद एवं अवसादी शैल -िर्माज प्रज्रियाएं , प्रसंघ-ा-ा एवं शिलीभव-ा, संजंडाश्मी एवं असंजंडाश्मी शैल - उ-ज्ा वर्जीज्रज, शैलवर्ज-ाा एवं -िजेपज वातावरज; अवसादी संलजजी एवं ज-ा-ाजेत्र; अवसादी संरच-ााएं एवं उ-ज्ा महत्व; भारी ज-िज एवं उ-ज्ा महत्व; भारत ज्ी अवसादी द्रोजियां.

4. आर्थिज भूविज्ञा-ा :

अयस्ज, अयस्ज ज-िज एवं जैंज, अयस्ज ज्ा औसत प्रतिशत, अयस्ज -िजेपों ज्ा वर्जीज्रज; ज-िज -िजेपों ज्ी -िर्माज प्रज्रिया; अयस्ज स्था-ीज्रज ज्ी -ियंत्रज; अयस्ज जठ-ा एवं संरच-ााएं; धातु ज-ानिज युज एवं प्रदेश; एल्युमिनियम, ज्रो-ियम, ताम्र, स्वर्ज, लोह, लेड, जिज, मैज-ीज, टिटैनियम, युरेनियम एवं थोरियम तथा औद्योजिज ज-िजों ज्े महत्वपूर्ज भारतीय -िजेपों ज्ा भूविज्ञा-ा; भारत में ज्ोयला एवं पेट्रोलियम -िजेप; राष्ट्रीय ज-िज -ीति; ज-िज संसाध-ों ज्ा संरजज एवं उपयोज; समुद्री ज-िज संसाध-ा एवं समुद्र -ियम.

5. ज-ा-ा भूविज्ञा-ा :

पूर्वेजज ज्ी विधियां - भूवैज्ञानिज, भूभौतिज, भूरासायनिज एवं भू-वा-स्पतिज; प्रतिचय-ा प्रविधियां; अयस्ज -िचय प्राज्ल-ा; धातु अयस्जों औधेजिज ज-िजों, समुद्री ज-िज संसाध-ों एवं -िर्माज प्रस्तरों ज्े अ-्वेषज एवं ज-ा-ा ज्ी विधियां; ज-िज सज्जीज्रज एवं अयस्ज प्रसाध-ा.

6. भूरासायनिज्ी एवं पर्यावरजीय भूविज्ञा-ा :

तत्वों ज्ा अंतरिजी बाहुल्य; ज्रहों एवं उल्ज्ापिंडों ज्ा संघट-ा; पृथ्वी ज्ी संरच-ाा एवं संघट-ा एवं तत्वों ज्ा वितरज; लेश तत्व; ज्रिस्टल रासायनिज्ी ज्े तत्व - रासायनिज आबंध, सम-वय संज्या, समाज्ृतिज्ता एवं बहुरूपता; प्रारंभिज ऊष्माजतिज्ी.

प्राज्ृतिज संज्ट - बाढ़, वृहत जरज, तटीय संज्ट, भूज्ंप एवं ज्वालामुजीय सज्रियता तथा -यू-ीज्रज; -जरीज्रज, ज-ा-ा औद्योजिज एवं रेडियोसज्रिय अपरद -िपटा-ा, उर्वरज प्रयोज, ज-ा-ा अपरद एवं फ्लाई ऐश सन्निजेपज ज्े पर्यावरजीय प्रभाव; भौम एवं भू- पृष्ठ जल प्रदूषज, समुद्री प्रदूषज; पर्यावरज संरजज - भारत में विधायी उपाय; समुद्र तल परिवर्त-ा - ज्ारज एवं प्रभाव.

इतिहास

प्रश्-ापत्र -1

1. स्रोत :

पुरातात्विज स्रोत :

अ-्वेषज, उत्ज-ा-ा, पुरालेजविद्या, मुद्राशास्त्र, स्मारज.

साहित्यिज स्रोत :

स्वदेशी :प्राथमिज एवं द्वितीयज; ज्विता, विज्ञा-ा साहित्य, साहित्य, जेत्रीय भाषाओं ज्ा साहित्य, धार्मिज साहित्य.

विदेशी वर्ज-ा : यू-ाा-ी, ची-ी एवं अरब लेजज

2. प्राजैतिहास एवं आद्य इतिहास :

भौजोलिज ज्ारज, शिज्ार एवं संज्रहज (पुरापाषाज एवं मध्यपाषाज युज); ज्ृषि ज्ा आरंभ (-वपाषाज एवं ताम्रपाषाज युज).

3. सिंधु घाटी सभ्यता :

उद्जम, ज्ाल, विस्तार, विशेषताएं, पत-ा, अस्तित्व एवं महत्व, ज्ला एवं स्थापत्य.

4. महापाषाजयुजी-ा संस्ृ तियां :

सिंधु से बाहर पशुचारज एवं ज्ृषि संस्ृ तियों ज्ा विस्तार, सामुदायिज जीव-ा ज्ा विज्ास, बस्तियां, ज्ृषि ज्ा विज्ास, शिल्पज्र्म, मृदभांड एवं लोह उद्योज.

5. आर्य एवं वैदिज ज्ाल :

भारत में आर्यों ज्ा प्रसार.

वैदिज ज्ाल: धार्मिज एवं दार्शनिज साहित्य; ऋजवैदिज ज्ाल से उत्तर वैदिज ज्ाल तज् हुए रूपांतरज; राज-ैतिज, सामाजिज एवं आर्थिज जीव-ा; वैदिज युज ज्ा महत्व; राजतंत्र एवं वर्ज व्यवस्था ज्ा ज्रम विज्ास.

6. महाज-ापद ज्ाल :

महाज-ापदों ज्ा -िर्माज :जजतंत्रीय एवं राजतंत्रीय; -जर ज्ेंद्रों ज्ा उद्भव; व्यापार मार्ज; आर्थिज विज्ास; टंज्ज (सिज्ा ढलाई); जै-ा धर्म एवं बौद्ध धर्म ज्ा प्रसार; माजधों एवं -ंदों ज्ा उद्भव.

ईरा-ी एवं मज्दू-ियाई आज्रमज एवं उ-ज्े प्रभाव.

7. मौर्य साम्राज्य :

मौर्य साम्राज्य ज्ी -ींव, चंद्रजुप्त, ज्ौटिल्य और अर्थशास्त्र; अशोज; धर्म ज्ी संज्ल्प-ाा; धर्मादेश; राज्य व्यवस्था; प्रशास-ा; अर्थ-व्यवस्था; ज्ला, स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प; विदेशी संपर्ज; धर्म; धर्म ज्ा प्रसार; साहित्य.

साम्राज्य ज्ा विघट-ा; शुंज एवं ज्ज्व.

8. उत्तर मौर्य ज्ाल (भांरत - यू-ाा-ी , शज , ज्ुषाज , पश्चिमी जत्रप):

बाहरी विश्व से संपर्ज; -जर-ज्ेंद्रों ज्ा विज्ास, अर्थ - व्यवस्था, टंज्ज, धर्मों ज्ा विज्ास, महाया-ा, सामाजिज दशाएं, ज्ला, स्थापत्य, संस्ृ ति, साहित्य एवं विज्ञा-ा.

9. प्रारंभिज राज्य एवं समाज; पूर्वी भारत, दज्-ा एवं दजिज भारत में :

जारवेल, सातवाह-ा, संजमज्ाली-ा तमिल राज्य; प्रशास-ा, अर्थव्यवस्था, भूमि - अ-ुदा-ा, टंज्ज, व्यापारिज श्रेजियां एवं -जर ज्ेंद्र; बौद्ध ज्े-द्र, संजम साहित्य एवं संस्ृ ति; ज्ला एवं स्थापत्य.

10. जुप्त वंश , वाज्ाटज एवं वर्ध-ा वंश ;

राज्य व्यवस्था एवं प्रशास-ा, आर्थिज दशाएं, जुप्तज्ाली-ा टंज्ज, भूमि अ-ुदा-ा, -जर ज्ेंद्रों ज्ा पत-ा, भारतीय सामंतशाही, जाति प्रथा, स्त्री ज्ी स्थिति, शिजा एवं शैजिज संस्थाएं; -ालंदा, विज्रमशिला एवं वल्लभी, साहित्य, विज्ञा-ा साहित्य, ज्ला एवं स्थापत्य.

11. जुप्तज्ाली-ा जेत्रीय राज्य :

ज्दंबवंश, पल्लववंश, बदमी ज्ा चालुक्यवंश; राज्य व्यवस्था एवं प्रशास-ा, व्यापारिज श्रेजियां, साहित्य; वैष्जव एवं शैव धर्मों ज्ा विज्ास. तमिल भक्ति आंदोल-ा, शंज्राचार्य; वेदांत; मंदिर संस्थाएं एवं मंदिर स्थापत्य; पाल वंश, से-ा वंश, राष्ट्रज्ूट वंश, परमार वंश, राज्य व्यवस्था एवं प्रशास-ा; सांस्ृ तिज पज. सिंध ज्े अरब विजेता; अलबरू-ी, ज्ल्याज ज्ा चालुक्य वंश, चोल वंश, होयशल वंश, पांड्य वंश; राज्य व्यवस्था एवं प्रशास-ा; स्था-ीय शास-ा; ज्ला एवं स्थापत्य ज्ा विज्ास, धार्मिज संप्रदाय, मंदिर एवं मठ संस्थाएं, अज्रहार वंश, शिजा एवं साहित्य, अर्थव्यवस्था एवं समाज.

12. प्रारंभिज भारतीय सांस्ृ तिज इतिहास ज्े प्रतिपाद्य :

भाषाएं एवं मूलज्रंथ, ज्ला एवं स्थापत्य ज्े ज्रम विज्ास ज्े प्रमुज चरज, प्रमुज दार्शनिज चिंतज एवं शाजाएं, विज्ञा-ा एवं जजित ज्े जेत्र में विचार.

13. प्रारंभिज मध्यज्ाली-ा भारत , 750-1200 :

- राज्य व्यवस्था :उत्तरी भारत एवं प्रायद्वीप में प्रमुज राज-ैतिज घट-ााज्रम, राजपूतों ज्ा उद्जम एवं उदय
- चोल वंश: प्रशास-ा, ज्रामीज अर्थव्यवस्था एवं समाज
- भारतीय सामंतशाही
- ज्ृषि अर्थ व्यवस्था एवं -जरीय बस्तियां
- व्यापार एवं वाजिज्य
- समाज :ब्राह्मज ज्ी स्थिति एवं -ई सामाजिज व्यवस्था
- स्त्री ज्ी स्थिति
- भारतीय विज्ञा-ा एवं प्रौद्योजिज्ी

14. भारत ज्ी सांस्ृ तिज परंपरा , 750-1200 :

- दर्श-ा :शंज्राचार्य एवं वेदांत , रामा-ुज एवं विशिष्टाद्वैत, मध्व एवं ब्रह्म - मीमांसा.
- धर्म : धर्म ज्े स्वरूप एवं विशेषताएं, तमिल भक्ति, संप्रदाय, भक्ति ज्ा विज्ास, इस्लाम एवं भारत में इसज्ा आजम-ा, सूफी मत.
- साहित्य : संस्ृत साहित्य, तमिल साहित्य ज्ा विज्ास, -वविज्ासशील भाषाओं ज्ा साहित्य, ज्ल्हज ज्ी राजतरंजिजी, अलबरू-ी ज्ा इंडिया.
- ज्ला एवं स्थापत्य : मंदिर स्थापत्य, मूर्तिशिल्प, चित्रज्ला

15. तेरहवीं शताब्दी :

- दिल्ली सल्त-ात ज्ी स्थाप-ाा : जोरी ज्े आज्रमज - जोरी ज्ी सफलता ज्े पीछे ज्ारज
- आर्थिज, सामाजिज एवं सांस्ृ तिज परिजाम
- दिल्ली सल्त-ात ज्ी स्थाप-ाा एवं प्रारंभिज तुर्ज सुल्ता-ा
- सुदृढ़ीज्रज: इल्तुतमिश और बलब-ा ज्ा शास-ा

16. चौदहवीं शताब्दी :

- जिलजी ज्रांति
- अलाउद्दी-ा जिलजी :विजय एवं जेत्र- प्रसार, ज्ृषि एवं आर्थिज उपाय
- मुहम्मद तुजलज : प्रमुज प्रज्ल्प, ज्ृषि उपाय, मुहम्मद तुजलज ज्ी अफसरशाही
- फिरोज तुजलज:ज्ृषि उपाय, सिविल इंजीनियरी एवं लोज -िर्माज में उपलब्धियां, दिल्ली सल्त-ात ज्ा पत-ा, विदेशी संपर्ज एवं इब्-ा बतूता ज्ा वर्ज-ा

17. तेरहवीं एवं चौदहवीं शताब्दी ज्ा समाज , संस्ृ ति एवं अर्थव्यवस्था :

- समाज :ज्रामीज समाज ज्ी रच-ाा, शासी वर्ज, -जर निवासी, स्त्री, धार्मिज् वर्ज, सल्त-ात जे अंतर्जत जाति एवं दास प्रथा, भक्ति आ-दोल-ा, सूफी आ-दोल-ा
- संस्ृति :फारसी साहित्य, उत्तर भारत ज्ी जेत्रीय भाषाओं ज्ा साहित्य, दजिज भारत ज्ी भाषाओं ज्ा साहित्य, सल्त-ात स्थापत्य एवं -ए स्थापत्य रूप, चित्रज्ला, सम्मिश्र संस्ृति ज्ा विज्ास
- अर्थ व्यवस्था : ृषि उत्पाद-ा, -जरीय अर्थव्यवस्था एवं ृषीतर उत्पाद-ा ज्ा उद्भव, व्यापार एवं वाजिज्य

18. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिज् सोलहवीं शताब्दी - राज-ैतिज् घट-ााज्म एवं अर्थव्यवस्था :

- प्रांतीय राजवंशों ज्ा उदय : बंजाल , ज्श्मीर (जै-ुल आबदी-ा),जुजरात , मालवा , बहम-ी
- विजय-ाजर साम्राज्य
- लोदीवंश
- मुजल साम्राज्य, पहला चरज :बाबर एवं हुमायूं
- सूर साम्राज्य :शेरशाह ज्ा प्रशास-ा
- पुर्तजाली औपनिवेशिज् प्रतिष्ठा-ा

19. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिज् सोलहवीं शताब्दी :समाज एवं संस्ृति :

- जेत्रीय सांस्ृतिज् विशिष्टताएं
- साहित्यिज् परंपराएं
- प्रांतीय स्थापत्य
- विजय-ाजर साम्राज्य ज्ा समाज, संस्ृति, साहित्य और ज्ला

20. अज्बर :

- विजय एवं साम्राज्य ज्ा सुदृढ़ीज्रज
- जाजीर एवं म-ासब व्यवस्था ज्ी स्थाप-ाा
- राजपूत -ाीति
- धार्मिज् एवं सामाजिज् दृष्टिज्ोज ज्ा विज्ास , सुलह - ए - ज्ुल ज्ा सिद्धांत एवं धार्मिज् -ाीति
- ज्ला एवं प्रौद्योजिज्ी ज्ो राज-दरबारी संरजज

21. सत्रहवीं शताब्दी में मुजल साम्राज्य :

- जहांजीर, शाहजहां एवं औरंजजेब ज्ी प्रमुज प्रशासनिज् -ाीतियां
- साम्राज्य एवं जमींदार
- जहांजीर, शाहजहां एवं औरंजजेब ज्ी धार्मिज् -ाीतियां
- मुजल राज्य ज्ा स्वरूप
- उत्तर सत्रहवीं शताब्दी ज्ा संज्ट एवं विद्रोह
- अहोम साम्राज्य
- शिवाजी एवं प्रारंभिज् मराठा राज्य

22. सोलहवीं एवं सत्रहवीं शताब्दी में अर्थ व्यवस्था एवं समाज :

- ज-ासंज्या, ृषि उत्पाद-ा, शिल्प उत्पाद-ा
- -जर, डच, अंग्रेजी एवं फ्रांसीसी ज्ंपनियों जे माध्यम से यूरोप जे साथ वाजिज्य : व्यापार ज्रांति
- भारतीय व्यापारी वर्ज, बैंजिज, बीमा एवं ऋज प्रजालियां
- ज्िसा-ाों ज्ी दशा, स्त्रियों ज्ी दशा
- सिज समुदाय एवं जालसा पंथ ज्ा विज्ास

23. मुजल साम्राज्यज्ाली-ा संस्ृति :

- फारसी इतिहास एवं अ-ाय साहित्य
- हि-दी एवं अ-ाय धार्मिज् साहित्य
- मुजल स्थापत्य
- मुजल चित्रज्ला
- प्रांतीय स्थापत्य एवं चित्रज्ला
- शास्त्रीय संजीत
- विज्ञा-ा एवं प्रौद्योजिज्ी

24. अठारहवीं शताब्दी :

- मुजल साम्राज्य जे पत-ा जे ज्ारज
- जेत्रीय सामंत देश : निजाम ज्ा दज्-ा , बंजाल , अवध
- पेशवा जे अधी-ा मराठा उत्ज्र्ष
- मराठा राजज्ोषीय एवं वित्तीय व्यवस्था
- अफजा-ा शक्ति ज्ा उदय , पा-ाीपत ज्ा युद्ध - 1761

- ब्रिटिश विजय ज्ी पूर्व संध्या में राज-ाीति , संस्ृति एवं अर्थव्यवस्था ज्ी स्थिति

प्रश्न-पत्र-2

1. भारत में यूरोप ज्ा i.0'k.A

प्रारंभिज् यूरोपीय बस्तियां ;पुर्तजाली एवं डच, अंग्रेजी एवं फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया ज्ंपनियां; आधिपत्य जे लिए उ-ाजे युद्ध; ज्-ार्ाटज् युद्ध ; बंजाल - अंग्रेजों एवं बंजाल जे -ावाब जे बीच संघर्ष; सिराज और अंग्रेज; प्लासी ज्ा युद्ध; प्लासी ज्ा महत्व.

2. भारत में ब्रिटिश प्रसार :

बंजाल - मीर जाफर एवं मीर ज्ासिम; बक्सर ज्ा युद्ध; मैसूर; मराठा; ती-ा अंग्रेज - मराठा युद्ध; पंजाब

3. ब्रिटिश राज ज्ी प्रारंभिज् संरच-ाा :

प्रारंभिज् प्रशासनिज् संरच-ाा : द्वैधशास-ा से प्रत्यज नियंत्रज तज् ;रेजुलेटिंज ऐक्ट (1773); पिट्स इंडिया ऐक्ट (1784);चार्टर एक्ट (1833); मुक्त व्यापार ज्ा स्वर एवं ब्रिटिश औपनिवेशिज् शास-ा ज्ा बदलता स्वरूप; अंग्रेजी उपयोजितावादी और भारत.

4. ब्रिटिश औपनिवेशिज् शास-ा ज्ा आर्थिज् प्रभाव :

(ज्) ब्रिटिश भारत में भूमि - राजस्व बंदोबस्त; स्थायी बंदोबस्त; रैयतवारी बंदोबस्त; महालवारी बंदोबस्त; राजस्व प्रबंध ज्ा आर्थिज् प्रभाव; ृषि ज्ा वाजिज्यीज्रज; भूमिही-ा ृषि श्रमिज्ों ज्ा उदय; ज्रामीज समाज ज्ा परिजीज-ा.

(ज) पारंपरिज् व्यापार एवं वाजिज्य ज्ा विस्थाप-ा; अ-ौद्योजीज्रज; पारंपरिज् शिल्प ज्ी अव-ाति; ध-ा ज्ा अपवाह ; भारत ज्ा आर्थिज् रूपांतरज; टेलीज्राफ एवं डाज् सेवाओं समेत रेल पथ एवं संचार जाल; ज्रामीज भीतरी प्रदेश में दुर्भिज एवं जरीबी; यूरोपीय व्यापार उद्यम एवं इसज्ी सीमाएं.

5. सामाजिज् एवं सांस्ृतिज् विज्ास :

स्वदेशी शिजा ज्ी स्थिति; इसज्ा विस्थाप-ा; प्राच्चविद् - आंज्लविद् विवाद, भारत में पश्चिमी शिजा ज्ा प्रादुर्भाव; प्रेस, साहित्य एवं लोज् मत ज्ा उदय; आधुनिज् मातृभाषा साहित्य ज्ा उदय; विज्ञा-ा ज्ी प्रजति; भंारत में ज्रिश्चिय-ा मिश-ारी ज्े ज्ार्यज्लाप.

6. बंजाल एवं अ-ाय जेत्रों में सामाजिज् एवं धार्मिज् सुधार आंदोल-ा :

राममोह-ा राय, ब्रह्म आंदोल-ा; देवे-द्र-ााथ टैजोर; ईश्वरच-द्र विद्यासाजर; युवा बंजाल आंदोल-ा; दया-ांद सरस्वती; भारत में सती, विधवा विवाह, बाल विवाह आदि समेत सामाजिज् सुधार आंदोल-ा; आधुनिज् भारत जे विज्ास में भारतीय पु-ार्जाजरज ज्ा योजदा-ा; इस्लामी पु-ारुद्धार वृत्ति - फराइजी एवं वहाबी आंदोल-ा.

7. ब्रिटिश शास-ा जे प्रति भारत ज्ी अ-ाुज्रिया :

रंजपुर ढींज (1783), ज्ोल विद्रोह (1832), मालाबार में मोपला विद्रोह (1841-1920), स-ाथाल हुल (1855), -ाील विद्रोह (1859-60), दज्-ा विप्लव (1875), एवं मुंडा उल्जुला-ा (1899-1900) समेत 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में हुए ज्िसा-ा आंदोल-ा एवं ज-ाजातीय विप्लव ;1857 ज्ा महाविद्रोह - उद्जम, स्वरूप, असफलता जे ज्ारज, परिजाम; पश्च 1857 ज्ाल में ज्िसा-ा विप्लव जे स्वरूप में बदलाव; 1920 और 1930 जे दशज्ों में हुए ज्िसा-ा आंदोल-ा.

8. भारतीय राष्ट्रवाद जे ज-म जे ज्ारज; संघों ज्ी राज-ाीति; भारतीय राष्ट्रीय ज्ांज्रेस ज्ी बुनियाद; ज्ांज्रेस जे ज-म जे संबंध में सेफ्टी वाल्व ज्ा पज; प्रारंभिज् ज्ांज्रेस जे ज्ार्यज्रम एवं लज्य; प्रारंभिज् ज्ांज्रेस -ोतृत्व ज्ी सामाजिज् रच-ाा; -ारम दल एवं जरम दल; बंजाल ज्ा विभाज-ा (1905); बंजाल में स्वदेशी आंदोल-ा; स्वदेशी आंदोल-ा जे आर्थिज् एवं राज-ैतिज् परिप्रेज्य; भारत में ज्रांतिज्ारी उज्रपंथ ज्ा आरंभ.

9. जांधी ज्ा उदय; जांधी जे राष्ट्रवाद ज्ा स्वरूप; जांधी ज्ा ज-ााज्र्षज; रौलेट सत्याज्रह; जिलाफत आंदोल-ा; असहयोज आंदोल-ा; असहयोज आंदोल-ा समाप्त हो-ो जे बाद से सवि-ाय अवज्ञा आंदोल-ा जे प्रारंभ हो-ो तज् ज्ी राष्ट्रीय राज-ाीति;सवि-ाय अवज्ञा आंदोल-ा जे दो चरज; साइम-ा ज्मिश-ा; -ोहरू रिपोर्ट; जोलमेज परिषद; राष्ट्रवाद और ज्िसा-ा आंदोल-ा; राष्ट्रवाद एवं श्रमिज् वर्ज आंदोल-ा; महिला एवं भारतीय युवा तथा भारतीय राज-ाीति में छात्र (1885-1947);1937 ज्ा चु-ााव तथा मंत्रालयों ज्ा जठ-ा; ज्रिप्स मिश-ा; भारत छोड़ो आंदोल-ा; वैरेल योज-ाा; जैबि-ोट मिश-ा.

10. औपनिवेशिज् भारत में 1858 और 1935 जे बीच सांविधानिज् घट-ााज्रम.

11. राष्ट्रीय आंदोल-ा ज्ी अ-ाय ज्ड़ियां

ज्रांतिज्ारी : बंजाल , पंजाब , महाराष्ट्र , यू.पी., मद्रास प्रदेश , भारत से बाहर. वामपज ;ज्ांज्रेस जे अंदर ज्ा वाम पज :जवाहर लाल -ोहरू , सुभाष च-द्र बोस , ज्ांज्रेस समाजवादी पार्टी , भारतीय ज्म्यूनिष्ट पार्टी , अ-ाय वामदल.

12. अलजावाद ज्ी राज-ाीति; मुस्लिम लीज; हि-दू महासभा; सांप्रदायिज्ता एवं विभाज-ा ज्ी राज-ाीति; सत्ता ज्ा हस्तांतरज; स्वतंत्रता.

13. एज् राष्ट्र जे रूप में सुदृढ़ीज्रज; -ोहरू ज्ी विदेश -ाीति; भारत और उसजे पड़ोसी (1947-1964) राज्यों ज्ा भाषावाद पु-ार्जठ-ा (1935-1947); जेत्रीयतावाद एवं जेत्रीय असमा-ाता; भारतीय रियासतों ज्ा एज्ीज्रज; निर्वाच-ा ज्ी राज-ाीति में रियासतों जे -ारेश (प्रिंस); राष्ट्रीय भाषा ज्ा प्रश्-ा.

14. 1947 जे बाद जाति एवं -ृजातित्व ; उत्तर-औपनिवेशिज् निर्वाच-ा - राज-ाीति में पिछड़ी जातियाँ एवं ज-ाजातियां; दलित आंदोल-ा

15. आर्थिज् विज्ास एवं राज-ाीतिज् परिवर्त-ा; भूमि सुधार; योज-ाा एवं ज्रामीज पु-ार्रच-ाा ज्ी राज-ाीति; उत्तर औपनिवेशिज् भारत में पारिस्थितिज्ी एवं पर्यावरज -ाीति; विज्ञा-ा ज्ी तरज्ज्ी.

16. प्रबोध एवं आधुनिज् विचार :

(i) प्रबोध जे प्रमुज विचार : ज्ांट , रूसो

(ii) उपनिवेशों में प्रबोध - प्रसार

(iii) समाजवादी विचारों ज्ा उदय (मार्क्स तज्); मार्क्स जे समाजवाद ज्ा प्रसार

17. आधुनिज् राज-ाीति जे मूल स्रोत :

(i) यूरोपीय राज्य प्रजाली

(ii) अमेरिज्ी ज्रांति एवं संविधा-ा

(iii) फ्रांसिसी ज्रांति एवं उसजे परिजाम , 1789-1815

(iv) अब्राहम लिंज्-ा जे संदर्भ जे साथ अमरीज्ी सिविल युद्ध एवं दासता ज्ा उ-मूल-ा.

(v) ब्रिटिश जजतंत्रात्मज् राज-ाीति , 1815-1850;संसदीय सुधार, मुक्त व्यापारी , चार्टरवादी.

18. औद्योजिज्रज :

(i) अंग्रेजी औद्योजिज् ज्रांति : ज्ारज एवं समाज पर प्रभाव

(ii) अ-ाय देशों में औद्योजीज्रज :यू.एस.ए., जर्म-ाी , रूस, जापा-ा

(iii) औद्योजिज्रज एवं भूमंडलीज्रज

19. राष्ट्र राज्य प्रजाली :

(i) 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद ज्ा उदय

(ii) राष्ट्रवाद : जर्म-ाी और इटली में राज्य निर्माज.

(iii) पूरे विश्व में राष्ट्रीयता जे आविर्भाव जे समज साम्राज्यों ज्ा विघट-ा.

20. साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद :

(i) दजिज एवं दजिज - पूर्व एशिया

(ii) लाती-ाी अमरीज्ा एवं दजिज अफ्रीज्ा

(iii) ऑस्ट्रेलिया

(iv) साम्राज्यवाद एवं मुक्त व्यापार : -ावसाम्राज्यवाद ज्ा उदय.

21. ज्रांति एवं प्रतिज्रांति :

(i) 19वीं शताब्दी यूरोपीय ज्रांतियां

(ii) 1917-1921 ज्ी रूसी ज्रांति

(iii) फासीवाद प्रतिज्रांति , इटली एवं जर्म-ाी

(iv) 1949 ज्ी ची-ाी ज्रांति

22. विश्व युद्ध :

(i) संपूर्ज युद्ध जे रूप में प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध:समाजीय निहितार्थ

(ii) प्रथम विश्व युद्ध : ज्ारज एवं परिजाम

(iii) द्वितीय विश्व युद्ध : ज्ारज एवं परिजाम

23. द्वितीय विश्व युद्ध जे बाद ज्ा विश्व :

(i) दो शक्तियों ज्ा आविर्भाव

(ii) तृतीय विश्व एवं जुटनिरपेजता ज्ा आविर्भाव

(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ एवं वैश्विज् विवाद

24. औपनिवेशिज् शास-ा से मुक्ति :

(i) लाती-ाी अमरीज्ा - बोलीवर

(ii) अरब विश्व - मिश्र

(iii) अफ्रीज्ा - रंजभेद से जजतंत्र तज्

(iv) दजिज पूर्व एशिया - वियत-ााम

25. वि-औपनिवेशीज्रज एवं अल्पविज्ास :

विज्ास जे बाधज् ज्ारज : लाती-ाी अमरीज्ा, अफ्रीज्ा

26. यूरोप ज्ा एज्ीज्रज :

(i) युद्धोत्तर स्थाप-ााएं : NATO एवं यूरोपीय समुदाय (यूरोपिय-ा ज्म्युनिटी)

(ii) यूरोपीय समुदाय (यूरोपिय-ा ज्म्युनिटी) ज्ा सुदृढ़ीज्रज एवं प्रसार

(iii) यूरोपियाई संघ

27. सोवियत यूनिय-ा ज्ा विघट-ा एवं एज् ध्रवीय विश्व ज्ा उदय :

(i) सोवियत साम्यवाद एवं सोवियत यूनिय-ा ज्ो निपात तज् पहुंचा-ो वाले ज्ारज , 1985-1991

(ii) पूर्वी यूरोप में राज-ैतिज् परिवर्त-ा 1989 - 2001

(iii) शीत युद्ध ज्ा अंत एवं अज्ेली महाशक्ति जे रूप में US ज्ा उत्ज्र्ष.

विधि

प्रश्न-पत्र - 1

सांविधिज् एवं प्रशासनिज् विधि :

1. संविधा-ा एवं संविधा-ावाद:संविधा-ा जे सुस्पष्ट लजज.
2. मूल अधिज्ार - लोज्हित याचिज्ा, विधिज् सहायता, विधिज् सेवा प्राधिज्रज.
3. मूल अधिज्ार - निदेशज् तत्व तथा मूल ज्र्तव्यों जे बीच संबंध.
4. राष्ट्रपति ज्ी संवैधानिज् स्थिति तथा मंत्रिपरिषद जे साथ संबंध.
5. राज्यपाल तथा उसज्ी शक्तियां.
6. उच्चतम -यायालय तथा उच्च -ययाल-ा :
   (ज्) नियुक्ति तथा स्था-ाांतरज.
   (ज) शक्तियां, ज्ार्य एवं अधिज्ारिता.
7. जेंद्र, राज्य एवं स्था-ाीय निज्ाय:
   (ज्) संघ तथा राज्यों जे बीय विधायी शक्तियों ज्ा वितरज.
   (ज) स्था-ाीय निज्ाय
   (ज) संघ , राज्यों तथा स्था-ाीय निज्ायों जे बीच प्रशासनिज् संबंध.
   (घ) सर्वोपरि अधिज्ार - राज्य संपति - सामा-ाय संपत्ति - समुदाय संपत्ति
8. विधायी शक्तियां , विशेषाधिज्ार एवं उ-मुक्ति.
9. संघ एवं राज्य जे अधी-ा सेवाएं :
   (ज्) भर्ती एवं सेवा शर्तें ; सांविधानिज् सुरजा ; प्रशासनिज् अधिज्रज.
   (ज) संघ लोज् सेवा आयोज एवं राज्य लोज् सेवा आयोज - शक्ति एवं ज्ार्य
   (ज) निर्वाच-ा आयोज - शक्ति एवं ज्ार्य
10. आपात् उपबंध.
11. संविधा-ा संशोध-ा
12. -ैसर्जिज् -याय जे सिद्धांत - आविर्भूत होती प्रवृत्तियां एवं -यायिज् उपाजम
13. प्रत्यायोजित विधा-ा एवं इसज्ी सांविधानिज्ता.
14. शक्तियों एवं सांविधानिज् शास-ा ज्ा पृथज्ज्रज.
15. प्रशासनिज् ज्ार्रवाई ज्ा -यायिज् पु-ार्विलोज्-ा.
16. ओम्बड्समै-ा : लोज्ायुक्त , लोज्पाल आदि.

अंतरराष्ट्रीय विधि :

1. अंतरराष्ट्रीय विधि ज्ी प्रज्ृति तथा परिभाषा.
2. अंतरराष्ट्रीय विधि तथा राष्ट्रीय विधि जे बीच संबंध.
3. राज्य मा-ायता तथा राज्य उत्तराधिज्ार.
4. समुद्र नियम - अंतर्देशीय जलमार्ज, जेत्रीय समुद्र, समीपस्थ परिजेत्र, महाद्वीपीय उपतट, अ-ा-ाय आर्थिज् परिजेत्र तथा महासमुद्र.
5. व्यक्ति : राष्ट्रीयता, राज्यही-ाता - मा-ावाधिज्ार तथा उ-ाजे प्रवर्त-ा जे लिए उपलब्ध प्रज्रियाएं.
6. राज्यों ज्ी जेत्रीय अधिज्ारिता - प्रत्यर्पज तथा शरज
7. संधियां - निर्माज, उपयोज-ा, पर्यवसा-ा और आरजज.

8. संयुक्त राष्ट्र - इसजे प्रमुज अंज , शक्तियां ज्त्य और सुधार.
9. विवादों ज ा शांतिपूर्ज निपटारा - विभिन्न तरीजे.
10. बल ज ा विधिपूर्ज आश्रय : आज्रमज, आत्मरजा, हस्तजेप.
11. अंतरराष्ट्रीय मा-ावावादी विधि जे मूल सिद्धांत - अंतरराष्ट्रीय सम्मेल-ा एवं समज ाली-ा विज ास.
12. परमाजु अस्त्रों जे प्रयोज जी वैधता ; परमाजु अस्त्रों जे परीजज पर रोज - परमाज्वीय अप्रसार संधि , सी.टी.बी.टी..
13. अंतरराष्ट्रीय आतंज वाद, राज्यप्रवर्तित आतंज वाद, अपहरज, अंतरराष्ट्रीय आपराधिज -यायालय.
14. -ए अंतरराष्ट्रीय आर्थिज आदेश तथा मौद्रिज विधि, WTO, TRIPS, GATT, IMF, विश्व बैंज.
15. मा-ाव पर्यावरज ज ा संरजज तथा सुधार - अंतरराष्ट्रीय प्रयास.

प्रश्-ापत्र-2

अपराध विधि :

1. आपराधिज दायित्व जे सामा-य सिद्धांत : आपराधिज म-ा:स्थिति तथा आपराधिज ज ार्य. सांविधिज अपराधों में आपराधिज म-ा:स्थिति.
2. दंड जे प्रज ार एवं -ाई प्रवृत्तियाँ जैसे जि मृत्यु दंड उ-मूल-ा
3. तैयारियां तथा आपराधिज प्रयास
4. सामा-य अपवाद
5. संयुक्त तथा रच-ाात्मज दायित्व
6. दुस्प्रेरज
7. आपराधिज षडयंत्र
8. राज्य जे प्रति अपराध
9. लोज शांति जे प्रति अपराध
10. मा-ाव शरीर जे प्रति अपराध
11. संपत्ति जे प्रति अपराध
12. स्त्री जे प्रति अपराध
13. मा-ाहानि
14. भ्रष्टाचार निरोधज अधिनियम , 1988
15. सिविल अधिज ार संरजज अधिनियम , 1955 एवं उत्तरवर्ती विधायी विज ास
16. अभिवय-ा सौदा

अपज्त्य विधि :

1. प्रज्ति तथा परिभाषा.
2. त्रुटि तथा ज ठोर दायित्व पर आधारित दायित्व ; आत्यंतिज दायित्व.
3. प्रातिनिधिज दायित्व ,राज्य दायित्व सहित.
4. सामा-य प्रतिरजा.
5. संयुक्त अपज्त्य ज र्ता
6. उपचार
7. उपेजा
8. मा-ाहानि
9. उत्पात(-यूसेंस)
10. षडयंत्र
11. अप्राधिज्त बंदीज रज
12. विद्वेषपूर्ज अभियोज-ा
13. उपभोक्ता संरजज अधिनियम - 1986

संविदा विधि और वाजिज्यिज विधि :

1. संविदा ज ा स्वरूप और निर्माज / ई- संविदा.
2. स्वतंत्र सम्मति ज ो दूषित ज र-ो वाले ज ारज.
3. शू-य , शू-यज रजीय , अवैध तथा अप्रवर्त-ीय ज रार
4. संविदा ज ा पाल-ा तथा उ-मोच-ा
5. संविदाज ल्प
6. संविदा भंज जे परिजाम
7. जतिपूर्ति, जारंटी एवं बीमा संविदा
8. अभिज रज संविदा
9. माल जी बिज्री तथा अवज्रय (हायर परचेज)
10. भाजीदारी ज ा निर्माज तथा विघट-ा
11. परज्राम्य लिजत अधिनियम 1881
12. माध्यस्थम् तथा सुलह अधिनियम , 1996
13. मा-ाज रूप संविदा

समज ाली-ा विधिज विज ास:

1. लोज हित याचिज ा
2. बौद्धिज संपदा अधिज ार - संज ल्प-ाा, प्रज ार / संभाव-ााएं.
3. सूच-ाा प्रौद्योजिजी विधि , जिसमें साइबर विधियां शामिल हैं , संज ल्प-ाा , प्रयोज-ा / संभाव-ााएं.
4. प्रतियोजिता विधि - संज ल्प-ाा, प्रयोज / संभाव-ााएं
5. वैज ल्पिज विवाद समाधा-ा - संज ल्प-ाा, प्रज ार/ संभाव-ााएं.
6. पर्यावरजीय विधि से संबंधित प्रमुज ज ा-ू-ा.
7. सूच-ाा ज ा अधिज ार अधिनियम
8. संचार माध्यमों (मीडिया) द्वारा विचारज.

निम्नलिखित भाषाओं का साहित्य

टिप्पणी :

(1) उम्मीदवार को संबद्ध भाषा में कुछ या सभी प्रश्नों के उत्तर देने पड़ सकते हैं.

(2) संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं के संबंध में लिपियां वही होंगी जो प्रधान परीक्षा से संबद्ध परिशिष्ट I के खण्ड II (ख) में दर्शाई गई हैं.

(3) उम्मीदवार ध्यान दें कि जिन प्रश्नों के उत्तर किसी विशिष्ट भाषा में नहीं देने हैं उनके उत्तरों को लिखने के लिये वे उसी माध्यम को अपनाएं जोकि उन्होंने निबंध, सामान्य अध्ययन तथा वैकल्पिक विषयों के लिये चुना है.

अरबी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर अरबी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. (क) अरबी का उद्‌भव और विकास –रूपरेखा
(ख) अरबी भाषा के व्याकरण, छंदविधान और अलंकारविधान की प्रमुख विशेषताएं.
(ग) अरबी में संक्षिप्त निबंध.

खंड 'ख'

2. साहित्य का इतिहास और साहित्यिक आलोचना : सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, क्लासिकी साहित्य, साहित्यिक आन्दोलन, आधुनिक प्रवृत्तियां, आधुनिक गद्य का उद्‌भव और विकास : नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर अरबी में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन अपेक्षित होगा. इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके :

खंड 'क'

कवि

1. इमराउल कायस	:	किफ़ा नबके मिन जिकरा हवीबिन वा मंजिल (संपूर्ण) अल मौलाकातस सवा.
2. हसन बिन थबीस	:	लिलाही दरू इजवेतिन नदमतुहुम (संपूर्ण) दीवान हसन बिन थबीत
3. जरीर	:	हय्यू उमामता वजुकुरू अहदान मद से जल्वास सिफाही वा दामि यातिन बिकला तक नुख़्बतुल अदबः अरबी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
4. फ़र्जदाक़	:	हज़ल लज़ी तारिफ़ुल बधा–ओ–वातातुहु (संपूर्ण) मजमुआतुन मिनान नज़्म–ए–वान नस्र, जामिया सलफ़िया, वाराणसी.
5. अल मुतानब्बी	:	या उख्ता ख़ैर–ए–अखीन या बिंता ख़ैर–ए–अबीन से अक़्माहुल फिकरू–बैनल लिज़–ए– बत्ताबी तक नुख्बातुल अदब, अरबी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़.
6. अबुल अला उम्मारी	:	अला फी सबील माजदी भा अना फाइलू से वा या नफ्सू जिद्दी इन्ना दहराकी हज़ीलू तक. मजमुआतुल मिनानब नज्म–ए–वान नस्र, जामिया सलाफिया, वाराणसी.
7. शौक़ी	:	वुलीदल हुदा फल्केनतु दिआऊ से मख्तारा इला दिनकल फुकाराऊ सलामुन नीली या गांदी (संपूर्ण) शौक़ियात
8. शाफ़िज इब्राहिम	:	राजातू लिनाफ़्सी फलाहम्तु हस्ती (संपूर्ण) नुख़्बतुल अदब
9. ईल्या अबू मादी	:	दमातुन ख़ारसओ (संपूर्ण) मुख्तारत मिनाल शेर–अल–अरबी अल हादिथ, एम.एम. बदवी

खंड 'ख'

(क) लेखक

लेखक	पुस्तकें	पाठ
1. इब्नुल मुकफ्फा	कलिलाह–वा –दिम्नाह	अल असद वल ताऊर
2. अल–जाहिज़	मुख्तारत मिन अदाबिल वरब बरिलूम हकीम (संपूर्ण)	भाग–2, एस.ए. हसन अली नदवी द्वारा.
3. इकन ख़ल्दून	मुक़द्दमा	अराउन फित तालीम (संपूर्ण)
4. महमूद तैमूर	क़लार रावी	अम मुता–वली (संपूर्ण)
5. तौफीकुल हकीम	मसराहियत	सिरूल मुन्ता–हिरा (संपूर्ण)
6. अब्बास महमूद	बकगद मूल्तारन मिन अदाबिल वरब–II	आसीदिक़ (संपूर्ण)

(ख) भारतीय लेखकों का अध्ययन

1. गुलाम अली आज़ाद बिलगरामी
2. शाह वलुल्लाह देहलवी
3. ज़ुल्फीकार अली देवबंदी
4. अब्दुल अज़ीज मैमन
5. सैयद अबुल हसन अली हसनी नदवी.

असमिया

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर असमिया में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाषा

(क) असमिया भाषा के उद्‌गम और विकास का इतिहास–भारतीय–आर्य भाषाओं में उसका स्थान–इसके इतिहास के विभिन्न काल–खंड.

(ख) असमिया गद्य का विकास.

(ग) असमिया भाषा के स्वर और व्यंजन–प्राचीन भारतीय आर्यों से चली आ रही असमिया पर बलाघात के साथ स्वनिक परिवर्तन को नियम.

(घ) असमिया शब्दावली–एवं इसके स्रोत.

(ङ) भाषा का रूप विज्ञान–क्रिया रूप–पूर्वाश्रयी निर्देशन एवं अधिकपदीय पर प्रत्यय.

(च) बोलीगत वैविध्य–मानक बोलचाल एवं विशेष रूप से कामरूपी बोली.

(छ) उन्नीसवीं शताब्दी तक विभिन्न युगों में असमिया लिपियों का विकास.

खंड 'ख'

साहित्यिक आलोचना और साहित्यिक इतिहास

(क) साहित्यिक आलोचना के सिद्धांत, नई समीक्षा.

(ख) विभिन्न साहित्यिक विधाएं.

(ग) असमिया में साहित्यिक रूपों का विकास.

(घ) असमिया में साहित्यिक आलोचना का विकास.

(ङ) चर्यागीतों के काल से असमिया साहित्य के इतिहास की बिल्कुल प्रारंभिक प्रवृत्तियां और उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : आदि असमिया–शंकरदेव से पहले–शंकरदेव–शंकरदेव के बाद–आधुनिक काल (ब्रिटिश आगमन के बाद से) स्वातंत्र्योत्तर काल. वैष्णव काल, गोनाकी एवं स्वातंत्र्योत्तर काल पर विशेष बल दिया जाना है.

प्रश्नपत्र–2

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके. उत्तर असमिया में लिखने होंगे.

खंड 'क'

रामायण (केवल अयोध्या कांड)	माधव कंदली द्वारा.
पारिजात–हरण	शंकरदेव द्वारा.
रासक्रीड़ा	शंकरदेव द्वारा (कीर्तन घोष से)
बरगीत	माधवदेव द्वारा
राजसूय	माधवदेव द्वारा
कथा–भागवत (पुस्तक I एवं II)	बैकुण्ठनाथ भट्टाचार्य द्वारा

गुरुचरित–कथा (केवल शंकरदेव का भाग)–संपादक : महेश्वर नियोग.

खंड 'ख'

मोर जीवन स्मरण	लक्ष्मीनाथ बेज़बरूआ द्वारा.
कृपाबर बराबरुआ, काकतर तोपोला	लक्ष्मीनाथ बेज़बरूआ द्वारा.
प्रतिमा	चंद्र कुमार अगरवाला.
गाँवबूढ़ा	पद्मनाथ गोहेन बरूआ द्वारा.
मनोमती	रजनीकांत बोरदोलोई द्वारा.
पुरणी असमिया साहित्य	बानीकांत काकती द्वारा
कारिआंग लिगिरी	ज्योति प्रसाद अगरवाला द्वारा
जीबनार बातत	बीना बरूआ (बिरिंचि कुमार बरूवा) द्वारा
मृत्युंजय	बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य द्वारा
सम्राट	नवकांत बरूआ द्वारा.

बांगला

प्रश्नपत्र–1

भाषा और साहित्य का इतिहास

(उत्तर बांगला में लिखने होंगे)

खंड 'क'

बांगला भाषा के इतिहास के विषय

1. आद्य भारोपीय से बांगला तक का कालानुक्रमिक विकास (शाखाओं सहित वंशवृक्ष एवं अनुमानित तिथियां).

2. बांगला इतिहास के विभिन्न चरण (प्राचीन, मध्य एवं नवीन) एवं उनकी भाषा विज्ञान–संबंधी विशिष्टताएं.

3. बांगला की नीतियां एवं उनके विभेदक लक्षण.

4. बांगला शब्दावली के तत्व.

5. बांगला गद्य–साहित्य के रूप–साधु एवं पतित.

6. अपिनिहिति (विप्रकर्ष), अभिश्रुति (उम्लाउट), मूर्धन्यीभवन (प्रतिवेष्टन), नासिक्यीभवन (अनुनासिकृत), समीभवन (समीकरण), सादृश्य (एनेलोजी), स्वरागम (स्वर सन्निवेश) आदि स्वरागम, मध्य स्वरागम अथवा स्वर भक्ति, अंत्य स्वरागम, स्वर संगति (वावल हार्मनी), Y–श्रुति एवं W–श्रुति.

7. मानकीकरण की समस्याएं तथा वर्ण माला और वर्तनी तथा लिप्यंतरण और रोमनीकरण का सुधार.

8. आधुनिक बांगला का स्वनिमविज्ञान, रूपविज्ञान और वाक्य विन्यास. (आधुनिक बांगला की ध्वनियों, समुच्चयबोधक, शब्द रचनाएं, समास, मूल वाक्य अभिरचना.

खंड 'ख'

बांगला साहित्य के इतिहास के विषय :

1. बांगला साहित्य का काल विभाजन : प्राचीन बांगला एवं मध्यकालीन बांगला.
2. आधुनिक तथा पूर्व–आधुनिक–पूर्व बांगला साहित्य के बीच अंतर से संबंधित विषय.
3. बांगला साहित्य में आधुनिकता के अभ्युदय के आधार तथा कारण.
4. विभिन्न मध्यकालीन बांगला रूपों का विकास : मंगल काव्य, वैष्णव गीतिकाव्य, रूपांतरित आख्यान (रामायण, महाभारत, भागवत) एवं धार्मिक जीवनचरित.
5. मध्यकालीन बांगला साहित्य में धर्म निरपेक्षता का स्वरूप.
6. उन्नीसवीं शताब्दी के बांगला काव्य में आख्यानक एवं गीतिकाव्यात्मक प्रवृत्तियां.
7. गद्य का विकास.
8. बांगला नाटक साहित्य (उन्नीसवीं शताब्दी, टैगोर, 1944 के उपरांत के बांगला नाटक).
9. टैगोर एवं टैगोरोत्तर.
10. कथा साहित्य, प्रमुख लेखक :
(बंकिमचन्द्र, टैगोर, शरतचन्द्र, विभूतिभूषण, ताराशंकर, माणिक).
11. नारी एवं बांगला साहित्य : सर्जक एवं सृजित.

प्रश्नपत्र–2

विस्तृत अध्ययन के लिए निर्धारित पुस्तकें

(उत्तर बांगला में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. **वैष्णव पदावली :** (कलकत्ता विश्वविद्यालय) विद्यापति, चंडीदास, ज्ञानदास, गोविन्ददास एवं बलरामदास की कविताएं.
2. **चंडीमंगल :** मुकुन्द द्वारा कालकेतु वृतान्त, (साहित्य अकादमी).
3. **चैतन्य चरितामृत :** मध्य लीला, कृष्णदास कविराज रचित (साहित्य अकादमी)
4. **मेघनादवध काव्य :** मधुसूदन दत्त रचित.
5. **कपालकुण्डला :** बंकिमचंद्र चटर्जी रचित.
6. **समय एवं बंगदेशेर कृषक :** बंकिमचंद्र चटर्जी रचित.
7. **सोनार तारी :** रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित.
8. **छिन्नपत्रावली :** रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित.

खंड 'ख'

9. **रक्तकरबी :** रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित.
10. **नबजातक :** रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित.
11. **गृहदाह :** शरतचन्द्र चटर्जी रचित.
12. **प्रबंध संग्रह :** भाग–1, प्रमथ चौधरी रचित.
13. **अरण्यक :** विभूतिभूषण बनर्जी रचित.
14. **कहानियां :** माणिक बंद्योपाध्याय रचित :
अताशी मामी, प्रागैतिहासिक, होलुद–पोरा, सरीसृप, हारानेर, नटजमाई, छोटो–बोकुलपुरेर जात्री, कुष्ठरोगीर बौऊ, जाके घुश दिते होय.
15. **श्रेष्ठ कविता :** जीवनाचंद दास रचित.
16. **जानौरी :** सतीनाथ भादुड़ी रचित.
17. **इंद्रजीत :** बादल सरकार रचित.

बोडो

प्रश्नपत्र–1

बोडो भाषा एवं साहित्य का इतिहास

(उत्तर बोडो भाषा में ही लिखें)

खंड 'क'

बोडो भाषा का इतिहास

1. स्वदेश, भाषा परिवार, इसकी वर्तमान स्थिति एवं असमी के साथ इसका पारस्परिक संपर्क.
2. (क) स्वनिम : स्वर तथा व्यंजन स्वनिम.
(ख) ध्वनियां.
3. रूपविज्ञान : लिंग, कारक एवं विभक्तियां, बहुवचन, प्रत्यय, व्युत्पन्न, क्रियार्थक प्रत्यय.
4. शब्द समूह एवं इनके स्रोत.
5. वाक्य विन्यास : वाक्यों के प्रकार, शब्द क्रम.
6. प्रारम्भ से बोडो भाषा को लिखने में प्रयुक्त लिपि का इतिहास.

खंड 'ख'

बोडो साहित्य का इतिहास

1. बोडो लोक साहित्य का सामान्य परिचय.
2. धर्म प्रचारकों का योगदान.
3. बोडो साहित्य का कालविभाजन.
4. विभिन्न विधाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण. (काव्य, उपन्यास, लघु – कथा तथा नाटक).
5. अनुवाद साहित्य.

प्रश्नपत्र–2

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य–पुस्तकों का मूल अध्ययन अपेक्षित होगा और परीक्षा में उम्मीदवार की आलोचनात्मक योग्यता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

(उत्तर बोडो भाषा में ही लिखें)

खंड 'क'

(क) खोन्थई – मेथई
(मादाराम ब्रह्मा तथा रूपनाथ ब्रह्मा द्वारा संपादित)
(ख) हथोरखी – हला
(प्रमोदचंद्र ब्रह्मा द्वारा संपादित)
(ग) बोरोनी गुडी सिब्साअर्व अरोज
मादाराम ब्रह्मा द्वारा
(घ) राजा नीलांबर – द्वरेन्द्र नाथ बासुमतारी.
(ङ) बिबार (गद्य खंड)
(सतीशचंद्र बासुमतारी द्वारा संपादित)

खंड 'ख'

(क) गिबी बिठाई (आइदा नवी) : बिहुराम बोडो
(ख) रादाब : समर ब्रह्मा चोधरी
(ग) ओखरंग गोंगसे नंगोऊ : ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्मा
(घ) बैसागु अर्व हरिमू: लक्षेश्वर ब्रह्मा
(ङ) ग्वादान बोडो : मनोरंजन लहारी
(च) जुजैनी ओर : चितरंजन मुचहारी
(छ) म्वीहूर : धरानिधर वारी
(ज) होर बड़ी रव्वम्सी : कमल कुमार ब्रह्मा
(झ) जओलिया दीवान : मंगल संह होजोवरी
(ञ) हागरा गुदुनी म्वी : नीलकमल ब्रह्मा

चीनी

प्रश्नपत्र–1

इस प्रश्न पत्र द्वारा उम्मीदवारों से यह अपेक्षा की जाएगी कि उन्हें मानक चीनी–भाषा और इसकी विशेषताओं का अच्छा ज्ञान हो जिससे उनकी अभिव्यक्तिगत सांगठनिक क्षमताओं का परीक्षण हो सके. सभी प्रश्नों के चीनी से अंग्रेजी में अनुवाद के प्रश्न को छोड़कर, उत्तर चीनी भाषा में लिखने होंगे. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं.

खंड 'क'

1. किसी सामयिक विषय पर लगभग 500 चीनी अक्षरों में निबंध लेखन.
2. अनुवाद
(क) चीनी से अंग्रेजी भाषा में
(ख) अंग्रेजी से चीनी भाषा में
3. वाक्यगत और व्याकरणिक प्रयोग.

खंड 'ख'

1. चीनी भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों की व्याख्या.
2. चीनी भाषा का विकास.
3. बोधन, संक्षेपण.

प्रश्नपत्र–2

इस प्रश्न पत्र में अभ्यर्थी से यह अपेक्षा की जाएगी कि उसे चीन संबंधी अध्ययन का अच्छा ज्ञान हो और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके. सभी प्रश्नों के उत्तर चीनी में लिखने होंगे. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं.

खंड 'क'

1. आधुनिक चीनी इतिहास (1919 से अब तक) की प्रमुख घटनाओं से संबंधित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणियां.
2. मुक्ति पूर्व काल (1919–1949) की प्रमुख साहित्यिक कृतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन :
(क) लाओं शी – फोर जैनरेशन–रिक्शा पुलर.
(ख) बा जिन – फैमिली.
(ग) लू शुन – मेडिसिन, मैडमैंस डायरी, दि ट्रू स्टोरी आफ आह क्यू.
(घ) माओ दुन – मिडनाईट.
(ङ) एई क्विंग – कोल्स रिप्लाई (मेई डे दिहुआ), बेगर (किगाई) आई लव दिस लैंड (वो अई झे तुदी), ओल्ड मैन (लाओरेन).
(च) गुओ मोरुओ– दि गॉडेसेज़
3. चीनी समाज के विकास में दर्शन और धर्म की भूमिका.

खंड 'ख'

1. 1979 के बाद सामाजिक– आर्थिक/ राजनीतिक/ शैक्षिक/खेल–कूद/वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय विकास
2. उत्तर–मुक्ति काल (1949 से अब तक) की प्रमुख साहित्यिक कृतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन
(क) गूहुआ–दि टाउन काल्ड हिविस्कस (फुरोडझेन)
(ख) चेन राङ–टिल दि मिडिल एज (रैन दाओ झोङनियान)
(ग) लियू शिनवू – दि क्लास–इन–चार्ज (बैन झुरेन)
(घ) ल्यू याओ – दि ह्यूमन एक्जिसटैंस (रेनशेंग)
(ङ) आई क्विंग – फिश फौसिल, दि मिरर, दि गार्डनर्स ड्रीम, दि हन्टर हू ड्रयू बर्ड्स
(च) शू–तिंग – मदरलैंड, माई बिलवेड मदरलैंड.

डोगरी

प्रश्नपत्र–1

डोगरी भाषा एवं साहित्य का इतिहास

(उत्तर डोगरी में लिखे जाएं)

खंड 'क'

डोगरी भाषा का इतिहास

1. डोगरी भाषा : विभिन्न अवस्थाओं के द्वारा उत्पत्ति एवं विकास.
2. डोगरी एवं इसकी बोलियां भाषाई सीमाएं.
3. डोगरी भाषा के विशिष्ट लक्षण.
4. डोगरी भाषा की संरचना :
(क) ध्वनि संरचना :
खंडीय : स्वर एवं व्यंजन
अखंडीय : दीर्घता, बलाघात, नासिक्यरंजन, सुर एवं संधि.
(ख) डोगरी का पदरचना विज्ञान
(i) रूप रचना वर्ग : लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल एवं वाच्य.
(ii) शब्द निर्माण : उपसर्गो, मध्यप्रत्ययों तथा प्रत्ययों का उपयोग.
(iii) शब्द समूह : तत्सम, तद्भव, विदेशीय एवं देशज.
(ग) वाक्य रचना : सर्वांग वाक्य – उनके प्रकार तथा अवयव, डोगरी वाक्यविन्यास में अन्वय तथा अन्विति.
5. डोगरी भाषा एवं लिपि : डोगरे/डोगरा अक्खर, देवनागरी तथा फारसी.

खंड 'ख'

डोगरी साहित्य का इतिहास

1. स्वतंत्रता–पूर्व डोगरी साहित्य का संक्षिप्त विवरण पद्य एवं गद्य.
2. आधुनिक डोगरी काव्य का विकास तथा डोगरी काव्य के मुख्य प्रवृत्तियां.
3. डोगरी लघुकथा का विकास, मुख्य प्रवृत्तियां तथा प्रमुख लघुकथा लेखक.
4. डोगरी उपन्यास का विकास, मुख्य प्रवृत्तियां तथा डोगरी उपन्यासकारों का योगदान.
5. डोगरी नाटक का विकास तथा प्रमुख नाटककारों का योगदान.
6. डोगरी गद्य का विकास : निबंध, संस्मरण एवं यात्रावृत्त.
7. डोगरी लोक साहित्य का परिचय : लोकगीत, लोककथाएं तथा गाथागीत.

प्रश्नपत्र–2

डोगरी साहित्य का पाठालोचन

(उत्तर डोगरी में लिखे जाएं)

खंड 'क'

पद्य :

1. आजादी पैह्ले दी डोगरी कविता
निम्नलिखित कवि :
देवी दित्ता, लक्खू, गंगा राम, रामधन, हरदत्त, पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम तथा परमानंद अलमस्त.
2. आधुनिक डोगरी कविता
आजादी बाद दी डोगरी कविता
निम्नलिखित कवि :–
किशन स्माइलपुरी, तारा स्माइलपुरी, मोहन लाल सपोलिया, यश शर्मा, के.एस. मधुकर, पद्मा सचदेव, जितेन्द्र ऊधमपुरी, चरण सिंह तथा प्रकाश प्रेमी.
3. श्रीराजा डोगरी सं. 102, गज़ल अंक
निम्नलिखित कवि :
राम लाल शर्मा, वेद पाल दीप, एन.डी. जाम्वाल, शिव राम दीप, अश्विनी मगोत्रा तथा वीरेन्द्र केसर.
4. श्रीराजा डोगरी सं. 147, गज़ल अंक
निम्नलिखित कवि :–
आर.एन. शास्त्री, जितेन्द्र ऊधमपुरी, चंपा शर्मा तथा दर्शन दर्शी.
5. शम्भू नाथ शर्मा द्वारा रचित 'रामायण' (महाकाव्य) (अयोध्या काण्ड तक)
6. दीनू भाई पंत द्वारा रचित 'वीर गुलाब' (खण्ड काव्य).

खंड 'ख'

गद्य :

1. अजकणी डोगरी कहानी
निम्नलिखित लघु कथा लेखक :
मदन मोहन शर्मा, नरेन्द्र खजूरिया तथा बी.पी. साठे.
2. अजकणी डोगरी कहानी भाग–II
निम्नलिखित लघु कथा लेखक :
वेद राही, नरसिंह देव जाम्वाल, ओम गोस्वामी, छत्रपाल, ललित मगोत्रा, चमन अरोड़ा तथा रतन केसर.
3. कथा कुंज भाग–II
निम्नलिखित कथा लेखक :
ओम विद्यार्थी, चम्पा शर्मा तथा कृष्ण शर्मा.
4. बन्धु शर्मा द्वारा रचित 'मील पत्थर' (लघु कथा संग्रह)
5. देश बन्धु डोगरा नूतन द्वारा रचित 'कैदी' (उपन्यास)
6. ओ.पी. शर्मा सारथी द्वारा रचित 'नंगा रूक्ख' (उपन्यास).
7. मोहन सिंह द्वारा रचित 'नयान' (नाटक)
8. सतरंग (एकांकी नाटकी संग्रह)
निम्नलिखित नाटककार :
विश्वनाथ खजूरिया, राम नाथ शास्त्री, जितेन्द्र शर्मा, ललित मगोत्रा तथा मदन मोहन शर्मा
9. डोगरी ललित निबंध
निम्नलिखित लेखक :–
विश्वनाथ खजूरिया, नारायण मिश्रा, बालकृष्ण शास्त्री, शिवनाथ, श्याम लाल शर्मा, लक्ष्मी नारायण, डी.सी. प्रशांत, वेद घई, कुंवर वियोगी.

अंग्रेजी

इस पाठ्यक्रम के दो प्रश्न पत्र होंगे. इसमें निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में से निम्नलिखित अवधि के अंग्रेजी साहित्य का मूल अध्ययन अपेक्षित होगा जिससे उम्मीदवार की समीक्षा–क्षमता की जांच हो सके.

प्रश्न पत्र–I : 1600–1900

प्रश्न पत्र–II : 1900–1990

प्रत्येक प्रश्न पत्र में दो प्रश्न अनिवार्य होंगें :

(क) एक लघु–टिप्पण प्रश्न सामान्य अध्ययन से संबंधित विषय पर होगा और

(ख) गद्य तथा पद्य दोनों के अनदेखे उद्धरणों का आलोचनात्मक विश्लेषण होगा.

प्रश्न पत्र–I

(उत्तर अंग्रेजी में लिखने होंगे)

विस्तृत अध्ययन के लिए पाठ नीचे दिए गए हैं.

अभ्यर्थियों से निम्नलिखित विषयों तथा घटनाओं के विस्तृत ज्ञान की अपेक्षा की जाएगी : दि रिनेसाँ; एलिजाबेथन एण्ड जेकोवियन ड्रामा, मेटाफिजीकल पोयट्री; दि एपिक एण्ड दि–मोक एपिक; नवक्लासिकीवाद; सैटायर; दि रोमान्टिक मूवमेंट; दि राइज़ ऑफ दि नावेल; दि विक्टोरियन एज.

खंड 'क'

1. विलियम शेक्सपियर : किंगलियर और दि टैम्पैस्ट
2. जान डन – निम्नलिखित कविताएं :
   1. केनोनाईजेशन
   2. डेथ बी नाइट प्राउड
   3. दि गुड मोरो
      ऑन हिज मिस्ट्रेज गोइंग टु बेड
      दि रैलिक
3. जॉन मिल्टन–पैराडाइज लॉस्ट I, II, IV, IX
4. अलेक्जेंडर पोप – दि रेप आफ दि लॉक
– विलियम वर्डस्वर्थ – निम्नलिखित कविताएं :
– ओड आन इंटिमेशंस आफ इम्मोरटैलिटी
– टिंटर्न एबे
– थ्री यीअर्स शी ग्रियू
– शी ड्वेल्ट अमंग अनट्रोडन वेज़
– माइकेल
– रेजोज्यूशन एंड इंडिपेंडेन्स
– दि वर्ल्ड इज टू मच विद अस
– मिल्टन दाउ शुड्स्ट बी लिविंग एट दिस आवर
– अपॉन वेस्टमिन्स्टर ब्रिज
5. अल्फ्रेड टेनीसन : इन मेमोरियम
6. हैनरिक इब्सेन : ए हॉल्स हाउस

खंड 'ख'

1. जोनाथन स्विफ्ट – गलिवर्स ट्रेवल्स
2. जैन ऑस्टन – प्राइड एंड प्रेजुडिस
3. हेनरी फील्डिंग – टॉम जॉन्स
4. चार्ल्स डिकन्स – हाई टाइम्स
5. जार्ज इलियट – दि मिल आन दि फ्लोस
6. टामस हार्डी – टेस आफ दि डि अर्बरविल्स
7. मार्क ट्रवेन – दि एडवेंचर्स आफ हकलबैरी फिन.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर अंग्रेजी में लिखने होंगे)

विस्तृत अध्ययन के लिए पाठ नीचे दिए गए हैं. अभ्यर्थियों से निम्नलिखित विषयों और आन्दोलनों का यथेष्ट ज्ञान भी अपेक्षित होगा.

आधुनिकतावाद : पोयट्स आफ दि थर्टीज; दि स्ट्रीम आफ कांशसनेस नावेल; एब्सर्ड ड्रामा; उपनिवेशवाद तथा उत्तर–उपनिवेशवाद; अंग्रेजी में भारतीय लेखन; साहित्य में मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणात्मक और नारीवादी दृष्टियां; उत्तर–अधुनिकतावाद.

खंड 'क'

1. विलियम बटलर यीट्स – निम्नलिखित कविताएं :
– ईस्टर 1916
– दि सैकंड कमिंग
– ऐ प्रेयर फार माई डाटर
– सेलिंग टु बाइजेंटियम
– दि टावर
– अमंग स्कूल चिल्ड्रन
– लीडा एण्ड दि स्वान
– मेरू
– लेपिस लेजुली
– द सैकेन्ड कमिंग
– बाईजेंटियम
2. टी.एस. इलियट – निम्नलिखित कविताएं :
– दि लव सोंग आफ जे. अल्फ्रेड प्रूफ्राक
– जर्नी आफ दि मेजाइ
– बर्न्ट नार्टन
3. डबल्यू एच आडेन – निम्नलिखित कविताएं
– पार्टीशन
– म्यूजी दे व्यू आर्टस
– इन मेमोरी आफ डबल्यू बी. यीट्स
– ले यूअर स्लीपिंग हैड, माई लव
– दि अननोन सिटिजन
– कन्सिडर
– मुंडस ऐट इन्फेन्स
– दि शील्ड आफ एकिलीज
– सैपटेम्बर 1, 1939
– पेटीशन
4. जॉन आसबोर्न – लुक बैक इन एंगर
5. सैम्युअल बैकेट : वेटिंग फार गोडो
6. फिलिप लारकिन – निम्नलिखित कविताएं :
– नैक्स्ट
– प्लीज
– डिसैप्शन्स
– आफ्टरनून्स
– डेज़
– मिस्टर ब्लीनी
7. ए.के. रामानुजन : निम्नलिखित कविताएं :
– लुकिंग फार ए कजन आन ए स्विंग
– ए रिवर
– आफ मदर्स, अमंग अदर थिंग्स
– लव पोयम फार ए वाईफ–1
– स्माल – स्केल रिफ्लैकशन्स
– आन ए ग्रेट हाउस
– ओबिचुएरी

(ये सभी कविताएं आर पार्थसारथी द्वारा सम्पादित तथा आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, दसवीं–बीसवीं शताब्दी के भारतीय कवियों के संग्रह में उपलब्ध हैं)

खंड 'ख'

1. जोसेफ कोनरेड : लार्ड जिम
2. जेम्स ज्वायस : पोट्रेट आफ दि आर्टिस्ट एज ए यंग मैन
3. डी.एच. लारेंस : सन्स एण्ड लवर्स
4. ई.एम. फोर्स्टर : ए पैसेज टु इंडिया
5. वर्जीनिया वूल्फ : मिसेज डेलोवे
6. राजा राव : कांथापुरा
7. वी.एस. नायपाल : ए. हाउस फार मिस्टर बिस्वास

फ्रेंच

प्रश्नपत्र–1

फ्रेंच से अंग्रेजी में अनुवाद के प्रश्न को छोड़कर उत्तर फ्रेंच में लिखने होंगे.

खंड 'क'

1. फ्रेंच साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियां

(क) क्लासिकीवाद
(ख) स्वच्छन्दतावाद
(ग) यथार्थवाद

2. फ्रांस में कला

(क) स्वच्छन्दतावाद
(ख) यथार्थवाद
(ग) प्रभाववाद

3. पांचवा गणतंत्र

(क) द गॉल एवं पांचवा गणतंत्र
(ख) मई – 1968
(ग) पांपिदु
(घ) गिस्लार्द द स्तैंग
(ङ) मित्तरां
(च) शिरॉक

4. अनुवाद : फ्रेंच से अंग्रेजी में (सामाजिक –राजनीतिक–आर्थिक प्रकृति के दो उद्धरणों का अनुवाद – प्रत्येक उद्धरण दो सौ शब्दों का).

खंड 'ख'

1. फ्रेंच साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियां

(क) प्रतीकवाद
(ख) अतियथार्थवाद
(ग) एब्सर्ड का रंगमंच

2. फ्रांस में कला

(क) अतियथार्थवाद
(ख) धनवाद
(ग) अमूर्त चित्रकला

3. पांचवा गणतंत्र

(क) फ्रांस में राजनीतिक दल
(ख) पांचवें गणतंत्र में राष्ट्रपति का स्थान एवं उसकी भूमिका
(ग) सरकार
(घ) संसद
(ङ) सीनेट

4. अनुवाद : अंग्रेजी से फ्रेंच में (सामाजिक–राजनीतिक– आर्थिक प्रकृति के दो उद्धरणों का अनुवाद – प्रत्येक उद्धरण दो सौ शब्दों का.)

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर फ्रेंच में लिखने होंगे)

खंड 'क'

इस प्रश्न पत्र में निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों का गहन अध्ययन अपेक्षित है. प्रश्न इस तरह तैयार किए जाएंगे कि अभ्यर्थियों की आलोचनात्मक योग्यता को जांचा जा सके.

1. 17वीं शताब्दी

(क) कोर्नेल : ल सीद
(ख) रासिन : आंद्रोमाक
(ग) मोलियर : ल आव्र

2. 18वीं शताब्दी

ब्यू मार्शे : ल मारिज द फिगैरो

3. 19वीं शताब्दी

(क) लामार्तिन : लिलेक, लवलों
(ख) विक्तर ह्यूगो : ल कांशियेंस, एल आवे प्रिस प्ली द में, दे ल ओब
(ग) विक्तर ह्यूगो : हरनानी
(घ) मुसे : सवनी, ल न्वीद देसांब्र
(ङ) मेरीमे : कोलोंब
(च) बाल्जाक : यूजेनी ग्रांदे
(छ) फ्लाबेयर : मदाम बावेरी
(ज) बादलेय : ल इन्विते शों ओ वयाज, टिक्वीलमों ल एल्बत्रोस
(झ) रिंबो : लोदार्मे द्यू वाल
(ञ) वर्लेन : चांर्सो द ओतम, मों रेव फमिलिये, इल प्लैयर दां मों कैर.

खंड 'ख'

4. 20वीं शताब्दी

(क) एपोलिनेयर : न्वी रेनान, लो पों मिराबो
(ख) जाक प्रेवर : पुर फैर लो पोत्रें द' आं ल द' अन्वासों बार्बरा
(ग) पॉल एलुवार : लिबर्ते
(घ) पॉल वेलेयरी : ले पा, ल फिलैस
(ङ) आन्द्रे गीद : ल सिंफेनी पास्तोरेल
(च) कामू : इ' इतरांजर
(छ) सार्त्र : ले मैन साल्स
(ज) आइनेस्को : राइनोसिरोस

फ्रेकोंफोनी

(क) जेरार्द बेसेत : ल' लायब्रेर
(ख) आनन्द देवी : लो वाल द द्रोपदी
(ग) शेख हमीदु काने : ल' आर्वेत आंबीग
(घ) अब्दलतीफ लाबी : पोयम ए आं प्रोस
1. ल' आर्ब आ पोयम्स (ल' एन्तरों दु मोन)
2. ले रेव वियेनो यूरिर श्युर ल पेज (ल' एन्तरों दु मोन)

5. समकालीन विषय पर सामान्य प्रकृति का निबन्ध.

जर्मन

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर जर्मन भाषा में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. भाषा की संरचना : अभ्यर्थियों से शब्दक्रम, वाक्य रचना तथा शब्दार्थ विज्ञान जैसे विशिष्ट पहलुओं के संदर्भ में जर्मन व्याकरण के सम्यक ज्ञान की अपेक्षा की जाती है.

2. जर्मन भाषा में निबंध : अभ्यर्थियों से अपेक्षा की जाती है कि सामान्य प्रकार के समकालीन विषय पर निबंध लिखते समय वे दिखलाएं कि जर्मन भाषा में लिखी जाने वाली अभिव्यक्ति की तकनीकों पर उनका अधिकार है.

खंड 'ख'

1. एक सामान्य विषय पर लिखे पाठ का अंग्रेजी से जर्मन में अनुवाद.
2. निम्नलिखित विषयों के विशेष संदर्भ में जर्मनी का अठारहवीं सदी से लेकर वर्तमान समय तक का सामाजिक–राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास.

(क) जर्मन समाज और संस्कृति पर बोधन का प्रभाव.
(ख) जर्मनी पर प्रशियन संस्कृति का प्रभाव.
(ग) वाइमार गणराज्य में हुए सांस्कृतिक वाद–विवाद.
(घ) जर्मनी में राष्ट्रीय समाजवाद के अधीन संस्कृति की अवधारणा.
(ङ) 1945 के बाद दो जर्मन साहित्य धाराओं तथा संस्कृतियों का विकास.
(च) जर्मनी का पुनरेकीकरण और सांस्कृतिक विविधता की समस्याएं.
(छ) यूरोपीय संघ में जर्मन भाषा तथा साहित्य की भूमिका और प्रासंगिकता.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर जर्मन में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. 19वीं शताब्दी से आज तक के जर्मन साहित्य का विकास : अभ्यर्थियों को प्रमुख प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि लेखकों और उनकी महत्वपूर्ण कृतियों की जानकारी होनी चाहिए. इसके अंतर्गत केवल लेखकों और उनकी कृतियों की जानकारी प्राप्त करने पर जोर नहीं दिया जाता, बल्कि अभ्यर्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह किसी साहित्यिक काल की विशेषताओं को प्रतिनिधि रचनाओं के आधार पर पहचाने.

2. साहित्यिक विधाओं का अध्ययन : अभ्यर्थियों को रोमान, नावेले, नाटक, गाथागीत, शोकगीत, प्रयाण–गीत, युद्धगीत, कुरजेशिश्ट जैसी विभिन्न विधाओं की महत्वपूर्ण विशेषताओं का ज्ञान होना चाहिए.

खंड 'ख'

1. साहित्यिक व्याख्याओं के प्रत्यक्ष ज्ञान :
अभ्यर्थियों को साहित्य के आलोचनात्मक ज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोणों की जानकारी होनी चाहिए.

2. चुनी हुई कृतियों का अध्ययन:

(क) गोएटे : हाई लीडेन डेस जुंगेन बर्थर
(ख) शिलर – मारिया स्टुअर्ट
(ग) ईशनडोर्फ – गोडिश्टे
(घ) गोटफ्रीड कैलर – क्लिडर माशेर ल्यूटे
(ङ) टॉमस मान – डाई वरटोश्टन कोफे
(च) फात्स काफूका – वोर डेम गेसेज
(छ) फ्रीडरिख डरनमैट – डाइ फिजीकर
(ज) मैक्स फ्रिस्क – एंडोरा
(झ) हीनरिख बोल – डाई वेरलोरीन एहरे डेर कैथरिना ब्लुम
(ञ) इंगेबोर्ग बैखमन – एलेस (औस डेम एंरैलबेंड : डास ड्राईबिग्स्ट जार)
(ट) रोज ऑसलेंडर – गेडिश्टे
(ठ) क्रिस्टा वोल्फ – डेर गेटीटे हिम्मेल
(ड) गुंटर ग्रास – जुंडा जीगन

गुजराती

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर गुजराती में लिखने होंगे)

खंड 'क'

गुजराती भाषा : स्वरूप तथा इतिहास

1. गुजराती भाषा का इतिहास : आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के पिछले एक हजार वर्ष के विशेष संदर्भ में.
2. गुजराती भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएं : स्वनिम विज्ञान, रूप विज्ञान तथा वाक्य विन्यास.
3. प्रमुख बोलियां : सूरती, पाटणी, चरोतरी तथा सौराष्ठी

गुजराती साहित्य का इतिहास :

मध्ययुगीन

4. जैन परम्परा

5. भक्ति परम्परा : सगुण तथा निर्गुण (ज्ञानमार्गी)

6. गैर सम्प्रदायवादी परम्परा (लौकिक परम्परा)

आधुनिक

7. सुधारक युग

8. पंडित युग

9. गांधी युग

10. अनुगांधी युग

11. आधुनिक युग

खंड 'ख'

साहित्यिक स्वरूप (निम्नलिखित साहित्यिक स्वरूपों की प्रमुख विशेषताएं, इतिहास और विकास)

(क) मध्ययुग

1. वृतान्त : रास, आख्यान तथा पद्यवार्ता

2. गीतिकाव्य : पद

(ख) लोक साहित्य

3. भवाई

(ग) आधुनिक

4. कथा साहित्य : उपन्यास तथा कहानी.

5. नाटक

6. साहित्यिक निबंध

7. गीतिकाव्य

(घ) आलोचना

8. गुजराती की सैद्धांतिक आलोचना का इतिहास

9. लोक परम्परा में नवीनतम अनुसंधान

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर गुजराती में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का मूल अध्ययन अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिससे उम्मीदवार की समीक्षा क्षमता की जांच हो सके.

खंड 'क'

1. मध्ययुग

(i) **वसंत विलास फागु :** अज्ञातकृत

(ii) **कादम्बरी :** भालण

(iii) **सुदामा चरित्र :** प्रेमानंद

(iv) **चंद्र चंद्रावतीनी वार्ता :** शामल

(v) **अखेगीता :** अखो

2. सुधारक युग तथा पंडित युग

(vi) **मारी हकीकत :** नर्मदाशंकर दवे

(vii) **फरबसवीरा :** दलपतराम

(viii) **सरस्वती चंद्र–भाग 1 :** गोवर्धनराम त्रिपाठी

(ix) **पूर्वालाप :** 'कांत' (मणिशंकर रत्नाजी भट्ट)

(x) **राइनो पर्वत :** रमणभाई नीलकंठ

खंड 'ख'

1. गांधी युग तथा अनुगांधी युग

(i) **हिन्द स्वराज :** मोहनदास करमचंद गांधी

(ii) **पाटणनी प्रभुता :** कन्हैयालाल मुंशी

(iii) **काव्यनी शक्ति :** राम नारायण विश्वनाथ पाठक

(iv) **सौराष्ट्रनी रसधार–भाग 1 :** भवेरचंद मेघाणी

(v) **मानवीनी भवाई :** पन्नालाल पटेल

(vi) **ध्वनि :** राजेन्द्र शाह

2. आधुनिक युग

(vii) **सप्तपदी :** उमाशंकर जोशी

(viii) **जनान्तिके :** सुरेश जोशी

(ix) **अश्वत्थामा :** सितान्शु यशरचंद्र

हिन्दी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर हिन्दी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का इतिहास

(i) अपभ्रंश, अवहट्ट और प्रारंभिक हिन्दी का व्याकरणिक तथा अनुप्रयुक्त स्वरूप.

(ii) मध्यकाल में ब्रज और अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास.

(iii) सिद्धनाथ साहित्य, खुसरो, संत साहित्य, रहीम आदि कवियों और दक्खिनी हिन्दी में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप.

(iv) उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली और नागरी लिपि का विकास.

(v) हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का मानकीकरण.

(vi) स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी का विकास.

(vii) भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास.

(viii) हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक और तकनीकी विकास.

(ix) हिन्दी की प्रमुख बोलियां और उनका परस्पर संबंध.

(x) नागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएं और उसके सुधार के प्रयास तथा मानक हिन्दी का स्वरूप.

(xi) मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना.

खंड 'ख'

2. हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य की प्रासंगिकता और महत्व तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास–लेखन की परम्परा.

हिन्दी साहित्य के इतिहास के निम्नलिखित चार कालों की साहित्यिक प्रवृत्तियां.

(क) **आदिकाल :** सिद्ध, नाथ और रासो साहित्य.
प्रमुख कवि : चंदबरदाई, खुसरो, हेमचंद्र, विद्यापति,

(ख) **भक्ति काल** : संत काव्य धारा, सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्तिधारा और राम भक्तिधारा.
प्रमुख कवि : कबीर, जायसी, सूर और तुलसी.

(ग) **रीतिकाल** : रीतिकाव्य, रीतिबद्धकाव्य, रीतिमुक्त काव्य
प्रमुख कवि : केशव, बिहारी, पदमाकर और घनानंद.

(घ) **आधुनिक काल** :

क. नवजागरण, गद्य का विकास, भारतेन्दु मंडल

ख. **प्रमुख लेखक** : भारतेन्दु, बाल कृष्ण भट्ट और प्रताप नारायण मिश्र.

ग. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियां.
छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत, समकालीन कविता और जनवादी कविता.

प्रमुख कवि :
मैथली शरण गुप्त, जयशंकर 'प्रसाद', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर', सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव मुक्तिबोध, नागार्जुन.

3. कथा साहित्य

क. उपन्यास और यर्थाथवाद

ख. हिन्दी उपन्यासों का उद्भव और विकास

ग. **प्रमुख उपन्यासकार**
प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, रेणु और भीष्म साहनी.

घ. हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास

ङ **प्रमुख कहानीकार**
प्रेमचन्द, जयशंकर 'प्रसाद,' सच्चिदानंद वात्स्यायन, 'अज्ञेय,' मोहन राकेश और कृष्णा सोबती.

4. नाटक और रंगमंच

क. हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास.

ख. **प्रमुख नाटककार** : भारतेन्दु, जयशंकर 'प्रसाद,' जगदीश चंद्र माथुर, रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश.

ग. हिन्दी रंगमंच का विकास.

5. आलोचना :

क. हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास
सैद्धांतिक, व्यावहारिक, प्रगतिवादी, मनोविश्लेषणवादी, आलोचना और नई समीक्षा.

ख. **प्रमुख आलोचक**
रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा और नगेन्द्र.

6. हिन्दी गद्य की अन्य विधाएं :
ललित निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृतान्त.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर हिन्दी में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

1.	कबीर :	कबीर ग्रंथावली (आरंभिक 100 पद)
	संपादक :	श्याम सुन्दरदास
2.	सूरदास :	भ्रमरगीत सार (आरंभिक 100 पद)
	संपादक :	रामचंद्र शुक्ल
3.	तुलसीदास :	रामचरित मानस (सुंदर काण्ड)
		कवितावली (उत्तर काण्ड).
4.	जायसी :	पदमावत (सिंहलद्वीप खण्ड और नागमती वियोग खण्ड)
	संपादक :	श्याम सुन्दरदास
5.	बिहारी :	बिहारी रत्नाकर (आरंभिक 100 दोहे)
	संपादक :	जगन्नाथ दास रत्नाकार
6.	मैथिलीशरण गुप्त :	भारत भारती
7.	जयशंकर 'प्रसाद' :	कामायनी (चिंता और श्रृदा सर्ग)
8.	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' :	राग–विराग (राम की शक्ति पूजा और कुकुरमुत्ता)
	संपादक :	राम विलास शर्मा
9.	रामधारी सिंह 'दिनकर :	कुरूक्षेत्र
10.	अज्ञेय :	आंगन के पार द्वार (असाध्य वीणा)
11.	मुक्ति बोध :	ब्रह्मराक्षस
12.	नागार्जुन :	बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, हरिजन गाथा.

खंड 'ख'

1. भारतेन्दु : भारत दुर्दशा
2. मोहन राकेश : आषाढ़ का एक दिन
3. रामचंद्र शुक्ल : चिंतामणि (भाग–1) (कविता क्या है, श्रद्धा और भक्ति).
4. निबंध निलय, संपादक : डा. सत्येन्द्र. बाल कृष्ण भट्ट, प्रेमचन्द, गुलाब राय, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राम विलास शर्मा, अज्ञेय, कुबेर नाथ राय.
5. प्रेमचंद : गोदान, 'प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां, संपादक : अमृत राय
   मंजुषा : प्रेम चंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां, संपादक: अमृत राय
6. प्रसाद : स्कंदगुप्त
7. यशपाल : दिव्या
8. फणीश्वरनाथ रेणु : मैला आंचल
9. मन्नू भण्डारी : महाभोज
10. एक दुनिया समानान्तर, (सभी कहानियां) संपादक : राजेन्द्र यादव.

कन्नड़

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर कन्नड़ में लिखने होंगे)

खंड 'क'

(क) कन्नड़ भाषा का इतिहास

भाषा क्या है? भाषा की सामान्य विशेषताएं.

द्रविड़ भाषा परिवार और इसके विशिष्ट लक्षण. कन्नड़ भाषा की प्रचीनता. उसके विकास के विभिन्न चरण.

कन्नड़ भाषा की बोलियां : क्षेत्रीय और सामाजिक. कन्नड़ भाषा के विकास के विभिन्न पहलू : स्वनिमिक और अर्थगत परिवर्तन.

भाषा आदान.

(ख) कन्नड़ साहित्य का इतिहास

प्राचीन कन्नड़ साहित्य : प्रभाव और प्रवृत्तियां. निम्नलिखित कवियों का अध्ययन.

पंपा, जन्न, नागचंद्र : पंपा से रत्नाकार वर्णी तक इन निर्दिष्ट कवियों का विषय वस्तु, रूप विधान और अभिव्यंजना की दृष्टि से अध्ययन.

मध्ययुगीन कन्नड़ साहित्य : प्रभाव और प्रवृत्तियां.

बचन साहित्य : बासवन्ना, अक्क, महादेवी.

मध्ययुगीन कवि : हरिहर राघवंक, कुमारव्यास.

दास साहित्य : पुरन्दर और कनक.

संगतया : रत्नाकार वर्णी.

(ग) आधुनिक कन्नड़ साहित्य : प्रभाव, प्रवृत्तियां और विचारधाराएं. नवोदय, प्रगतिशील, नव्य, दलित और बन्दय.

खंड 'ख'

(क) काव्यशास्त्र और साहित्यक आलोचना :

कविता की परिभाषा और संकल्पनाएं : शब्द, अर्थ, अलंकार, रीति, रस, ध्वनि, औचित्य.

रस सूत्र की व्याख्याएं.

साहित्यिक आलोचना की आधुनिक प्रवृत्तियां :

रूपवादी, ऐतिहासिक, मार्क्सवादी, नारीवादी, उत्तर–औपनिवेशिक आलोचना.

(ख) कर्नाटक का सांस्कृतिक इतिहास :

कर्नाटक की संस्कृति में राजवंशों का योगदान :

साहित्यिक संदर्भ में बदामी और कल्याणी के चालुक्यों, राष्ट्रकूटों, हौशल्यों और विजयनगर के शासकों का योगदान.

कर्नाटक के प्रमुख धर्म और उनका सांस्कृतिक योगदान.

कर्नाटक की कलाएं : साहित्यिक संदर्भ में मूर्तिकला, वास्तुकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य.

कर्नाटक का एकीकरण और कन्नड़ साहित्य पर इसका प्रभाव.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर कन्नड़ में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिससे उम्मीदवारों की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

(क) प्राचीन कन्नड़ साहित्य :

1. पंपा का विक्रमार्जुन विजय (सर्ग 12 तथा 13), (मैसूर विश्वविद्यालय प्रकाशन).
2. बद्दराघने (सुकुमारस्वामैया काथे, विद्युत्चोरन काथे).

(ख) मध्युगीन कन्नड़ साहित्य :

1. वचन काम्मत, संपादक : के. मास्लसिद्दप्पा, के. आर. नागराज, (बंगलौर विश्वविद्यालय प्रकाशन).
2. जनप्रिय कनकसम्पुत, संपादक : डी. जवारे गौड़ा, (कन्नड़ एंड कल्चर डायरेक्टरेट, बंगलौर).
3. नम्बियन्नाना रागाले, संपादक : डी.एन. श्रीकातैया, (ता.वैम. स्मारक ग्रंथ माले, मैसूर).
4. कुमारव्यास भारत : कर्ण पर्व (मैसूर विश्वविद्यालय).
5. भारतेश वैभव संग्रह, संपादक : ता.सु. शाम राव, (मैसूर विश्वविद्यालय).

खंड 'ख'

(क) आधुनिक कन्नड़ साहित्य

1.	**काव्य :**	होसगन्नड कविते, संपादक : जी.एच.नायक, (कन्नड़साहित्य परिशत्तु, बंगलौर).
2.	**उपन्यास** :	बेलाद जीव – शिवराम कारंत, (माधवी–अनुपमा निरंजन औडालाल– देवानुरू महादेव.
3.	**कहानी** :	कन्नड़ सन्न, काथेगलु, सम्पादक : जी.एच. नायक, (साहित्य अकादमी, नई दिल्ली).
4.	**नाटक** :	शुद्र तपस्वी – कुवेम्पु. तुगलक–गिरीश कर्नाड
5.	**विचार साहित्य** :	देवरू – ए.एन. मूर्ति राव (प्रकाशक : डी.वी.के. मूर्ति, मैसूर).

(ख) लोक साहित्य

1.	**जनपद स्वरूप :**	डा. एच.एम. नायक (ता.वैम. स्मारक ग्रंथ माले, मैसूर)
2.	**जनपद गीताजंली :**	संपादक : डी. जवारे गौड़ा,

(प्रकाशक : साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)

3. **कन्नड़ जनपद : काथेगालु** संपादक :जे.एस.परमशि–वैया (मैसूर विश्वविद्यालय)
4. **बीड़ि मक्कालू : बैलेडो** संपादक : कालेगौड़ा नागवारा, (प्रकाशक : बंगलौर विश्वविद्यालय).
5. **सविरद ओगातुगालु :** संपादक : एस.जी. इमरापुर,

कश्मीरी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर कश्मीरी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. **कश्मीरी भाषा के वंशानुगत संबंध :** विभिन्न सिद्धांत
2. घटना क्षेत्र तथा बोलियां (भौगोलिक/सामाजिक)
3. **स्वनिमविज्ञान तथा व्याकरण :**
   (i) स्वर व व्यंजन व्यवस्था
   (ii) विभिन्न कारक विभक्तियों सहित संज्ञाएं तथा सर्वमान
   (iii) क्रियाएं : विभिन्न प्रकार एवं काल
4. **वाक्य संरचना :**
   (i) साधारण, कर्तृवाच्य व घोषणात्मक कथन
   (ii) समन्वय
   (iii) सापेक्षीकरण

खंड 'ख'

1. 14वीं शताब्दी में कश्मीरी साहित्य (सामाजिक–(सांस्कृतिक) तथा बौद्धिक पृष्ठभूमि; लाल दयाद तथा शेईखुल आलम के विशेष संदर्भ सहित)
2. उन्नीसवीं शताब्दी का कश्मीरी साहित्य (विभिन्न विधाओं का विकास : वत्सन; गज़ल तथा मथनवी.
3. बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कश्मीरी साहित्य (महजूर तथा आजाद के विशेष संदर्भ सहित; विभिन्न साहित्यिक प्रभाव)
4. आधुनिक कश्मीरी साहित्य (कहानी, नाटक, उपन्यास तथा नज़्म के विकास के विशेष संदर्भ सहित).

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर कश्मीरी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. उन्नीसवीं शताब्दी तक के कश्मीरी काव्य का गहन अध्ययन :
   (i) लाल दयाद
   (ii) शेईखुल आलम
   (iii) हब्बा खातून
2. कश्मीरी काव्य : 19वीं शताब्दी
   (i) महमूद गामी (वत्सन)
   (ii) मकबूल शाह (जुलरेज)
   (iii) रसूल मीर (गज़लें)
   (iv) अब्दुल अहमद नदीम (नात)
   (v) कृष्णजू राज़दान (शिव लगुन)
   (vi) सूफी कवि (पाठ्य पुस्तक संगलाब–प्रकाशन–कश्मीरी विभाग, कश्मीरी विश्व–विद्यालय)
3. बीसवीं शताब्दी का कश्मीरी काव्य (पाठ्य पुस्तक–आजिच काशिर शायरी, प्रकाशन–कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय.
4. साहित्यिक समालोचना तथा अनुसंधान कार्य : विकास एवं विभिन्न प्रवृत्तियां.

खंड 'ख'

1. कश्मीरी कहानियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन.
   (i) **अफसाना मज़मुए**–प्रकाशन–कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय
   (ii) **'काशुर अफसाना अज़'**–प्रकाशन–साहित्य अकादमी.
   (iii) **'हमासर काशुर अफसाना'**–प्रकाशन–साहित्य अकादमी
   केवल निम्नलिखित कहानी लेखक :
   अख्तर मोहि–उद्दीन, अमीन कामिल, हरिकृष्ण कौल, हृदय कौल भारती, बंसी निर्दोष, गुलशन माजिद.
2. **कश्मीरी उपन्यास :**
   (i) जीएन गोहर का **मुजरिम**
   (ii) मारून–इवानइलिचन (टॉलस्टाय की **'द डेथ आफ इलिच'** का कश्मीरी अनुवाद (कश्मीरी विभाग द्वारा प्रकाशित)
3. **कश्मीरी नाटक :**
   (i) हरि कृष्ण कौल का **'नाटुक करिव बंद'**
   (ii) **ऑक एंगी नाटुक,** सेवा मोतीलाल कीमू, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
   (iii) **राजि इडिपस** अनु. नज़ी मुनावर, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
4. **कश्मीरी लोक साहित्य :**
   (i) **काशुर लुकि थियेटर,** लेखक–मोहम्मद सुभान भगत–प्रकाशन, कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय.
   (ii) **काशिरी लुकी बीथ** (सभी अंक) जम्मू एवं कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी द्वारा प्रकाशित.

कोंकणी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर कोंकणी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

कोंकणी भाषा का इतिहास :

(1) भाषा का उद्भव और विकास तथा इस पर पड़ने वाले प्रभाव.

(2) कोंकणी भाषा के मुख्य रूप तथा उनकी भाषाई विशेषताएं.

(3) कोंकणी भाषा में व्याकरण और शब्दकोश संबंधी कार्य–कारक, क्रिया विशेषण, अवयव तथा वाच्य के अध्ययन सहित.

(4) पुरानी मानक कोंकणी, नयी मानक कोंकणी तथा मानकीकरण की समस्याएं.

खंड 'ख'

कोंकणी साहित्य का इतिहास :

उम्मीदवारों से अपेक्षा की जाएगी कि वे कोंकणी साहित्य तथा उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से भली–भांति परिचित हों तथा इससे उठने वाली समस्याओं तथा मुद्दों पर विचार करने में सक्षम हों.

(i) कोंकणी साहित्य का इतिहास–प्राचीनतम संभावित स्रोत से लेकर वर्तमान काल तक तथा मुख्य कृतियों, लेखकों और आंदोलनों सहित.

(ii) कोंकणी साहित्य के उत्तरोत्तर निर्माण की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि.

(iii) आदिकाल से आधुनिक काल तक कोंकणी साहित्य पर पड़ने वाले भारतीय और पाश्चात्य प्रभाव.

(iv) विभिन्न क्षेत्रों और साहित्यिक विधाओं में उभरने वाली आधुनिक प्रवृत्तियां–कोंकणी लोक साहित्य के अध्ययन सहित.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर कोंकणी में लिखने होंगे)

कोंकणी साहित्य की मूलपाठ विषयक समालोचना

यह प्रश्नपत्र इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि उम्मीदवार की आलोचना तथा विश्लेषण क्षमता की जांच हो सके.

उम्मीदवारों से कोंकणी साहित्य के विस्तृत परिचय की अपेक्षा की जाएगी और देखा जाएगा कि उन्होंने निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों को मूल में पढ़ा है अथवा नहीं.

खड 'क'

गद्य :

1. (क) **कोंकणी मनसांगोत्री** (पद्य के अलावा) (प्रो. ओलिविन्हो गोम्स द्वारा संपादित.
   (ख) **ओल्ड कोकणी लैंग्वेज एंड लिट्रेचर, दी पोर्जुगीज् रोल :** प्रो. ओलिविन्हो गोम्स द्वारा संपादित.
2. (क) **ओट्मो डेन्वचरक :** ए.वी. डा. क्रुज का उपन्यास
   (ख) **वेडोल आनी वरेम :** एंटोनियो परेरा का उपन्यास
   (ग) डेवाचे कुरपेन : वी.जे. पी. सल्दाना का उपन्यास
3. (क) **वज़लिखनी–शेनॉय गोइम–बाब :** शांताराम वर्दे वलवलिकर द्वारा संपादित संग्रह.
   (ख) **कोंकणी ललित निबंध :** श्याम वेरेंकर द्वारा संपादित निबंध संग्रह.
   (ग) **तीन दशकम :** चंद्रकांत केणि द्वारा संपादित संग्रह.
4. (क) **डिमांड :** पुंडलीक नाइक का नाटक.
   (ख) **कादम्बिनी–ए मिसलेनी आफ मार्डन प्रोज् :** प्रो.ओ.जे.एफ.गोम्स तथा श्रीमती पी.एस. तदकोदकर द्वारा संपादित.
   (ग) रथा तु जे ओ घुदियो : श्रीमती जयंती नाईक

खंड 'ख'

पद्य

1. (क) **इवअणि मोरी :** एडुआर्डो बूनो डिसूजा द्वारा रचित काव्य
   (ख) अब्रवंचम यज्ञदान : लुईस मेस्केरेनहास.
2. (क) गोड्डे रामायण : आर.के. राव द्वारा संपादित
   (ख) **रत्नहार I एंड II, क्लेक्शन आफ पोयम्स:** आर. वी. पंडित द्वारा संपादित.
3. (क) **ज्यो–जुयो–पोयम्स :** मनोहर एल सरदेसाई
   (ख) कनादी माटी कोंकणी कवि : प्रताप नाईक द्वारा संपादित कविता संग्रह.
4. (क) **अह्वष्टाचे कल्ले :** पांडुरंग भंगुई द्वारा रचित कविताएं.
   (ख) **यमन :** माधव बोरकर द्वारा रचित कविताएं.

मैथिली

प्रश्नपत्र–1

मैथिली भाषा और साहित्य का इतिहास

(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)

खंड 'क'

मैथिली भाषा का इतिहास :

1. भारोपीय भाषा–परिवार में मैथिली का स्थान.
2. मैथिली भाषा का उद्भव और विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली).
3. मैथिली भाषा का कालिक विभाजन (आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल).
4. मैथिली एवं इसकी विभिन्न उपभाषाएं.
5. मैथिली एवं अन्य पूर्वांचलीय भाषाओं में सम्बध (बंगला, असमिया, उड़िया).
6. तिरहुता लिपि का उद्भव और विकास.
7. मैथिली में सर्वनाम और क्रियापद.

खंड 'ख'

मैथिली साहित्य का इतिहास :

1. मैथिली साहित्य की पृष्ठभूमि (धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक).
2. मैथिली साहित्य का काल–विभाजन
3. प्राक् विद्यापति साहित्य.
4. विद्यापति और उनकी परम्परा.
5. मध्यकालीन मैथिली नाटक (कीर्तनिया नाटक, अंकीया नाट, नेपाल में रचित मैथिली नाटक).
6. मैथिली लोकसाहित्य (लोकगाथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा)
7. आधुनिक युग में विभिन्न साहित्यिक विधाओं का विकास
   (क) प्रबंधकाव्य
   (ख) मुक्तककाव्य
   (ग) उपन्यास
   (घ) कथा
   (ङ) नाटक
   (च) निबंध
   (छ) समीक्षा
   (ज) संस्मरण
   (झ) अनुवाद.
8. मैथिली पत्र–पत्रिकाओं का विकास.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)

इस प्रश्नपत्र में निर्धारित मूल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

1. विद्यापति गीतशती–प्रकाशक–साहित्य अकादमी, नई दिल्ली (गीतसंख्या 1 से 50 तक).
2. गोविन्ददास भजनावली–प्रकाशक–मैथिली अकादमी, पटना (गीतसंख्या 1 से 25 तक).
3. कृष्णजन्म–मनबोध.
4. मिथिलाभाषा रामायण–चन्दा झा (सुन्दरकाण्ड मात्र).
5. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण–लालदास (बालकाण्ड मात्र).
6. कीचकवध–तन्त्रनाथ झा
7. दत्त–वती–सुरेन्द्र झा 'सुमन' (प्रथम और द्वितीय सर्ग मात्र).
8. चित्रा–यात्री.
9. समकालीन मैथिली कविता–प्रकाशक साहित्य अकादमी, नई दिल्ली.

खंड 'ख'

10. वर्णरत्नाकर – ज्योतिरीश्वर (द्वितीय कल्लोल मात्र).
11. खट्टर ककाक तरंग – हरिमोहन झा.
12. लोरिक–विजय–मणिपद्म
13. पृथ्वीपुत्र – ललित.
14. भफाइत चाहक जिनगी – सुधांशु 'शेखर' चौधरी.
15. कृति राजकमल – प्रकाशक–मैथिली अकादमी, पटना (आरम्भ में दस कथा तक).
16. कथा–संग्रह–प्रकाशक–मैथिली अकादमी, पटना.

मलयालम

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर मलयालम में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाग–1 मलयालम भाषा की प्रारंभिक अवस्था :

1.1 विभिन्न सिद्धांत : प्राक् द्रविड़ियन, तमिल, संस्कृत से उद्भव.

1.2 तमिल तथा मलयालम का संबंध ए.आर. राजराजवर्मा के छः लक्षण (नया)

1.3 पाट्टु संप्रदाय –परिभाषा, रामचरितम, परवर्ती पाट्टु कृतियां–निराणम कृतियां तथा कृष्ण गाथा.

भाग–2 : निम्नलिखित की भाषाई विशेषताएं :

2.1 मणिप्रवालम–परिभाषा. मणि प्रवालम में लिखी प्रारंभिक कृतियों की भाषा–चम्पू, संदेशकाव्य, चन्द्रोत्सव, छुट पुट कृतियां परवर्ती मणिप्रवाल कृतियां–मध्ययुगीन चम्पू एवं आट्ट कथा.

2.2 लोक गाथा : दक्षिणी तथा उत्तरी गाथाएं, माप्पिला गीत.

2.3 प्रारंभिक मलयालम गद्य–भाषा कौटिलीयम, ब्रह्मांड पुराणम आट्ट–प्रकारम, क्रम दीपिका तथा नम्बियान तमिल.

भाग–3 मलयालम का मानकीकरण

3.1 पाणा, किलिप्पाट्टु तथा तुल्लन की भाषा की विशेषताएं.

3.2 स्वदेशी तथा यूरोपीय मिशनरियों का मलयालम को योगदान.

3.3 समकालीन मलयालम की विशेषताएं : प्रशासनिक भाषा के रूप में मलयालम. विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी साहित्य की भाषा–जन संचार की भाषा.

खंड 'ख'

साहित्य का इतिहास

भाग–4 प्राचीन तथा मध्युगीन साहित्य :

4.1 पाट्टू–राम चरितम्, निराणम कृतियां एवं कृष्ण गाथा.

4.2 मणिप्रवालम–आट्ट कथा, चंपू आदि प्रारंभिक तथा मध्ययुगीन मणिप्रवाल कृतियां.

4.3 लोक साहित्य

4.4 किलिपाट्टु, तुल्लल तथा महाकाव्य

भाग–5 आधुनिक साहित्य–कविता

5.1 वैणमणि कवि तथा समकालीन कवि

5.2 स्वच्छन्दतावाद का आगमन–कवित्रय का काव्य–आशान, उल्लूर तथा वल्लतोल

5.3 कवित्रय के बाद की कविता.

5.4 मलयालम कविता में आधुनिकतावाद.

भाग–6 आधुनिक साहित्य–गद्य

6.1 नाटक

6.2 उपन्यास

6.3 लघु कथा

6.4 जीवनी, यात्रा वर्णन, निबंध और समालोचना.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर मलयालम में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का मूल अध्ययन अपेक्षित होगा और परीक्षा में उम्मीदवार की आलोचनात्मक क्षमता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

खंड 'क'

भाग–1

1.1 रामचरितम–पटलम–1

1.2 कण्णश्श रामायणम्–बालकाण्डम प्रथम 25 पद्य.

1.3 उण्णुनीलि सवेक्षम्–पूर्व भागम 25 श्लोक, प्रस्तावना सहित.

1.4 महाभारतम् : किलिप्पाट्टु–भीष्म पर्वम्

भाग–2

2.1 कुमारन् आशान–चिंता अवस्थियाय सीता

2.2 वैलोप्पिल्ली कुटियोषिक्कल

2.3 जी शंकर कुरूप–पेरुन्तच्चन

2.4 एन.वी. कृष्ण वारियार–तिवांदियिले पाट्टु

भाग–3

3.1 ओएनवी–भूमि कोरु चरम गीतिम्

3.2 अय्यप्पा पणिक्का–कुरुक्षेत्रम

3.3 आक्किट्टम पंडत्ते मेश्शांति

3.4 आट्टूर रवि वर्मा–मेघरूप

खंड 'ख'

भाग–4

4.1 ओ. चंतु मेनन–इंदुलेखा

4.2 तकषि–चेम्मीन

4.3 ओ.वी. विजयन–खाताक्किन्टे इतिहासम्

भाग–5

5.1 एमटी वासुदेवन नायर–वानप्रस्थम (संग्रह)

5.2 एनएस माधवन–हिग्विक्ता (संग्रह)

5.3 सीजे थामस–1128–इल क्राइम 27

भाग–6

6.1 कुट्टिकृष्ण मारार–भारत पर्यटनम्

6.2 एम.के. सानू–नक्षत्रंगलुटे स्नेहभाजनम्

6.3 वीटी भट्टक्षिरिपाद–कण्णीरूम किनावुम

मणिपुरी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर मणिपुरी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाषा

(क) मणिपुरी भाषा की सामान्य विशेषताएं और उसके विकास का इतिहास, उत्तर–पूर्वी भारत की तिब्बती–बर्मी भाषाओं की बीच मणिपुरी भाषा का महत्व तथा स्थान, मणिपुरी भाषा में अध्ययन में नवीनतम विकास, प्राचीन मणिपुरी लिपि का अध्ययन और विकास.

(ख) मणिपुरी भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएं.

i) स्वर विज्ञान : स्वनिम (फोनीम), स्वर, व्यंजन, संयोजन, स्वरक, व्यंजन समूह और इनका प्रादुर्भाव–अक्षर–इसकी संरचना, स्वरूप तथा प्रकार.

ii) रूप विज्ञान : शब्द श्रेणी, धातु तथा इसके प्रकार; प्रत्यय और इसके प्रकार; व्याकरणिक श्रेणियां–लिंग, संख्या, पुरुष, कारक, काल और इनके विभिन्न पक्ष. संयोजन की प्रक्रिया (समास और संधि).

iii) वाक्य विन्यास : शब्द क्रम, वाक्यों के प्रकार, वाक्यांश और उपवाक्यों का गठन.

खंड 'ख'

क) मणिपुरी साहित्य का इतिहास :

आरंभिक काल (17वीं शताब्दी तक) सामाजिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, विषय वस्तु, कार्य की शैली तथा रीति.

मध्य काल : (अठारवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी) सामाजिक धार्मिक तथा राजनीतिक पृष्ठभूमि, विषयवस्तु, कार्य की शैली तथा रीति.

आधुनिक काल : प्रमुख साहित्यिक रूपों का विकास–विषयवस्तु, रीति और शैली में परिवर्तन.

(ख) मणिपुरी लोक साहित्य :

दंतकथा, लोक कथा, लोक गीत, गाथा लोकोक्ति तथा पहेली.

(ग) मणिपुरी संस्कृति के विभिन्न पक्ष :

हिन्दूपूर्व मणिपुरी आस्था, हिन्दुत्व का आगमन और समन्वयवाद की प्रक्रिया; प्रदर्शन कला–लाई हरोवा, महारस, स्वदेशी खेल–सगोल कांगजेई, खोंग कांगजेई कांग.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर मणिपुरी में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का मूल अध्ययन अपेक्षित है और प्रश्नों का स्वरूप ऐसा होगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

प्राचीन तथा मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य

(क) प्राचीन मणिपुरी साहित्य

1.ओ. मोगेश्वर सिंह (सं.)	नुमित कप्पा
2.एम. गौराचंद्र सिंह (सं.)	थ्वनथवा हिरण
3.एन. खेलचंद्र सिंह (सं.)	नौथिंगकांग फम्बल काबा
4.एम. चंद्र सिंह (सं.)	पंथोयबी खोंगल

(ख) मध्कालीन मणिपुरी साहित्य

1.एम. चंन्द्र सिंह (सं.)	समसोक गांबा
2.आर.के. स्नेहल सिंह (सं.)	रामायण आदि कांड
3.एन. खेलचंद्र सिंह (सं.)	घनंजय लाइबूनिंग्बा
4.ओ. भोगेश्वर सिंह (सं.)	चंद्रकीर्ति जिला चंगबा

खंड 'ख'

आधुनिक मणिपुरी साहित्य

(क) कविता तथा महाकाव्य

(I) कविता

(क) मणिपुरी शेरेंग (प्रकाशन) मणिपुरी साहित्य परिषद् 1988 (सं.)

ख. चोबा सिंह	पी थदोई, लैमगी चेकला आमदा लोकटक
डा. एल. कमल सिंह	निर्जनता; निरब राजनी
ए. मीनाकेतन सिंह	कमाल्दा नोंग्गमलखोडा
एल. समरेन्द्र सिंह	इंगागी नोंग ममंग लेकाई थम्बल सतले
ई. नीलकांत सिंह	मणिपुर, लमंगनबा
श्री बीरेन	तंगखुल हुई
थ. इबोपिशाक	अनौबा थंगबाला जिबा

(ख) कान्बी शेरेंग (प्रकाशन) मणिपुर विश्वविद्यालय 1998 (सं)

डा. एल. कमल सिंह	बिस्वा–प्रेम
श्री बीरेन	चफद्रबा लेइगी येन
थ. इबोपिशाक	नरक पाताल पृथिवी

(II) महाकाव्य

1.ए. दोरेन्द्र जीत सिंह	कांसा बोधा
2.एच. अंगनघल सिंह	खंबा–थोईबी शेरेंग (सन–सेनबा), लेई लंगबा, शामू खोंगी विचार)

(III) नाटक

1.एस. ललित सिंह	अरेप्पा मारुप
2.जी.सी. टोंगब्रा	मैट्रिक पास
3.ए.समरेन्द्र	जज साहेब की इमंग

(ख) उपन्यास, कहानी तथा गद्य :

I) उपयान्स

1.डा. एल. कमल सिंह:	माधबी
2.एच. अंगनघल सिंह	जहेरा
3.एच. गुणो सिंह	लामन
4.पाछा मीटेई	इम्फाल आमासुंग, मैगी इशिंग, नुंगसीतकी फिबम

II) कहानी

क) कान्बी वरिमचा (प्रकाशन) मणिपुर विश्वविद्यालय 1997 (सं.)

आर.के. शीतलजीत सिंह	कमला कमला
एम.के.बिनोदिनी	आइगी थाऊद्रबा हीट्प लालू
ख. प्रकाश–	वेनम शारेंग

ख) परिषद्की खांगतलबा वरिमचा (प्रकाशन) मणिपुरी साहित्य परिषद 1994 (सं.)

एस. नीलबिर शास्त्री	लोखात्पा
आर.के. इलंगबा	करिनुंगी

ग) अनौबा मणिपुरी वरिमचा (प्रकाशन)–दि कल्चरल फोरम मणिपुर 1992 (सं.)

एन कुंजमोहन सिंह	इजात तनबा
ई. दीनमणि	नंगथक खोंगनांग

III) गद्य

क) वारेंगी सकलोन (ड्यू पार्ट) (प्रकाशन) दि कल्चरल फोरम मणिपुर 1992 (सं.)

ख. चौबा सिंह : खंबा–थोईबिगी वारी अमासुंग महाकाव्य

कांची वारेंग (प्रकाशन)–मणिपुर विश्वविद्यालय 1998 (सं)

बी. मणिसन शास्त्री	फाजबा
च. मणिहर सिंह	लाई–हरौबा

ग) अपुनबा वारेंग (प्रकाशन)–मणिपुर विश्वविद्यालय 1986 (सं.)

च. पिशक सिंह	समाज अमासुंग संस्कृति
एम.के. बिनोदिनी	थोईबिदु वेरोहोइदा
एरिक न्यूटन	कलगी महोसा (आई.आर.बाबू द्वारा अनूदित)

घ) मणिपुरी वारेंग (प्रकाशन) दि कल्चरल फोरम मणिपुर 1999 (सं.)

एम. कृष्ण मोहन सिंह	लान

मराठी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर मराठी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाषा और लोक विधा

(क) भाषा का स्वरूप और कार्य

(मराठी के संदर्भ में)

भाषा–संकेतन प्रणाली के रूप में : लेंन्गुई और परौल, आधारभूत कार्य, काव्यात्मक भाषा, मानक भाषा तथा बोलियां, सामाजिक प्राचल के अनुसार भाषाई–परिवर्तन तेरहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी में मराठी की भाषाई विशेषताएं

(ख) मराठी की बोलियां

अहिराणी, बरहदी, डांगी

(ग) मराठी व्याकरण

शब्द–भेद (पार्ट्स आफ स्पीच), कारक व्यवस्था (केस सिस्टम), प्रयोग विचार (वाच्य)

(घ) लोक विधा के स्वरूप और प्रकार

(मराठी के विशेष संदर्भ में)

लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य

खंड 'ख'

साहित्य का इतिहास और साहित्यिक आलोचना

(क) मराठी साहित्य का इतिहास.

1. प्रारंभ से 1818 ई. तक : महानुभाव लेखक, वरकारी कवि, पंडित कवि, शाहिर्स, बाखर साहित्य के विशेष संदर्भ में.
2. 1850 ई. से 1990 तक : काव्य, कथासाहित्य (उपन्यास और कहानी) नाटक और प्रमुख साहित्य धाराओं के विशेष संदर्भ में तथा रोमांटिक, यथार्थवादी, आधुनिकतावादी, दलित, ग्रामीण और नारीवादी आंदोलनों के विकास के विशेष संदर्भ में.

(ख) साहित्यिक आलोचना

1. साहित्य का स्वरूप और कार्य.
2. साहित्य का मूल्यांकन.
3. आलोचना का स्वरूप, प्रयोजन और प्रक्रिया.
4. साहित्य, संस्कृति और समाज.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर मराठी में लिखने होंगे)

निर्धारित साहित्यिक रचनाओं का मूल पाठ विषयक अध्ययन

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसमें अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

खंड 'क'

गद्य

(1) 'स्मृति स्थल'

(2) महात्मा : जोतिबा फूले :
'शेतकारियाचा आसुद'
'सार्वजनिक सत्यधर्म'

(3) एस.वी. केतकर :
'ब्राह्मण कन्या'

(4) पी.के. अत्रे :
'शास्टांग नमस्कार'

(5) शरच्चंद मुक्ति बोध :
'जाना हे बोलातु जेथे'

(6) उद्धव शैल्के :
'शीलन'

(7) बाबू राव बागुल :
'जेव्हा मी जात चोरली होती'

(8) गौरी देशपांडे :
'एकेक पान गालाव्या'

(9) पीआई सोनकाम्बले
'आठवनीन्चे पक्षी'

खंड 'ख'

काव्य

(1) नामदेवान्ची अभंगवाणी
सम्पा–इनामदार, रेलेकर, मिराजकर, माडर्न बुक डिपो, पुणे.

(2) 'पेन्जान'
सम्पा.–एम.एन. अदवन्त
साहित्य प्रसाद केन्द्र, नागपुर

(3) दमयन्ती–स्वयंवर
द्वारा–रघुनाथ पंडित

(4) बालकविंची कविता
द्वारा–बालकवि

(5) विशाखा
द्वारा–कुसुमाग्रज

(6) मृदगंध
द्वारा–विन्दा करन्दीकर

(7) जाहिरनामा
द्वारा–नारायण सुर्वे

(8) संध्या कालचे कविता
द्वारा–ग्रेस

(9) या सत्तेत जीव रमात नाही
द्वारा–नामदेव ढसाल

नेपाली

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर नेपाली में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. नई भारतीय आर्य भाषा के रूप में नेपाली भाषा के उद्भव और विकास का इतिहास.
2. नेपाली व्याकरण और स्वनिम विज्ञान के मूल सिद्धांत :
(i) संज्ञा रूप और कोटियां–लिंग, वचन, कारक, विशेषण, सर्वनाम, अव्यय
(ii) क्रिया रूप और कोटियां : काल, पक्ष, वाच्य, धातु, प्रत्यय.
(iii) नेपाली स्वर और व्यंजन.
3. नेपाली भाषा की प्रमुख बोलियां.
4. भाषा आंदोलन (जैसे हलन्त बहिष्कार, झारोवाद आदि) के विशेष संदर्भ में नेपाली का मानकीकरण तथा आधुनिकीकरण.
5. भारत में नेपाली भाषा का शिक्षण–सामाजिक–सांस्कृतिक पक्षों के विशेष संदर्भ में इसका इतिहास और विकास.

खंड 'ख'

1. भारत में विकास के विशेष संदर्भ में नेपाली साहित्य का इतिहास.
2. साहित्य की मूल अवधारणाएं तथा सिद्धांत : काव्य/साहित्य, काव्य प्रयोजन साहित्यिक विधाएं, शब्द शक्ति, रस, अलंकार, त्रासदी, कामदी, सौंदर्यशास्त्र, शैली–विज्ञान.
3. प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियां तथा आन्दोलन–स्वच्छंतावाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, आयामिक आन्दोलन, समकालीन

नेपाली लेखन, उत्तर– आधुनिकतावाद.

4. नेपाली लोक साहित्य (केवल निम्नलिखित लोक स्वरूप)–सवाई, झाव्योरी, सेलो, संगिनी, लहारी.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर नेपाली में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य–पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जायेगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

1. सांता ज्ञान्डिल दास : **उदय लहरी**
2. लेखनाथ पोड्याल : **तरुण तापसी** (केवल III, V, VI, XII, XV, XVIII विश्राम)
3. आगम सिंह गिरि : **जालेको प्रतिबिम्ब : रोयको प्रतिध्वनि** (केवल निम्नलिखित कविताएं– प्रसावकों, चिच्याहत्संग ब्यूझेको एक रात, छोरोलई, जालेको प्रतिबिम्ब : रोयको प्रतिध्वनि, हमरो आकाशमणी, पानी हुन्छा उज्यालो, तिहार).
4. हरिभक्त कटवाल : **यो जिन्दगी खाई के जिन्दगी :** (केवल निम्नलिखित कविताएं : जीवन; एक दृष्टि; यो जिन्दगी खाई के जिन्दगी, आकाश तारा के तारा, हमिलाई निरधो नासमझा, खाई मन्याता याहां, आत्मादुतिको बलिदान को.
5. बालकृष्णसामा **प्रहलाद**
6. मनबहादुर मुखिया अंध्यारोमा बांचनेहारू (केवल निम्नलिखित एंकाकी– 'अंध्यारोमा बांचनेहारू', 'सुस्केरा').

खंड 'ख'

1. इंद्र सुन्दास : **सहारा**
2. लिलबहादुर छेत्री : **ब्रह्मपुत्र को छेऊछाऊ**
3. रूप नारायण सिन्हा : **कथा नवरत्न** (केवल निम्नलिखित कहानियां– बिटेका कुरा, जिम्मेवारी कास्को, धनमातिको सिनेमा–स्वप्न, विध्वस्त जीवन).
4. इंद्रबहादुर रॉय : **विपना कटिपया :** (केवल निम्नलिखित कहानियां रातभरी हुरि चलयो, जयमया अफुमत्र लेख–माणी अईपुग, भागी, घोष बाबू, छुट्माइयो).
5. सानू लामा : **कथा संपद :** (केवल निम्नलिखित कहानियां स्वास्नी मांछे, खानी तरमा एक दिन फुरबाले गौन छाड्या, असिनाको मांछे).
6. लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा : **लक्ष्मी निबंध संग्रह :** (केवल निम्नलिखित निबंध : श्री गणेशाय नमः, नेपाली साहित्य को इतिहासमा, सर्व श्रेष्ठ पुरुष, कल्पना, कला रा जीवन, गधा बुद्धिमान की गुरू?)
7. रामकृष्णशर्मा : **दासगो रखा :** (केवल निम्नलिखित निबंध, कवि, समाज रा साहित्य, साहित्य मा सपेक्षता, साहित्यिक रूचिको प्रौढ़ता, नेपाली साहित्य को प्रगति.)

उड़िया

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर उड़िया में लिखने होंगे)

खंड 'क'

उड़िया भाषा का इतिहास :

(i) उड़िया भाषा का उद्भव और विकास, उड़िया भाषा पर ऑस्ट्रिक, द्राविड़, फारसी–अरबी तथा अंग्रेजी का प्रभाव.

(ii) स्वनिकी तथा स्वनिम विज्ञान : स्वर, व्यंजन, उड़िया ध्वनियों में परिवर्तन के सिद्धांत.

(iii) रूप विज्ञान : रूपिम (निर्बाध, परिबद्ध, समास और सम्मिश्र), व्युत्पत्ति परक तथा विभक्ति प्रधान प्रत्यय, कारक विभक्ति, क्रिया संयोजन.

(iv) वाक्य रचना : वाक्यों के प्रकार और उनका रूपान्तरण, वाक्यों की संरचना.

(v) शब्दार्थ विज्ञान : शब्दार्थ, शिष्टोक्ति में परिवर्तन के विभिन्न प्रकार.

(vi) वर्तनी, व्याकरणिक प्रयोग तथा वाक्यों की संरचना में सामान्य अशुद्धियां.

(vii) उड़िया भाषा में क्षेत्रीय भिन्नताएं (पश्चिमी, दक्षिणी और उत्तरी उड़िया) तथा बोलियां (भात्री और देसिया).

खंड 'ख'

उड़िया साहित्य का इतिहास :

(i) विभिन्न कालों में उड़िया साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक).

(ii) प्राचीन महाकाव्य, अलंकृत काव्य तथा पदावलियां.

(iii) उड़िया साहित्य का विशिष्ट संरचनात्मक स्वरूप (कोइली, चौतिसा, पोई, चौपदी, चम्पू)

(iv) काट्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध तथा साहित्यिक समालोचना की आधुनिक प्रवृत्तियां.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर उड़िया में लिखने होंगे)

पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन :

इस प्रश्न–पत्र में मूल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा तथा अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा ली जाएगी.

खंड 'क'

काव्य

(प्राचीन)

1. सरला दास : शांति पर्व–महाभारत से
2. जगनाथ दास : भागवत, ग्याहरवां स्कंध जादू अवधूत संबाद

(मध्यकालीन)

3. दीनाकृष्ण दास : राख कल्लोल : (16 तथा 34 छंद)
4. उपेन्द्र भांजा : लावण्यवती–(1 तथा 2 छंद)

(आधुनिक)

5. राधानाथ राय : चंद्रभागा
6. मायाघर मानसिंह : जीवन–चिता
7. सचिदानंद राउतराय : कविता–1962
8. रमाकांत रथ : सप्तम ऋतु

खंड 'ख'

नाटक :

9. मनोरंजन दास : काठ घोड़ा
10. विजय मिश्रा : ताता निरंजन

उपन्यास

11. फकीर मोहन सेनापति : छमना अथगुन्थ
12. गोनीनाथ मोहन्ती : दानापानी

कहानी

13. सुरेन्द्र मोहन्ती : मरलारा मृत्यु
14. मनोज दास : लक्ष्मीश अभिसार

निबंध

15. चित्तरंजन दास : तरंग–ओ–ताद्धित (प्रथम पांच निबंध)
16. चंद्र शेखर रथ : मन सत्यधर्म काहूछी (प्रथम पांच निबंध)

पाली

प्रश्नपत्र–1

पाली भाषा

कृपया ध्यान दें. : सभी प्रश्नों के उत्तर पाली भाषा में देवनागरी अथवा रोमन लिपि में लिखने होंगे.

खंड 'क'

1. पाली का उद्भव और उद्गम–स्थल तथा इसकी विशेषताएं.
2. पाली व्याकरण – (i) पाली व्याकरण की पारिभाषिक शब्दावली अक्खर, सर, व्यंजन, निग्गहित, नाम, सब्बनाम, आख्यात, उपसग्ग, निपात, अव्यय. (ii) कारक, (iii) समास, (iv) संधि (v) तद्धित (अपच्च बोधक और अधिकारबोधक–पच्चय). (vi) निम्नलिखित शब्दों के व्युतपत्तिमूल : बुद्धों, भिक्खु, सामनेरो सत्पा, घम्मों, लताय, पुरिसानम् तुम्हे, अम्हेमी, मुनिना, रक्षीसु फलाय, अट्ठीस, रन्नम्, संधो.
3. पाली से अंग्रेजी में दो अनदेखे उद्धरणों का अनुवाद.

खंड 'ख'

4. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 300 शब्दों का निबन्ध

(क) भगवाबुद्धो
(ख) तिलक्खणम्
(ग) अरियो अठंगिको मग्गो
(घ) चक्षारि अरियसच्चानि
(ङ) कम्मवादो
(च) पतिच्चसमुप्पादो
(छ) निब्बानम् परमम् सुखम्
(ज) तिपिटकम्
(झ) धम्मपदम्
(ञ) मज्झिमा – पतिपदा

5. पाली उद्दरणों का सार.
6. पाली काव्य की पाली भाषा में व्याख्या
7. निम्नलिखित अबिकारी (अव्यय एवं निपात) का अर्थ और अभ्यर्थी द्वारा पाली वाक्यों में उनका प्रयोग.

(1) अथ, (2) अन्तरा, (3) अद्घा, (4) कदा, (5) कित्तावता, (6) अहीरक्षम, (7) दिवा, (8) यथा, (9) चे, (10) सेय्याभीद्म (11) बिना, (12) कुदाचनम् (13) सद्धिम्, (14) अंतरेन, (15) खो, (16) मा, (17) एवम्, (18) एत्थ, (19) किर, (20) पन.

प्रश्नपत्र–2

पाली साहित्य

इसमें दो प्रश्न अनिवार्य होंगे जिनके उत्तर पाली भाषा में देवनागरी अथवा रोमन लिपि में लिखने होंगे. शेष प्रश्नों के उत्तर या तो पाली अथवा उम्मीदवार द्वारा चुने हुए परीक्षा माध्यम में लिखने होंगे.

खंड 'क'

(i) पाली स्त्रोतों से बुद्ध का जीवन वृत्त और उपदेश.

(ii) निम्नलिखित पुस्तकों और लेखकों के संदर्भ में पाली साहित्य का इतिहास–प्रामाणिक और अप्रामाणिक :

महावग्ग, चुल्लवग्ग, पातिमोक्ख, दीघ–निकाय, घम्मपद, जातक, थेरगाथा, थेरीगाथा, दीपवंश, महावंश, दठवंश, शासनवंश, मिलिन्दपण्ह, पेटकोपडेस, नेट्टिप्पकरण, बुददत्त, बुद्धघोस और धम्मपाल.

खंड 'ख'

1. निम्नलिखित निर्धारित पाठों में से मूल पाठ विषयक प्रश्न, आलोचनात्मक टिप्पणियां तथा सटिप्पण अनुवाद संबंधी प्रश्न पूछे जाएंगे.

(i) दीघ – निकाय (केवल सामन्नफल – सुत्त)
(ii) सुत्त–निपात (केवल खग्ग विसणि–सुत्त और घनिय – सुत्त)
(iii) धम्मपद (केवल पहले पांच वग्ग)
(iv) मिलिंदपण्ह (केवल लखण–पण्ह)
(v) महावंश (केवल ततीय संगीति)
(vi) अभिधम्पत्थ – संघ (पहला, दूसरा और छठा पाठ)
(vii) पाली छंदविधान – बुत्तोदय – अनुट्ठुम, इंदवजिरा, उपेन्दवजिरा, बसंत तिलका, मालिनी, सिखरिणी, उपजति, तोटक, दोधक, वंसटठ.
(viii) पाली अलंकार विधान (सुबोधालंकार – यमक, अनप्पास) रूपक, उपमा, अतिसयुत्ति, व्यतिरेक, निदस्सना, अत्थंतरन्यास, दीपक, दिट्ठंत.

2. निर्धारित पाठों में से बौद्ध दर्शन पर संक्षिप्त टिप्पणियां.
3. निर्धारित पाठों में से पाली काव्य की व्याख्या.

फारसी

प्रश्नपत्र–1

इसमें दो प्रश्नों का उत्तर फारसी में देना होगा. शेष प्रश्नों के उत्तर या तो फारसी में अथवा उम्मीदवार द्वारा परीक्षा के लिए चुने गए भाषा माध्यम में दिये जाने चाहिए.

खंड 'क'

(1) (क) फारसी भाषा के उद्भव और विकास का वर्णन.
(इसका उत्तर फारसी में देना होगा).
(ख) अनुप्रयुक्त व्याकरण, अलंकार, छंदशास्त्र, प्रायः प्रयुक्त होने वाले मुहावरे और लोकोक्तियां.

(i) व्याकरण : इस्म और उसके प्रकार, जमीर–ए–मुत्तासिल और मुनकासिल, मुराकाबी–तौशसिफी, मुराक्ब–ए–इज़ाफी, इस्मी–इशारा, मुशारून ईलाइह, फेल और इसके प्रकार, काल, गरदान, एकबचन और बहुबचन, जुम्ले और उनके प्रकार.

(ii) अलंकार विधान : तजनीस, इशतिकाक, लुजुम–मा–ला–याालजुम, सयाक तुल आदाद, कल्ब, तारसी, इस्तिआरा, मारातुन नाज़ीर, लफ–ओ नश्र, इहाम, हुस्न–ए–तालील, ताजाहुली–आरेफानेह, तलमीह, तनसीक्स सिफ्त.

(iii) छंदविधान : बाहरी –मुज़ारा, रामल, मुताक़ारीब, तावील, हजाज, कामिल.

खंड 'ख'

1. फारसी में संक्षिप्त निबंध – 250 शब्दों में (इसका उत्तर फारसी में देना होगा)

2. ईरान और भारत में फारसी साहित्य का इतिहास : साहित्यिक आलोचना और शैली : क्लासिकी और आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां : सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव, नाटक, उपन्यास, कहानी सहित आधुनिक साहित्यिक विधाओं का विकास.

प्रश्नपत्र–2

दो अनिवार्य प्रश्न होंगे –जो गद्य और पद्य के मूल पाठों से एक–एक होंगे जिनके उत्तर फारसी में देने होंगे. शेष प्रश्नों के उत्तर या तो फारसी में देने होंगे अथवा उम्मीदवार द्वारा परीक्षा के लिए चुने गए भाषा माध्यम में देने होंगे.

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्यक्रमों का अध्ययन अपेक्षित होगा और इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

गद्य

1. निजामी आरूजी समर कंदी : चहार मक़ाला :
   (i) दाबीरी
   (ii) शायरी
2. क़ाबुस/बी, वश्मगीर : काबुसनामा :
   (i) दार शिनाख्त–ए–हक़–ए–पीदार–वा–मादर
   (ii) दार विशी जुस्तान अज़ सुखानदानी
   (iii) दार तालिब इल्मी वा फक़ीह वा फुकाहा
3. शादी शीराज़ी : गुलिस्तां
   (i) दार ताशीर –ए–सुहबत
4. मो.अवफी : जावामियुल हिकायत :
   (i) पहली दस हिदायतें
5. ज़ियाउद्दीन बर्नी : तारीख–ए–फिरोज़शाही
   (i) वासावा–ए–सुल्तान बलबन वे फरजंद–ए–बुजुर्ग
6. अबुल फज़ल : आईन–ए–अकबरी
   (i) आईन–ख़ज़ीना–ए–आबादी

(ii) आईन–ए–शबिस्तान–ए–इक़बाल
(iii) आईन–ए–मंजिल दार युरीशहा
(iv) आईन–ए–चिराग आफरोज़ी

7. सादिक–ए–हिदायत :
(i) दश अकुल
(ii) गिरदाब

8. मो. हिजाज़ी
(i) खुदकुशी
(ii) पेज़ेश्क–ए–चश्म

खंड 'ख'

काव्य

1. फिरदौसी : शाहनामा
(i) रूस्तम–ओ–सोहराब
2. खय्याम : स्बाइयां
(रदीफ़ अलीफ़ और बे)
3. शादी शिराजी : बुस्तन :
दार अदल–ओ–तदबीर–ओ–राई
4. अमीर खुसरो : मजमुआ–ए–दीवान–ए–खुसरो (रदीफ दाल)
5. मौलाना रूम : मथनवी मनावी (दफ्तर दुव्वम का प्रथम भाग)
6. हाफ़िज़ (रदीफ़ अलीफ़ और दाल)
7. उर्फी शिराज़ी : कासांयद
(i) इक़बाल–ए–करम मिगाज़द अरबाबी–हिमामरा.
(ii) हर सुख्ता जाने कि बा कश्मीर दार आबद.
(iii) शबाह–ए–ईद के दार तकया गाह–ए–नाज़–ओ नईम.
8. गालिब : गज़लियात (रदीफ अलीफ)
9. बहार मशहदी :
(i) जुगहद–ए–जंग
(ii) शुकुत–ए–शाब
(iii) दमावानदिये
(iv) दुखतर–ए–बसरा
10. फुरूग़–ए–फारूर्ख़ज़ाद
(i) दार बराबर–ए–खुदा
(ii) दिव–ए–शाब
11. निमायुशिज़
(i) क्यू
(ii) ख़ार–कन

टिप्पणी : गद्य और पद्य के पाठों की व्याख्या फ़ारसी में करना अनिवार्य है.

पंजाबी

प्रश्नपत्र–I

(उत्तर पंजाबी में गुरुमुखी लिपि में लिखने होंगे)

भाग 'क'

(क) पंजाबी भाषा का उद्भव : विकास के विभिन्न चरण और पंजाबी भाषा में नूतन विकास : पंजाबी स्वर विज्ञान की विशेषताएं तथा इसकी तानों का अध्ययन : स्वर एवं व्यंजन का वर्गीकरण.

(ख) पंजाबी रूप विज्ञान : वचन–लिंग प्रणाली (सजीव एवं असजीव) उपसर्ग, प्रत्यय एवं परसर्गों की विभिन्न कोटियां. पंजाबी शब्द–रचना : **तत्सम, तद्भव रूप :** वाक्य विन्यास, पंजाबी में कर्ता एवं कर्म का अभिप्राय; संज्ञा एवं क्रिया पदबंध.

(ग) भाषा एवं बोली : बोली एवं व्यक्ति बोली का अभिप्राय : पंजाबी की प्रमुख बोलियां : पोथोहारी, माझी, दोआबी, मालवी, पुआधि : सामाजिक स्तरीकरण के आधार पर वाक् परिवर्तन की विधिमान्यता, तानों के विशेष संदर्भ में विभिन्न बोलियों के विशिष्ट लक्षण. भाषा एवं लिपि : गुरमुखी का उद्भव और विकास : पंजाबी के लिए गुरमुखी की उपयुक्तता.

(घ) शास्त्रीय पृष्ठभूमि : नाथ जोगी सहित. मध्यकालीन साहित्य : गुरमत, सूफी, किस्सा एवं वार, जनमसाखियां

भाग 'ख'

(क) आधुनिक प्रवृत्तियां : रहस्यवादी, स्वच्छंतदावादी, प्रगतिवादी एवं नव–रहस्यवादी (वीर सिंह, पूरण सिंह, मोहन सिंह, अमृता प्रीतम, बाबा बलवन्त, प्रीतम सिंह, सफ़ीर, जे. एस. नेकी).
प्रयोगवादी (जसवीर सिंह अहलूवालिया, रविन्दर रवि, अजायब कमाल).
सौंदर्यवादी (हरभजन सिंह, तारा सिंह).
नव–प्रगतिवादी (पाश, जगतार, पातर).

(ख) लोक साहित्य : लोक गीत, लोक कथाएं, पहेलियां, कहावतें.
महाकाव्य साहित्य : (वीर सिंह, अवतार सिंह आजाद, मोहन सिंह).
गीतिकाव्य : (गुरु, सूफी और आधुनिक गीतिकार–मोहन सिंह, अमृता प्रीतम, शिवकुमार, हरभजन सिंह).

(ग) नाटक : (आई.सी. नंदा, हरचरण सिंह, बलवंत गार्गी, एस. एस. सेखों, चरण दास सिद्धू).
उपन्यास : (वीर सिंह, नानक सिंह, जसवंत सिंह कंवल, करतार सिंह दुग्गल, सुखबीर, गुरदयाल सिंह, दलीप कौर टिवाणा, स्वर्ण चंदन).
कहानी : (सुजान सिंह, के.एस. विर्क, प्रेम प्रकाश, वरयाम सन्धू).

(घ) सामाजिक–सांस्कृतिक और साहित्य प्रभाव : संस्कृत, फारसी और पश्चिमी.
निबंध : (पूरण सिंह, तेजा सिंह, गुरबख्श सिंह).
साहित्य आलोचना : (एस.एस. शेखों, अतर सिंह, किशन सिंह, हरभजन सिंह, नजम हुसैन सैयद).

प्रश्नप्रत्र–2

(उत्तर पंजाबी में गुरुमुखी लिपि में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

भाग–क

(क) शेख फरीद : **आदि ग्रंथ** में सम्मिलित संपूर्ण वाणी.
(ख) गुरु नानक : जप जी, वारामाह, आसा दी वार.
(ग) बुल्ले शाह : **काफ़ियां.**
(घ) वारिस शाह : हीर

भाग–ख

(क) शाह मोहम्मद : जंगनामा (जंग सिंघान ते फिरंगियान)
धनी राम चात्रिक (कवि) : चंदन वारी, सूफी ख़ाना नवांजहां
(ख) नानक सिंह (उपन्यासकार) : चिट्टा लहू, पवित्तर पापी, एक मयान दो तलवारां
(ग) गुरूबख्श सिंह (निबंधकार) : जिन्दगी दी रास, नवां शिवाला, मेरियां अभूल यादां
बलराज साहनी (यात्रा–विवरण) : मेरा रूसी सफरनामा, मेरा पाकिस्तानी सफरनामा
(घ) बलवंत गार्गी (नाटककार) : लोहा कुट्ट, धूनी दी अग्ग, सुल्तान रजिया
संत सिंह सेखों (आलोचक) : साहित्यार्थ, प्रसिद्ध पंजाबी कवि पंजाबी काब शिरोमणि

रूसी

प्रश्नपत्र–1

(रूसी से अंग्रेजी अनुवाद के प्रश्न को छोड़कर, उत्तर रूसी में लिखने होंगे)

भाषा तथा संस्कृति

खंड 'क'

I. आधुनिक रूषी भाषा :
ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, कोश विज्ञान, कोश रचना और अर्थ विज्ञान, भाषा विज्ञान.

II. रूसी से अंग्रेजी में तथा अंग्रेजी से रूसी भाषा में अनुवाद.

खंड 'ख'

I. रूसी संघ का सामाजिक–राजनैतिक तथा आर्थिक विकास :
सन् 1812 का देशभक्तिपूर्ण युद्ध, अक्तूबर क्रांति, पेरेसत्रोइका और ग्लेसनोस्त्स, यू.एस.एस.आर. का विघटन, रूसी संघ की क्षेत्रीय और सांस्कृतिक भिन्नताएं.

II. सामान्य विषयों पर निबन्ध.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर रूसी में लिखने होंगे)

(साहित्य)

खंड 'क'

साहित्यिक इतिहास तथा साहित्यिक आलोचना : साहित्यिक आन्दोलन, भावुकतावाद, रोमांसवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद, आलोचनात्मक, यथार्थवाद, समाजवाद, पराकाष्ठावाद, प्रतीकवाद, भविष्यवाद, साहित्यिक विधाओं का उद्भव और विकास, लोक साहित्य, गीत और कविताएं–ए.एस.पुश्किन, एम.यू. लरमोन्तोव, अलेक्जेंडर व्लाक, इज़ेनिन, वी मायकोवस्की, अन्ना अख्मातोवा. महागाथा–एल.एन. टालस्टाय, एम. शोलोखोव. कहानी, उपन्यासिका, उपन्यास–पुश्किन, लरमोन्तोव, एन.वी. गोगोल, एस. श्चेन्द्रिन, आई. गोन्चारोव, आई. तर्जीनेव, एफ.एम. दोस्तोवस्की, एल.एन. टालस्टाय, ए.पी. चेखोव, एम. गोर्की, एम. शोलोखोव, आई. बुनिन, ई. जेमियातिन, बोरिस पास्तेरनकक, ए.सोल्झेनित्सीन, एम.बुल्गाकोव, चिंगीज़ आमूत्मातोव, वलेन्तीन रस्यूतीन, वी.शुक्शिन. आलोचना–बेलिन्स्की, दोब्रोल्यूबोव, चेर्नीशेव्स्की, पिसारेव.

नाटक–चेखोव, गोगोल. सामाजिक–राजनैतिक आन्दोलनों का साहित्य पर प्रभाव.

खंड 'ख'

इस खंड में निर्धारित मूल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

1.	ए.एस. पुश्किन	इन्जीनि ओनिज़िन
2.	एम.यू. लरमोन्तोव	हीरो आफ पावर टाइम्स
3.	एन. वी. गोगोल	रेविज़ोर
4.	आई. एस. तर्जिनेव	फादर्स एंड संस
5.	एफ. एम. दोस्तोव्स्की	क्राइम एंड पनिशमेंट
6.	एल. एन. टालस्टाय	1. वार एंड पीस 2. रेज़रेक्शन
7.	ए.पी. चेखोव	1. तोस्का 2. स्मर्ट चिनोवन्निका 3. कमीलियन
8.	ए.एम. गोर्की	मदर
9.	ए. ब्लॉक	दि ट्वेल्व
10.	बी.बी. क्लाउड–इन पैंट्स	मायकोव्स्की 1. 2. गुड
11.	एम. शोलोखोव	फेट आफ ए मैन
12.	बी. पास्तेरनाक	डाक्टर ज़िवागो
13.	सोल्झे नित्सीन	वन डे इन दि लाइफ ऑफ ईवान दानिसोविच
14.	वी. रस्पूतीन	झ़िवी आई पोम्नी
15.	चिंगीज़ आइत्मातोव	बैली पोरोखोद
16.	वी. शुक्शिन	शुदिक

संस्कृत

प्रश्नपत्र–1

तीन प्रश्नों जैसा कि प्रश्नपत्र में निर्देशित होगा के उत्तर संस्कृत में दिया जाना चाहिए. शेष प्रश्नों के उत्तर या तो संस्कृत में अथवा उम्मीदवार द्वारा परीक्षा के लिए चुने गये भाषा माध्यम में दिये जाने चाहिए.

खंड 'क'

1. संज्ञा, संधि, कारक, समास, कर्तरि और कर्मणी वाच्य (वाच्य प्रयोग) पर विशेष बल देते हुए व्याकरण की प्रमुख विशेषताएं. (इसका उत्तर संस्कृत में देना होगा)
2. (क) वैदिक संस्कृत भाषा की मुख्य विशेषताएं.
(ख) शास्त्रीय संस्कृत भाषा के प्रमुख लक्षण.
(ग) भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में संस्कृत का योगदान.
3. सामान्य ज्ञान :
(क) संस्कृत का साहित्यिक इतिहास.
(ख) साहित्यिक आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियां.
(ग) रामायण
(घ) महाभारत
(ङ) साहित्य विधाओं का उद्भव और विकास.
महाकाव्य
रूपक (नाटक)
कथा
आख्यायिका
चम्पू
खंड काव्य
मुक्तक काव्य

खंड 'ख'

4. भारतीय संस्कृति का सार, निम्नलिखित पर बल देते हुए :
(क) पुरूषार्थ
(ख) संस्कार
(ग) वर्णाश्रम व्यवस्था
(घ) कला और ललित कला
(ङ) तकनीकी विज्ञान
5. भारतीय दर्शन की प्रवृत्तियां
(क) मीमांसा
(ख) वेदांत
(ग) न्याय
(घ) वैशेषिक
(ङ) सांख्य
(च) योग
(छ) बुद्ध
(ज) जैन
(झ) चार्वाक
6. संस्कृत में संक्षिप्त निबंध.
7. अनदेखा पाठांश और प्रश्न; इसका उत्तर संस्कृत में देना होगा.

प्रश्नपत्र–2

वर्ग 4 से प्रश्न का उत्तर केवल संस्कृत में देना होगा. वर्ग 1, 2 और 3 के प्रश्नों के उत्तर या तो संस्कृत में अथवा उम्मीदवार द्वारा चुने गये भाषा माध्यम में देने होंगे

खंड 'क'

निम्नलिखित समुच्चयों का सामान्य अध्ययन :–

वर्ग–1
(क) रघुवंशम्–कालिदास
(ख) कुमारसंभवम्–कालिदास
(ग) किरातार्जुनीयम्–भारवि
(घ) शिशुपालवधम्–माघ
(ङ) नैषध चरितम्–श्रीहर्ष
(च) कादम्बरी–बाणभट्ट
(छ) दशकुमार चरितम्–दंडी
(ज) शिवराज्योद्यम्–एस.बी. वारनेकर

वर्ग–2
(क) ईशावास्योपनिषद
(ख) भगवद्गीता
(ग) वाल्मीकि रामायण का सुंदरकांड
(घ) कौटिल्य का अर्थशास्त्र

वर्ग–3
(क) स्वप्नवासवदत्तम्–भास
(ख) अभिज्ञान शाकुन्तलम्–कालिदास
(ग) मृच्छकटिकम्–शूद्रक
(घ) मुद्राराक्षसम्–विशाखदत्त
(ङ) उत्तररामचरितम्–भवभूति
(च) रत्नावली–श्रीहर्षवर्धन
(छ) वेणीसंहारम्–भट्टनारायण

वर्ग–4

निम्नलिखित पर संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पणियां :

(क) मेघदूतम्–कालिदास
(ख) नीतिशतकम्–भर्तृहरि
(ग) पंचतंत्र
(घ) राजतरंगिणी–कल्हण
(ङ) हर्षचरितम्–बाणभट्ट
(च) अमरूकशतकम्–अमरूक
(छ) गीतगोविंद्म–जयदेव

खंड 'ख'

इस खंड में निम्नलिखित पाठ्य पुस्तकों का पढ़ना अपेक्षित होगा.

वर्ग 1 और 2 से प्रश्नों के उत्तर केवल संस्कृत में देने होंगे. वर्ग 3 एवं 4 के प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में अथवा उम्मीदवार द्वारा चुने गये भाषा माध्यम में देने होंगे.

वर्ग–1

(क) रघुवंशम्–सर्ग 1, श्लोक 1 से 10
(ख) कुमारसंभवम्–सर्ग 1, श्लोक 1 से 10
(ग) किरातार्जुनीयम्–सर्ग 1, श्लोक 1 से 10

वर्ग–2

(क) ईशावास्योपनिषद्–श्लोक 1,2,4,6,7,15 और 18
(ख) भगवत्गीता अध्याय–II–श्लोक 13 से 25
(ग) वाल्मीकि का सुंदरकांड सर्ग 15, श्लोक 15 से 30
(गीता प्रेस संस्करण)

(वर्ग 1 और 2 से प्रश्नों के उत्तर केवल संस्कृत में देने होंगे)

वर्ग–3

(क) मेघदूतम्–श्लोक 1 से 10
(ख) नीतिशतकम्–श्लोक 1 से 10
(डी.डी. कौसाम्बी द्वारा सम्पादित, भारतीय विद्या भवन प्रकाशन)
(ग) कादम्बरी–शुकनासोपदेश (केवल)

वर्ग–4

(क) स्वपनवासवदतम्–अंक VI
(ख) अभिज्ञानशकुन्तलम–अंक IV श्लोक 15 से 30
(एम. आर. काले संस्करण)
(ग) उत्तररामचरितम्–अंक 1, श्लोक 31 से 47
(एम. आर. काले संस्करण)

संताली

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर संताली में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाग–1. संताली भाषा का इतिहास

1. प्रमुख आस्ट्रिक भाषा परिवार, आस्ट्रिक भाषाओं का संख्या तथा क्षेत्र विस्तार.
2. संताली का व्याकरणिक संरचना.
3. संताली भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएं. ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, अनुवाद विज्ञान तथा कोश विज्ञान.
4. संताली भाषा पर अन्य भाषाओं का प्रभाव.
5. संताली भाषा का मानकीकरण.

भाग–2. संताली साहित्य का इतिहास

1. संताली साहित्य के इतिहास के निम्नलिखित चार कालों की साहित्यिक प्रवृत्तियां

(क) आदिकाल सन् 1854 ई. के पूर्व का साहित्य.
(ख) मिशनरी काल सन् 1855 से सन् 1889 ई. तक का साहित्य.
(ग) मध्य काल सन् 1890 से सन् 1946 ई. तक का साहित्य.
(घ) आधुनिक काल सन 1947 ई. से अब तक का साहित्य.

2. संताली साहित्य के इतिहास में लेखन की परम्परा.

खण्ड 'ख'

साहित्यिक स्वरूप : निम्नलिखित साहित्यिक स्वरूपों की प्रमुख विशेषताएं, इतिहास और विकास

भाग–I. संताली में लोक साहित्य : गीत, कथा, गाथा, लोकोक्तियां, मुहावरे, पहेलियां एवं कुदुम.

भाग–II. संताली में शिष्ट साहित्य

1. पद्य साहित्य का विकास एवं प्रमुख कवि
2. गद्य साहित्य का विकास एवं प्रमुख लेखक.
   क. उपन्यास एवं प्रमुख उपन्यासकार.
   ख. कहानी एवं प्रमुख कहानीकार.
   ग. नाटक एवं प्रमुख नाटककार.
   घ. आलोचना एवं प्रमुख आलोचक.
   ङ ललित निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृतांत आदि प्रमुख लेखक.

संताली साहित्यकार :

श्याम सुन्दर हेम्ब्रम, पं. रघुनाथ मुरमू, बाड़हा बसेरा, साधु रामचांद मुरमू, नारायण सोरेन 'तोड़ेसुताम', सारदा प्रसाद किस्कु, रघुनाथ टुडू, कालीपद सोरेन, साकला सोरेन, दिगम्बर हाँसदा, आदित्य मित्र, 'संताली', बाबुलाल मुरमू, 'आदिवासी' यदुमनी बेसरा, अर्जुन हेम्ब्रम, कृष्ण चंद टुडू, रूप चाँद हाँसदा, कलन्द्र नाथ माण्डी, महादेव हाँसदा, गौर चन्द्र मुरमू, ठाकुर प्रसाद मुरमू, हर प्रसाद मुरमू, उदय नाथ माझी, परिमल हेम्ब्रम, धीरेन्द्र नाथ बास्के, श्याम चरण हेम्ब्रम, दमयन्ती बेसरा, टी.के. रापाज, बोयहा विद्यनाथ टुडू.

भाग–III. संताल की सांस्कृतिक विरासत :

रीति रिवाज, पर्व त्योहार एवं संस्कार (जन्म, विवाह एवं मुत्यु)

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर संताली में लिखने होंगे)

खण्ड 'क'

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य–पुस्तकों का मूल अध्ययन आवश्यक है. परीक्षा में उम्मीदवार की आलोचनात्मक क्षमता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

भाग–1. प्राचीन साहित्य

गद्य :

(1) खेरवाल बोंसा धोरोम पुथी–माझी रामदास टुडू "रसिका".
(2) मारे हापडामको रेयाक काथा – एल.ओ. स्क्रेप्सरूड.
(3) जोमसिम बिन्ती लिटा – मंगेल चन्द तुडकलुमाड. सोरेन.
(4) मराड़ बुरू बिनती–कानाईलाल टुडू.

पद्य :

(1) काराम सेरेंग – नुनकू सोरेन.
(2) देवी दासांय सेरेंग–मानिन्द हांसदा
(3) होड सेरेंग–डब्ल्यू जी. आर्चर
(4) बाहा सेरेंग–बलरामळटुडू.
(5) दोंग सेरेंग–पद्मश्री भागवत मुरमू ठाकुर
(6) होर सेरेंग–रघुनाथ मुरगू.
(7) सोरोंस सेरेंग – बाबुलाल मुरमू 'आदिवासी'
(8) मोडे सिन मोडे निदा – रूप चांद हांसदा
(9) जूडासी माडवा लातार – तेज नारायण मुरमू.

खण्ड 'ख'

आधुनिक साहित्य

भाग–1. कविता

(1) ओनोडहें बाहा डालवाक् – पाउल जुझार सोरेन.
(2) आसाड बिनती – नारायण सोरेन 'तोड़े सुताम'.
(3) चांद माला – गोरा चांद टुडू
(4) अनतो बाहा माला –आदित्य मित्र 'संताली'.
(5) तिरयी तेताड़ – हरिहर हांसदा.
(6) सिसिरजोन राड़ – ठाकुर प्रसाद मुरमू.

भाग–2. उपन्यास

(1) हाडमावाक् आतो – आर कार्सटियार्स (अनुवादक – आर.आर. किस्कू रापाज).
(2) मानू माती – चन्द्र मोहन हांसदा.
(3) आतृ ओड़ाक – डोमन हांसदाक.
(4) ओजोय गाडा ढिप रे – नाथनियल मुरमू.

भाग–3. कहानी

(1) जियोन गाडा – रूपचांद हांसदा एवं यदुमनी बेसरा.
(2) माया जाल – डोमन साहू, 'समीर' एवं पद्मश्री भागवत मुर्मू 'ठाकुर.

भाग–4. नाटक

(1) खेरवाड़ बिर – पं. रघुनाथ मुरमू.
(2) जुरी खातिर – डा. कृष्ण चन्द्र टुडू.
(3) बिरसा बिर – रबिलाल टुडू.

भाग–5. जीवनी साहित्य

(1) संताल को रेन मायाड. गोहाको – डा. विश्वनाथ हांसदा.

सिन्धी

प्रश्नपत्र–1

उत्तर सिंधी (अरबी अथवा देवनागरी लिपि में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. (क) सिन्धी भाषा का उद्भव और विकास–विभिन्न विद्वानों के मत.
   (ख) स्वर विज्ञान, आकृति विज्ञान एवं वाक्य विन्यास के साथ सिन्धी भाषा के संबंध सहित सिन्धी की महत्वपूर्ण भाषा वैज्ञानिक विशेषताएं.
   (ग) सिन्धी भाषा की प्रमुख बोलियां.
   (घ) विभाजन के पहले और विभाजन के बाद की अवधियों में सिन्धी शब्दावली और उनके विकास कउे बाद अन्य भाषाओं और सामाजिक स्थितियों के प्रभाव के चलते भारत में सिन्धी भाषा की संरचना में परिवर्तन.

खंड 'ख'

2. विभिन्न युगों के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में सिन्धी–साहित्य :
   (क) लोक साहित्य समेत सन् 1350 ई. तक का प्रारंभिक मध्यकालीन साहित्य.
   (ख) सन् 1350 ई. से 1850 ई. तक का परवर्ती मध्यकालीन साहित्य.
   (ग) सन् 1850 ई. से 1947 ई. तक का पुनर्जागरण काल.
   (घ) आधुनिक काल सन् 1947 ई. से आगे.

(आधुनिक सिन्धी साहित्य की साहित्यिक विधाएं और कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, साहित्यिक आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण और यात्रा विवरणों में प्रयोग)

प्रश्नपत्र–2

उत्तर सिंधी (अरबी अथवा देवनागरी लिपि में लिखने होंगे)

इस प्रश्न में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

इस खंड में पाठ्य पुस्तकों की सप्रसंग व्याखाएं और आलोचनात्मक विश्लेषण होंगे.

I. काव्य

(क) "शाह जो चूण्ड शायर", संपादक : एच.आई. सदरानप्रणी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित (प्रथम सौ पृष्ठ).
(ख) "साचल जो चूण्ड कलाम" संपादक : कल्याण बी. अडवाणी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित (सिर्फ कापिस).
(ग) "सामी–ए–जा चंद श्लोक" संपादक : बी. एच. नागराणी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित (प्रथम सौ पृष्ठ).
(घ) "शायर–ए–बेवास"; किशिनचंद बेवास (सिर्फ सामुन्डी सिपुन भाग).
(ङ) "रौशन छंवरो"; नारायण श्याम.
(च) "विरहंगे खानपोई जी सिन्धी शायर जी चूण्ड"; संपादन : एच.आई. सदरानगणी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित.

II. नाटक

(क) "बेहतरीन सिन्धी नाटक" (एकांकी) एम. ख्याल द्वारा संपादित; गुजरात सिन्धी अकादमी द्वारा प्रकाशित.
"काको कालूमल" (पूर्णावधि नाटक) : मदन जुमाणी.

खंड 'ख'

इस खंड में पाठ्य पुस्तकों की सप्रसंग व्याखाएं और आलोचनात्मक विश्लेषण होंगे.

(क) पाखीअरा वालार खान विछड़या (उपन्यास) गोविन्द माल्ही.
(ख) सत् दीन्हण (उपन्यास) : कृशिन सतवाणी.
(ग) चूण्ड सिन्धी कहानियां (कहानियां) भाग–III; संपादक : प्रेम प्रकाश; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित.
(घ) "बंधन" (कहानियां) सुन्दरी उत्तमचंदानी.
(ङ) "बेहतरीन सिन्धी मजमून" (निबन्ध); संपादक : हीरो ठाकुर, गुजरात सिन्धी अकादमी द्वारा प्रकाशित.
(च) "सिन्धी तनक़ीद" (आलोचना); संपादक : वासवानी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित.
(छ) "मुमहीनजी हयाती–ए–जा–सोना रूपा वर्का" (आत्मकथा); पोपाटी हीरानंदानी.
(ज) "डा. चोइथ्रम गिडवानी" (जीवनी) : विष्णु शर्मा.

तमिल

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर तमिल में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाग–1 : तमिल भाषा का इतिहास :

प्रमुख भारतीय भाषा परिवार–भारतीय भाषाओं में, विशेषकर द्रविड परिवार में तमिल का स्थान–द्रविड भाषाओं की संख्या तथा क्षेत्र विस्तार.

संगम साहित्य की भाषा–मध्यकालीन तमिल : पल्लव युग की भाषा के संदर्भ –संज्ञा, क्रिया, विशेषण तथा क्रिया विशेषण का ऐतिहासिक अध्ययन–तमिल में काल सूचक प्रत्यय तथा कारक चिह्न.

तमिल भाषा में अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण–क्षेत्रीय तथा सामाजिक बोलियां–तमिल में लेखन की भाषा और बोलचाल की भाषा में अंतर.

भाग–2 : तमिल साहित्य का इतिहास :

तोलकाप्पियम–संगम साहित्य–अकम और पुरम की काव्य विधाएं–

संगम साहित्य की पंथनिरपेक्ष विशेषताएं–नीतिपरक साहित्य का विकास : सिलप्पदिकारम और मणिमेखल.

भाग–3 : भक्ति साहित्य : (आलवार और नायनमार)–आलकारों के साहित्य में सखी भाव (ब्राइडल मिस्टिसिज़्म)–छुटपुट साहित्यिक विधाएं (तूटटु, उला, परणि, कुरवंजि).

आधुनिक तमिल साहित्य के विकास के सामाजिक कारक : उपन्यास, कहानी और आधुनिक कविता–आधुनिक लेखन पर विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं का प्रभाव.

खंड 'ख'

भाग–1 : तमिल के अध्ययन में नई प्रवृत्तियां :

समालोचना के उपागम : सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक तथा नैतिक–समालोचना का प्रयोग–साहित्य के विविध उपादान : उल्लुरै (लक्षण), इरैच्चि, तोण्मम (मिथक), ओत्तुरूवगम (कथा रूपक), अंगदम (व्यंग्य), मेथ्प्पाडु, पडियम (बिंब), कुरियीडु (प्रतीक), इरूण्मै (अनेकार्थकता)–तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा–तुलनात्मक साहित्य के सिद्धांत.

भाग–2 : तमिल में लोक साहित्य :

गाथाएं, गीत, लोकोक्तियां और पहेलियां–तमिल लोक गाथाओं का सामाजवैज्ञानिक अध्ययन. अनुवाद की उपयोगिता–तमिल की कृतियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद–तमिल में पत्रकारिता का विकास.

भाग–3 : तमिल की सांस्कृतिक विरासत :

प्रेम और युद्ध की अवधारणा–अरम की अवधारणा–प्राचीन तमिलों द्वारा युद्ध में अपनाई गई नैतिक संहिता. पांचों तिणै क्षेत्रों की प्रथाएं, विश्वास, रीति–रिवाज तथा उपासना विधि.

उत्तर–संगम साहित्य में अभिव्यक्त सांस्कृतिक परिवर्तन–मध्यकाल में सांस्कृतिक सम्मिश्रण (जैन तथा बौद्ध). पल्लव, परवर्ती चौल तथा नायक के विभिन्न युगों में कलाओं और वास्तुकला का विकास. तमिल समाज पर विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक आंदोलनों का प्रभाव. समकालीन तमिल समाज के सांस्कृतिक परिवर्तन में जन माध्यमों की भूमिका.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर तमिल में लिखने होंगे)

इस प्रश्नपत्र में निर्धारित पाठ्यपुस्तकों का मूल

अध्ययन आवश्यक है. परीक्षा में उम्मीदवार की आलोचनात्मक क्षमता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

खंड 'क'

भाग–1 : प्राचीन साहित्य :

(1) कुरून्तोकै (1 से 25 तक कविताएं)

(2) पुरनानूरू (182 से 200 तक कविताएं)

(3) तिरुक्कुरल (पोरूल पाल : अरसियलुम अमैच्चियलुम) इरैमाट्चि से अवैअंजामै तक)

भाग–2 : महाकाव्य :

(1) सिलप्पदिकारम (मदुरै कांडम)

(2) कंब रामायणम् (कुंभकर्णन वदै पडलम)

भाग–3 : भक्ति साहित्य :

(1) तिरुवाचकम : नीत्तल विण्णप्पम

(2) विरूप्पावै (सभी–पद)

खंड 'ख'

आधुनिक साहित्य

भाग–1 : कविता

(1) भारतियार : कण्णन पाट्टु

(2) भारती दासन : कुडुम्ब विलुक्कु

(3) ना. कामरासन : करूप्पु मलरकल

गद्य

(1) मु. वरदराजनार : अरमुम अरसियलुम

(2) सीएन अण्णादुरै : ऐ, तालन्द तमिलगमे.

भाग–2 : उपन्यास, कहानी और नाटक

(1) अकिलन : चित्तिरप्पावै

(2) जयकांतन : गुरूपीडम

भाग–3 : लोक साहित्य

(1) मत्तुप्पाट्टन कतै : न. वानमामलै (सं.)

(प्रकाशन : मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै)

(2) मलैयरूवि : कि.वा. जगन्नाथन (सं.)

(प्रकाशन : सरस्वती महल, तंजाऊर)

तेलुगु

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर तेलुगु में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाषा :

1. द्रविड़ भाषाओं में तेलुगु का स्थान और इसकी प्राचीनता–तेलुगु, तेनुगु और आंध्र का व्युत्पत्ति–आधारित इतिहास.

2. आद्य–द्रविड़ से प्राचीन तेलुगु तक और प्राचीन तेलुगू से आधुनिक तेलुगु तक स्वर–विज्ञानीय, रूपविज्ञानीय, व्याकरणिक और वाक्यगत स्तरों में मुख्य भाषायी परिवर्तन.

3. क्लासिकी तेलुगु की तुलना में बोलचाल की व्यावहारिक तेलुगु का विकास–औपचारिक और कार्यात्मक दृष्टि से तेलुगु भाषा की व्याख्या.

4. तेलुगु भाषा पर अन्य भाषाओं का प्रभाव.

5. तेलुगु भाषा का आधुनिकरण :

(क) भाषायी तथा साहित्यिक आंदोलन और तेलुगु भाषा के आधुनिकीकरण में उनकी भूमिका.

(ख) तेलुगु भाषा के आधुनिकीकरण में प्रचार माध्यमों की भूमिका (अखबार, रेडियो, टेलिविजन आदि).

(ग) वैज्ञानिक और तकनीकी सहित विभिन्न वमर्शों के बीच तेलुगु भाषा में नये शब्द गढ़ते समय पारिभाषिकी और क्रियाविधि से संबंधित समस्याएं.

6. तेलुगु भाषा की बोलिया–प्रादेशिक और सामाजिक भिन्नताएं तथा मानकीकरण की समस्याएं.

7. वाक्य–विन्याय–तेलुगुवाक्योंकेप्रमुखविभाजन–सरल, मिश्रित और संयुक्त वाक्य संज्ञा और क्रिया–विद्येयन–नामिकीकरण और संबंधीकरण की प्रक्रियाएं–प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रस्तुतीकरण–परिवर्तन प्रक्रियाएं.

8. अनुवाद–अनुवाद की समस्याएं–सांस्कृतिक, सामाजिक और मुहावरा–संबंधी अनुवाद की विधियां–अनुवाद के क्षेत्र में विभिन्न दृष्टिकोण–साहित्यिक तथा अन्य प्रकार के अनुवाद– अनुवाद के विभिन्न उपयोग.

खंड 'ख'

साहित्य :

1. नान्नय–पूर्व काल में साहित्य–मार्ग और देसी कविता.
2. नान्नय काल–आंध्र महाभारत की ऐतिहासिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि.
3. शेष कवि और उनका योगदान–द्विपाद, सातक, रागद उदाहरण.
4. तिक्कन और तेलुगु साहित्य में तिक्कन का स्थान.
5. एर्रना और उनकी साहित्यिक रचनाएं–नचन सोमन और काव्य के प्रति उनका नया दृष्टिकोण.
6. श्रीनाथ और पोतन–उनकी रचनाएं तथा योगदान.
7. तेलुगु साहित्य में भक्ति कवि–तल्लपक अन्नामैया, रामदासु त्यागैया.
8. प्रबंधों का विकास–काव्य और प्रबंध.
9. तेलुगु साहित्य की दक्खिनी विचारधारा–रघुनाथ नायक, चेमाकुर वेंकटकवि और महिला कवि–साहित्य–रूप जैसे यक्षगान, गद्य और पदकविता.
10. आधुनिक तेलुगु साहित्य और साहित्य–रूप–उपन्यास, कहानी, नाटक, नाटिका और काव्य–रूप.
11. साहित्यिक आंदोलन :सुधार आंदोलन, राष्ट्रवाद, नवक्लासिकीवाद, स्वच्छन्दतावाद और प्रगतिवादी, क्रांतिकारी आंदोलन.
12. दिगम्बरकावुलु, नारीवादी और दलित साहित्य.
13. लोकसाहित्य के प्रमुख विभाजन–लोक कलाओं का प्रस्तुतिकरण.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर तेलुगु में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिससे अभ्यर्थी की निम्नलिखित विषयों से संबंधित आलोचनात्मक क्षमता की जांच हो सके :—

(i) सौंदर्यपरक दृष्टिकोण–रस, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य–रूपसंबंधी और संरचनात्मक–बिंब योजना और प्रतीकवाद.

(ii) समाज शास्त्रीय, ऐतिहासिक, आदर्शवादी और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण.

खंड 'क'

1. नान्नय–दुष्यंत चरित्र (आदि पर्व चौथा सर्ग छंद 5–109)
2. तिक्कन–श्री कृष्ण रायबरामु (उद्योग पर्व–तीसरा सर्ग छंद 1–144)
3. श्रीनाथ–गुना निधि कथा (कासी खंडम–चौथा सर्ग छंद 76–133)
4. पिंगली सुरन–सुगत्रि सलिनुलकथा (कला–पुर्णोदयामु–चौथा सर्ग छंद 60–142)
5. मोल्ला–रामायनामु (अवतारिक सहित बाल कांड)
6. कसुल पुरुषोत्तम कवि–आंध्र नायक सतकामु.

खंड 'ख'

7. गुर्जद अप्पा राव–अनिमुत्थालु (कहानियां)
8. विश्वनाथ सत्यनारायण–आंध्र प्रशस्ति
9. देवुलापल्लि कृष्ण शास्त्री–कृष्णपक्षम (उर्वसी और प्रवसम को छोड़कर)
10. श्री श्री–महा प्रस्थानम्
11. जशुवा–गब्बिलम (भाग–1)
12. श्री नारायण रेड्डी–कर्पूरवसन्ता रायालु
13. कनुपरति वरलक्ष्मा–शारदा लेखालु (भाग–1)
14. आत्रेय–एन.जी.ओ.
15. रच कांड विश्वनाथ शास्त्री–अल्पजीवी

उर्दू

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर उर्दू में लिखने होंगे)

खंड 'क'

उर्दू भाषा का विकास :

(क) भारतीय–आर्य भाषा का विकास

(i) प्राचीन भारतीय–आर्य

(ii) मध्ययुगीन भारतीय–आर्य

(iii) अर्वाचीन भारतीय–आर्य

(ख) पश्चिमी हिन्दी तथा इसकी बोलियां, जैसे ब्रजभाषा, खड़ी बोली, हरियाणवी, कन्नौजी, बुंदेली.

उर्दू भाषा के उद्‌भव से संबंधित सिद्धांत.

(ग) दिक्खिनी उर्दू–उद्‌भव और विकास–इसकी महत्वपूर्ण भाषा मूलक विशेषताएं.

(घ) उर्दू भाषा के सामाजिक और सांस्कृतिक आधार और उनके विभेदक लक्षण : लिपि, स्वर विज्ञान, आकृति विज्ञान, शब्द भंडार.

खंड 'ख'

(क) **विभिन्न विधाएं और उनका विकास :** (i) कविता : गज़ल, मसनवी, क़सीदा, मर्सिया, रूबाई, जदीद नज़्म.

(ii) **गद्य :** उपन्यास, कहानी, दास्तान, नाटक, इंशाइया, खुतूत, जीवनी.

(ख) **निम्नलिखित की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं :**

(i) दक्खिनी, दिल्ली और लखनऊ शाखाएं.

(ii) सर सैयद आन्दोलन, स्वच्छंदतावादी आन्दोलन, प्रगतिशील आन्दोलन, आधुनिकतावाद.

(ग) साहित्यिक आलोचना और उसका विकास : हाली, शिबली, क्लीमुद्दीन अहमद, एहतेश्याम हुसैन, आले अहमद सुरूर.

(घ) निबन्ध लेख (साहित्यिक और कल्पनाप्रधान विषयों पर)

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर उर्दू में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

1. मीर अम्मान	बागोबहार
2. ग़ालिब	इन्तिख़ाह–ए–खुतूत–ए ग़ालिब
3. मोहम्मद हुसैन आजाद	नैरंग–ए–खयाल
4. प्रेमचंद	गोदान
5. राजेन्द्र सिंह बेदी	अपने दुख मुझे दे दो
6. अबुल कलाम आज़ाद	गुबार–ए–खातिर

खंड 'ख'

1. मीर	इन्तिख़ाव–ए–मीर (सम्पादक : अबदुल हक)
2. मीर हसन	सहरूल बयां
3. ग़ालिब	दीवान–ए–ग़ालिब
4. इकबाल	बाल–ए–जिबरैल
5. फिराक़	गुल–ए–नग़मा
6. फ़ैज़	दस्त–ए–सबा
7. अखतरुलिमान	बिंत–ए–लम्हात

प्रबंध

अभ्यर्थी जो प्रबंध जी विज्ञा-ा और जला जे रूप में संजल्प-ाा और विजास जा अध्यय-ा जर-ाा चाहिए और प्रबंध जे अग्रजी विचारजों जे योजदा-ा जो आत्मसात जर-ाा चाहिए तथा जार्य-ीतिज एवं प्रचाल-ाात्मज परिवेश जो दृष्टिजत रजते हुए इसजी संजल्प-ााओं जो वास्तविज शास-ा एवं व्यवसाय ि-र्जय-ा में प्रयोज में ला-ाा चाहिए.

प्रश्-ापत्र -1

1. प्रबंधजीय जार्य एवं प्रक्रिया :

प्रबंध जी संजल्प-ाा एवं आधार, प्रबंध चिंत-ा जा विजास; प्रबंजीय जार्य - आयोज-ाा, संजठ-ा, ि-यंत्रज; ि-र्जय-ा; प्रबंधज जी भूमिजा, प्रबंधजीय जौशल; उद्यमवृत्ति; -ावप्रवर्त-ा प्रबंध; विश्वव्यापी वातावरज में प्रबंध, -ाम्य प्रजाली प्रबंध-ा; सामाजिज उत्तरदायित्व एवं प्रबंधजीय आचार-ाीति; प्रक्रिया एवं ज्ञाहज अभिवि-यास; प्रत्यज एवं अप्रत्यज मूल्य श्रृंजला पर प्रबंधजीय प्रक्रियाएं.

2. संजठ-ाात्मज व्यवहार एवं अभिजल्प :

संजठ-ाात्मज व्यवहार जा संजल्प-ाात्मज ि-दर्श; व्यष्टि प्रक्रियाएं - व्यक्तित्व, मूल्य एवं अभिवृत्ति, प्रत्यजज, अभिप्रेरज, अधिजम एवं पु-ार्वल-ा, जार्य त-ााव एवं त-ााव प्रबंध-ा ;संजठ-ा व्यवहार जी जति जी - सत्ता एवं राज-ाीति, द्व-द्व एवं वार्ता, -ोतृत्व प्रक्रिया एवं शैलियां, संप्रेषज; संजठ-ाात्मज प्रक्रियाएं - ि-र्जय-ा, ृत्यज अभिजल्प; सांजठि-ाज अभिजल्प जे क्लासिजी, -ावक्लासिजी एवं आपात उपाजम; संजठ-ाात्मज सिद्धांत एवं अभिजल्प - संजठ-ाात्मज संस्ृति, सांस्ृतिज अ-ोजता प्रबंध-ा, संजठ-ा अधिजम; संजठ-ाात्मज परिवर्त-ा एवं विजास; ज्ञा-ा आधारित उद्यम - प्रजालियां एवं प्रक्रियाएं; जालतंत्रित एवं आभासी संजठ-ा.

3. मा-ाव संसाध-ा प्रबंध :

मा-ाव संसाध-ा जी चु-ाौतियां; मा-ाव संसाध-ा प्रबंध जे जार्य; मा-ाव संसाध-ा प्रबंध जी भावी चु-ाौतियां; मा-ाव संसाध-ाों जा जार्य-ाीतिज प्रबंध; मा-ाव संसाध-ा आयोज-ाा; ृत्यज विश्लेषज; ृत्यज मूल्यांज-ा; भर्ती एवं चय-ा; प्रशिजज एवं विजास, पदोन्नति एवं स्था-ाांतरज; ि-ष्पाद-ा प्रबंध; प्रतिजर प्रबंध एवं लाभ; जर्मचारी म-ाोबल एवं उत्पादजता; संजठ-ाात्मज वातावरज एवं औद्योजिज संबंध प्रबंध; मा-ाव संसाध-ा लेजाजरज एवं लेजा परीजा; मा-ाव संसाध-ा सूच-ाा प्रजाली; अंतर्राष्ट्रीय मा-ाव संसाध-ा प्रबंध.

4. प्रबंधजों जे लिए लेजाजरज :

वित्तीय लेजाजरज - संज्ल्प-ाा, महत्व एवं जेत्र, सामा-यतया स्वीृत लेजाजरज सिद्धांत, तुल-ापत्र जे विश्लेषज एवं व्यवसाय आय माप-ा जे विशेष संदर्भ में वित्तीय विवरजों जो तैयार जर-ाा, सामग्री सूची मूल्यांज-ा एवं मूल्यह्रास, वित्तीय विवरज विश्लेषज, ि-धि प्रवाह विश्लेषज, -ाजदी प्रवाह विवरज, प्रबंध लेजाजरज - संजल्प-ाा, आवश्यजता, महत्व एवं जेत्र ;लाजत लेजाजरज - अभिलेज एवं प्रक्रियाएं, लाजत लेजर एवं ि-यंत्रज लेजाएं, वित्तीय एवं लाजत लेजाओं जे बीच समाधा-ा एवं समाजल-ा; ऊपरी लाजत एवं ि-यंत्रज, ृत्यज एवं प्रक्रिया लाजत आजल-ा, बजट एवं बजटीय ि-यंत्रज, ि-ष्पाद-ा बजट-ा, शू-यधारित बजट-ा, संजत लाजत - आजल-ा एवं ि-र्जय-ा लाजत - आजल-ा, मा-ाज लाजत - आजल-ा एवं प्रसरज विश्लेषज, सीमांत लाजत आजल-ा एवं अवशोषज लाजत - आजल-ा.

5. वित्तीय प्रबंध :

वित्त जार्य जे लज्य; मूल्य एवं प्रति लाभ जी संजल्प-ााएं; बांडों एवं शेयरों जा मूल्यांज-ा; जार्यशील पूंजी जा प्रबंध; प्राक्जल-ा एवं वित्तीय-ा; -ाजदी, प्राप्यों, सामग्रीसूची एवं चालू देयताओं जा प्रबंध-ा; पूंजी लाजत; पूंजी बजट-ा; वित्तीय एवं प्रचाल-ा लेवरेज; पूंजी संरच-ाा अभिजल्प; सिद्धांत एवं व्यवहार; शेयरधारज मूल्य सृज-ा; लाभांश -ाीति, ि-जम वित्तीय -ाीति एवं जार्य-ाीति, ि-जम जुर्जी एवं पु-ार्संरच-ाा जार्य-ाीति प्रबंध; पूंजी एवं मुद्रा बाजार; संस्थाएं एवं प्रपत्र; पट्टे पर दे-ाा, जिराया जरीद एवं जोजिम पूंजी; पूंजी बाजार वि-ियम-ा; जोजिम एवं प्रतिलाभ : पोर्टफोलियो सिद्धांत; CAPM; APT; वित्तीय व्युत्पन्न : विजल्प फयूचर्स, स्वैप; वित्तीय जेत्रज में अभि-ाव सुधार.

6. विपज-ा प्रबंध :

संजल्प-ाा, विजास एवं जेत्र; विपज-ा जार्य-ाीति सूत्रीजरज एवं विपज-ा योज-ाा जे घटज; बाजार जा जंडीजरज एवं लज्यो-मुज-ा; पज्य जा अवस्था-ा-ा एवं विभेद-ा; प्रतियोजिता विश्लेषज; उपभोक्ता बाजार विश्लेषज; औद्योजिज क्रेता व्यवहार; बाजार अ-ुसंधा-ा; उत्पाद जार्य-ाीति; जीमत ि-र्धारज जार्य-ाीतियां; विपज-ा सरजियों जा अभिजल्प-ा एवं प्रबंध-ा; एजीृत विपज-ा संचार; ग्राहज संतोष जा ि-र्माज, मूल्य एवं प्रतिधारज; सेवाएं एवं अ-लाभ विपज-ा; विपज-ा में आचार, ग्राहज सुरजा, इंटर-ोट विपज-ा, जुदरा प्रबंध; ग्राहज संबंध प्रबंध; साजल्यवादी विपज-ा जी संजल्प-ाा.

प्रश्-ापत्र - 2

1. ि-र्जय-ा जी परिमाजात्मज प्रविधियां :

वर्ज-ाात्मज सांज्यिजी - सारजीबद्ध, आलेजीय एवं सांज्यिज विधियां, प्रायिजता जा विषय प्रवेश, असंतत एवं संतत प्रायिजता बंट-ा, आ-ुमाि-ाज सांज्यिजी - प्रतिदर्शी बंट-ा, जे-द्रीय सीमा प्रमेय, माध्यों एवं अ-ुपातों जे बीच अंतर जे लिए परिजल्प-ाा परीजज, समष्टि प्रसरजों जे बारे में अ-ुमा-ा, जाई - स्क्वैयर एवं ANOVA, सरल सहसंबंध एवं समाश्रयज, जालश्रेजी एवं पूर्वा-ुमा-ा, ि-र्जय सिद्धांत, सूचजांज; रैजिज प्रोग्राम-ा - समस्या सूत्रीजरज, प्रसमुच्चय विधि एवं आलेजीय हल, सुग्राहिता विश्लेषज.

2. उत्पाद-ा एवं व्यापार प्रबंध :

व्यापार प्रबंध जे मूलभूत सिद्धांत; उत्पाद-ाार्थ आयोज-ाा; समस्त उत्पाद-ा आयोज-ाा, जमता आयोज-ाा, संयंत्र अभिजल्प :प्रक्रिया आयोज-ाा, संयंत्र आजार एवं व्यापार मा-ा, सुविधाओं जा प्रबंध-ा ; लाई-ा संतुल-ा ; उपजरज प्रतिस्थाप-ा एवं अ-ुरजज ;उत्पाद-ा ि-यंत्रज ; पूर्तिश्रृंजला

प्रबंध-न - विक्रेता मूल्यांकन एवं लेजापरीजा; जुजता प्रबंध-न; सांख्यिकीय प्रक्रिया नियंत्रज, षड सिग्मा, निर्माज प्रजालियों में नम्यता एवं स्फूर्ति; विश्व श्रेजी ज निर्माज; परियोजना प्रबंध-न संकल्पनाएं, अनुसंधान एवं विकास प्रबंध, सेवा व्यापार प्रबंध; सामग्री प्रबंध-न की भूमिका एवं महत्व, मूल्य विश्लेषज, निर्माज अथवा क्रय निर्जय; सामग्री सूची नियंत्रज, अधिकतम जुदरा कीमत; अपशेष प्रबंध-न.

3. प्रबंध सूचना प्रजाली :

सूचना प्रजाली ज संकल्पनात्मक आधार; सूचना सिद्धांत; सूचना संसाधन प्रबंध; सूचना प्रजाली प्रकार; प्रजाली विकास - प्रजाली एवं अभिकल्प विहंगावलोकन; प्रजाली विकास प्रबंध जीवन - चक्र, ऑन-लाइन एवं वितरित परिवेशों के लिए अभिकल्पन; परियोजना कार्या-वयन एवं नियंत्रज; सूचना प्रोद्योगिकी की प्रवृत्तियां; आँकड़ा संसाधन प्रबंध-न - आँकड़ा आयोजना; DDS एवं RDBMS; उद्यम संसाधन आयोजना (ERP), विशेषज्ञ प्रजाली, E-बिजनेस आर्किटेक्चर, ई - जवर्नेंस, सूचना प्रजाली आयोजना, सूचना प्रजाली में नम्यता; उपयोक्ता संबद्धता; सूचना प्रजाली का मूल्यांकन.

4. सरकार व्यवसाय अंतरापृष्ठ :

व्यवसाय में राज्य की सहभाजिता, भारत में सरकार, व्यवसाय एवं विभिन्न वाजिज्य मंडलों तथा उद्योज के बीच अन्योन्यक्रिया; लघु उद्योजों के प्रति सरकार की नीति; नए उद्यम की स्थापना हेतु सरकार की अनुमति; जन वितरज प्रजाली; कीमत एवं वितरज पर सरकारी नियंत्रज; उपभोक्ता संरजज अधिनियम (CPA)एवं उपभोक्ता अधिकारों के संरजज में स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका; सरकार की नई औद्योगिक नीति; उदारीकरज अनिविनियम-न एवं निजीकरज; भारतीय योजना प्रजाली; पिछड़े जेत्रों के विकास के संबंध में सरकारी नीति; पर्यावरज संरजज हेतु व्यवसाय एवं सरकार के दायित्व; निजम अभिशासन; साइबर विधियां.

5. कार्य-नीतिक प्रबंध :

अध्ययन जेत्र के रूप में व्यवसाय नीति ; कार्य-नीतिक प्रबंध का स्वरूप एवं विषय जेत्र , सामरिक आशय , दृष्टि , उद्देश्य एवं नीतियां ; कार्य-नीतिक आयोजना प्रक्रिया एवं कार्या-वयन ;परिवेशीय विश्लेषज एवं आंतरिक विश्लेषज, SWOT विश्लेषज ;कार्य-नीतिक विश्लेषज हेतु उपकरज एवं प्रविधियां - प्रभाव आव्यूह :अनुभव वक्र , BCG आव्यूह, GEC बहुलक , उद्योज विश्लेषज , मूल्य श्रृंजला की संकल्पना ; व्यवसाय प्रतिष्ठान की कार्य-नीतिक परिच्छेदिका ; प्रतियोजिता विश्लेषज हेतु ढांचा ; व्यवसाय प्रतिष्ठान का प्रतियोजी लाभ;वर्जीय प्रतियोजी कार्य-नीतियां; विकास कार्य-नीति -विस्तार , समाकलन एवं विशाजन ; क्रोड़ सजमता की संकल्पना , कार्य-नीतिक नम्यता; कार्य-नीति पुनराविष्कार ;कार्य-नीति एवं संरचना; मुख्य कार्यपालक एवं परिषद; टर्नअराउंड प्रबंध-न ; प्रबंध-न एवं कार्य-नीतिक परिवर्तन ; कार्य-नीतिक सहबंध ;विलयन एवं अधिग्रहज; भारतीय संदर्भ में कार्य-नीति एवं निजम विकास.

6. अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय :

अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय परिवेश : माल एवं सेवाओं में व्यापार के बदलते संघटन ; भारत का विदेशी व्यापार ; नीति एवं प्रवृत्तियां ; अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का वित्त पोषज ; जेत्रीय आर्थिक सहयोज ; FTA; सेवा प्रतिष्ठानों का अंतर्राष्ट्रीयकरज; अंतर्राष्ट्रीय उत्पादन ;अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों में व्यवसाय प्रबंध ; अंतर्राष्ट्रीय कराधान ; विश्वव्यापी प्रतियोजिता एवं प्रोद्योजिकीय विकास ; विश्वव्यापी ई-व्यवसाय ; विश्वव्यापी सांजठनिक संरचना अभिकल्पन एवं नियंत्रज ; बहुसांस्कृतिक प्रबंध ; विश्वव्यापी व्यवसाय कार्य-नीति ; विश्वव्यापी विपजन कार्य-नीति ; निर्यात प्रबंध ; निर्यात आयात प्रक्रियाएं ; संयुक्त उपक्रम ;विदेशी निवेश ;विदेशी प्रत्यज निवेश एवं विदेशी पोर्टफोलियो निवेश ; सीमापार विलयन एवं अधिग्रहज ;विदशी मुद्रा जोजिम उदभासन प्रबंध ; विश्व वित्तीय बाजार एवं अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंज , बाह्य ऋज प्रबंध-न ; देश जोजिम विश्लेषज.

गणित

प्रश्नपत्र-1

1. रैखिक बीजगणित :

R एवं C सदिश समष्टियाँ, रैखिक आश्रितता एवं स्वतंत्रता, उपसमष्टियाँ, आधार, विमा, रैखिक रूपांतरण, कोटि एवं शून्यता, रैखिक रूपांतरण का आव्यूह.

आव्यूहों की बीजावली, पंक्ति एवं स्तंभ समानयन, सोपानक रूप, सर्वांगसमता एवं समरूपता, आव्यूह की कोटि, आव्यूह का व्युत्क्रम, रैखिक समीकरण प्रणाली का हल, अभिलाक्षणिक मान एवं अभिलाक्षणिक सदिश, अभिलाक्षणिक बहुपद, केले-हैमिल्टन प्रमेय, सममित, विषम सममित, हर्मिटी, विषम हर्मिटी, लांबिक एवं ऐकिक आव्यूह एवं उनके अभिलक्षणिक मान.

2. कलन:

वास्तविक संख्याएँ, वास्तविक चर के फलन, सीमा, सांतत्य, अवकलनीयता, माध्यमान प्रमेय, शेषफलों के साथ टेलर का प्रमेय, अनिर्धारित रूप, उच्चिष्ठ एवं अल्पिष्ठ, अनंतस्पर्शी, वक्र अनुरेजण, दो या तीन चरों के फलन : सीमा, सांतत्य, आंशिक अवकलज, उच्चिष्ठ एवं अल्पिष्ठ, लाग्रांज की गुणक विधि, जैकोबी. निश्चित समाकलों की रीमान परिभाषा, अनिश्चित समाकल, अनंत (इन्फिनिट एवं इंप्रॉपर) अवकल, द्विधा एवं त्रिधा समाकल (केवल मूल्यांकन प्रविधियाँ), क्षेत्र, पृष्ठ एवं आयतन.

3. विश्लेषिक ज्यामिति :

त्रिविमाओं में कार्तीय एवं ध्रुवीय निर्देशांक , त्रि-चरों में द्वितीय घात समीकरण, विहित रूपों में लघूकरण, सरल रेखाएँ, दो विषमतलीय रेखाओं के बीच की लघुतम दूरी, समतल, गोलक, शंकु, बेलन, परवलपज, दीर्घवृत्तज, एक या दो पृष्ठी अतिपरवलयज एवं उनके गुणधर्म.

4. साधारण अवकल समीकरण :

अवकल समीकरणों का संरूपण, प्रथम कोटि एवं प्रथम घात का समीकरण, समाकलन गुणक, लंबकोणीय संछेदी, प्रथमघात का नहीं किंतु प्रथम कोटि का समीकरण, क्लेरो का समीकरण, विचित्र हल. नियत गुणांक वाले द्वितीय एवं उच्चतर कोटि के रैखिक समीकरण, पूरक फलन, विशेष समाकल एवं व्यापक हल. चर गुणांक वाले द्वितीय कोटि के रैखिक समीकरण, आयलर-कौशी समीकरण, प्राचल विचरण विधि का प्रयोग कर पूर्ण हल का निर्धारण जब एक हल ज्ञात हो.

लाप्लास एवं व्युत्क्रम लाप्लास रूपांतर एवं उनके गुणधर्म, प्रारंभिक फलनों के लाप्लास रूपांतर, नियत गुणांक वाले द्वितीय कोटि रैखिक समीकरणों के लिए प्रारंभिक मान समस्याओं पर अनुप्रयोग.

5. गतिकी एवं स्थैतिकी :

ऋजुरेखीय गति, सरल आवर्तगति, समतल में गति, प्रक्षेप्य (प्रोजेक्टाइल), व्यवरोध गति, कार्य एवं ऊर्जा, ऊर्जा का संरजज केपलर नियम , केंद्रीय बल के अंतर्जत कजाएं. कज निकाय का संतुलन, कार्य एवं स्थितिज ऊर्जा घर्षण, साधारण कटनरी, कल्पित कार्य का सिद्धांत, संतुलन का स्थायित्व, तीन विमाओं में बल संतुलन.

6. सदिश विश्लेषण :

अदिश और सदिश क्षेत्र, अदिश चर के सदिश क्षेत्र का अवकलन, कार्तीय एवं बेलनाकार निर्देशांकों में प्रवणता, अपसरण एवं कर्ल, उच्चतर कोटि अवकलन, सदिश तत्समक एवं सदिश समीकरण.

ज्यामिति अनुप्रयोग : आकाश में वक्र, वक्रता एवं ऐंठन, सेरेट-फ्रेनेट के सूत्र.

गैस एवं स्टोक्स प्रमेय, ग्रीन के तत्समक .

प्रश्नपत्र-2

1. बीजगणित :

समूह, उपसमूह, चक्रीय समूह, सहसमुच्चय, लाग्रांज़ प्रमेय, प्रसामान्य उपसमूह, विभाग समूह, समूहों की समाकारिता, आधारी तुल्याकारिता प्रमेय, क्रमचय समूह, केली प्रमेय.

वलय, उपवलय एवं गुणजावली, वलयों की समाकारिता, पूर्णांकीय प्रांत, मुख्य गुणजावली प्रांत, यूक्लिडीय प्रांत एवं अद्वितीय गुणनजंडन प्रांत, जेत्र, विभाग क्षेत्र.

2. वास्तविक विश्लेषण :

न्यूनतम उपरिसीमा गुणधर्म वाले क्रमित क्षेत्र के रूप में वास्तविक संख्या निकाय, अनुक्रम, अनुक्रम सीमा, कौशी अनुक्रम, वास्तविक रेखा की पूर्णता, श्रेणी एवं इसका अभिसरण, वास्तविक एवं सम्मिश्र पदों की श्रेणियों का निरपेक्ष तथा सप्रतिबंध अभिसरण, श्रेणी का पुनर्विन्यास.

फलनों का सांतत्य एवं एकसमान सांतत्य, संहत समुच्चयों पर सांतत्य फलनों के गुणधर्म. रीमान समाकल, अनंत समाकल, समाकलन-गणित के मूल प्रमेय. फलनों के अनुक्रमों तथा श्रेणियों के लिए एक-समान अभिसरण, सांतत्य, अवकलनीयता एवं समाकलनीयता, अनेक (दो या तीन) चरों के फलनों के आंशिक अवकलज, उच्चिष्ठ एवं अल्पिष्ठ.

3. सम्मिश्र विश्लेषण :

विश्लेषिक फलन, कौशी-रीमान समीकरण, कौशी प्रमेय, कौशी का समाकल सूत्र, विश्लेषिक फलन का घात श्रेणी निरूपण, टेलर श्रेणी, विचित्रताएं, लोरां श्रेणी, कौशी अवशेष प्रमेय, कन्टूर समाकलन.

4. रैखिक प्रोग्रामन :

रैखिक प्रोग्रामन समस्याएँ, आधारी हल, आधारी सुसंगत हल एवं इष्टतम हल, हलों की आलेखी विधि एवं एकधा विधि, द्वैतता. परिवहन तथा नियतन समस्याएँ.

5. आंशिक अवकलन समीकरण :

तीन विमाओं में पृष्ठकुल एवं आंशिक अवकल समीकरण संरूपण, प्रथम कोटि के रैखिककल्प आंशिक अवकल समीकरणों के हल, कौशी अभिलक्षण विधि, नियत गुणांकों वाले द्वितीय कोटि के रैखिक आंशिक अवकल समीकरण, विहित रूप, कंपित तंतु का समीकरण, ताप समीकरण, लाप्लास समीकरण एवं उनके हल.

6. संख्यात्मक विश्लेषण एवं कम्प्यूटर प्रोग्रामनः

संख्यात्मक विधियाँ, द्विविभाजन द्वारा एक चर के बीजगणितीय तथा अबीजीय समीकरणों का हल, रेगुला फाल्सि तथा न्यूटन-राफसन विधियाँ, गाउसीय निराकरण एवं गाउस -जॉर्डन (प्रत्यक्ष), गाउस-सीडेल (पुनरावर्ती) विधियों द्वारा रैखिक समीकरण निकाय का हल. न्यूटन का (अग्र तथा पश्च) अंतर्वेशन, लाग्रांज का अंतर्वेशन.

संख्यात्मक समाकलन : समलंबी नियम, सिंपसन नियम, गाउसीय क्षेत्रकलन सूत्र.

साधारण अवकल समीकरणों का संख्यात्मक हल : आयलर तथा रंजा-कुट्ट विधियाँ.

कंप्यूटर प्रोग्रामन : द्विआधारी पद्धति, अंकों पर गणितीय तथा तर्कसंगत संक्रियाएं, अष्ट आधारी तथा षोडस आधारी पद्धतियाँ, दशमलव पद्धति से एवं दशमलव पद्धति में रूपांतरण, द्विआधारी संख्याओं की बीजावली.

कंप्यूटर प्रणाली के तत्व तथा मेमरी की संकल्पना, आधारी तर्कसंगत द्वार तथा सत्य सारणियाँ, बूलीय बीजावली, प्रसामान्य रूप.

अचिह्नित पूर्णांकों, चिह्नित पूर्णांकों एवं वास्तविक, द्विपरिशुद्धता वास्तविक तथा दीर्घ पूर्णांकों का निरूपण.

संख्यात्मक विश्लेषज समस्याओं के हल के लिए कलनविधि और प्रवाह संचित्र

7. यांत्रिकी एवं तरल गतिकी :

व्यापीकृत निर्देशांक, डीऐलंबर्ट सिद्धांत एवं लाग्रांज समीकरण, हैमिल्टन समीकरण, जड़त्व आघूर्ज, दो विमाओं में दृढ़ पिंडों की गति.

सांतत्य समीकरण , अश्यान प्रवाह के लिए आयलर का गति समीकरण, प्रवाह रेखाएं, कण का पथ, विभव प्रवाह, द्विविमीय तथा अक्षतः सममित गति, उद्‌गम तथा अभिगम, भ्रमिल गति, श्यान तरल के लिए नैवियर - स्टोक समीकरण.

यांत्रिक इंजीनियरी

प्रश्नपत्र-1

1. यांत्रिकी :

1.1 दृढ़ पिंडों की यांत्रिकी

आकाश में साम्यावस्था का समीकरण एवं इसका अनुप्रयोग, क्षेत्रफल के प्रथम एवं द्वितीय आघूर्ज, घर्षण की सरल समस्याएँ, समतल गति के लिए कणों की शुद्धगतिकी, प्रारंभिक कण गतिकी.

1.2 विरूपजीय पिंडों की यांत्रिकी

व्यापीकृत हुक का नियम एवं इसका अनुप्रयोग, अक्षीय प्रतिबल पर अभिकल्प समस्याएँ, अपरूपण प्रतिबल एवं आधारक प्रतिबल, गतिक भारण के लिए सामग्री के गुण, दंड में बंकन अपरूपण एवं प्रतिबल, मुख्य प्रतिबलों एवं विकृतियों का निर्धारण - विश्लेषिक एवं आलेखी, संयुक्त एवं मिश्रित प्रतिबल, द्विअक्षीय प्रतिबल - तनु भित्तिक दाब भाजन , गतिक भार के लिए पदार्थ व्यवहार एवं अभिकल्प कारक, केवल बंकन एवं मरोड़ी भार के लिए गोल शैफ्ट का अभिकल्प, स्थैतिक निर्धारी समस्याओं के लिए दंड का विक्षेप, भंग के सिद्धांत.

2. इंजीनियरी पदार्थ :

ठोसों की आधारभूत संकल्पनाएं एवं संरचना, सामान्य लोह एवं अलोह पदार्थ एवं उनके अनुप्रयोग, स्टीलों का ताप उपचार, अधातु - प्लास्टिक, सेरेमिक, संमिश्र पदार्थ एवं नैनोपदार्थ.

3. यंत्रों का सिद्धांत :

समतल - क्रियाविधियों का शुद्धगतिक एवं गतिक विश्लेषण. कैम, गियर एवं अधिचक्रिक जियरमालाएं, गतिपालक चक्र, अधिनियंत्रक, दृढ़ घूर्णकों का संतुलन, एकल एवं बहुसिलिंडरी इंजन, यांत्रिक तंत्र का रैखिक कंपन विश्लेषण (एकल स्वातंत्र्य कोटि), क्रांतिक चाल एवं शैफ्ट का आवर्तन.

4. निर्माण का विज्ञान :

4.1 निर्माण प्रक्रम :

यंत्र औजार इंजीनियरी - व्यापारी बल विश्लेषण, टेलर का औजार आयु समीकरण, रूढ़ मशीनन, NC एवं CNC मशीनन प्रक्रम, जिग एवं स्थायिक.

अरूढ़ मशीनन -EDM, ECM, पराश्रव्य, जल प्रधार मशीनन, इत्यादि, लेज़र एवं प्लाज्मा के अनुप्रयोग, ऊर्जा दर अवकलन.

रूपण एवं वेल्डन प्रक्रम - मानक प्रक्रम.

मापिकी—अन्वायोजनों एवं सहिष्णुताओं की संकल्पना, औजार एवं प्रमाप, तुलनित्र, लंबाई का निरीक्षण, स्थिति, परिच्छेदिका एवं पृष्ठ संपूर्ति.

4.2 निर्माण प्रबंध :

तंत्र अभिकल्प : फैक्टरी अवस्थिति - सरल OR मॉडल, संयंत्र अभिन्यास - पद्धति आधारित, इंजीनियरी आर्थिक विश्लेषण एवं भंग के अनुप्रयोग - उत्पाद वरण, प्रक्रम वरण एवं क्षमता आयोजना के लिए विश्लेषण भी, पूर्व निर्धारित समय मानक.

प्रणाली आयोजना : समाश्रयण एवं अपघटन पर आधारित पूर्वकथन विधियाँ, बहु मॉडल एवं प्रासंभाव्य समन्वायोजन रेखा का अभिकल्प एवं संतुलन, सामग्री सूची प्रबंध - आदेश काल एवं आदेश मात्रा निर्धारण के लिए प्रायिकतात्मक सामग्री सूची मॉडल, JIT प्रणाली, युक्तिमय उद्‌गमीकरण, अंतर-संयंत्र संभारतंत्र.

तंत्र संक्रिया एवं नियंत्रण :

कृत्यकशाला के लिए अनुसूचक कलन विधि, उत्पाद एवं प्रक्रम गुणता नियंत्रण के लिए सांख्यिकीय विधियों का अनुप्रयोग, माध्य, परास, दूषित प्रतिशतता, दोषों की संख्या एवं प्रतियूनिट दोष के लिए नियंत्रण चार्ट अनुप्रयोग, गुणता लागत प्रणालियाँ, संसाधन, संगठन एवं परियोजना जोखिम का प्रबंधन.

प्रणाली सुधार : कुल गुणता प्रबंध, नम्य, कृश एवं दक्ष संगठनों का विकास एवं प्रबंधन जैसी प्रणालियों का कार्यान्वयन.

प्रश्नपत्र-2

1. उष्मागतिकी, गैस गतिकी एंव टर्बो यंत्र :

1.1 उष्मागतिकी के प्रथम नियम एवं द्वितीय नियम की आधारभूत संकल्पनाएं, ऐन्ट्रॉपी एवं प्रतिक्रमणीयता की संकल्पना, उपलब्धता एवं अनुपलब्धता तथा अप्रतिक्रमणीयता.

1.2 तरलों का वर्गीकरण एवं गुणधर्म, असंपीड्य एवं संपीड्य तरल प्रवाह, मैक संख्या का प्रभाव एवं संपीड्यता, सातत्य संवेग एवं ऊर्जा समीकरण, प्रसामान्य एवं तिर्यक प्रघात, एक विमीय समऐंट्रॉपी प्रवाह, तरलों का नलिका में घर्षण एवं ऊर्जांतरण के साथ प्रवाह.

1.3 पंखों, ब्लोअरों एवं संपीडित्रों से प्रवाह, अक्षीय एवं अपकेंद्री प्रवाह विन्यास, पंखों एवं संपीडित्रों का अभिकल्प, संपीडनों और टारबाइन सोपानी की सरल समस्याएं, विवृत एवं संवृत चक्र जैस टरबाइन, जैस टरबाइन में किया गया कार्य, पुनःताप एवं पुनर्जनन.

2. ऊष्मा अंतरण :

2.1 चालन ऊष्मा अंतरण - सामान्य चालन समीकरण - लाप्लास, प्वासों एवं फूरिए समीकरण, चालन का फूरिए नियम, सरल भित्ति ठोस एवं खोखले बेलन तथा गोलकों पर लगा एक विमीय स्थायी दशा ऊष्मा चालन.

2.2 संवहन ऊष्मा अंतरण - न्यूटन का संवहन नियम, मुक्त एवं प्रणोदित संवहन, चपटे तल पर असंपीड्य तरल के स्तरीय एवं विक्षुब्ध प्रवाह के दौरान ऊष्मा अंतरण, नसेल्ट संख्या, जलगतिक एवं ऊष्मीय सीमांतपरत एवं उनकी मोटाई की संकल्पनाएँ, प्रांटल संख्या, ऊष्मा एवं संवेग अंतरण के बीच अनुरूपता - रेनॉल्ड्स, ज़ोलबर्न, प्रांटल अनुरूपताएँ, क्षैतिज नलिकाओं से स्तरीय एवं विक्षुब्ध प्रवाह के दौरान ऊष्मा अंतरण, क्षैतिज एवं ऊर्ध्वाधर तलों से मुक्त संवहन।

2.3 कृष्णिका विकिरण - आधारभूत विकिरण नियम, जैसे कि, स्टीफेन-बोल्ट्ज़मैन, प्लांक वितरण, वीन विस्थापन, आदि।

2.4 आधारभूत ऊष्मा विनिमयित्र विश्लेषण, ऊष्मा विनिमयित्रों का वर्गीकरण।

3. अंतर्दहन इंजिन :

3.1 वर्गीकरण, संक्रिया के ऊष्मागतिक चक्र, भंग शक्ति, सूचित शक्ति , यांत्रिक दक्षता, ऊष्मा समायोजन चादर, निष्पादन अभिक्षण का निर्वचन, पेट्रौल, गैस एवं डीजल इंजिन।

3.2 SI एवं CI इंजिनों में दहन, सामान्य एवं असामान्य दहन, अपस्फोटन पर कार्यशील प्राचलों का प्रभाव, अपस्फोटन का न्यूनीकरण, SI एवं CI इंजिनों के लिए दहन प्रकोष्ठ के प्रकार, योजक, उत्सर्जन।

3.3 अंतर्दहन इंजिनों की विभिन्न प्रणालियाँ - ईंधन, स्नेहन, शीतन एवं संचरज प्रणालियाँ, अंतर्दहन इंजिनों में विज ल्पी ईंधन।

4. भाप इंजीनियरी :

4.1 भाप जनन - आशोधित रैंकिन चक्र विश्लेषण, आधुनिक भाप बॉयलर, क्रांतिक एवं अधिक्रांतिक दाबों पर भाप, प्रवात उपस्कर, प्राकृतिक एवं कृत्रिम प्रवात, बॉयलर ईंधन, ठोस, द्रव एवं गैसीय ईंधन, भाप टरबाइन - सिद्धांत, प्रकार, संयोजन, आवेग एवं प्रतिक्रिया टरबाइन, अक्षीय प्रणोद।

4.2 भाप तुंड - अभिसारी और अपसारी तुंड में भाप का प्रवाह, आर्द्र, संतृप्त एवं अधितप्त जैसी विभिन्न प्रारंभिक भाप दशाओं के साथ, अधिकतम निस्सरण के लिए कंठ पर दाब, पश्चदाब विचरण का प्रभाव, तुंडों में भाप का अधिसंतृप्त प्रवाह, विलसन रेखा।

4.3 आंतरिक एवं बाह्य अप्रतिक्रम्यता के साथ रैंकिन चक्र, पुनस्ताप गुणक, पुनस्तापन एवं पुनर्जनन, अधिनियंत्रण विधियाँ, पश्च दाब एवं उपनिकासन टरबाइन।

4.4 भाप शक्ति संयंत्र - संयुक्त चक्र शक्ति जनन, उष्मा पुनःप्राप्ति भाप जनित्र (HRSG) तप्त एवं अतप्त, सहजनन संयंत्र।

5. प्रशीतन एवं वातानुकूलन :

5.1 वाष्प संपीडन प्रशीतन चक्र –p-H एवं T-s आरेखों पर चक्र, पर्यावरण अनुकूली प्रशीतक द्रव्य -R 134 a, R 123, वाष्पित्र, द्रवजित्र, प्रसरण साधन जैसे तंत्र, संरल वाष्प अवशोषण तंत्र।

5.2 आर्द्रतामिति - गुणधर्म, प्रक्रम, लेखाचित्र, संवेद्य तापन एवं शीतन, आर्द्रीज रण एवं अनार्द्रीकरण प्रभावी तापक्रम, वातानुकूलन भार परिकलन, सरल वाहिनी अभिकल्प।

चिजित्सा विज्ञान

प्रश्नपत्र-1

1. मानव शरीर :

उपरि एवं अधोशाजाओं, स्ज ंधसंधियों, जूल्हे एवं ज लाई में रक्त एवं तंत्रिज ा संभरज समेत अनुप्रयुक्त शारीर।

सज लशारीर, सक्तसंभरज एवं जिह्वा ज ा लिफीय अपवाह, थायरॉइड, स्तनग्रंथि, जठर, यज़ृत, प्रॉस्टेट, जननग्रंथि एवं जर्भाशय।

डायाफ्राम, पेरीनियम एवं वंजजप्रदेश ज ा अनुप्रयुक्त शारीर।

वृक्ज , मूत्राशय, जर्भाशय नलिज ाओं, शुक्र वाहिज ाओं ज ा रोजलजज शारीर।

भ्रूजविज्ञान : अपरा एवं अपरा रोध. ह्दय, आंत्र, वृक्ज , जर्भशय, डिंबग्रंथि, वृषज ज ा विज ास एवं उनजी सामान्य जन्मजात असामान्यताएं।

जेन्द्रीय एवं परिसरीय स्वसंचालित तंत्रिज ा तंत्र : मस्तिस्ज जे निलयों, प्रमस्तिस्जमेरू द्रव जे परिभ्रमज ज ा सज ल एवं रोजलजज शारीर, तंत्रिज ा मार्ज एवं त्वचीय संवेदन , श्रवज एवं दृष्टि विजति, ज पाल तंत्रिज ाएं, वितरज एवं रोजलाजजिज महत्व, स्वसंचालित तंत्रिज ा तंत्र जे अवयव।

2. मानव शरीर क्रिया विज्ञान :

अवेज ज ा चालन एवं संचरज, संज ुचन जी क्रियाविधि, पंत्रिज ा-पेशीय संचरज, प्रतिवर्त, संतुलन नियंत्रज, संस्थिति एवं पेशी-तान, अवरोही मार्ज, अनुमस्तिष्ज जे जार्य, आधारी जंडिज ाएं, निद्रा एवं चेतना ज ा क्रियाविज्ञान।

अंतःस्रावी तंत्र : हार्मोन क्रिया जी क्रियाविधि, रचना, स्रवज, परिवहन, उपापचय, पैंक्रियाज एवं पीयूष ग्रंथि जे जार्य एवं स्रवज नियमन।

जनन तंत्र ज ा क्रिया विज्ञान : आर्तवचक्र , स्तन्यस्रवज, सजर्भता।

रक्त : विज ास, नियमन एवं रक्तज ोशिज ाओं ज ा परिजाम।

हृद्वाहिज ा, हृद्निस्पादन, रक्तदाब, हृद्वाहिज ा जार्य ज ा नियमन,

3. जैव रसायन :

अंजजार्य परीजज - यज़ृत, वृक्ज ,थायरॉइड

प्रोटीन संश्लेषज।

विटामिन एवं जनिज।

निर्बंधन विजंड दैर्ध्य बहुरुपता (RFLP)

पॉलीमेरेज श्रृंजला प्रतिक्रिया (PCR)

रेडियो -इम्यूनोऐसे (RIA)

4. विज़ृति विज्ञान :

थोथ एवं विरोहज, वृद्धि विजोभ एवं जैन्सर, रहयूमैटिज एवं इस्जीमिज हृदय रोज एवं डायबिटीज मेलिटस ज ा विज़ृतिजनन एवं ऊतज विज़ृति विज्ञान।

सुदम्य,दुर्दम ,प्राथमिज एवं विजेपी दुर्दमता में विभेदन, श्वसनीजन्य जर्सिनोमा ज ा विज़ृतिजनन एवं ऊतज विज़ृति विज्ञान, स्तन जर्सिनोमा, मुज जैंसर, ग्रीवा जैंसर , ल्यूजीमिया, यज़ृत सिरोसिस, स्तवज वृक्ज शोथ, यज्मा, तीव्र अस्थिमज्जाशोथ ज ा हेतु, विज़ृतिजनन एवं ऊतज विज़ृति विज्ञान।

5. सूज्मजैविज ी :

देहद्रवी एवं ज ोशिज ा माध्यमित रोजजमता

निम्नलिजित रोज ज ारज एवं उनज ा प्रयोजशाला निदान:

-मेनिंजोज ोक्ज स, सालमोनेला

-शिंजेला, हर्पीज़, डेंजू, पोलियो

-HIV/AIDS, मलेरिया, ई-हिस्टोलिटिज ा, जियार्डिया

-जैंडिडा, क्रिप्टोज ोक्ज स, ऐस्पर्जिलस

6. भेषजजुज विज्ञान :

निम्नलिजित औषधों जे जार्य जी क्रियाविधि एवं पार्श्वप्रभाव:

-ऐन्टिपायरेटिक्स एवं एनाल्जेसिक्स, ऐन्टिबायोटिक्स, ऐन्टिमलेरिया, ऐन्टिज ालाजार, ऐन्टिडायाबेटिक्स

-ऐन्टिहायपरटेंसिव, ऐन्टिडाइयूरेटिक्स, सामान्य एवं हृद वासोडिलेटर्स, ऐन्टिवाइरल, ऐन्टिपैरासिटिज , ऐन्टिफंजल, इम्यूनोसप्रेशैंट्स

-ऐन्टिजैंसर

7. न्याय संबंधी औषध एवं विषविज्ञान :

जति एवं घावों जी न्यायसंबंधी परीजा, रक्त एवं शुक्र धब्बों जी परीजा, विषाक्तता, शामज अतिमात्रा, फाँसी, डूबना,जलना, DNA एवं फिंजरप्रिंट अध्ययन।

प्रश्नपत्र - 2

1. सामान्य ज ायचिजित्सा :

टेटेनस,रैबीज, AIDS, डेंग्यू, ज ाला-आजार,जापानी एन्सेफेलाइटिस ज ा हेतु, रोज लजज विशेषताएं, निदान एवं प्रबंधन (निवारज सहित) जे सिद्धांत।

निम्नलिजित जे हेतु, रोजलजज विशेषताएं, निदान एवं प्रबंधन जे सिद्धांत-

इस्जीमिज ह्दय रोज, फुफ्फुस अंतः शल्यता

श्वसनी अस्थमा

फुफ्फुसावरजी निःसरज, यज्मा, अपावशोषज संलजज, अम्ल पेप्टिज रोज, विषाजुज यज़ृतशोथ एवं यज़ृत सिरोसिस।

स्तवज वृक्ज शोथ एवं जोजिज ावृक्ज शोथ, वृक्ज पात, अपवृक्जीय संलजज, वृक्ज वाहिज ा अतिरिक्तदाब, डायबिटीज मेलिटस जे उपद्रव, स्ज ंदनविज ार, ल्यूजीमिया, अव-एवं-अति-थॉयरॉइडिज्म, मेनिन्जायटिस एवं एन्सेफेलाइटिस।

चिजित्सजीय समस्याओं में इमेजिंज, अल्ट्रासाउंड, ईजोज ार्डियोग्राम, CT स्जैन, MRI.

चिंता एवं अवसाद मनोविजिप्ति एवं विजंडित- मनस्ज ता तथा E.C.T.

2. बालरोज विज्ञान :

रोजप्रतिरोधीज रज, बेबी-फ्रेंडली अस्पताल, जन्मजात श्याव हृदय रोज श्वसन विजोभ संलजज, श्वसनी-फुफ्फुसशोथ, प्रमस्तिष्जीय न्यवजात ज ामला, IMNCI वर्जीज रज एवं प्रबंधन, PEM ज ोटिज रज एवं प्रबंध। ARI एवं पाँच वर्ष से छोटे शिशुओं जी प्रवाहिज ा एवं उसज ा प्रबंध।

3. त्वचा विज्ञान :

सोरिएसिस, एलर्जिज डर्मेटाइटिस, स्ज ेबीज, एक्ज़ीमा , विटिलिजो,स्टीवन्जॉनसन संलजज, लाइजेन प्लेनस।

4. सामान्य शल्य चिजित्सा:

जंडतालु जंडोष्ठ जी रोजलजज विशेषता, ज ारज एवं प्रबंध जे सिद्धांत।

स्वरयंत्रीय अर्बुद, मुज एवं ईसोफेजस अर्बुद।

परिधीय धमनी रोज, वैरिज ोज वेन्स, महाधमनी संज ुचन

थायरॉइड, अधिवृक्ज ग्रंथि जे अर्बुद

फोड़ा, जैंसर, स्तन ज ा तंतुग्रंथि अर्बुद एवं ग्रंथिलता

पेप्टिज अल्सर रक्तस्राव, आंत्र यज्मा, अल्सरेटिव ज ोलाइटिस, जठर जैंसर वृक्ज मास , प्रोस्टेट जैंसर

हीमोथोरैक्स, पित्ताशय, वृक्ज ,यूरेटर एवं मूत्राशय जी पथरी. रेक्टम, एनस,एनल जैनल, पित्ताशय, एवं पित्तवाहिनी जी शल्य दशाओं ज ा प्रबंध

स्प्लीनोमेजैली, ज ोलीसिस्टाइटिस, पोर्टल अतिरक्तदाब, यज़ृत फोड़ा, पेरीटोनाइटिस, पैंक्रियाज शीर्ष जर्सिनोमा.

रीढ़ विभंज, ज ोली विभंज एवं अस्थि ट्यूमर

एंडोस्ज ोपी

लैप्रोस्ज ोपिज सर्जरी

5. प्रसूति विज्ञान एवं परिवार नियोजन समेत स्त्री रोज विज्ञान :

सजर्भता ज ा निदान

प्रसव प्रबंध, तृतीय चरज जे उपद्रव,प्रसवपूर्ज एवं प्रसवोत्तर रक्त स्राव, न्वजात ज ा पुनरूज्जीवन, असामान्य स्थिति एवं ज ठिन प्रसव ज ा प्रबंध,ज ालपूर्व (प्रसव) न्वजात ज ा प्रबंध.

अरक्तता ज ा निदान एवं प्रबंध.

सजर्भता ज ा प्रीएक्लैंप्सिया एवं टॉक्सीमिया, रजोनिवृत्युत्तर संलजज ज ा प्रबंध. इंट्रा-यूटेरीन युक्तियाँ, जोलियाँ, ट्यूबेक्टॉमी एवं वैसेक्टॉमी.

सजर्भता ज ा चिजित्सजीय समापन जिसमें विधिज पहलू शामिल हैं.

जीवा जैंसर .

ल्यूरोटिया,श्रोजि वेदना, वंध्यता,डिसफंक्शनल यूटेरीन रक्तस्राव (DUB), अमीनोरिया, यूटरस ज ा तंतुपेशी अर्बुद एवं भ्रंश.

6. समुदाय ज ायचिजित्सा (निवारज एवं सामाजिज ज ायचिजित्सा) :

सिद्धांत, प्रजाली, उपाजम एवं जानपदिज रोज विज्ञान ज ा मापन; पोषज, पोषज संबंधी रोज/विज ार एवं पोषज जार्यक्रम

स्वास्थ्य सूचना संग्रहज, विश्लेषज एवं प्रस्तुति.

निम्नलिजित जे नियंत्रज/उन्मूलन जे लिए राष्ट्रीय जार्यक्रमों जे उद्देश्य, घटज एवं क्रांतिज विश्लेषज :

मलेरिया, ज ालाआजार, फाइलेरिया एवं यज्मा; HIV/AIDS, यौन संक्रमित रोज एवं डेंजू

स्वास्थ्य देजभाल प्रदाय प्रजाली ज ा क्रांतिज मूल्यांजन स्वास्थ्य प्रबंधन एवं प्रशासन : तज नीज , साधन, जार्यक्रम ज ार्यान्वयन एवं मूल्यांजन

जनन एवं शिशु स्वास्थ्य जे उद्देश्य, घटज , लज्य एवं स्थिति, रास्ट्रीय ग्रामीज स्वास्थ्य मिशन एवं सहस्राब्दी विज ास लज्य.

अस्पताल एवं औद्योजिज अपशिष्ट प्रबंध.

दर्शनशास्त्र

प्रश्नपत्र-1

दर्शन ज ा इतिहास एवं समस्याएं :

1. प्लेटो एवं अरस्तू: प्रत्यय; द्रव्य; आज ार एवं पुद्जल; जार्यज ारज भाव; वास्तविज ता एवं शक्यता.
2. तर्जबुद्धिवाद (देज ार्त, स्पिनोजा, लीबनिज): देज ार्त जी पद्धति एवं असंदिग्ध ज्ञान; द्रव्य; परमात्मा; मन-शरीर द्वैतवाद; नियतत्ववाद एवं स्वातंत्र्य.
3. इंद्रियानुभव वाद (लॉज , बर्ज ले, ह्यूम): ज्ञान ज ा सिद्धांत; द्रव्य एवं जुज; आत्मा एवं परमात्मा; संशयवाद.
4. ज ांट : संश्लेषात्मज प्राजनुभविज निर्जय जी संभवता:दिज् एवं ज ाल; पदार्थ; तर्ज बुद्धि प्रत्यय; विप्रतिषेध; परमात्मा जे अस्तित्व जे प्रमाजों जी मीमांसा.
5. हीजेल : द्वंद्वात्मज प्रजाली; परमप्रत्ययवाद.
6. मूर, रसेल एवं पूर्ववर्ती विट्जेन्स्टीन: सामान्य बुद्धि ज ा मंडन; प्रत्ययवाद ज ा जंडन; तार्जिज परमाजवाद; तार्जिज रचना; अपूर्ज प्रतीज ; अर्थ ज ा चित्र सिद्धांत; उक्ति एवं प्रदर्शन.
7. तार्जिज प्रत्यजवाद : अर्थ ज ा सत्यापन सिद्धांत; तत्वमीमांसा ज ा अस्वीज ार; अनिवार्य प्रतिज्ञप्ति ज ा भाषिज सिद्धांत.
8. उत्तरवर्ती विट्जेंस्टीन : अर्थ एवं प्रयोज; भाषा - जेल: व्यक्ति भाषा जी मीमांसा.
9. संवृतिशास्त्र (हर्सल) : प्रजाली ;सार सिद्धांत; मनोविज्ञानपरता ज ा परिहार.
10. अस्तित्वपरज तावाद (ज ीर्ज जार्द, सार्त्र, हीडेजर): अस्तित्व एवं सार; वरज, उत्तर दायित्व एवं प्रामाजिज अस्तित्व; विश्व-निसत् एवं ज ालसत्ता.
11. क्वाइन एवं स्ट्रॉसन : इंद्रियानुभववाद जी मीमांसा; मूल विशिष्ट एवं व्यक्ति ज ा सिद्धांत.
12. चार्वाज : ज्ञान ज ा सिद्धांत; अतींद्रिय सत्वों ज ा अस्वीज ार.
13. जैनदर्शन : सत्ता ज ा सिद्धांत; सप्तभंजी न्याय; बंधन एवं मुक्ति.
14. बौद्धदर्शन संप्रदाय : प्रतीत्यसमुत्पाद; जजिज वाद, नैरात्म्यवाद.
15. न्याय-वैशेषिज : पदार्थ सिद्धांत; आभास सिद्धांत; प्रमाज सिद्धांत; आत्मा, मुक्ति; परमात्मा; परमात्मा जे अस्तित्व जे प्रमाज; जार्यज ारज-भाव ज ा सिद्धांत, सृष्टि ज ा परमाजुवादी सिद्धांत.
16. सांज्य : प्रज़ृति; पुरुष; जार्यज ारज-भाव; मुक्ति.
17. योज : चित्त; चित्तवृत्ति; क्लेश; समाधि; जैवल्य.
18. मीमांसा : ज्ञान ज ा सिद्धांत
19. वेदांत संप्रदाय : ब्रह्मन; ईश्वर; आत्मन; जीव; जजत; माया; अविद्या; अध्यास; मोज; अपृथज सिद्धि; पंचविधभेद.
20. अरविंद : विज ास, प्रतिविज ास; पूर्ज योज.

प्रश्नपत्र - 2

सामाजिज -राजनैतिज दर्शन :

1. सामाजिज एवं राजनैतिज आदर्श : समानता, न्याय, स्वतंत्रता.
2. प्रभुसत्ता : आस्टिन बोदाँ, लास्ज ी, जैटिल्य.
3. व्यक्ति एवं राज्य : अधिज ार; जर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व.
4. शासन जे प्रज ार : राजतंत्र; धर्मतंत्र एवं लोज तंत्र.
5. राजनैतिज विचारधाराएँ: अराजज तावाद; मार्क्सवाद एवं समाजवाद.
6. मानववाद; धर्मनिरपेजतावाद; बहुसंस्ज़ृतिवाद.
7. अपराध एवं दंड : भ्रष्टाचार, व्यापज हिंसा, जातिसंहार, प्राजदंड.
8. विज ास एवं सामाजिज उन्नति.
9. लिंज भेद : स्त्रीभ्रूज हत्या, भूमि एवं संपत्ति अधिज ार; सशक्तिज रज.
10. जाति भेद : जाँधी एवं अंबेडज र.

धर्म दर्शन :

1. ईश्वर जी धारजा : जुज; मनुष्य एवं विश्व से संबंध (भारतीय एवं पाश्चात्य).
2. ईश्वर जे अस्तित्व जे प्रमाज और उसजी मीमांसा (भारतीय एवं पाश्चात्य).
3. अशुभ जी समस्या.
4. आत्मा : अमरता; पुनर्जन्म एवं मुक्ति.
5. तर्ज बुद्धि, श्रुति एवं आस्था.
6. धार्मिज अनुभव : प्रज़ृति एवं वस्तु (भारतीय एवं पाश्चात्य).
7. ईश्वर रहित धर्म.
8. धर्म एवं नैतिज ता.
9. धार्मिज शुचिता एवं परम सत्यता जी समस्या.
10. धार्मिज भाषा जी प्रज़ृति : सादृश्यमूलज एवं प्रतीज ात्मज ; संज्ञानवादी एवं निस्संज्ञानवादी.

भौतिकी

प्रश्न-पत्र -1

1. (क) कण यांत्रिकी :

गतिनियम, ऊर्जा एवं संवेग का संरक्षण, घूर्णी फ्रेम पर अनुप्रयोग, अपकेंद्री एवं कोरियालिस त्वरण; केंद्रीय बल के अंतर्गत गति; कोणीय संवेग का संरक्षण, केप्लर नियम; क्षेत्र एवं विभव; गोलीय पिंडों के कारण गुरुत्व क्षेत्र एवं विभव; गौस एवं प्वासों समीकरण, गुरुत्व स्वऊर्जा; द्विपिंड समस्या; समानीत द्रव्यमान; रदरफोर्ड प्रकीर्णन; द्रव्यमान केंद्र एवं प्रयोगशाला संदर्भ फ्रेम.

(ख) दृढ़ पिंडों की यांत्रिकी :

कणनिकाय; द्रव्यमान केंद्र, कोणीय संवेग, गति समीकरण; ऊर्जा, संवेग एवं कोणीय संवेग के संरक्षण प्रमेय; प्रत्यास्थ एवं अप्रत्यास्थ संघट्टन; दृढ़ पिंड; स्वातंत्र्य कोटियां, आयलर प्रमेय, कोणीय वेग, कोणीय संवेग, जड़त्व आघूर्ण, समांतर एवं अभिलंब अक्षों के प्रमेय, घूर्णन हेतु गति का समीकरण; आण्विक घूर्णन (दृढ़ पिंडों के रूप में); द्वि एवं त्रि - परमाण्विक अणु, पुरस्सरण गति, भ्रमि, घूर्णाक्षस्थापी.

(ग) संतत माध्यमों की यांत्रिकी :

प्रत्यास्थता, हुक का नियम एवं समदैशिक ठोसों के प्रत्यास्थतांक तथा उनके अंतर्संबंध; प्रवाहरेखा (स्तरीय) प्रवाह, श्यानता, प्वाज़य समीकरण, बरनूली समीकरण, स्टोक नियम एवं उसके अनुप्रयोग.

(घ) विशिष्ट आपेक्षिकता :

माइकल्सन - मोर्ले प्रयोग एवं इसकी विवक्षाएं; लॉरेंज रूपांतरण - दैर्घ्य -संकुंचन, कालवृद्धि, आपेक्षिकीय वेगों का योग, विपथन तथा डॉप्लर प्रभाव, द्रव्यमान - ऊर्जा संबंध, क्षय प्रक्रिया से सरल अनुप्रयोग; चतुर्विमीय संवेग सदिश; भौतिकी के समीकरणों के सहप्रसरण.

2. तरंग एवं प्रकाशिकी :

(क) तरंग :

सरल आवर्त गति, अवमंदित दोलन, प्रणोदित दोलन तथा अनुनाद; विस्पंद; तंतु में स्थिर तरंगें; स्पंदन तथा तरंग संचायिकाएं; प्रावस्था तथा समूह वेग; हाइगेन के सिद्धांत से परावर्तन तथा अपवर्तन.

(ख) ज्यामितीय प्रकाशिकी :

फरमैट के सिद्धांत से परावर्तन तथा अपवर्तन के नियम, उपाक्षीय प्रकाशिकी में आव्यूह पद्धति - पतले लेंस के सूत्र, निस्पंद तल, दो पतले लेंसों की प्रणाली, वर्ण तथा गोलीय विपथन.

(ग) व्यतिकरण :

प्रकाश का व्यतिकरण - यंग का प्रयोग, न्यूटन वलय, तनु फिल्मों द्वारा व्यतिकरण, माइकल्सन व्यतिकरणमापी; विविध किरणपुंज व्यतिकरण एवं फैब्री - पेरट व्यतिकरणमापी.

(घ) विवर्तन :

फ्रानहोफर विवर्तन - एकल रेखाछिद्र, द्विरेखाछिद्र, विवर्तन ग्रेटिंग, विभेदन क्षमता; वृत्तीय द्वारक द्वारा विवर्तन तथा वायवीय पैटर्न; फ्रेसनेल विवर्तन; अर्द्ध आवर्तन जोन एवं जोन प्लेट, वृत्तीय द्वारक.

(ङ) ध्रुवीकरण एवं आधुनिक प्रकाशिकी :

रेखीय तथा वृत्तीय ध्रुवित प्रकाश का उत्पादन तथा अभिज्ञान; द्विअपवर्तन, चतुर्थांश तरंग प्लेट; प्रकाशीय सक्रियता; रेशा प्रकाशिकी के सिद्धांत, क्षीणन; स्टेप इंडेक्स तथा परवलयिक इंडेक्स तंतुओं में स्पंद परिक्षेपण; पदार्थ परिक्षेपण, एकल रूप रेशा; लेसर - आइन्स्टाइन A तथा B गुणांक, रूबी एवं हीलियम नियॉन लेसर; लेसर प्रकाश की विशेषताएं - स्थानिक तथा कालिक संबद्धता; लेसर किरण पुंजों का फोकसन; लेसर क्रिया के लिए त्रि-स्तरीय योजना; होलोग्राफी एवं सरल अनुप्रयोग.

3. विद्युत एवं चुंबकत्व :

(क) स्थिर वैद्युत एवं स्थिर चुंबकीय :

स्थिर वैद्युत में लाप्लास एवं प्वासों समीकरण एवं उनके अनुप्रयोग; आवेश निकाय की ऊर्जा, अदिश विभव का बहुध्रुव प्रसार; प्रतिबिम्ब विधि एवं उसका अनुप्रयोग; द्विध्रुव के कारण विभव एवं क्षेत्र, बाह्य क्षेत्र में द्विध्रुव पर बल एवं बल आघूर्ण. परावैद्युत ध्रुवण; परिसीमा - मान समस्या का हल - एकसमान वैद्युत क्षेत्र में चालन एवं परवैद्युत गोलक; चुंबकीय कोश, एकसमान चुंबकित गोलक, लोह चुंबकीय पदार्थ, शैथिल्य, ऊर्जाह्रास.

(ख) धारा विद्युत :

किरचॉफ नियम एवं उनके अनुप्रयोग; बायो-सवार्ट नियम, ऐम्पियर नियम, फराडे नियम, लेंज नियम; स्व एवं अन्योन्य प्रेरकत्व; प्रत्यावर्ती धारा (AC) परिपथ में माध्य एवं वर्गमाध्य मूल (rms) मान, RL एवं C घटक वाले DC एवं AC- परिपथ; श्रेणीबद्ध एवं समांतर अनुनाद; गुणता कारक; परिणामित्र के सिद्धांत.

(ग) विद्युतचुंबकीय तरंगें एवं कृष्णिका विकिरण :

विस्थापन धारा एवं मैक्सवेल के समीकरण; निर्वात में तरंग समीकरण, प्वाइंटिंग प्रमेय; सदिश एवं अदिश विभव; विद्युत चुंबकीय क्षेत्र प्रदिश, मैक्सवेल समीकरणों का सहप्रसरण; समदैशिक परावैद्युत में तरंग समीकरण, दो परावैद्युतों की परिसीमा पर परावर्तन तथा अपवर्तन; फ्रेसनल संबंध; पूर्ण आंतरिक परावर्तन; प्रसामान्य एवं असंगत वर्ण विक्षेपण; रेले प्रकीर्णन; कृष्णिका विकिरण एवं प्लैंक विकिरण नियम, स्टीफन - बोल्ट्जमैन नियम, वियेन विस्थापन नियम एवं रेले - जीन्स नियम.

4. तापीय एवं सांख्यिकीय भौतिकी :

(क) उष्मागतिकी :

ऊष्मागतिकी का नियम, उत्क्रम्य तथा अप्रतिक्रम्य प्रक्रम, एन्ट्रॉपी, समतापी, रूद्धोष्म, समदाब, समआयतन प्रक्रम एवं एन्ट्रॉपी परिवर्तन; ओटो एवं डीजल इंजिन, जिब्स प्रावस्था नियम एवं रासायनिक विभव, वास्तविक गैस अवस्था के लिए वांडरवाल्स समीकरण, क्रांतिक स्थिरांक, आण्विक वेग का मैक्सवेल बोल्ट्जमान वितरण, परिवहन परिघटना, समविभाजन एवं वीरियल प्रमेय; ठोसों की विशिष्ट उष्मा के ड्यूलांग - पेटी, आइंस्टाइन, एवं डेबी सिद्धांत; मैक्सवेल संबंध एवं अनुप्रयोग; क्लासियस क्लेपरॉन समीकरण, रूद्धोष्म विचुंबकन, जूल केल्विन प्रभाव एवं गैसों का द्रवण.

(ख) सांख्यिकीय भौतिकी :

स्थूल एवं सूक्ष्म अवस्थाएं, सांख्यिकीय बंटन, मैक्सवेल - बोल्ट्जमान, बोस - आइंस्टाइन एवं फर्मी - डिराक बंटन, गैसों की विशिष्ट ऊष्मा एवं कृष्णिका विकिरण में अनुप्रयोग; नकारात्मक ताप की संकल्पना.

प्रश्न-पत्र-2

1. क्वांटम यांत्रिकी :

कण तरंग द्वैतता, श्रोडिंजर समीकरण एवं प्रत्याशामान; अनिश्चितता सिद्धांत, मुक्तकण, बॉक्स में कण, परिमित कूप में कण के लिए एक विमीय श्रोडिंजर समीकरण का हल (गाउसीय तरंग - वेस्टन), रैखिक आवर्ती लोलक; पग - विभव द्वारा एवं आयताकार रोधिका द्वारा परावर्तन एवं संचरण; त्रिविमीय बॉक्स में कण, अवस्थाओं का घनत्व, धातुओं का मुक्त इलेक्टॉन सिद्धांत, कोणीय संवेग, हाइड्रोजन परमाणु; अर्द्धप्रचक्रण कण, पाउली प्रचक्रण आव्यूहों के गुणधर्म.

2. परमाण्विक एवं आण्विक भौतिकी :

स्टर्न - गर्लक प्रयोग, इलेक्ट्रॉन प्रचक्रण, हाइड्रोजन परमाणु की सूक्ष्म संरचना; L-S युग्मन, J-J युग्मन, परमाणु अवस्था का स्पेक्ट्रमी संकेतन, जीमान प्रभाव; फ्रैंक कंडोन सिद्धांत एवं अनुप्रयोग; द्विपरमाणुक अणु के घूर्णनी, कंपनिक एवं इलेक्ट्रॉनिक स्पेक्ट्रम का प्राथमिक सिद्धांत; रमन प्रभाव एवं आण्विक संरचना; लेसर रमन स्पेक्ट्रमिकी; खगोलिकी में उदासीन हाइड्रोजन परमाणु, आण्विक हाइड्रोजन एवं आण्विक हाइड्रोजन आयॉन का महत्व; प्रतिदिप्ति एवं स्फुरदीप्ति; NMR एवं EPR का प्राथमिक सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, लैम्बसृति की प्राथमिक धारणा एवं इसका महत्व.

3. नाभिकीय एवं कण भौतिकी :

मूलभूत नाभिकीय गुणधर्म - आकार, बंधन ऊर्जा, कोणीय संवेग, समता, चुंबकीय आघूर्ण; अर्द्ध- आनुभविक द्रव्यमान सूत्र एवं अनुप्रयोग, द्रव्यमान परवलय; ड्यूटेरॉन की मूल अवस्था, चुंबकीय आघूर्ण एवं अकेंद्रीय बल; नाभिकीय बलों का मेसॉन सिद्धांत, नाभिकीय बलों की प्रमुख विशेषताएं; नाभिक का कोश मॉडल - सफलताएं एवं सीमाएं; बीटाह्रास में समता का उल्लंघन; गामा ह्रास एवं आंतरिक रूपांतरण, मासबौर स्पेक्ट्रमिकी की प्राथमिक धारणा; नाभिकीय अभिक्रियाओं का Q मान; नाभिकीय विखंडन एवं संलयन, ताराओं में ऊर्जा उत्पादन; नाभिकीय रियेक्टर.

मूल कणों का वर्गीकरण एवं उनकी अन्योन्यक्रियाएं; संरक्षण नियम; हैड्रॉनों की क्वार्क संरचना; क्षीण वैद्युत एवं प्रबल अन्योन्य क्रिया का क्षेत्र - क्वांटा; बलों के एकीकरण की प्राथमिक धारणा; न्यूट्रिनों की भौतिकी.

4. ठोस अवस्था भौतिकी, यंत्र एवं इलेक्ट्रॉनिकी :

पदार्थ की क्रिस्टलीय एवं अक्रिस्टलीय संरचना; विभिन्न क्रिस्टल निकाय, आकाशी समूह; क्रिस्टल संरचना निर्धारण की विधियां; X-किरण विवर्तन, क्रमवीक्षण एवं संचरण इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी; ठोसों का पट्ट सिद्धांत - चालक, विद्युतरोधी एवं अर्द्धचालक; ठोसों के तापीय गुणधर्म, विशिष्ट ऊष्मा, डेबी सिद्धांत; चुंबकत्व; प्रति, अनु एवं लोह चुंबकत्व; अतिचालकता के अवयव, माइस्नर प्रभाव, जोसेफसन संधि एवं अनुप्रयोग; उच्च तापक्रम अतिचालकता की प्राथमिक धारणा.

नैज एवं बाह्य अर्द्धचालक; p-n-p एवं n-p-n ट्रांजिस्टर, प्रवर्धक एवं दोलित्र, संक्रियात्मक प्रवर्धक; FET, JFET एवं MOSFET; अंकीय इलेक्ट्रॉनिकी - बूलीय तत्समक, डी मॉर्गन नियम, तर्क द्वार एवं सत्य सारणियाँ; सरल तर्क परिपथ; ऊष्म प्रतिरोधी, सौर सेल; माइक्रोप्रोसेसर एवं अंकीय कंप्यूटरों के मूल सिद्धांत.

राजनीति विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध

प्रश्न-पत्र -1

राजनैतिक सिद्धांत एवं भारतीय राजनीति:

1. राजनैतिक सिद्धांत :अर्थ एवं उपागम.
2. राज्य के सिद्धांत :उदारवादी, नवउदारवादी, मार्क्सवादी, बहुवादी, पश्च-उपनिवेशी एवं नारी-अधिकारवादी.
3. न्याय:रॉल के न्याय के सिद्धांत के विशेष संदर्भ में न्याय के संप्रत्यय एवं इसके समुदायवादी समालोचक।
4. समानता: सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक;समानता एवं स्वतंत्रता के बीच संबंध;सकारात्मक कार्य.
5. अधिकार: अर्थ एवं सिद्धांत; विभिन्न प्रकार के अधिकार; मानवाधिकार की संकल्पना.
6. लोकतंत्र: क्लासिकी एवं समकालीन सिद्धांत; लोकतंत्र के विभिन्न मॉडल - प्रतिनिधिक, सहभागी एवं विमर्शी.
7. शक्ति, प्राधान्य, विचारधारा एवं वैधता की संकल्पना.
8. राजनैतिक विचारधाराएं: उदारवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद,फासीवाद,गाँधीवाद एवं नारी-अधिकारवाद.
9. भारतीय राजनैतिक चिंतन: धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं बौद्ध परंपराएं;सर सैयद अहमद खान, श्री अरविंद, एम.के. गाँधी, बी. आर. अम्बेडकर, एम.एन.रॉय.
10. पाश्चत्य राजनैतिक चिंतन: प्लेटो अरस्तू, मैकियावेली, हॉब्स, लॉक, जॉन एस.मिल, मार्क्स, ग्राम्स्की, हान्ना आरेन्ट.

भारतीय शासन एवं राजनीति:

1. भारतीय राष्ट्रवाद:
   (क) भारत के स्वाधीनता संग्राम की राजनैतिक कार्यनीतियां : संविधानवाद से जन सत्याग्रह, असहयोग, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो; उग्रवादी एवं क्रांतिकारी आंदोलन, किसान एवं कामगार आंदोलन.
   (ख) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के परिप्रेक्ष्य :उदारवादी, समाजवादी एवं मार्क्सवादी; उग्रमानवतावादी एवं दलित.
2. भारत के संविधान का निर्माण : ब्रिटिश शासन का रिक्थ; विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य.
3. भारत के संविधान की प्रमुख विशेषताएं : प्रस्तावना, मौलिक अधिकार तथा कर्त्तव्य, नीति निर्देशक सिद्धांत, संसदीय प्रणाली एवं संशोधन प्रक्रिया; न्यायिक पुनर्विलोकन एवं मूल संरचना सिद्धांत.
4. (क) संघ सरकार के प्रधान अंग : कार्यपालिका, विधायिका एवं सर्वोच्च न्यायालय की विचारित भूमिका एवं वास्तविक कार्यप्रणाली .
   (ख) राज्य सरकार के प्रधान अंग : कार्यपालिका, विधायिका एवं उच्च न्यायालयों की विचारित भूमिका एवं वास्तविक कार्यप्रणाली .
5. आधारिक लोकतंत्र : पंचायती राज एवं नगर शासन; 73 वें एवं 74 वें संशोधनों का महत्व; आधारिक आंदोलन.
6. सांविधिक संस्थाएं / आयोग : निर्वाचन आयोग, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, वित्त आयोग, संघ लोक सेवा आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जातियां आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजातियां आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग.
7. संघराज्य पद्धति : सांविधानिक उपबंध, केन्द्र राज्य संबंधों का बदलता स्वरूप, एकीकरणवादी प्रवृत्तियां एवं क्षेत्रीय आकांक्षाएं; अंतर-राज्य विवाद.
8. योजना एवं आर्थिक विकास : नेहरूवादी एवं गाँधीवादी परिप्रेक्ष्य, योजना की भूमिका एवं निजी क्षेत्र, हरित क्रान्ति, भूमि सुधार एवं कृषि संबंध, उदारीकरण एवं आर्थिक सुधार.
9. भारतीय राजनीति में जाति, धर्म एवं नृजातीयता.
10. दल प्रणाली : राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय राजनैतिक दल, दलों के वैचारिक एवं सामाजिक आधार, बहुदलीय राजनीति के स्वरूप; दबाव समूह, निर्वाचक आचरण की प्रवृत्तियां, विधायकों के बदलते सामाजिक - आर्थिक स्वरूप.
11. सामाजिक आंदोलन : नागरिक स्वतंत्रताएं एवं मानवाधिकार आंदोलन; महिला आंदोलन, पर्यावरण आंदोलन.

प्रश्न-पत्र-2

तुलनात्मक राजनीति तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध

तुलनात्मक राजनैतिक विश्लेषण एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति

1. तुलनात्मक राजनीति : स्वरूप एवं प्रमुख उपागम; राजनैतिक अर्थव्यवस्था एवं राजनैतिक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य; तुलनात्मक प्रक्रिया की सीमाएं.
2. तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राज्य; पूंजीवादी एवं समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं में राज्य के बदलते स्वरूप एवं उनकी विशेषताएं तथा उन्नत औद्योगिक एवं विकासशील समाज.
3. राजनैतिक प्रतिनिधान एवं सहभागिता : उन्नत औद्योगिक एवं विकासशील समाजों में राजनैतिक दल, दबाव समूह एवं सामाजिक आंदोलन.
4. भूमंडलीकरण : विकसित एवं विकासशील समाजों से प्राप्त अनुक्रियाएं.
5. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के उपागम : आदर्शवादी, यथार्थवादी, मार्क्सवादी, प्रकार्यवादी, एवं प्रणाली सिद्धांत.
6. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में आधारभूत संकल्पनाएं : राष्ट्रीय हित, सुरक्षा एवं शक्ति; शक्तिसंतुलन एवं प्रतिरोध; पर-राष्ट्रीय कर्ता एवं सामूहिक सुरक्षा; विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एवं भूमंडलीकरण.
7. बदलती अंतर्राष्ट्रीय राजनीति व्यवस्था :
   (क) महाशक्तियों का उदय; कार्यनीतिक एवं वैचारिक द्विध्रुवीयता, शस्त्रीकरण की होड़ एवं शीत युद्ध; नाभिकीय खतरा.
8. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का उद्भव : ब्रेट-वुड से विश्व व्यापार संगठन तक. समाजवादी अर्थव्यवस्थाएं तथा पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद (CMEA); नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की तृतीय विश्व की मांग; विश्व अर्थव्यवस्था का भूमंडलीकरण.
9. संयुक्त राष्ट्र : विचारित भूमिका एवं वास्तविक लेखा-जोखा; विशेषीकृत संयुक्त राष्ट्र अभिकरण -लक्ष्य एवं कार्यकरण; संयुक्त राष्ट्र सुधारों की आवश्यकता.
10. विश्व राजनीति का क्षेत्रीयकरण : EU, ASEAN, APEC, SAARC, NAFTA.
11. समकालीन वैश्विक सरोकार : लोकतंत्र, मानवाधिकार, पर्यावरण, लिंग-न्याय, आतंकवाद, नाभिकीय प्रसार.

भारत तथा विश्व :

1. भारत की विदेश नीति : विदेश-नीति के निर्धारक; नीति निर्माण की संस्थाएं; निरंतरता एवं परिवर्तन.
2. गुट निरपेक्षता आंदोलन को भारत का योगदान : विभिन्न चरण; वर्तमान भूमिका .
3. भारत और दक्षिण एशिया :
   (क) क्षेत्रीय सहयोग : SAARC -पिछले निष्पादन एवं भावी प्रत्याशाएं.
   (ख) दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र के रूप में.
   (ग) भारत की पूर्व अभिमुखन नीति.
   (घ) क्षेत्रीय सहयोग की बाधाएं : नदी जल विवाद; अवैध सीमा पार उत्प्रवासन; नृजातीय द्वंद्व एवं उपप्लव; सीमा विवाद.
4. भारत एवं वैश्विक दक्षिण : अफ्रीका एवं लातीनी अमेरिका के साथ संबंध; NIEO एवं WTO वार्ताओं के लिए आवश्यक नेतृत्व की भूमिका.
5. भारत एवं वैश्विक शक्ति केन्द्र : संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप संघ (EU), जापान चीन और रूस.
6. भारत एवं संयुक्त राष्ट्र प्रणाली : संयुक्त राष्ट्र शान्ति अनुरक्षण में भूमिका; सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की मांग.

7. भारत एवं -ाभिजीय प्रश्-ा : बदलते प्रत्यजज एवं -ीति.
8. भारतीय विदेश -ीति में हाल जे विजास : अफजानिस्ता-ा में हाल जे संजट पर भारत जी स्थिति, इराज एवं पश्चिम एशिया; US एवं इजराइल जे साथ बढ़ते संबंध; -ई विश्व व्यवस्था जी दृष्टि.

म-ोविज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

म-ोविज्ञा-ा जे आधार

1. परिचय :
म-ोविज्ञा-ा जी परिभाषा. म-ोविज्ञा-ा जा ऐतिहासिज पूर्ववृत्त एवं 21वीं शताब्दी में प्रवृत्तियाँ. म-ोविज्ञा-ा एवं वैज्ञा-िज पद्धति, म-ोविज्ञा-ा जा अ-य सामाजिज और प्राजृतिज विज्ञा-ों से संबंध; सामाजिज समस्याओं में म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोज.

2. म-ोविज्ञा-ा जी पद्धति :
अ-ुसंधा-ा जे प्रजार- वर्ज-ात्मज, मूल्यांज-ी, -ैदा-िज एवं पूर्वा-ुमा-िज. अ-ुसंधा-ा पद्धति : प्रेजज, सर्वेजज, व्यक्ति अध्यय-ा एवं प्रयोज, प्रयोजात्मज तथा अप्रयोजात्मज अभिजल्प जी विशेषताएँ. परीजज सदृश अभिजल्प ; जे-द्रीय समूह चर्चा, विचारावेश, आधार सिद्धांत उपाजम.

3. अ-ुसंधा-ा प्रजालियाँ :
म-ोवैज्ञा-िज अ-ुसंधा-ा में मुज्य चरज (समस्या ज थ-ा, प्राक्जल्प-ा -िरूपज, अ-ुसंधा-ा अभिजल्प, प्रतिचय-ा, आंजड़ा संज्रह जे उपजरज, विश्लेषज एवं व्याज्या तथा विवरज लेज-ा. मूल जे विरूद्ध अ-ुप्रयुक्त अ-ुसंधा-ा, आंजड़ा संज्रह जी विधियाँ (साजात्जार, प्रेजज, प्रश्-ावली), अ-ुसंधा-ा अभिजल्प (जार्योत्तर एवं प्रयोजात्मज), सांज्यिजी प्रविधियों जा अ-ुप्रयोज (टी-परीजज, द्विमार्जी ए-ोवा, सहसंबंध, समाश्रयज एवं फैक्टर विश्लेषज), मद अ-ुजि्रया सिद्धांत.

4. मा-ाव व्यवहार जा विजास :
वृद्धि एवं विजास ; विजास जे सिद्धांत, मा-ाव व्यवहार जो -िर्धारित जर-ो वाले आ-ुवंशिज एवं पर्यावरजीय जारजों जी भूमिजा; समाजीजरज में सांस्जृतिज प्रभाव; जीव-ा विस्तृति विजास- अभिलजज; विजासात्मज जार्य; जीव-ा विस्तृति जे प्रमुज चरजों में म-ोवैज्ञा-िज स्वास्थ्य जा संवर्ध-ा.

5. संवेद-ा, अवधा-ा और प्रत्यजज :
संवेद-ा : सीमा जी संजल्प-ा, -िरपेज एवं -यू-ातम बोध-भेद देहली, संजेत उपलंभ-ा एवं सतर्जता; अवधा-ा जो प्रभावित जर-ो वाले जारज जिसमें वि-यास एवं उद्दीप-ा अभिलजज शामिल हैं. प्रत्यजज जी परिभाषा और संजल्प-ा, प्रत्यजज में जैविज जारज; प्रात्यजिज संजठ-ा- पूर्व अ-ुभवों जा प्रभाव; प्रात्यजिज रजा-सांतराल एवं जह-ाता प्रत्यज जो प्रभावित जर-ो वाले जारज, आमाप आज्ल-ा एवं प्रात्यजिज तत्परता. प्रत्यजज जी सुज्राह्यता, अतीन्द्रिय प्रत्यजज, संस्जृति एवं प्रत्यजज, अवसीम प्रत्यजज.

6. अधिजम :
अधिजम जी संजल्प-ा तथा सिद्धांत (व्यवहारवादी, जेस्टाल्टवादी एवं सूच-ा प्रजमज मॉडल). विलोप, विभेद एवं सामा-यीजरज जी प्रजि्रयाएँ; जार्यजमबद्ध अधिजम, प्रायिजता अधिजम, आत्म अ-ुदेशात्मज अधिजम; प्रबलीजरज जी संजल्प-ाएँ, प्रजार एवं सारजियाँ; पलाय-ा, परिहार एवं दंड, प्रतिरूपज एवं सामाजिज अधिजम.

7. स्मृति :
संजेत-ा एवं स्मरज; अल्पावधि स्मृति, दीर्घावधि स्मृति, संवेदी स्मृति, प्रतिमापरज स्मृति, अ-ुरज-ा स्मृति; मल्टिस्टोर मॉडल, प्रजमज जे स्तर; संजठ-ा एवं स्मृति सुधार जी स्मरजज-ाजतज-ीजें; विस्मरज जे सिद्धांत; जय, व्यक्तिजरज एवं प्रत्या-याय-ा विफल-ा; अधिस्मृति; स्मृतिलोप; आघातोत्तर एवं अभिघातपूर्व.

8. चिंत-ा एवं समस्या समाधा-ा :
पियाजे जा संज्ञा-ात्मज विजास जा सिद्धांत; संजल्प-ा -िर्माज प्रजम; सूच-ा प्रजमज, तर्ज एवं समस्या समाधा-ा, समस्या समाधा-ा में सहायज एवं बाधाजारी जारज, समस्या समाधा-ा जी विधियाँ: सृज-ात्मज चिंत-ा एवं सृज-ात्मजता जा प्रतिपोषज; -िर्जय-ा एवं अधि-िर्जय जो प्रभावित जर-ो वाले जारज; अभि-ाव प्रवृत्तियाँ.

9. अभिप्रेरज तथा संवेज :
अभिप्रेरज संवेज जे म-ोवैज्ञा-िज एवं शरीरजि्रयात्मज आधार, अभिप्रेरज तथा संवेज जा माप-ा; अभिप्रेरज एवं संवेज जा व्यवहार पर प्रभाव; बाह्य एवं अंतर अभिप्रेरज; आंतर अभिप्रेरज जो प्रभावित जर-ो वाले जारज; संवेजात्मज सजमता एवं संबंधित मुद्दे.

10. बुद्धि एवं अभिजमता :
बुद्धि एवं अभिजमता जी संजल्प-ा, बुद्धि जा स्वरूप एवं सिद्धांत- स्पियरमै-ा, थर्सट-ा, जलफोर्ड बर्-ा-ा, स्टेश-बर्ज एवं जे.पी.दास; संवेजात्मज बुद्धि, सामाजिज बुद्धि, बुद्धि एवं अभिजमता जा माप-ा, बुद्धिलब्धि जी संजल्प-ा, विचल-ा बुद्धिलब्धि, बुद्धिलब्धि स्थिरता; बहु बुद्धि जा माप-ा; तरल बुद्धि एवं जि्रस्टलित बुद्धि.

11. व्यक्तित्व :
व्यक्तित्व जी संजल्प-ा तथा परिभाषा; व्यक्तित्व जे सिद्धांत (म-ोविश्लेषजात्मज, सामाजिज-सांस्जृतिज, अंतर्वैयक्तिज, विजासात्मज, मा-ावतावादी, व्यवहारवादी विशेष जुज एंव जाति उपाजम) ; व्यक्तित्व जा माप-ा (प्रजेपी परीजज, पेंसिल-पेपर परीजज) ; व्यक्तित्व जे प्रति भारतीय दृष्टिजोज; व्यक्तित्व विजास हेतु प्रशिजज. -वी-ातम उपाजम जैसे जि बिज-5 फैक्टर सिद्धांत; विभिन्न परंपराओं में स्व जा बोध.

12. अभिवृत्तियाँ, मूल्य एवं अभिरूचियाँ :
अभिवृत्तियों, मूल्यों एवं अभिरूचियों जी परिभाषाएँ ; अभिवृत्तियों जे घटज ; अधिवृत्तियों जा -िर्माज एवं अ-ुरजज ; अभिवृत्तियों, मूल्यों एवं अभिरूचियों जा माप-ा. अभिवृत्ति परिवर्त-ा जे सिद्धांत, मूल्य प्रतिपोषज जी विधियाँ. रूढ़ धारजाओं एवं पूर्वाज्रहों जा -िर्माज, अ-य जे व्यवहार जो बदल-ा, जुजारोप जे सिद्धांत, अभि-ाव प्रवृत्तियाँ.

13. भाषा एवं संज्ञाप-ा :
मा-ाव भाषा- जुज, संरच-ा एवं भाषाजत सोपा-ा; भाषा-अर्ज-ा - पूर्वा-ुजूलता, जा्रंतिज अवधि, प्राक्जल्प-ा; भाषा विजास जे सिद्धांत (स्जी-र, चोम्स्जी) ; संज्ञाप-ा जी प्रजि्रया एवं प्रजार; प्रभावपूर्ज संज्ञाप-ा एवं प्रशिजज.

14. आधु-िज समजाली-ा म-ोविज्ञा-ा में मुद्दे एवं परिप्रेज्य :
म-ोवैज्ञा-िज प्रयोजशाला एवं म-ोवैज्ञा-िज परीजज में जम्प्यूटर अ-ुप्रयोज; जृत्रिम बुद्धि; साइजोसाइबर-ेटिक्स; चेत-ा--ींद-जाजरज जार्यजमों जा अध्यय-ा; स्वप्-ा, उद्दीप-वंच-ा, ध्या-ा, हिप्-ोटिज/ औषध प्रेरित दशाएँ; अतीन्द्रिय प्रत्यजज; अंतरीन्द्रिय प्रत्यजज मिथ्याभास अध्यय-ा.

प्रश्-ापत्र-2

म-ोविज्ञा-ा : विषय और अ-ुप्रयोज

1. व्यक्तिजत विभिन्नताओं जा वैज्ञा-िज माप-ा :
व्यक्तिजत भिन्नताओं जा स्वरूप, मा-ाजीजृत म-ोवैज्ञा-िज परीजजों जी विशेषताएँ और संरच-ा, म-ोवैज्ञा-िज परीजजों जे प्रजार; म-ोवैज्ञा-िज परीजजों जे उपयोज, दुरूपयोज तथा सीमाएँ. म-ोवैज्ञा-िज परीजाओं जे प्रयोज में -ीतिपरज विषय.

2. म-ोवैज्ञा-िज स्वास्थ्य तथा मा-ासिज विजार :
स्वास्थ्य- अस्वास्थ्य जी संजल्प-ा, सजारात्मज स्वास्थ्य, जल्याज, मा-ासिज विजार (चिंता विजार, म-ा:स्थिति विजार सीजोफ्रेनियाँ तथा भ्रमिज विजार, व्यक्तित्व विजार, तात्विज दुर्व्यवहार विजार), मा-ासिज विजारों जे जारज तत्व, सजारात्मज स्वास्थ्य, जल्याज, जीव-शैली तथा जीव-ा जी जुजवत्ता जो प्रभावित जर-ो वाले जारज.

3. चिजित्सात्मज उपाजम :
म-ोजतिज चिजित्साएँ. व्यवहार चिजित्साएँ; रोजी जेन्द्रित चिजित्साएँ, संज्ञा-ात्मज चिजित्साएँ. देशी चिजित्साएँ (योज, ध्या-ा). जैव पु-र्-ािवेश चिजित्सा. मा-ासिज रूज्जता जी रोजथाम तथा पु-ार्स्थाप-ा. जा्रमिज स्वास्थ्य प्रतिपोषज.

4. जार्यात्मज म-ोविज्ञा-ा तथा संजठ-ात्मज व्यवहार :
जार्मिज चय-ा तथा प्रशिजज. उद्योज में म-ोवैज्ञा-िज परीजजों जा उपयोज. प्रशिजज तथा मा-ाव संसाध-ा विजास. जार्य-अभिप्रेरज सिद्धांत- हर्ज वर्ज, मास्लो, एडम ईक्विटी सिद्धांत, पोर्टर एवं लावलर, ब्रूम ; -ेतृत्व तथा सहभाजी प्रबंध-ा. विज्ञाप-ा तथा विपज-ा. दबाव एवं इसजा प्रबंध-ा; श्रमदजता शास्त्र, उपभोक्ता म-ोविज्ञा-ा, प्रबंधजीय प्रभाविता, रूपांतरज -ेतृत्व, संवेद-ाशीलता प्रशिजज, संजठ-ों में शक्ति एवं राज-ीति.

5. शैजिज जेत्र में म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोज :
अध्याप-ा-अध्यय-ा प्रजि्रया जो प्रभावी ब-ा-ो में म-ोवैज्ञा-िज सिद्धांत. अध्यय-ा शैलियाँ. प्रदत्त, मंदज, अध्यय-ा-हेतु-अजम और उ-ाजा प्रशिजज. स्मरज शक्ति बढ़ा-ो तथा बेहतर शैजजिज उपलब्धि जे लिए प्रशिजज. व्यक्तित्व विजास तथा मूल्य शिजा. शैजिज, व्यावसायिज मार्जदर्श-ा तथा जीविजोपार्ज-ा परामर्श. शैजिज संस्थाओं में म-ोवैज्ञा-िज परीजज. मार्जदर्श-ा जार्यजमों में प्रभावी जार्य-ीतियाँ.

6. सामुदायिज म-ोविज्ञा-ा :
सामुदायिज म-ोविज्ञा-ा जी परिभाषा और संजल्प-ा. सामाजिज जार्यजलाप में छोटे समूहों जी उपयोजिता. सामाजिज चेत-ा जी जाजृति और सामाजिज समस्याओं जो सुलझा-ो जी जार्यवाही. सामाजिज परिवर्त-ा जे लिए सामूहिज -िर्जय ले-ाा और -ेतृत्व प्रदा-ा जर-ाा. सामाजिज परिवर्त-ा जे लिए प्रभावी जार्य -ीतियाँ.

7. पु-ार्वास म-ोविज्ञा-ा :
प्राथमिज, माध्यमिज तथा तृतीयज -िवारज जार्यजम. म-ोवैज्ञा-िजों जी भूमिजा- शारीरिज, मा-ासिज तथा सामाजिज रूप से चु-ौती प्राप्त व्यक्तियों, जैसे वृद्ध व्यक्तियों जे पु-ार्वास-ा जे लिए सेवाओं जा आयोज-ा. पदार्थ दुरूपयोज, जिशोर अपराध, आपराधिज व्यवहार से पीड़ित व्यक्तियों जा पु-ार्वास. हिंसा जे शिजार व्यक्तियों जा पु-ार्वास. HIV/AIDS रोजियों जा पु-ार्वास. सामाजिज अभिजरजों जी भूमिजा.

8. सुविधावंचित समूहों पर म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोज :
सुविधावंचित, वंचित जी संजल्प-ाएँ, सुविधावंचित तथा वंचित समूहों जे सामाजिज, भौतिज, सांस्जृतिज तथा आर्थिज परिजाम. सुविधावंचितों जा विजास जी ओर शिजज तथा अभिप्रेरज. सापेज एवं दीर्घजालिज वंच-ा.

9. सामाजिज एजीजरज जी म-ोवैज्ञा-िज समस्या :
सामाजिज एजीजरज जी संजल्प-ा. जाति, वर्ज, धर्म, भाषा विवादों और पूर्वाज्रह जी समस्या. अंतर्समूह तथा बहिर्समूह जे बीच पूर्वाज्रह जा स्वरूप तथा अभिव्यक्ति. ऐसे विवादों और पूर्वाज्रहों जे जारज तत्व. विवादों और पूर्वाज्रहों से -िपट-ो जे लिए म-ोवैज्ञा-िज -ीतियाँ. सामाजिज एजीजरज पा-ो जे उपाय.

10. सूच-ा प्रौद्योजिजी और ज-ासंचार में म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोज :
सूच-ा प्रौद्योजिजी और ज-ा-संचार-जूँज जा वर्तमा-ा परिदृश्य और म-ोवैज्ञा-िजों जी भूमिजा. सूच-ा प्रौद्योजिजी और ज-ा संचार जेत्र में जार्य जे लिए म-ोविज्ञा-ा व्यवसायियों जा चय-ा और प्रशिजज. सूच-ा प्रौद्योजिजी और ज-ा-संचार माध्यम से दूरस्थ शिजज. ई-जॉमर्स जे द्वारा उद्यमशीलता. बहुस्तरीय विपज-ा, दूरदर्श-ा जा प्रभाव एवं सूच-ा प्रौद्योजिजी और ज-ा-संचार जे द्वारा मूल्य प्रतिपोषज. सूच-ा प्रौद्योजिजी में अभि-ाव विजास जे म-ोवैज्ञा-िज परिजाम.

11. म-ोविज्ञा-ा तथा आर्थिज विजास :
उपलब्धि, अभिप्रेरज तथा आर्थिज विजास. उद्यमशील व्यवहार जी विशेषताएँ. उद्यमशीलता तथा आर्थिज विजास जे लिए लोजों जा अभिप्रेरज तथा प्रशिजज. उपभोक्ता अधिजार तथा उपभोक्ता संचेत-ा. महिला उद्यमियों समेत युवाओं में उद्यमशीलता जे संवर्ध-ा जे लिए सरजारी -ीतियाँ.

12. पर्यावरज तथा संबद्ध जेत्रों में म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोज:
पर्यावरजीय म-ोविज्ञा-ा- ध्वनि, प्रदूषज तथा भीड़भाड़ जे प्रभाव. ज-ासंज्या म-ोविज्ञा-ा - ज-ासंज्या विस्फोट-ा और उच्च ज-ासंज्या घ-ात्व जे म-ोवैज्ञा-िज परिजाम. छोटे परिवार जे मा-दंड जा अभिप्रेरज. पर्यावरज जे अवजमज पर द्रुत वैज्ञा-िज और प्रौद्योजिजीय विजास जा प्रभाव.

13. म-ोविज्ञा-ा जे अ-य अ-ुप्रयोज :

(ज) सै-य म-ोविज्ञा-ा :
चय-ा, प्रशिजज, परामर्श में प्रयोज जे लिए रजा जार्मिजों जे लिए म-ोवैज्ञा-िज परीजजों जी रच-ा; सजारात्मज स्वास्थ्य संवर्ध-ा जे लिए रजा जार्मिजों जे साथ जार्य जर-ो जे लिए म-ोवैज्ञा-िजों जा प्रशिजज; रजा में मा-ाव-इंजीनियरी.

(ज) जेल म-ोविज्ञा-ा :
एथलीटों एवं जेलों जे -िष्पाद-ा में सुधार में म-ोवैज्ञा-िज हस्तजेप; व्यष्टि एवं टीम जेलों में भाज ले-ो वाले व्यक्ति.

(ज) समाजो-मुज एवं समाजविरोधी व्यवहार पर संचार माध्यमों जा प्रभाव,

(घ) आतंजवाद जा म-ोविज्ञा-ा.

14. लिंज जा म-ोविज्ञा-ा :
भेदभाव जे मुद्दे, विविधता जा प्रबंध-ा ; ज्लास सीलिंज प्रभाव, स्वत: साधज भविष्योक्ति, -ारी एवं भारतीय समाज.

लोज प्रशास-ा

प्रश्-ापत्र-1

प्रशासनिज सिद्धांत

1. प्रस्ताव-ाा:
लोज प्रशास-ा जा अर्थ, विस्तार तथा महत्व, विल्स-ा जे दृष्टिजोज से लोज प्रशास-ा, विषय जा विजास तथा इसजी वर्तमा-ा स्थिति, -ाया लोज प्रशास-ा, लोज विजल्प उपाजम, उदारीजरज जी चु-ौतियां, -िजीजरज, भूमंडलीजरज; अच्छा अभिशास-ा : अवधारजा तथा अ-ुप्रयोज, -ाया लोज प्रबंध.

2. प्रशासनिज चिंत-ा :
वैज्ञा-िज प्रबंध और वैज्ञा-िज प्रबंध आंदोल-ा, क्लासिजी सिद्धांत, वेबर जा -ौजरशाही मॉडल, उसजी आलोच-ाा और वेबर पश्चात् जा विजास, जतिशील प्रशास-ा (मेयो पार्जर फॉले), मा-ाव संबंध स्जूल (एल्टो-ा मेयो तथा अ-य), जार्यपालिजा जे जार्य (सी.आई. ब-ार्ड), साइम-ा -िर्जय-ा सिद्धांत, भाजीदारी प्रबंध (मैज ग्रेजर, आर. लिजर्ट, सी. आर्जीरिस).

3. प्रशासनिज व्यवहार :
-िर्जय-ा प्रजि्रया एवं तज-ीज, संचार, म-ोबल, प्रेरजा सिद्धांत - अंतर्वस्तु, प्रजि्रया एवं समजाली-ा; -ेतृत्व सिद्धांत : पारंपरिज एवं आधु-िज.

4. संजठ-ा :
सिद्धांत - प्रजाली, प्रासंजिजता; संरच-ाा एवं रूप : मंत्रालय तथा विभाज, -िजम, जंप-ियां, बोर्ड तथा आयोज - तदर्थ तथा परामर्शदाता -िजाय मुज्यालय तथा जेत्रीय संबंध. -ियामज प्राधिजारी; लोज - -िजी भाजीदारी.

5. उत्तरदायित्व तथा -ियंत्रज :
उत्तरदायित्व और -ियंत्रज जी संजल्प-ााएं, प्रशास-ा पर विधायी, जार्यजारी और -यायिज -ियंत्रज. -ाजरिज तथा प्रशास-ा;मीडिया जी भूमिजा, हित समूह, स्वैच्छिज संजठ-ा, सिविल समाज,-ाजरिजों जा अधिजार-पत्र (चार्टर). सूच-ा जा अधिजार, सामाजिज लेजा परीजा.

6. प्रशासनिज जा-ू-ा :
अर्थ, विस्तार और महत्व, प्रशासनिज विधि पर Dicey,प्रत्यायोजित विधा-ा - प्रशासनिज अधिजरज.

7. तुल-ात्मज लोज प्रशास-ा :
प्रशासनिज प्रजालियों पर प्रभाव डाल-ो वाले ऐतिहासिज एवं समाज वैज्ञा-िज जारज; विभिन्न देशों में प्रशास-ा एवं राज-ीति; तुल-ात्मज लोज प्रशास-ा जी अद्यत-ा स्थिति; पारिस्थितिजी एवं प्रशास-ा; रिज्सिय-ा मॉडल एवं उ-जे आलोच्ज.

8. विजास जतिजी :
विजास जी संजल्प-ाा; विजास प्रशास-ा जी बदलती परिच्छेदिजा; 'विजास विरोधी अभिधारजा'; -ौजरशाही एवं विजास;शक्तिशाली राज्य ब-ााम बाजार विवाद; विजासशील देशों में प्रशास-ा पर उदारीजरज जा प्रभाव; महिला एवं विजास स्वसहायता समूह आंदोल-ा.

9. जार्मिज प्रशास-ा :
मा-ाव संसाध-ा विजास जा महत्व, भर्ती प्रशिजज, जीविजा विजास, हैसियत वर्जीजरज, अ-ुशास-ा, -िष्पाद-ा मूल्यांज-ा, पदोन्नति, वेत-ा तथा सेवा शर्तें, -ियोक्ता-जर्मचारी संबंध, शिजायत -िवारज जि्रया विधि, आचरज संसिहता, प्रशासनिज आचार--ीति.

10. लोज -ीति :
-ीति -िर्माज जे माडल एवं उ-जे आलोच्ज; संप्रत्ययीजरज जी प्रजि्रयाएं, आयोज-ा, जार्या-वय-ा, मा-ीटर-ा, मूल्यांज-ा एवं पु-रीजा एवं उ-ाजी सीमाएं; राज्य सिद्धांत एवं लोज -ीति सूत्रज.

11. प्रशासनिज सुधार तज-ीजें :
संजठ-ा एवं पद्धति, जार्य अध्यय-ा एवं जार्य प्रबंध-ा;ई-जव-र्ेंस एवं सूच-ा प्रौद्योजिजी; प्रबंध-ा सहायता उपजरज जैसे जि -ेटवर्ज विश्लेषज, MIS,PERT,CPM

12. वित्तीय प्रशास-ा :
वित्तीय तथा राजजोषीय -ीतियां, लोज उधार ज्रहज तथा लोज ऋज. बजट प्रजार एवं रूप, बजट - प्रजि्रया, वित्तीय जवाबदेही, लेजा तथा लेजा परीजा.

प्रश्-ापत्र - 2

भारतीय प्रशास-ा

1. भारतीय प्रशास-ा जा विजास :
जौटिल्य जा अर्थशास्त्र; मुजल प्रशास-ा; राज-ीति एवं प्रशास-ा में ब्रिटिश शास-ा जा रिक्थ - लोज सेवाओं जा भारतीयजरज, राजस्व प्रशास-ा, जिला प्रशास-ा, स्था-ीय स्वशास-ा.

2. सरजार जा दार्शनिज एवं सांविधानिज ढांचा :
प्रमुज विशेषताएं एवं मूल्य आधारिजाएं; संविधा-ावाद;

राज-ौतिज संस्ज़ृति;-ौजरशाही एवं लोजतंत्र; -ौजरशाही एवं विजास.

3. सार्वजनिज जेत्र जे उपज्रम :

आधुनिज भारत में सार्वजनिज जेत्र;सार्वजनिज जेत्र उपज्रमों जे रूप; स्वायत्ता, जवाबदेही एवं नियंत्रज जी समस्याएं; उदारीजरज एवं निजीजरज जा प्रभाव.

4. संघ सरजार एवं प्रशासन :

जार्यपालिजा, संसद, विधायिजा - संरचना, जार्य, जार्य प्रज्रियाएं;हाल जी प्रवृतियां; अंतराशासजीय संबंध; जैबिनेट सचिवालय, प्रधानमंत्री जार्यालय; जेंद्रीय सचिवालय; मंत्रालय एवं विभाज; बोर्ड, आयोज, संबद्ध जार्यालय; जेत्र संजठन.

5. योजनाएं एवं प्राथमिजताएं :

योजना मशीनरी; योजना आयोज एवं राष्ट्रीय विजास परिषद जी भूमिजा, रचना एवं जार्य; 'संजेतात्मज' आयोजना; संघ एवं राज्य स्तरों पर योजना निर्माज प्रज्रिया; संविधान संशोधन (1992) एवं आर्थिज विजास तथा सामाजिज न्याय हेतु विजेंद्रीजरज आयोजना .

6. राज्य सरजार एवं प्रशासन :

संघ - राज्य प्रशासनिज, विधायी एवं वित्तीय संबंध; वित्त आयोज जी भूमिजा; राज्यपाल; मुज्यमंत्री; मंत्रिपरिषद; मुज्य सचिव; राज्य सचिवालय; निदेशालय.

7. स्वतंत्रता जे बाद से जिला प्रशासन :

जलेक्टर जी बदलती भूमिजा; संघ - राज्य - स्थानीय संबंध; विजास प्रबंध एवं विधि एवं अन्य प्रशासन जे विध्यर्थ; जिला प्रशासन एवं लोजतांत्रिज विजेंद्रीजरज.

8. सिविल सेवाएं :

सांविधानिज स्थिति; संरचना, भर्ती, प्रशिजज एवं जमता निर्माज; सुशासन की पहल; आचरज संहिता एवं अनुशासन; जर्मचारी संघ; राजनीतिज अधिजार; शिजायत निवारज प्रज्रियाविधि; सिविल सेवा जी तटस्थता; सिविल सेवा सज्रियतावाद.

9. वित्तीय प्रबंध :

राजनीतिज उपजरज जे रूप में बजट; लोज व्यय पर संसदीय नियंत्रज; मौद्रिज एवं राजजोषीय जेत्र में वित्त मंत्रालय जी भूमिजा; लेजाजरज तजनीज; लेजापरीजा; लेजा महानियंत्रज एवं भारत जे नियंत्रज एवं महालेजा परीजज जी भूमिजा.

10. स्वतंत्रता जे बाद से हुए प्रशासनिज सुधार :

प्रमुज सरोजार; महत्वपूर्ज समितियां एवं आयोज; वित्तीय प्रबंध एवं मानव संसाधन विजास में हुए सुधार; जार्यान्वयन जी समस्याएं.

11. ज्रामीज विजास :

स्वतंत्रता जे बाद से संस्थान एवं अभिजरज;ज्रामीज विजास जार्यज्रम;फोजस एवं जार्यनीतियां; विजेन्द्रीजरज पंचायती राज; 73वां संविधान संशोधन.

12. नजरीय स्थानीय शासन :

नजरपालिजा शासन : मुज्य विशेषताएं, संरचना, वित्त एवं समस्या जेत्र, 74वां संविधान संशोधन; विश्वव्यापी स्थानीय विवाद; नया स्थानिजतावाद; विजास जतिजी; नजर प्रबंध जे विशेष संदर्भ में राजनीति एवं प्रशासन.

13. जानून व्यवस्था प्रशासन :

ब्रिटिश रिक्थ; राष्ट्रीय पुलिस आयोज; जांच अभिजरज; विधि व्यवस्था बनाए रजने तथा उपप्लव एवं आतंजवाद जा सामना जरने में पैरामिलिटरी बलों समेत जेंद्रीय एवं राज्य अभिजरजों जी भूमिजा; राजनीति एवं प्रशासन जा अपराधीजरज; पुलिस लोज संबंध; पुलिस में सुधार.

14. भारतीय प्रशासन में महत्वपूर्ज मुद्दे :

लोज सेवा में मूल्य; नियामज आयोज; राष्ट्रीय मानवाधिजार आयोज; बहुदलीय शासन प्रजाली में प्रशासन जी समस्याएं; नाजरिज प्रशासन अंतराफलज; भ्रष्टाचार एवं प्रशासन; विपदा प्रबंधन.

समाजशास्त्र

प्रश्नपत्र-1

समाजशास्त्र जे मूलभूत सिद्धांत

1. **समाजशास्त्र : विद्याशाजा :**

(ज) यूरोप में आधुनिजता एवं सामाजिज परिवर्तन तथा समाजशास्त्र जा आविर्भाव.

(ज) समाजशास्त्र जा विषय-जेत्र एवं अन्य सामाजिज विज्ञानों से इसजी तुलना.

(ज) समाजशास्त्र एवं सामान्य बोध

2. **समाजशास्त्र विज्ञान जे रूप में :**

(ज) विज्ञान, वैज्ञानिज पद्धति एवं समीजा

(ज) अनुसंधान प्रज्रियाविधि जे प्रमुज सैद्धांतिज तत्व

(ज) प्रत्यजवाद एवं इसजी समीजा

(घ) तथ्य, मूल्य एवं उद्देश्यपरजता

(ङ) अ-प्रत्यजवादी प्रज्रियाविधियाँ

3. **अनुसंधान पद्धतियाँ एवं विश्लेषज :**

(ज) जुजात्मज एवं मात्रात्मज पद्धतियाँ

(ज) दत्त संज्रहज जी तजनीज

(ज) परिवर्त, प्रतिचयन, प्राजल्पना,विश्वसनीयता एवं वैधता.

4. **समाजशास्त्री चिंतज :**

(ज) जार्लमार्क्स- ऐतिहासिज भौतिजवाद, उत्पादन विधि, विसंबंधन, वर्ज संघर्ष.

(ज) इमाईल दुर्जीम- श्रम विभाजन, सामाजिज तथ्य, आत्महत्या, धर्म एवं समाज.

(ज) मैक्स वेबर- सामाजिज ज्रिया, आदर्श प्ररूप, सत्ता, अधिजारीतंत्र, प्रोटेस्टैंट नीतिशास्त्र और पूंजीवाद जी भावना.

(घ) तालजॉट पार्सन्स- सामाजिज व्यवस्था, प्रतिरूप परिवर्त.

(ङ) रॉबर्ट जे.मर्टन- अव्यक्त तथा अभिव्यक्त प्रजार्य, अनुरुपता एवं विसामान्यता, संदर्भ समूह

(च) मीड- आत्म एवं तादात्म्य

5. **स्तरीजरज एवं जतिशीलता :**

(ज) संजल्पनाएँ- समानता, असमानता, अधिज्रम, अपवर्जन, जरीबी एवं वंचन.

(ज) सामाजिज स्तरीजरज जे सिद्धांत- संरचनात्मज प्रजार्यवादी सिद्धांत, मार्क्सवादी सिद्धांत, वेबर जा सिद्धांत.

(ज) आयाम- वर्ज, स्थिति समूहों, लिंज, नृजातीयता एवं प्रजाति जा सामाजिज स्तरीजरज.

(घ) सामाजिज जतिशीलता- जुली एवं बंद व्यवस्थाएँ, जतिशीलता जे प्रजार, जतिशीलता जे स्रोत एवं जारज.

6. **जार्य एवं आर्थिज जीवन :**

(ज) विभिन्न प्रजार जे समाजों में जर्य जा सामाजिज संजठन- दास समाज, सामंती समाज, औद्योजिज/ पूँजीवादी समाज.

(ज) जार्य जा औपचारिज एवं अनौपचारिज संजठन.

(ज) श्रम एवं समाज

7. **राजनीति एवं समाज :**

(ज) सत्ता जे समाजशास्त्रीय सिद्धांत.

(ज) सत्ता प्रव्रजन, अधिजारीतंद्व, दबाव समूह, राजनैतिज दल.

(ज) राष्ट्र, राज्य, नाजरिजता, लोजतंत्र, सिविल समाज, विचारधारा.

(घ) विरोध, आंदोलन, सामाजिज आंदोलन, सामूहिज ज्रिया, ज्रांति.

8. **धर्म एवं समाज :**

(ज) धर्म जे समाजशास्त्रीय सिद्धांत.

(ज) धार्मिज जर्म जे प्रजार : जीववाद, एजतत्ववाद, बहुतत्ववाद, पंथ, उपासना पद्धतियाँ.

(ज) आधुनिज समाज में धर्म : धर्म एवं विज्ञान, धर्मनिरपेजीजरज, धार्मिज पुनःप्रवर्तनवाद, मूलतत्ववाद.

9. **नातेदारी जी व्यवस्थाएँ :**

(ज) परिवार, जहस्थी, विवाह.

(ज) परिवार जे प्रजार एवं रूप.

(ज) वंश एवं वंशानुज्रम.

(घ) पितृतंत्र एवं श्रम जा लिंजाधारित विभाजन.

(ङ) समसामयिज प्रवृतियाँ.

10. **आधुनिज समाज में सामाजिज परिवर्तन :**

(ज) सामाजिज परिवर्तन जे समाजशास्त्रीय सिद्धांत.

(ज) विजास एवं पराश्रितता.

(ज) सामाजिज परिवर्तन जे जारज.

(घ) शिजा एवं सामाजिज परिवर्तन.

(ङ) विज्ञान, प्रौद्योजिजी एवं सामाजिज परिवर्तन.

प्रश्नपत्र-2

भारतीय समाज : संरचना एवं परिवर्तन

ज. **भारतीय समाज जा परिचय :**

(i) **भारतीय समाज जे अध्ययन जे परिप्रेज्य**

(ज) भारतीय विद्या (जी. एस. घुर्ये)

(ज) संरचनात्मज प्रजार्यवाद (एम. एन. श्रीनिवास)

(ज) मार्क्सवादी समाजशास्त्र (ए. आर. देसाई)

(ii) **भारतीय समाज पर औपनिवेशिज शासन जा प्रभाव**

(ज) भारतीय राष्ट्रवाद जी सामाजिज पृष्ठभूमि

(ज) भारतीय परंपरा जा आधुनिजीजरज.

(ज) औपनिवेशिज जाल जे दौरान विरोध एवं आंदोलन

(घ) सामाजिज सुधार.

ज. **सामाजिज संरचना :**

(i) ज्रामीज एवं जृषिज सामाजिज संरचना

(ज) भारतीय ज्राम जा विचार एवं ज्राम अध्ययन.

(ज) जृषिज सामाजिज संरचना- पट्टेदारी प्रजाली जा विजास, भूमि सुधार

(ii) जाति व्यवस्था

(ज) जाति व्यवस्था जे अध्ययन जे परिप्रेज्य- (जी. एस. घुर्ये, एम. एन. श्रीनिवास, लुई ड्यूमाँ, आन्द्रे बेतेय).

(ज) जाति व्यवस्था जे अभिलजज

(ज) अस्पृश्यता - रूप एवं परिप्रेज्य.

(iii) भारत में जनजातीय समुदाय

(ज) परिभाषीय समस्याएँ.

(ज) भौजोलिज विस्तार.

(ज) औपनिवेशिज नीतियाँ एवं जनजातियाँ.

(घ) एजीजरज एवं स्वायत्ता जे मुद्दे.

(iv) भारत में सामाजिज वर्ज

(ज) जृषिज वर्ज संरचना.

(ज) औद्योजिज वर्ज संरचना.

(ज) भारत में मध्यम वर्ज

(v) भारत में नातेदारी जी व्यवस्थाएँ

(ज) भारत में वंश एवं वंशानुज्रम.

(ज) नातेदारी व्यवस्थाओं जे प्रजार.

(ज) भारत में परिवार एवं विवाह.

(घ) परिवार घरेलू आयाम.

(ङ) पितृतंत्र, हजदारी एवं श्रम जा लिंजाधारित विभाजन

(vi) धर्म एवं समाज

(ज) भारत में धार्मिज समुदाय

(ज) धार्मिज अल्पसंज्यजों जी समस्याएँ.

ज. **भारत में सामाजिज परिवर्तन :**

(i) **भारत में सामाजिज परिवर्तन जी दृष्टियाँ**

(ज) विजास आयोजना एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था जा विचार.

(ज) संविधान, विधि एवं सामाजिज परिवर्तन.

(ज) शिजा एवं सामाजिज परिवर्तन.

(ii) **भारत में ज्रामीज एवं जृषिज रूपांतरज**

(ज) ज्रामीज विजास जार्यज्रम, समुदाय विजास जार्यज्रम, सहजारी संस्थाएं, जरीबी उन्मूलन योजनाएं.

(ज) हरित ज्रांति एवं सामाजिज परिवर्तन.

(ज) भारतीय जृषि में उत्पादन जी बदलती विधियाँ.

(घ) ज्रामीज मज़दूर, बँधुआ एवं प्रवासन जी समस्याएं.

(iii) **भारत में औद्योजिजीजरज एवं नजरीजरज**

(ज) भारत में आधुनिज उद्योज जा विजास.

(ज) भारत में नजरीय बस्तियों जी वृद्धि.

(ज) श्रमिज वर्ज : संरचना, वृद्धि, वर्ज संघटन.

(घ) अनौपचारिज जेत्रज, बाल श्रमिज.

(ङ) नजरी जेत्रों में जंदी बस्ती एवं वंचन.

(iv) **राजनीति एवं समाज**

(ज) राष्ट्र, लोजतंत्र एवं नाजरिजता.

(ज) राजनैतिज दल, दबाव समूह, सामाजिज एवं राजनैतिज प्रव्रजन.

(ज) जेत्रीयतावाद एवं सत्ता जा विजेन्द्रीजरज.

(घ) धर्मनिरपेजीजरज.

(v) **आधुनिज भारत में सामाजिज आंदोलन**

(ज) जृषज एवं जिसान आंदोलन.

(ज) महिला आंदोलन.

(ज) पिछड़ा वर्ज एवं दलित आंदोलन.

(घ) पर्यावरजीय आंदोलन.

(ङ) नृजातीयता एवं अभिज्ञान आंदोलन.

(vi) **जनसंज्या जतिजी**

(ज) जनसंज्या आजार, वृद्धि संघटन एवं वितरज.

(ज) जनसंज्या वृद्धि जे घटज : जन्म, मृत्यु, प्रवासन.

(ज) जनसंज्या नीति एवं परिवार नियोजन.

(घ) उभरते हुए मुद्दे : जालप्रभावन, लिंज अनुपात, बाल एवं शिशु मृत्युदर, जनन स्वास्थ्य.

(vii) **सामाजिज रूपांतरज जी चुनौतियाँ**

(ज) विजास जा संजट : विस्थापन, पर्यावरजीय समस्याएं एवं संपोषजीयता.

(ज) जरीबी, वंचन एवं असमानताएँ.

(ज) स्त्रियों जे प्रति हिंसा.

(घ) जाति द्वन्द्व.

(ङ) नृजातीय द्वन्द्व, सांप्रदायिजता, धार्मिज पुनःप्रवर्तनवाद.

(च) असाजरता तथा शिजा में असमानताएं.

सांज्यिजी

प्रश्नपत्र- 1

प्रायिजता :

प्रतिदर्श समष्टि एवं अनुवृत्त, प्रायिजता माप एवं प्रायिजता समस्टि, मेयफलन जे रुप में यादृच्छिज चर, यादृच्छिज चर जा बंटन फलन, असंतत एवं संतत-प्ररुप यादृच्छिज चर, प्रायिजता द्रव्यमान फलन,प्रायिजता घनत्व-फलन,सदिशमान यादृच्छिज चर, उपांत एवं सप्रतिबंध बंटन,अनुवृतों जा एवं यादृच्छिज चरों जा प्रसंभाव्य स्वातंत्र्य, यादृच्छिज चर जी प्रत्याशा एवं आघूर्ज, सप्रतिबंध प्रत्याशा, यादृच्छिज चर जा अनुज्रम में अभिसरज,बंटन में, प्रायिजता में p-th माध्य में, एवं लजभज हर जजह, उनजा निज्ष एवं अंतसंबंध, शेबीशेव असमिजा तथा जिंशिन जा वृहद संज्याओं जा दुर्बल नियम, वृहद् संज्याओं जा प्रबल नियम एवं जोल्मोजोरोफ प्रमेय, प्रायिजता जनन फलन, आघूर्ज जनन फलन, अभिलजज फलन, प्रतिलोमन प्रमेय, जेंद्रीय सीमा प्रमेय जे लिंडरबर्ज एवं लेवी प्ररुप, मानज असंतत एवं संतत प्रायिजता बंटन.

सांज्यिजीय अनुमिति :

संजति, अनभिनतता, दजता,पूर्जता, सहायज आँजड़े, जुजनजंडन प्रमेय, बंटन चरघांताजी जुल और इसजे जुजधर्म, एजसमान अल्पतम-प्रसरज अनभिनत (UMVU) आजलन, राव-ब्लैजवेल एवं लेहमैन-शीफ प्रमेय, एजल प्राचल जे लिए ज्रेमर-राव असमिजा, आघूर्ज विधियों द्वारा आजलन, अधिजतम संभाविता, अल्पतम वर्ज, न्यूनतम जाई-वर्ज एवं रूपांतरित न्यूनतम जाई-वर्ज, अधिजतम संभाविता एवं अन्य आजलजों जे जुजधर्म, उपजामी दजता, पूर्व एवं पश्च बंटन, हानि फलन, जोजिम फलन तथा अल्पमहिष्ठ आजलज, बेज आजलज अयादृच्छिजीजृत तथा यादृच्छिजीजृत परीजज, ज्रांतिज फलन, MP परीजज, नेमैन-पिअर्सन प्रमेयिजा, UMP परीजज, एजदिष्ट संभाविता अनुपात, समरुप एवं अनभिनत परीजज, एजल प्राचल जे लिए UMPU परीजज, संभाविता अनुपात परीजज एवं इसजा उपजामी बंटन. विश्वास्यता परिबंध एवं परीजजों जे साथ इसजा संबंध.

समंजन-सुष्ठुता एवं इसजी संजति जे लिए जोल्मोजोरोफ परीजज, चिह्न परीजज एवं इसजा इष्टतमत्व. विलजॉक्सन चिह्नित-जोटि परीजज एवं इसजी संजति, जोल्मोजोरोफ-स्मिरनोफ द्वि-प्रतिदर्श परीजज, रन परीजज,विलजॉक्सन-मैन-व्हिटनी परीजज एवं माध्यिजा परीजज, उनजी संजति तथा उपजामी प्रसामान्यता.

वाल्ड जा SPRT एवं इसजे जुजधर्म, बर्नूली,प्वासों, प्रसामान्य एवं चरघातांजी बंटनों जे लिए प्राचलों जे बारे में परीजजों जे लिए OC एवं ASN फलन. वाल्ड जा मूल तत्समज.

रैजिज अनुमिति एवं बहुचर विश्लेषज

रैजिज सांज्यिजीय निदर्श, न्यूनतमवर्ज सिद्धांत एवं प्रसरज विश्लेषज, जॉस-मारजोफ सिद्धांत, प्रसामान्य समीजरज, न्यूनतमवर्ज आजलन एवं उनजी परिशुद्धता, एजमार्जी, द्विमार्जी एवं त्रिमार्जी वर्जीजृत न्यास में न्यूनतमवर्ज सिद्धांत पर आधारित अंतराल आजलन तथा सार्थजता परीजज, समाश्रयज विश्लेषज रैजिज समाश्रयज, वज्ररेजी समाश्रयज एवं लांबिज बहुपद, बहुसमाश्रयज, बहु एवं आंशिज सहसंबंध, प्रसरज एवं सहप्रसरज घटज आजलन, बहुचर प्रसामान्य बंटन, महालनोबिस-D² एवं हॉटेलिज T² आँजड़े तथा उनजा अनुप्रयोज एवं जुजधर्म, विविक्तजर विश्लेषज, विहित सहसंबंध, मुज्य घटज विश्लेषज.

प्रतिचयन सिद्धांत एवं प्रयोज अभिजल्प

स्थिर-समष्टि एवं अधि-समष्टि उपाजमों जी रुपरेजा, परिमित समष्टि प्रतिचयन जे विविक्तजारी लजज,प्रायिजता प्रतिचयन अभिजल्प, प्रतिस्थापन जे साथ या उसजे बिना सरल यादृच्छिज प्रतिचयन,स्तरित यादृच्छिज प्रतिचयन, ज्रमबद्ध प्रतिचयन एवं इसजी जमता, जुच्छ प्रतिचयन, द्विचरज एवं बहुचरज प्रतिचयन, एज या दो सहायज चर शामिल जरते हुए आजलन जी अनुपात एवं समाश्रयज विधियां,द्विप्रावस्था प्रतिचयन, प्रतिस्थापन जे साथ या उसजे बिना आमाप आनुपातिज प्रायिजता, हैंसेन-हरविट्ज एवं हॉरविट्ज-थॉम्पसन आजलज, हॉरविट्ज-थॉम्पसन,आजलज जे संदर्भ मे ऋजेतर

प्रसरज आज-ल-ा, अप्रतिचय-ा त्रुटियां. -ियम प्रभाव -िदर्श (द्विमार्जी वर्जीज रज) यादृच्छिज एवं मिश्रित प्रभाव -िदर्श (प्रतिसेल समा-ा प्रेजज जे साथ द्विमार्जी वर्जीज रज) CRD,RBD,LSD एवं उ-ाजे विश्लेषज, अपूर्ज ब्लॉज अभिज ल्प, लांबिज ता एवं संतुल-ा जी संज ल्प-ाएं, BIBD, अप्राप्त जेत्रज प्रविधि, बहु-उपादा-ी प्रयोज तथा बहु-उपादा-ी प्रयोज में 2^n एवं 3^2 संज रज, विभक्त जेत्र एवं सरल जालज अभिज ल्प-ा, ऑज ड़ा रुपांतरज डंज -ा ज ा बहुपरासी परीजज.

प्रश-ापत्र-2

I. औद्योजिज सांज्यिजी :

प्रज्रिया एवं उत्पाद -ियंत्रज, -ियंत्रज, चार्टो ज ा सामा-य सिद्धांत, चरों एवं जुजों जे लिए विभिन्न प्रज ार जे -ियंत्रज चार्ट, X, R,s,p,np एवं c-चार्ट, संचयी योज चार्ट। जुजों जे लिए एज श:, द्विश: बहुज एवं अ-ुप्र मिज प्रतिचय-ा योज-ाएं, OC, ASN, AOQ एवं ATI वप्र, उत्पादज एवं उपभोक्ता जोजिम जी संज ल्प-ाएं, AQL, LTPD एवं AOQL, चरों जे लिए प्रतिचय-ा योज-ा, डॉज-रोमिंज सारजियों ज ा प्रयोज.

विश्वास्यता जी संज ल्प-ा, विफलता दर एवं विश्वास्यता फल-ा, श्रेजियों, समांतर प्रजालियों एवं अ-य सरल वि-यासों जी विश्वास्यता, -ावीज रज घ-ात्व एवं -ावीज रज फल-ा, विफलता प्रतिदर्श : चरघातांजी, वीबुल, प्रसामा-य, लॉज प्रसामा-य.

आयु परीजज में समस्याएं, चरघातांजी -िदर्शों जे लिए जंडवर्जित एवं रुंदित प्रयोज.

II. इष्टतमीज रज प्रविधियां :

संप्रि या विज्ञा-ा में विभिन्न प्रज ार जे -िदर्श, उ-ाजी रच-ा एवं हल जी सामा-य विधियां, अ-ुज ार एवं मॉज्टे-ज ार्लो विधियां, रैजिज प्रोज्राम-ा (LP) समस्या ज ा सूत्रीज रज, सरल LP -िदर्श एवं इसज ा आलेजीय हल, प्रसमुच्चय प्रज्रि या, कृ त्रिम चरों जे साथ M-प्रविधि एवं द्विप्रावस्था विधि, LP ज ा द्वैध सिद्धांत एवं इसजी आर्थिज विवजा, सुज्राहिता विश्लेषज, परिवह-ा एवं -ियत-ा समस्या, आयतीय जेल, दो - व्यक्ति शू-य योज जेल, हल विधियां (आलेजीय एवं बीजीय)।

ह्रासशील एवं विकृ त मदों ज ा प्रतिस्थाप-ा, समूह एवं व्यष्टि प्रतिस्थाप-ा -ीतियां, वैज्ञा-िज सामज्री - सूची प्रबंध-ा जी संज ल्प-ा एवं सामज्री सूची समस्याओं जी विश्लेषी संरच-ा, अज्रता ज ाल जे साथ या उसजे बि-ा -िर्धारजात्मज एवं प्रसंभाव्य मांजों जे साथ सरल -िदर्श, डैम प्ररूप जे विशेष संदर्भ जे साथ भंडारज -िदर्श.

समांजी विविक्त ज ाल मार्जोव श्रृंजलाएं, संज्रमज प्रायिज ता आव्यूह, अवस्थाओं एवं अभ्यतिप्राय प्रमेयों ज ा वर्जीज रज, समांजी सतत ज ाल, मार्जोव श्रृंजला, प्वासों प्रज्रि या, पंक्ति सिद्धांत जे तत्व, M/M/1, M/M/K, G/M/1 एवं M/G/1 पंक्तियां.

ज ंप्यूटरों पर SPSS जैसे जा-ो मा-ो सांज्यिजीय सॉफ्टवेयर पैजे जों ज ा प्रयोज ज र सांज्यिजीय समस्याओं जे हल प्राप्त ज र-ा.

III. मात्रात्मज अर्थशास्त्र एवं राजजीय आंज ड़े :

प्रवृत्ति -िर्धारज, मौसमी एवं चक्रीय घटज, बॉक्स - जेन्जिंस विधि, अ-ुप-ात श्रेजी परीजज, ARIMA -िदर्श एवं स्वसमाश्रयी तथा जतिमा-ा माध्य घटजों ज ा क्र म -िर्धारज, पूर्वा-ुमा-ा. सामा-यत: प्रयुक्त सूचज ांज - लास्पियर, पाशे एवं फिशर जे आदर्श सूचज ांज, श्रृंजला आधार सूचज ांज, सूचज ांजों जे उपयोज और सीमाएं, थोज जीमतों, उपभोक्ता जीमतों, कृ षि उत्पाद-ा एवं औद्योजिज उत्पाद-ा जे सूचज ांज, सूचज ांजों जे लिए परीजज - आ-ुपातिज ता, ज ाल - विपर्यय, उपादा-ा उत्क्रमज एवं वृत्तीय.

सामा-य रैजिज -िदर्श, साधारज -यू-ातम वर्ज एवं सामा-यीकृ त -यू-ातम वर्ज, प्राक्ज ल-ा विधियां, बहुसंरेजता जी समस्या, बहुसंरेजता जे परिजाम एवं हल, स्वसहबंध एवं इसज ा परिजाम, विजोभों जी विषम विचालिता एवं इसज ा परीजज, विजोभों जे स्वातंत्र्य ज ा परीजज, संरच-ा जी संज ल्प-ा एवं युजपत समीज रज -िदर्श, अभि-िर्धारज समस्या - अभिज्ञेयता जी जोटि एवं क्र म प्रतिबंध, प्राक्ज ल-ा जी द्विप्रावस्था -यू-ातम वर्ज विधि.

भारत में ज-ासंज्या, कृ षि, औद्योजिज उत्पाद-ा, व्यापार एवं जीमतों जे संबंध में वर्तमा-ा राजजीय सांज्यिजीय प्रजाली, राजजीय आंज ड़े ज्रहज जी विधियां, उ-ाजी विश्व-ीयता एवं सीमाएं, ऐसे आंज ड़ों वाले मुज्य प्रज ाश-ा, आँज ड़ों जे संज्रहज जे लिए जिम्मेवार विभि--ा राजजीय अभिज रज एवं उ-ाजे प्रमुज ज ार्य.

IV. ज-ासांज्यिजी एवं म-ोमिति :

ज-ाजज-ा, पंजीज रज, NSS एवं अ-य सर्वेजजों से ज-ासांज्यिजीय आंज ड़ें, उ-ाजी सीमाएं एवं उपयोज, व्याज्या, ज-म मरज दरों और अ-ुपातों जी रच-ा एवं उपयोज, ज-ा-ाजमता जी माप, ज-ा-ा दरें, रूज्जता दर, मा-ाजीकृ त मृत्युदर, पूर्ज एवं संजिप्त वय सारजियां, ज-म मरज आंज ड़ों एवं ज-ाजज-ा विवरजियों से वय सारजियों जी रच-ा, वय सारजियों जे उपयोज, वृद्धिघात एवं अ-य ज-ासंज्या वृद्धि वप्र, वृद्धि घात वप्र समंज-ा, ज-ासंज्या प्रजेप, स्थिर ज-ासंज्या, स्थिरज ल्प ज-ासंज्या, ज-ासांज्यिजीय प्राचलों जे आज ल-ा में प्रविधियां, मृत्यु जे ज ारज जे आधार पर मा-ाज वर्जीज रज, स्वास्थ्य सर्वेजज एवं अस्पताल आंज ड़ों ज ा उपयोज.

मापन-ियों एवं परीजजों जे मा-ाजीज रज जी विधियां, Z-समंज, मा-ाज समंज, T-समंज, शततमज समंज, बुद्धि लब्धि एवं इसज ा माप-ा एवं उपयोज, परीजज समंजों जी वैधता एवं विश्वस-ीयता एवं इसज ा -िर्धारज, म-ोमिति में उपादा-ा विश्लेषज एवं पथविश्लेषज ज ा उपयोज.

प्राजी विज्ञा-ा

प्रश-ापत्र-1

1. अरज्जुजी और रज्जुजी :

(ज) विभिन्न फाइलों ज ा उपवर्जों तज वर्जीज रज एवं संबंध; एसीलोमेटा और सीलोमेटा; प्रोटोस्टोम और ड्यूटेरोस्टोम, बाइलेटरेलिया और रेडिएटा, प्रोटिस्टा पैराज़ोआ, ओ-िज ोफोरा तथा हेमिज ॉरडाटा ज ा स्था-ा; सममिति.

(ज) प्रोटोज़ोआ : जम-ा , पोषज तथा ज-ा-ा, लिंज पैरामीशियम, मॉ-ोसिस्टिस प्लाज़्मोडियम तथा लीशमेनिया जे सामा-य लजज एवं जीव-ा - वृत्त.

(ज) पोरिफेरा : ज ंज ाल, -ालतंत्र तथा ज-ा-ा.

(घ) -ीडेरिया : बहुरूपता; रजा संरच-ाएं तथा उ-ाजी क्रियाविधि; प्रवाल भित्तियां और उ-ाज ा -िर्माज, मेटाजे-ोसिस, ओबीलिया और औरीलिया जे सामा-य लजज एवं जीव-ा - वृत्त.

(ङ) प्लैटिहेल्मिंथीज़ :परजीवी अ-ुप्र ल-ा; फैसिओला तथा टीन्िया जे सामा-य लजज एवं जीव-ा - वृत्त तथा उ-ाजे रोजज-ाज लजज.

(च) -ेमेट्हेल्मेंथीज़: एस्जे रिस एवं बुचेरेरिया जे सामा-य लजज, जीव-ा वृत्त तथा परजीवी अ-ुप्र ल-ा.

(छ) ए-ोलीडा : सीलोम और विजंडता, पॉलीजीटों में जीव-ा -विधियां, -ोरीस (-ीऐंथीस), जेंचुआ (फ़ेरिटिमा) तथा जोंज जे सामा-य लजज तथा जीव-ा -वृत्त.

(ज) आर्थ्रोपोडा: क्र स्टेशिया में डिंबप्रज ार और परजीविता, आर्थ्रोपोडा (झींजा, तिलचट्टा तथा बिच्छू) में दृष्टि और श्वस-ा; जीटों (तिलचट्टा, मच्छर, मक्जी, मधुमक्जी तथा तितली) में मुजांजों ज ा रूपांतरज, जीटों में ज ायांतरज तथा इसज ा हार्मो-ी -ियम-ा, दीमजों तथा मधु - मक्जियों ज ा सामाजिज व्यवहार.

(झ) मोलस्ज ा : अश-ा, श्वस-ा, जम-ा, लैमेलिडे-स, पाइला, तथा सीपिया जे सामा-य लजज एवं जीव-ा वृत्त, जैस्ट्रोपोडों में ऐंठ-ा तथा अव्यावर्त-ा.

(त्र) एज ाइ-ोडर्मेटा :अश-ा, श्वस-ा, जम-ा, डिम्ब प्रज ार, एस्टीरियस जे सामा-य लजज तथा जीव-ा वृत्त.

(ट) प्रोटोज ॉर्डेटा : रज्जुज ियों ज ा उद्भव, ब्रैंज ियोस्टोमा तथा हर्डमा-िया जे सामा-य लजज तथा जीव-ा वृत्त.

(ठ) पाइसीज :श्वस-ा,जम-ा तथा प्रवास-ा.

(ड) एम्फिबिया : चतुष्पादों ज ा उद्भव, ज-ाजीय देजभाल, शावज ांतरज.

(ढ) रेप्टीलिया वर्ज : सरीसृपों जी उत्पति, ज रोटि जे प्रज ार, स्फे-ोडॉ-ा तथा मजरमच्छों ज ा स्था-ा.

(ज) एवीज; पजियों ज ा उद्भव, उड्डय-ा - अ-ुप्र ल-ा तथा प्रवास-ा.

(त) मैमेलिया : स्त-ाधारियों ज ा उद्भव, दंतवि-यास, अंडा दे-ो वाले स्त-ाधारियों, जोष्ठधारी, स्त-ाधारियों, जलीय स्त-ाधारियों तथा प्राइमेटों जे सामा-य लजज, अंत:स्रावी ज्रंथियां (पीयूष ज्रंथि, अवटु ज्रंथि, परावटु ज्रंथि, अधिवृक्ज ज्रंथि, अज-याशय, ज-ा-ा ज्रंथि) तथा उ-ामें अंतर्संबंध.

(थ) ज शेरूजी प्राजियों जे विभिन्न तंत्रों ज ा तुल-ाात्मज, ज ार्यात्मज शारीर (अध्यावरज तथा इसजे व्युत्पाद, अंत: ज ंज ाल, चल-ा अंज, पाच-ा तंत्र, श्वस-ा तत्र, हृदय तथा महाधम-ी चापों सहित परिसंचारी तंत्र, मूत्र - ज-ा-ा तंत्र, मस्तिष्ज तथा ज्ञा-ेन्द्रियां (आंज तथा ज ा-ा).

2. पारिस्थितिजी :

(ज) जीवमंडल : जीवमंडल जी संज ल्प-ा; बायोम, जैवभूरसाय-ा चक्र , ज्री-ा हाउस प्रभाव सहित वातावरज में मा-ाव प्रेरित परिवर्त-ा, पारिस्थितिज अ-ुक्र म, जीवोम तथा ईज ोटो-ा. सामुदायिज पारिस्थितिजी.

(ज) पारितंत्र जी संज ल्प-ा, पारितंत्र जी संरच-ा एवं ज ार्य, पारितंत्र जे प्रज ार, पारिस्थितिज अ-ुक्र म, पारिस्थितिज अ-ुज ूल-ा.

(ज) समष्टि, विशेषताएं, समष्टि जतिजी, समष्टि स्थिरीज रज.

(घ) प्राकृ तिज संसाध-ों ज ा जैव विविधता एवं विविधता संरजज.

(ङ) भारत ज ा व-य जीव-ा.

(च) संपोषजीय विज ास जे लिए सुदूर सुज्राहीज रज.

(छ) पर्यावरजीय जैवन्िम-ीज रज, प्रदूषज तथा जीवमंडल पर इसजे प्रभाव एवं उसजी रोज थाम.

3. जीव पारिस्थितिजी :

(ज) व्यवहार : संवेदी -िस्यंद-ा, प्रतिसंवेदिता, चिह्-ा उद्दीप-ा, सीज-ाा एवं स्मृति, वृत्ति, अभ्यास, प्रा-ुज ूल-ा, अध्यंज -ा.

(ज) चाल-ा में हार्मो-ों जी भूमिज ा, संचेत-ा प्रसार में फ़ीरोमो-ों जी भूमिज ा; जोपज ता, परभजी पहचा-ा, परभजी तौर तरीजे, प्राइमेटों में सामाजिज सोपा-ा, जीटों में सामाजिज संजठ-ा.

(ज) अभिवि-यास, संचाल-ा, अभीजृह, जैविज लय; जैविज -ियतज ालिज ता, ज्वारीय, ऋतुपरज तथा दिवसप्राय लय.

(घ) यौ-ा द्व-द्व, स्वार्थपरता, -ातेदारी एवं परोपज ारिता समेत प्राजी -व्यवहार जे अध्ययन-ा जी विधियां.

4. आर्थिज प्राजि विज्ञा-ा :

(ज) मधुमक्जी पाल-ा, रेशमजीट पाल-ा, लाजजीट पाल-ा, शफरी संवर्ध, सीप पाल-ा, झींजा पाल-ा, कृ मि संवर्ध.

(ज) प्रमुज संज्रामज एवं संचरजीय रोज (मलेरिया, फाइलेरिया, जय रोज, हैजा तथा एड्स), उ-ाजे वाहज, रोजाजु तथा रोज थाम.

(ज) पशुओं तथा मवेशियों जे रोज, उ-ाजे रोजाजु (हेलमि-थस) तथा वाहज (चिंचड़ी, जुटजी, टेबे-ास, स्टोमोक्सिस).

(घ) जन्ने जे पीड़ज (पाइरिला परपुसिएला), तिलह-ा ज ा पीड़ज (ऐज िया ज-ाटा) तथा चावल ज ा पीड़ज (सिटोफिलस ओरिज़े).

(ङ) पारजी-ी जंतु.

(च) चिज ित्सजीय जैव प्रौद्योजिजी, मा-ाव आ-ुवंशिज रोज एवं आ-ुवंशिज ज ाउंसलिंज, जी-ा चिज ित्सा.

(छ) विधि जैव प्रौद्योजिजी.

5. जैवसांज्यिजी :

प्रयोजों जी अभिज ल्प-ा; -िराज रजी परिज ल्प-ा; सह-संबंध, समाश्रयज, जे-द्रीय प्रवृत्ति ज ा वितरज एवं माप-ा, ज ाई - स्ज वेयर, विद्यार्थी - टेस्ट, एफ - टेस्ट(एज मार्जी तथा द्विमार्जी एफ - टेस्ट)

6. उपज रजीय पद्धति :

(ज) स्पेक्ट्रमी प्रज ाशमापित्र प्रावस्था विपर्यास एवं प्रतिदीप्ति सूज्म दर्शिजी, रेडियोऐक्टिव अ-ुरेजज, द्रुत अपजे द्रित्र, जेल एलेक्ट्रोफोरेसिस, PCR,ALISA,FISHएवं जुजसूत्रपेंटिंज.

(ज) इलेक्ट्रॉ-ा सूज्मदर्शी (TEM,SEM).

प्रश-ापत्र-2

1. ज ोशिज ा जीव विज्ञा-ा :

(ज) ज ोशिज ा तथा इसजे ज ोशिज ांजों (जेंद्रज, प्लाज़्मा, झिल्ली, माइटोज ौंड्रिया, जॉल्ज़ीज ाय, अंतर्द्रव्यी जालिज ा, राइबोसोम तथा लाइसोसोम्स) जी संरच-ा एवं ज ार्य, ज ोशिज ा - विभाज-ा (समसूत्री और अर्द्धसूत्री), समसूत्री तर्कु तथा समसूत्री तंत्र, जुजसूत्र जति. क्र ोमोसोम प्रज ार पॉलिटी-ा एवं लैंब्रश, क्र ोमैटि-ा जी व्यवस्था, ज ोशिज ाचक्र -ियम-ा.

(ज) -यूक्लीइज अम्ल सांस्थितिजी, DNAअ-ुज ल्प, DNAप्रतिकृ ति, अ-ुलेज-ा, RNAप्रज्रमज, स्था-ांतरज, प्रोटी-ा वल-ा एवं परिवह-ा.

2. आ-ुवंशिजी :

(ज) जी-ा जी आधुन-िज संज ल्प-ा, विभक्त जी-ा, जी-ा - -ियम-ा, आ-ुवंशिज - ज ूट.

(ज) लिंज जुजसूत्र एवं उ-ाज ा विज ास, ड्रोसोफिला तथा मा-ाव में लिंज - -िर्धारज.

(ज) वंशाजति जे मैंडलीय -ियम, पु-ार्योज-ा, सहलज-ाता, बहुयुज्म विज ल्पी, रक्त समूहों जी आ-ुवंशिजी, वंशावली विश्लेषज, मा-ाव में वंशाजत रोज.

(घ) उत्परिवर्त-ा तथा उत्परिवर्तज-ा-ा.

(ङ) पु-ार्योजज DNA प्रौद्योजिजी, वाहजों जे रूप में प्लैज़मिड्स, ज ॉसमिड्स, कृ त्रिम जुजसूत्र, पारजी-ी, DNA क्लोन्िंज तथा पूर्ज क्लोन्िंज (सिद्धांत तथा प्रज्रि या पद्धति).

(च) प्रोजे रियोट्स तथा यूजे रियोट्स में जी-ा -ियम-ा तथा जी-ा अभिव्यक्ति.

(छ) संजे त अजु, ज ोशिज ा मृत्यु, संजे त-ा पथ में दोष तथा परिजाम.

(ज) RFLP,RAPD एवं AFLP तथा फिंजरप्रिंटिंज में अ-ुप्रयोज, राइबोजाइम प्रौद्योजिजी, मा-ाव जी-ोम परियोज-ा, जी-ोमिक्स एवं प्रोटोमिक्स.

3. विज ास :

(ज) जीव-ा जे उद्भव जे सिद्धांत

(ज) विज ास जे सिद्धांत; प्राकृ तिज वरज, विज ास में उत्परिवर्त-ा जी भूमिज ा, विज ासात्मज प्रतिरूप, आज्विज ड्राइव, अ-ुहरज, विभिन्नता, पृथक्ज रज एवं जाति उद्भव-ा.

(ज) जीवाश्म आंज ड़ों जे प्रयोज से घोड़े, हाथी तथा मा-ाव ज ा विज ास.

(घ) हार्डी - वी-ाबर्ज -ियम.

(ङ) महाद्वीपीय विस्थाप-ा तथा प्राजियों ज ा वितरज.

4. वर्जीज रज - विज्ञा-ा :

(ज) प्राजिवैज्ञा-िज -ामावली, अंतर्राष्ट्रीय -ियम, क्लैडिस्टिक्स, आज्विज वर्जिजी एवं जैव विविधता.

5. जीव रसाय-ा :

(ज) ज ार्बोहाइड्रेटों, वसाओं, वसाअम्लों एवं ज ोलेस्टेरॉल, प्रोटी-ों एवं अमी-ोअम्लों, -यूक्लिइज अम्लों जी संरच-ा एवं भूमिज ा. बायो ए-ार्जेटिक्स.

(ज) ज्लाइज ोलाइसिस तथा क्र ब्स चक्र , ऑक्सीज रज तथा अपचय-ा, ऑक्सीज रजी फास्फोरिलेश-ा, ऊर्जा संरजज तथा विमोच-ा, ATP चक्र , चक्रीय AMP-इसजी संरच-ा तथा भूमिज ा.

(ज) हार्मो-ा वर्जीज रज (स्टेराइड तथा पेप्टाइड हार्मो-ा), जैव संश्लेषज तथा ज ार्य.

(घ) एंजाइम : क्रि या जे प्रज ार तथा क्रि या विधियां.

(ङ) विटामि-ा तथा ज ो- एंजाइम.

(च) इम्यू-ोज्लोब्यूलि-ा एवं रोधजमता.

6. ज ार्यिजी (स्त-ाधारियों जे विशेष संदर्भ में) :

(ज) रक्त जी संघट-ा तथा रचज , मा-ाव में रक्त समूह तथा RHज ारज ,स्ज ंद-ा जे ज ारज तथा क्रि या विधि; लोह उपापचय, अम्ल ज ारज साम्य, तापन्ियम-ा, प्रतिस्ज ंदज.

(ज) हीमोज्लोबि-ा : रच-ा प्रज ार एवं ऑक्सीज-ा तथा ज ार्ब-ाडाईऑक्साइड परिवह-ा में भूमिज ा.

(ज) पाच-ा एवं अवशोषज : पाच-ा में लार ज्रंथियों, यकृ त, अज-याशय तथा आंत्र ज्रंथियों जी भूमिज ा.

(ध) उत्सर्ज-ा : -ोक्ा-ा तथा मूत्र विरच-ा ज ा -ियम-ा; परसरज -ियम-ा एवं उत्सर्जी उत्पाद.

(ङ) पेशी : प्रज ार, ज ंज ाल पेशियों जी संकु च-ा जी क्रि या विधि, पेशियों पर व्यायाम ज ा प्रभाव.

(च) -यूरॉ-ा: तंत्रिज ा आवेज - उसज ा चाल-ा तथा अंतर्ज्रंथ-ी संचरज : -यूरोट्रांसमीटर.

(छ) मा-ाव में दृष्टि, श्रवज तथा घ्राजबोध.

(ज) ज-ा-ा जी ज ार्यिजी, मा-ाव में यौव-ांरभ एवं रजोन्िवृति.

7. परिवर्ध-ा जीवविज्ञा-ा :

(ज) युज्मज ज-ा-ा; शुक्र ज-ा-ा, शुक्र जी रच-ा, मैमेलिय-ा शुक्र जी पात्रे एवं जीवे धारिता. अंड ज-ा-ा, पूर्ज शक्तता, न्िषेच-ा, मार्फोजे-ोसिस एवं मार्फोजे-ा, ब्लास्टोजे-ोसिस, शरीर अज रच-ा जी स्थाप-ा, फेट मा-ाचित्र, मेढ़ज एवं चूजे में जेस्टुलेश-ा, चूजे में विज ासाधी-ा जी-ा, अंज ांतरज जी-ा, आँज एवं हृदय ज ा विज ास, स्तन्ियों में अपरा.

(ज) ज ोशिज ा वंश परंपरा, ज ोशिज ा - ज ोशिज ा अ-यो-य क्रि या, आ-ुवंशिज एवं प्रेरित विरूपज-ाज ता, एंफीबिया में ज ायांतरज जे -ियंत्रज में वायरोक्सि-ा जी भूमिज ा, शावजीज-ा एवं चिरभ्रूजता, ज ोशिज ा मृत्यु, ज ालप्रभाव-ा.

(ज) मा-ाव में विज ासीय जी-ा, पात्रे न्िषेच-ा एवं भ्रूज अंतरज, क्लोन्िंज.

(घ) स्टेमज ोशिज ा : स्रोत, प्रज ार एवं मा-ाव ज ल्याज में उ-ाज ा उपयोज.

(ङ) जाति अवर्त-ा -ियम.

परिशिष्ट-II (क)

ऑनलाइन आवेदन के लिए अनुदेश

उम्मीदवार लिंक **http://www.upsconline.nic.in** का उपयोग करके ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र की प्रणाली की प्रमुख विशेषताएं निम्नानुसार हैं :-

- ऑनलाइन आवेदनों को भरने के लिए विस्तृत अनुदेश उपर्युक्त वेबसाइट पर उपलब्ध हैं.
- उम्मीदवारों को ड्रॉप डाउन मेनू के माध्यम से उपर्युक्त साइट में उपलब्ध अनुदेशों के अनुसार दो चरणों अर्थात् भाग-I और भाग-II में निहित ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र को पूरा करना अपेक्षित होगा.
- ऑनलाइन आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को कम किए गए 50/- रु. के शुल्क (महिला/अ.जा./अ.ज.जा./विकलांग उम्मीदवारों, जिन्हें शुल्क के भुगतान से छूट प्राप्त है, को छोड़कर) या तो भारतीय स्टेट बैंक की किसी शाखा में नकद जमा करके या भारतीय स्टेट बैंक की नेट बैंकिंग सुविधा का उपयोग करके या वीजा/मास्टरथ्क्रेडिट/डेबिट कार्ड का उपयोग करके भुगतान करना अपेक्षित है.
- ऑनलाइन आवेदन भरना आरंभ करने से पहले उम्मीदवार को अपना फोटोग्राफ और हस्ताक्षर ऐसे तरीके से .पीएनजी या .जेपीजी प्रारूप में विधिवत रूप से स्कैन करना है कि प्रत्येक 40 केबी से अधिक नहीं हो.
- ऑनलाइन आवेदन (भाग-I और भाग-II) को **दिनांक 19 फरवरी, 2011 से 21 मार्च 2011 रात 11.59 बजे** तक भरा जा सकता है जिसके पश्चात् लिंक निरूपयोज्य होगा.
- **उम्मीदवारों को सख्त सलाह दी जाती है कि ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तारीख का इंतजार किए बिना समय सीमा के भीतर ऑनलाइन आवेदन करें।**

परिशिष्ट-II (ख)

सामान्य अनुदेश :

1. उम्मीदवार, **परिशिष्ट-III में सूचीबद्व) किसी भी विनिर्दिष्ट प्रधान डाकघर/डाकघर से खरीदी गई सूचना विवरणिका पुस्तिका के साथ दी गई ओ एम आर प्रविष्टियों पर आधारित केवल नए सम्पेरा प्रपत्र (फार्म-ई) (मूल्य ₹ 30/-) का ही इस्तेमाल करें । वे किसी भी स्थिति में प्रपत्र की छाया प्रति/प्रतिलिपि/अनधिकृत मुद्रित प्रति का प्रयोग न करें । आयोग कार्यालय द्वारा प्रपत्र की आपूर्ति नहीं** की जाएगी ।
2. उम्मीदवारों को आवेदन प्रपत्र अपने हस्तलेख में ही भरना चाहिए । चूंकि, इस आवेदन प्रपत्र की जांच कंप्यूटर मशीन द्वारा की जाएगी, उम्मीदवार **आवेदन प्रपत्र को संभालने औ दें । गोलों को काला करने के लिए वे केवल काले बाल प्वाइंट पेन का इस्तेमाल करें । लिखने के लिए भी उन्हें काला बाल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल करना चाहिए ।**
   चूंकि कंप्यूटरीकृत मशीनों पर आवेदन प्रपत्रों की जांच करते समय उम्मीदवार द्वारा गोलों को काला करके की गई प्रविष्टियों पर ही ध्यान दिया जाएगा, इसलिए अपनी प्रविष्टियां काफी सावधानी से औ रूप में भरनी चाहिएं ।
3. उम्मीदवारों को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि उनके द्वारा सभी स्थानों अर्थात् उनके आवेदन प्रपत्र, उपस्थिति सूची आदि औ
   किसी प्रकार की कोई भिन्नता न हो । यदि उनके द्वारा विभिन्न स्थानों पर उम्मीदवार द्वारा अनुबद्व किए गए हस्ताक्षरों में कोई अंतर पाया जाता है
4. मूल आवेदन प्रपत्र में की गयी प्रविष्टियों में किसी भी स्थिति में परिवर्तन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।
5. उम्मीदवारों को उनके हित में सलाह दी जाती है **यह सुनिश्चित कर लें कि उनका आवेदन पत्र अंतिम तारीख को या उससे पूर्व आयोग के कार्यालय में पंहुच जाए ।** अंतिम तारीख के बाद आयोग कार्यालय में प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जाएगा ।
6. उम्मीदवार अपना आवेदन प्रपत्र भरते समय, अपने परीक्षा केंद्र के चयन का निर्णय सावधानीपूर्वक करें।
7. **उम्मीदवारों को चाहिए कि वे पावती कार्ड पर अपना आवेदन प्रपत्र सं. औ "सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011" लिखें ।** उन्हें पावती कार्ड पर साफ-साफ औ में अपने पत्राचार का पता लिखना चाहिए औ **डाक टिकट** चिपकाना चाहिए । **पावती कार्ड को आवेदन प्रपत्र के साथ स्टेपल या आलपिन लगाकर नत्थी न करें या प्रपत्र के साथ न चिपकाएं ।**

पात्रता शर्तें (संक्षेप में)

(i) **आयु सीमा :**
सभी सेवाओं/पदों के लिए आयु सीमाएं 1 अगस्त, 2011 को 21 से 30 वर्ष है
वर्गों तथा नोटिस के पै ii) में यथानिर्दिष्ट कतिपय अन्य वर्गों के उम्मीदवारों के लिए, ऊपरी आयु सीमा में छूट है
(ii) **शै**
किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से डिग्री अथवा समकक्ष योग्यता [नोटिस का पै iii)]
(iii) **प्रयासों की अनुमत संख्या :**
चार (अ.पि.व. औ
अ.जा./अ.ज.जा. के उम्मीदवारों के लिए कोई सीमा नहीं) [नोटिस का पै iv)]
(iv) **शुल्क :**
100/-रू. (केवल सौ
शुल्क नहीं)

सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011 के लिए आवेदन प्रपत्र (प्रपत्र-ई) भरने हेतु उम्मीदवारों के लिए अनुदेश।

महत्वपूर्ण : इस प्रपत्र को भरने के लिए केवल काले बॉल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल करें।

आवेदन प्रपत्र का पृष्ठ-1

कॉलम-1 : आवेदित परीक्षा (यदि पात्र है
परीक्षा का नाम CIVIL SERVICES (PRELIMINARY) EXAMINATION (केवल अंग्रेजी में बड़े अक्षरों में लिखें) ।
परीक्षा का वर्ष, 2011 लिखें ।
परीक्षा कोड के रूप में वृत्त 04 को काला करें ।
कालम 2 : उम्मीदवार का नाम
इस कालम को भरने के लिए, बॉक्सों में पहले अपना पूरा नाम (अंग्रेजी में बड़े अक्षरों में) ठीक वै
जै
एक ही अक्षर लिखें। नाम के दो हिस्सों के बीच के एक बॉक्स को खाली छोड़ें । तत्पश्चात, प्रत्येक अक्षर के नीचे के वृत्त को काला करें । खाली बॉक्स के नीचे वाले वृत्त को काला न करें । अपने नाम से पहले किसी उपसर्ग जै
कालम - 3: जन्म की तारीख ।
अपने मै
औ
कालम - 4: लिंग
अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें ।
कालम - 5: राष्ट्रीयता
अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें ।
कालम - 6: वै
अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें ।
कालम - 7: केन्द्रीय भर्ती शुल्क टिकट
सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011 के लिए देय शुल्क 100/- रू. (केवल सौ
महिला/अ.जा./अ.ज.जा औ
शुल्क **केवल केन्द्रीय भर्ती शुल्क टिकट** (न कि डाक टिकट) के माध्यम से ही देय है
अन्य तरीका स्वीकार्य नहीं है
अच्छी प्रकार से बॉक्स के अंदर चिपका दें । के.भ.शु. टिकट चिपकाने के बाद, उसे उसी डाकघर से, जहां से वह खरीदी गई थी, यथास्थान पर निरस्त करवा लें । के.भ.शु. टिकट को स्टेपल न करें ।
कालम - 8: पिता का नाम
अपने पिता का नाम (अंग्रेजी में बड़े अक्षरों में) लिखें । प्रत्येक बॉक्स में एक ही अक्षर लिखें , नाम के दो हिस्सों के बीच के एक बॉक्स को खाली छोड़ें । नाम से पहले किसी उपसर्ग जै
न करें ।
कालम - 9: माता का नाम
अपनी माता का नाम (अंग्रेजी में बड़े अक्षरों में) लिखें । प्रत्येक बॉक्स में एक ही अक्षर लिखें । नाम के दो हिस्सों के बीच के एक बॉक्स को खाली छोड़ें । नाम से पहले किसी उपसर्ग जै
न करें ।
कालम - 10: परीक्षा केन्द्र कोड
नीचे दी गई सूची में से उस उपयुक्त परीक्षा केन्द्र कोड का चयन करें, जहां आप परीक्षा में सम्मिलित होना चाहते है

सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा के केंद्रों की सूची औ

केंद्र	कोड	केंद्र	कोड	केंद्र	कोड
अगरतला	45	दिसपुर	09	नागपुर	13
अहमदाबाद	01	गंगटोक	42	पणजी (गोवा)	36
ऐजल	47	है	10	पटना	15
अलीगढ़	21	इम्फाल	44	पुदुचेरी	20
इलाहाबाद	02	ईटानगर	48	पोर्ट ब्लेयर	37
औ	38	जयपुर	11	रायपुर	49
बंगलुरू	03	जम्मू	34	रांची	41
बरेली	54	जोधपुर	22	संबलपुर	53
भोपाल	04	जोरहाट	46	शिलांग	16
चंडीगढ़	35	कोच्चि	24	शिमला	17
चेन्नई	12	कोहिमा	43	श्रीनगर	18
कटक	07	कोलकाता	06	तिरूवनन्तपुरम	19
देहरादून	14	लखनऊ	26	तिरूपति	50
दिल्ली	08	मदुरै	40	उदयपुर	52
धारवाड़	39	मुम्बई	05	विशाखापट्नम	51

कालम 11: शै
नीचे दिए गए समुचित शै
गोले को काला करें ।

कोड	शै
1	यदि आपने डिग्री अथवा समकक्ष परीक्षा पहले ही उत्तीर्ण कर ली है
2	यदि आप डिग्री अथवा समकक्ष परीक्षा में बै

कालम 12: आयु में छूट संबंधी कोड
(i) यदि आप आयु में छूट का दावा कर रहे है
तथा अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें ।

कोड सं.	वर्ग	आयु सीमा में अनुमेय छूट
01	अ.जा. एवं अ.ज.जा. के लिए	5 वर्ष
02	अ.पि.व.के लिए	3 वर्ष
03	दृष्टिहीन,मूक-बधिर एवं अस्थि विकलांग व्यक्तियों के लिए	10 वर्ष
04	दृष्टिहीन,मूक-बधिर एवं अस्थि विकलांग व्यक्ति+अ.जा./अ.ज.जा.	15 वर्ष
05	दृष्टिहीन,मूक-बधिर एवं अस्थि विकलांग व्यक्ति+अ.पि.व.	13 वर्ष
06	किसी दूसरे देश के साथ संघर्ष में या किसी अशांतिग्रस्तक्षेत्र में फौ कार्यवाही के दौ गए रक्षा सेवा कार्मिक	3 वर्ष
07	रक्षा सेवा के कार्मिक (जै) +अ.जा./अ.ज.जा.	8 वर्ष
08	रक्षा सेवा के कार्मिक (जै) +अ.पि.व.	6 वर्ष
09	कमीशन प्राप्त अधिकारियों तथा आपातकालीन कमीशन प्राप्त / अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित जिन भूतपूर्व सै ने 1 अगस्त, 2011 को कम से कम 5 वर्ष की सै (i) कदाचार या अक्षमता के आधार पर बर्खास्त या निर्मुक्त न होकर अन्य कारणों से कार्यकाल के समाप्त होने पर कार्यमुक्त हुए है (इनमें वे भी सम्मिलित है वर्ष के अंदर पूरा होना है ii) सै अपंगता या (iii) अशक्तता के कारण कार्यमुक्त हुए है	5 वर्ष

कोड सं.	वर्ग	आयु सीमा में अनुमेय छूट
10	कमीशन प्राप्त तथा आपातकालीन कमीशन प्राप्त /अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित भूतपूर्व सै (जै)+ अजा/अजजा	10 वर्ष
11	कमीशन प्राप्त तथा आपातकालीन कमीशन प्राप्त /अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित भूतपूर्व सै (जै) + अ.पि.व.	8 वर्ष
12	आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारी /अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारी, जिन्होंने 1 अगस्त, 2011 को सै की प्रारंभिक अवधि पूरी कर ली है आगे बढ़ाया गया है का एक प्रमाणपत्र जारी करता है आवेदन कर सकते है प्राप्त होने की तारीख से तीन माह के नोटिस पर उन्हें कार्यभार से मुक्त कर दिया जाएगा।	5 वर्ष
13.	आपातकालीन कमी ान प्राप्त/अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारी(जै) + अ.जा./अ.ज.जा.	10 वर्ष
14.	आपातकालीन कमीशन प्राप्त/अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारी (जै) + अ.पि.व.	8 वर्ष
15.	ऐसे उम्मीदवार, जिन्होंने 01 जनवरी, 1980 से 31 दिसम्बर,1989 तक की अवधि के दौ अधिवास किया हो,	5 वर्ष
16.	ऐसे उम्मीदवार जिन्होंने साधारणतया जम्मू औ राज्य में अधिवास किया हो (जै) +अ.जा./अ.ज.जा.	10 वर्ष
17.	ऐसे उम्मीदवार जिन्होंने साधारणतया जम्मू औ किया हो (जै) + अ.पि.व.	8 वर्ष

कालम 13: सुदूर क्षेत्र / विदेश संबंधी कोड
यदि आप सुदूर क्षेत्र या विदेश में रह रहे है
उपयुक्त गोले को काला करें ।

सुदूर क्षेत्रों तथा विदेश के लिए क्षेत्र कोड

क्षेत्र	कोड	क्षेत्र	कोड
असम	01	जम्मू औ	09
मेघालय	02	हिमाचल प्रदेश का लाहौ तथा चंबा जिले का पांगी उप-मंडल	10
अरूणाचल प्रदेश	03		
मिज़ोरम	04		
मणिपुर	05	अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह	11
नागालै	06	लक्षद्वीप	12
त्रिपुरा	07	विदेश	13
सिक्किम	08		

कृपया ध्यान दें: परीक्षा के नोटिस में निर्दिष्ट सुदूर क्षेत्र में अथवा विदेशों में रह रहे उम्मीदवार आवेदन प्रपत्र केवल डाक से जमा कराने के लिए एक सप्ताह के अतिरिक्त समय के हकदार होंगे।

कालम 14: अदा की गई शुल्क की राशि
यदि आपने अपेक्षित शुल्क अदा किया है ; अथवा यदि आपने अपेक्षित शुल्क अदा नहीं किया है
में छूट प्राप्ति का दावा किया है 'शुल्क में छूट' के गोले को काला करें ।

कृपया ध्यान दें: कालम 7 में दिए गए अनुदेशों के अनुसार शुल्क केवल केंद्रीय भर्ती शुल्क टिकट के रूप में देय है

कालम 15: समुदाय
आप जिस समुदाय से संबंधित है

टिप्पणी-1: अन्य पिछड़े वर्ग के उन उम्मीदवारों को, जो 'क्रीमी लेयर' में आते है वर्ग के लिए आरक्षण के पात्र नहीं है 'सामान्य-वर्ग' के रूप में दर्शाना चाहिए ।

टिप्पणी-2: वे उम्मीदवार जो न तो अ.जा., अ.ज.जा. के औ कालम में (सामान्य-वर्ग) को काला करना चाहिए तथा उसे खाली **नहीं** छोड़ना चाहिए।

टिप्पणी-3: उम्मीदवार द्वारा अपने आवेदन प्रपत्र में दर्शाए गए समुदाय की स्थिति में, आयोग द्वारा साधारणत: बाद में किसी स्तर पर परिवर्तन की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

कालम 16: अल्पसंख्यक संबंधी स्थिति
यदि आप किसी भी विनिर्दिष्ट अल्पसंख्यक समुदाय (मुस्लिम/ईसाई/सिक्ख/ बौ) से संबंधित है अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें।

कालम 17: शारीरिक रूप से विकलांग
यदि आप किसी भी विनिर्दिष्ट शारीरिक रूप से विकलांग वर्ग (अस्थि विकलांग / दृष्टि बाधित/श्रवण बाधित) से संबंधित है

कालम 18: पता
अपना पूरा डाक का पता, जिसमें आपका नाम अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में इस प्रयोजन के लिए दिए गए बॉक्स में लिखें । दिए गए बॉक्स में पिन कोड भी लिखें । केवल **काले बॉल प्वाइंट पेन** से लिखें । बॉक्स के बाहर न लिखें । कृपया नोट कर लें कि आपको भेजे जाने वाले सभी पत्रों पर इसी पते की फोटो कापी का प्रयोग किया जाएगा औ

कालम 19: फोटोग्राफ एवं हस्ताक्षर
अपना हाल ही का 3.5 से.मी. x 4.5 से.मी. आकार का फोटोग्राफ, जिसमें **आपका नाम एवं जन्म की तारीख मुद्रित हो, दिए गए स्थान में अच्छी तरह से चिपका दें । फोटोग्राफ को स्टेपल न करें । फोटोग्राफ न तो आपके द्वारा हस्ताक्षरित हो औ**
से फोटोग्राफ के नीचे दिए गए स्थान पर भी करें ।
आवेदन प्रपत्र का पृष्ठ 2

कालम 20: पहले किए गए प्रयासों की संख्या
सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा में आपके द्वारा पहले किए गए प्रयासों की संख्या के लिए समुचित गोले को काला करें । उदाहरण के लिए, यदि आप एक बार परीक्षा में बै
इससे पहले सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा में नहीं बै

कालम 21: सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए

21 (I) यदि आपने भारतीय भाषा के प्रश्न पत्र में बै "हां " या " नहीं " , जै भी मामला हो, के समुचित गोले को काला करें ।

21 (II) भारतीय भाषाओं के लिए कोड
यदि आपने उपर्युक्त कालम **21 (I)** में " नहीं " को काला किया है
का चयन करें तथा आपके द्वारा चुनी गई भारतीय भाषा के लिए उपयुक्त गोलों को काला करें ।

कोड	विवरण	कोड	विवरण	कोड	विवरण
01	असमिया	09	उड़िया	17	कोंकणी
02	बंगाली	10	पंजाबी	18	मणिपुरी
03	गुजराती	11	संस्कृत	19	नेपाली
04	हिंदी	12	सिंधी (देवनागरी लिपि)	91	बोडो
05	कन्नड़	13	सिंधी (अरबी लिपि)	92	डोगरी
06	कश्मीरी	14	तमिल	93	मै
07	मलयालम	15	तेलुगु	94	संथाली(देवनागरी लिपि)
08	मराठी	16	उर्दू	95	संथाली (ओलचिकी लिपि)

21 (III) सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए वै
नीचे दी गई तालिका से सही कोड चुने तथा दोनों वै

कोड	विषय
21	कृषि विज्ञान
22	वनस्पति विज्ञान
23	रसायन विज्ञान
24	सिविल इंजीनियरी
25	वाणिज्य तथा लेखा शास्त्र
26	अर्थशास्त्र
27	वै
28	भूगोल
29	भू-विज्ञान
30	इतिहास
31	विधि
32	प्रबंधन
33	गणित
34	यांत्रिक इंजीनियरी
35	दर्शन शास्त्र
36	भौ
37	राजनीति शास्त्र तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध
38	मनोविज्ञान
39	समाज शास्त्र
40	प्राणि विज्ञान
41	सांख्यिकी
42	पशुपालन तथा पशु चिकित्सा विज्ञान
43	मानव विज्ञान
44	लोक प्रशासन
45	चिकित्सा विज्ञान
51	असमिया भाषा का साहित्य
52	बंगला भाषा का साहित्य
53	गुजराती भाषा का साहित्य
54	हिन्दी भाषा का साहित्य
55	कन्नड़ भाषा का साहित्य
56	कश्मीरी भाषा का साहित्य
57	मराठी भाषा का साहित्य
58	मलयालम भाषा का साहित्य
59	उड़िया भाषा का साहित्य
60	पंजाबी भाषा का साहित्य
61	संस्कृत भाषा का साहित्य
62	सिंधी देवनागरी भाषा का साहित्य
63	सिंधी अरबी भाषा का साहित्य
64	संस्कृत भाषा का साहित्य
65	तेलुगु भाषा का साहित्य
66	उर्दू भाषा का साहित्य
67	अरबी भाषा का साहित्य
68	फारसी भाषा का साहित्य
69	जर्मन भाषा का साहित्य
70	फ्रेंच भाषा का साहित्य
71	रूसी भाषा का साहित्य
72	अंग्रेजी भाषा का साहित्य
73	चीनी भाषा का साहित्य
74	पाली भाषा का साहित्य
75	कोंकणी भाषा का साहित्य
76	मणिपुरी भाषा का साहित्य
77	नेपाली भाषा का साहित्य
78	बोडो भाषा का साहित्य
79	डोगरी भाषा का साहित्य
80	मै
81	संताली भाषा का साहित्य

टिप्पणी (i) उम्मीदवारों को निम्नलिखित विषय एक साथ लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी :-

(क) राजनीति विज्ञान तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध तथा लोक प्रशासन ;
(ख) वाणिज्य शास्त्र तथा लेखा विधि तथा प्रबंध;
(ग) मानव विज्ञान तथा समाज शास्त्र;
(घ) गणित तथा सांख्यिकी;
(ड) कृषि विज्ञान तथा पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान;
(च) प्रबंध तथा लोक प्रशासन;
(छ) इंजीनियरी विषयों जै
विषय नहीं ;
(ज) पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान ।

[टिप्पणी : यह कालम अर्थात 21 (III) वै
उम्मीदवार सिविल सेवा (प्रारंभिक) 2011 में अर्हता प्राप्त करते है
(डी ए एफ) को भरते समय सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा 2011 के लिए प्रस्तुत करनी होगी ।]

21 (IV) सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए परीक्षा केन्द्र के कोड

सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए नीचे दी गई परीक्षा केन्द्रों की सूची में से अपनी पसंद के केन्द्र के लिए समुचित गोले को काला कर दें ।

कोड	केन्द्र	कोड	केन्द्र
01	अहमदाबाद	11	जयपुर
02	इलाहाबाद	12	चेन्नई
03	बंगलौ	15	पटना
04	भोपाल	16	शिलांग
05	मुंबई	17	शिमला
06	कोलकाता	19	तिरूवनंतपुरम
07	कटक	26	लखनऊ
08	दिल्ली	34	जम्मू
09	दिसपुर गुवाहाटी	35	चंडीगढ़
10	है		

21 (V) सिविल सेवा प्रधान लिखित परीक्षा के माध्यम के लिए कोड

लिखित परीक्षा के लिए नोटिस में दिए गए कोड में से अपने माध्यम उचित कोड का चुनाव करें औ संबंधित गोले को काला कर दें ।

कोड	विषय	कोड	विषय	कोड	विषय
01	असमिया	09	उड़िया	17	कोंकणी
02	बंगला	10	पंजाबी	18	मणिपुरी
03	गुजराती	11	संस्कृत	19	नेपाली
04	हिंदी	12	सिंधी (देवनागरी लिपि)	91	बोडो
05	कन्नड	13	सिंधी (अरबी लिपि)	92	डोगरी
06	कश्मीरी	14	तमिल	93	मै
07	मलयालम	15	तेलुगु	94	संताली (देवनागरी लिपि)
08	मराठी	16	उर्दू	95	संताली (आलचिकी लिपि)

22 – 27: सिविल सेवा परीक्षा के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को इनमें से कोई भी कॉलम भरने की आवश्यकता नहीं है

कॉलम 28: घोषणा

उम्मीदवार हस्ताक्षर करने से पूर्व घोषणा को सावधानीपूर्वक पढ़ लें ।

कॉलम 29: अपना नाम अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में इस उद्देश्य के लिए दिए गए समुचित बाक्स में लिख दें ।

कॉलम 30: उम्मीदवार के हस्ताक्षर

निर्धारित बॉक्स में **काले बॉल पै** से अपने सामान्य हस्ताक्षर करें । आपके हस्ताक्षर, दिए गए बॉक्स के बाहर या उसकी सीमा को स्पर्श न करें । हस्ताक्षर के स्थान पर केवल अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में अपना **नाम न लिखें**। अहस्ताक्षरित आवेदन पत्र को तुरंत रद्द कर दिया जाएगा।

फार्म भेजने का स्थान औ
पर अवश्य करें ।

कॉलम 31: दिए गए निर्धारित बॉक्स में एस टी डी कोड सहित अपना टेलीफोन सं. लिखें ।

कॉलम 32: निर्धारित दिए गए बॉक्स में अपना मोबाइन नम्बर लिखें ।

कॉलम 33: दिए गए निर्धारित बॉक्स में अपना ई मेल आई डी लिखें ।

संक्षिप्त जांच सूची

आवेदन प्रपत्र भेजने से पहले निम्नलिखित की जांच कर लें

1.	कि आपने केवल निर्दिष्ट किए गए प्रधान डाकघर / डाकघर से संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए 30 रू मूल्य वाला समान आवेदन प्रपत्र का प्रयोग किया है
2.	कि आपने आवेदन प्रपत्र के सभी संगत कालमों के उपयुक्त गोलों को काला करके भर दिया है (1 से 21 तथा 28 से 33)
3.	कि आपने आवेदन प्रपत्र के कॉलम 19 में अपना हाल ही का पासपोर्ट आकार का फोटो (अहस्ताक्षरित तथा असत्यापित) जिस पर आपका नाम तथा जन्मतिथि छपी हो, चिपका दिया है
4.	कि यदि आपके द्वारा शुल्क दिया जाना अपेक्षित है आवेदन पत्र के कॉलम 7 में लगा दिया है है
5.	कि आपने आवेदन प्रपत्र के कॉलम 19 के नीचे तथा कॉलम 30 में दिए गए स्थान पर अपने हस्ताक्षर कर दिए है
6.	कि आपने अपना पावती पत्र भर दिया है अपना पता स्पष्ट रूप से लिख दिया है
7.	कि आपने अपने पावती पत्र पर 6 रू.(छः रू.)की डाक टिकट लगा दी है
8.	कि आप विवरणिका के साथ आपको दिए गए लिफाफे में आप केवल अपना एक आवेदन प्रपत्र तथा एक पावती पत्र भेज रहे है
9.	कि आपने आवेदन प्रपत्र एवं पावती कार्ड के लिफाफे के उपर परीक्षा का नाम अर्थात "सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2011" लिख दिया है

परिशिष्ट-3

मुख्य डाकघरों/डाकघरों की सूची जहां संघ लोक सेवा आयोग का आवेदन प्रपत्र उपलब्ध है.

आंध्रप्रदेश मंडल : हैदराबाद जी.पी.ओ., हैदराबाद जुबली, काचिगुडा स्टेशन, खैरताबाद, सिकन्दराबाद, त्रिमूलगेरी, अदिलाबाद, अनन्तपुर, अरूंडेलपेट (गुंटूर), चित्तूर, कुड्डापा, एलूरू, काकीनाडा, करीमनगर, खम्माम, कुरनूल, मछलीपटनम, महबूबनगर, मेढक, नालगोंडा, नेल्लोर, निजामाबाद, ओंगोल, श्रीकाकुलम, विजियानगरम, विजयवाड़ा, विकाराबाद, विशाखापटनम, वारांगल.

असम मंडल : गुवाहाटी, बरपेटा, धुबरी, डिब्रुगढ़, डिफू, गोलाघाट, हैलाकांदी, जोरहाट, करीमगंज, कोकराझार, मंगलदोई, नगांव, नलबारी, उत्तर लखीमपुर, शिवसागर, सिलचर, तेजपुर, तिनसुकिया.

बिहार मंडल : पटना जी.पी.ओ., बॉकीपुर, आरा, औरंगाबाद, बी.देवघर, बोकारो स्टील सिटी, बँका, बट्टियॉ, बेगुसराय, भागलपुर, बिहार शरीफ, बक्सर, चाईबासा, छपरा, डालटेनगंज, दरभंगा, धनबाद, दुमका, गया, गिरिडीह, गोपालगंज, गुमला, हाजीपुर, हजारीबाग, जमशेदपुर, कटिहार, मधुबनी, मोतीहारी, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, नवादा, पुर्णिया, रांची, सहरसा, समस्तीपुर, सासाराम, सीतामढ़ी, सीवान.

दिल्ली मंडल : दिल्ली जी.पी.ओ., नई दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ, रमेशनगर, सरोजिनी नगर, लोधी रोड, कृष्ण नगर, अशोक विहार, संसद मार्ग, यू.पी.एस.सी. डाकघर.

गुजरात मंडल : गांधीनगर, अहमदाबाद, अमरेली, आनन्द, भरूच, भावनगर, भुज, दहोड, गोधरा, हिम्मतनगर, जामनगर, जूनागढ़, खेडा, मेहेसाना, नवरंगपुर, नवसारी, पालनपुर, पाटन, पोरबन्दर, राजकोट, रेबडी बाजार, सूरत, सुरेन्द्रनगर, वलसाड, वडोदरा.

हरियाणा मंडल : अम्बाला जी.पी.ओ., अम्बाला सिटी, बहादुरगढ, भिवानी, फरीदाबाद, गुडगांव, हिसार, जीन्द, करनाल, कुरूक्षेत्र, नारनौल, पानीपत, रोहतक, सिरसा, सोनीपत.

हिमाचल प्रदेश मंडल : शिमला, बिलासपुर, चम्बा, हमीरपुर, कांगडा, केलांग, कुल्लू, मंडी, नाहन, रिकांग, पो, सोलन, ऊना.

जम्मू एवं कश्मीर मंडल : श्रीनगर, अनन्तनाग, बारामूला, जम्मू, कथुआ, लेह, रजौरी, उधमपुर, गांधी नगर मुख्यालय, जानीपुर, जम्मू कैंट, सांबा.

कर्नाटक मंडल : बंगलौर जी.पी.ओ., बंगलौर सिटी, बासावनगुडी, हाल II स्टेज, जयनगर, आर.टी.नगर, बगलकोट, रायचूर, राजाजीनगर, बेलगांव, बेल्लारी, बिदर, बीजापुर, चिक्मगलूर, चित्रदुर्गा, दावेनगेर, धारवाड़, गडग, गुलबर्गा, हासन, हावेरी, हुबली, कारवार, कोलार, मदीकेरे, मानड्या, मंगलौर, मनीपाल, मैसूर, नानजागुड, शिमोंगा, सिरसी, तुमकूर, उडूपी.

केरल मंडल : त्रिवेन्द्रम, अल्लीप्पे (अलाप्पुझा), कालीकट, कन्नानोर, एर्नाकूलम, कालपेट्टा, कासरगौड, कट्टप्पना, कोट्टायम, मलप्पुरम, पालघाट, पाथनमथीट्टा, क्विलोन, त्रिचूर, कावारत्ती (**लक्षद्वीप**).

मध्य प्रदेश मंडल : भोपाल जी.पी.ओ., बिलासपुर, अम्बिकापुर, बालाघाट, बैतूल, भिन्ड, छत्तरपुर, छिन्दवारा, दामोह, देवास, घाड़, दुर्ग, गुणा, होशंगाबाद, इन्दौर, जबलपुर, जगदलपुर, झाबुआ, खण्डवा, खारगोन, लश्कर, मंडला, मंडसौर, मुरैना, नरसिंहपुर, नीमुच, रायगढ़, रायपुर, रायसेन, राजगढ़ (बिओरा), राजनंदगांव, रतलाम, रीवा, सागर छावनी, सतना, सिहोर, सिओनी, शहडोल, शाजापुर, शिवपुरी, सिधी, टीकमगढ़, उज्जैन, विदिशा.

महाराष्ट्र मंडल : मुम्बई जी.पी.ओ., मुम्बई मध्य, अंधेरी, बोरीवली, चेम्बूर, चिनेहबन्दर, दादर, गिरगांव, कालबादेवी, माहीम, मान्डवी, अहमदनगर, अकोला, अलीबाग, अमरावती, औरंगाबाद, बीड, भन्डारा, बुलधाना, चन्द्रपुर, धूले, जलगांव, जालना, कराड, कोल्हापुर, लातूर, नागपुर जी.पी.ओ., नानदेड, नासिक, उस्मानाबाद, परभनी, पूणे, रत्नागिरी, सांगली, सतारा, सावंतवाडी, सोलापुर, थाणे, वर्धा, योतमल, मरगांव **(गोवा)**, पणजी **(गोवा)**.

उत्तर–पूर्व मंडल : अगरतला, ऐजल, धर्मनगर, इम्फाल, ईटानगर, कोहिमा, राधाकिशोरपुर, शिलांग, तूरा.

उड़ीसा मंडल : भुवनेश्वर जी.पी.ओ., अंगुल, बोलंगीर, बालासोर, बारगढ़, बारीपदा, बरहामपुर, भद्रक, भवानीपटना, कटक जी.पी.ओ., धेंकानाल, जगतसिंहपुर, जाजपुर, जयपुर (के), झारसुगुडा, केंद्रपारा, केंयोंझारगढ़, कोरापुट, नयागढ़, परलाखेमुंडी, फूलबनी, पुरी, रायगाडा, सम्बलपुर, सुन्दरगढ़.

पंजाब मंडल : अमृतसर, भटिन्डा, फरीदकोट, फिरोजपुर, गुरदासपुर, होशियारपुर, जलन्धर सिटी, कपूरथला, लुधियाना, मोगा, पटियाला, रोपड़, संगरूर, **चन्डीगढ़**.

राजस्थान मंडल : जयपुर जी.पी.ओ., जवाहर नगर, शास्त्रीनगर, अजमेर, अलवर, बॉसवाड़ा, बारन, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चुरू, दौसा, धौलपुर, डुंगरपुर, हनुमानगढ़, हिन्दौन, जैसलमेर, जालोर, झालावाड़, झूंझुनू, जोधपुर, कन्क्रोली, कोटा, नागौर, पाली मारवाड़, सवाईमाधोपुर, शास्त्री मंडल उदयपुर, सीकर, सीरोही, श्रीगंगानगर, टौंक.

तमिलनाडु मंडल : चेन्नई जी.पी.ओ., अन्ना रोड, संत थॉमस माउन्ट, टी.नगर, बोडिनायाकनूर, चेन्गलपट्टु, चिदाम्बरम्, कोयमबटूर, कुड्डालोर, धर्मापुरी, डिंडीगुल, इरोड, कांचीपुरम, कारूर, मदुरै, नागपट्टीनम, नागरकोईल, नामाक्कल, पुडुकोट्टाई, रामनाथपुरम, सालेम, शिवगंगई, ताम्बरम, थान्जावूर, थीरूवन्नामलाई, तिरूचिरापल्ली, तिरूनेलवेली, तिरूवल्लूर, तिरूवायूर, तुराईयूर, तूतीकोरीन, उधागमंडलम्, वेल्लोर, विल्लुपुरम, विरूधुनगर, **पुडुचेरी**.

उत्तर प्रदेश मंडल : लखनऊ, लखनऊ चौक, आगरा, अकबरपुर, अलीगढ़, इलाहाबाद, इलाहाबाद कचहरी, अलमोड़ा, ओरैया, आजमगढ़, बहरैच, बलिया, बलरामपुर, बांदा, बंसी, बाराबंकी, बरेली, बस्ती, बिजनौर, बुदौन, बुलन्दशहर, देहरादून, देवरिया, धामपुर, एटा, इटावा, फैजाबाद, फतेहगढ़, फतेहपुर, फिरोजाबाद, गाजियाबाद, गाजीपुर, गोन्डा, गोपेश्वर, गोरखपुर, हलद्वानी, हमीरपुर, हरदोई, जौनपुर, झांसी, कानपुर, खेरी, ललितपुर, मैनपुरी, मथुरा, मऊ, मेरठ, मिर्जापुर, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, नैनीताल, ओराई, पौरी, पडरौना, पीलीभीत, पिथौरागढ़, प्रतापगढ़, राय बरेली, रामपुर, रूड़की, साहारनपुर, शाहजहांपुर, सीतापुर, सुल्तानपुर, टिहरी, उन्नाव, वाराणसी.

पश्चिम बंगाल मंडल : कलकत्ता जी.पी.ओ., अलीपुर, बड़ाबाजार, बेलियाघाट, बेलघरिया, कासीपुर, पार्क स्ट्रीट, टालीगंज, बालूरघाट, बांकुड़ा, बारासत, बहरामपुर, वर्धमान, चिन्सूरा, कूच बिहार, दार्जीलिंग, हावड़ा, जलपाईगुड़ी, कृष्णनगर, मालदा, मिदनापुर, पुरूलिया, सूरी, सिलिगुड़ी, पोर्ट ब्लेयर **(अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह)**, गंगटोक **(सिक्किम)**.

1. सैंट्रल बेस डाकघर (सी.बी.पी.ओ), 56 ए.पी.ओ.
2. सी.बी.पी.ओ. (99 ए.पी.ओ.) द्वारा चुनिंदा फील्ड डाकघर

परिशिष्ट–4
वस्तुपरक परीक्षणों हेतु उम्मीदवार के लिए विशेष अनुदेश

1. परीक्षा हाल में निम्नलिखित वस्तुएं लाने की अनुमति होगी

क्लिप बोर्ड या हार्ड बोर्ड (जिस पर कुछ न लिखा हो) उत्तर पत्रक पर प्रत्युत्तर को अंकित करने के लिए अच्छी किस्म की एच.बी. पेंसिल, रबड़, पेंसिल शार्पनर तथा नीली या काली स्याही वाला पेन. उत्तर पत्रक और कच्चे कार्य हेतु कार्य पत्रक निरीक्षक द्वारा दिए जाएंगे.

2. परीक्षा हाल में निम्नलिखित वस्तुएं लाने की अनुमति नहीं होगी

ऊपर दर्शाई गई वस्तुओं के अलावा अन्य कोई वस्तु जैसे पुस्तकें, नोट्स, खुले कागज, इलैक्ट्रानिक या अन्य किसी प्रकार के कैलकुलेटर, गणितीय तथा आरेक्ष उपकरण, लघुगणक सारणी, मानचित्रों के स्टेंसिल, स्लाइड रूल, पहले सत्र (सत्रों) से संबंधित परीक्षण पुस्तिका और कच्चे कार्यपत्रक, आदि परीक्षा हाल में न लाएं.

मोबाइल फोन, पेजर एवं अन्य संचार यंत्र उस परिसर में जहां परीक्षा आयोजित की जा रही है लाना मना है. इन निर्देशों का उल्लंघन करने पर अनुशासनिक कार्यवाही के साथ–साथ भविष्य में आयोजित की जाने वाली परीक्षाओं से प्रतिबंधित किया जा सकता है.

उम्मीदवारों को उनके स्वयं के हित में सलाह दी जाती है कि वे मोबाइल फोन सहित कोई भी वर्जित वस्तु परीक्षा परिसर में न लाएं क्योंकि इनकी अभिरक्षा के लिए व्यवस्था की गारंटी नहीं ली जा सकती.

3. गलत उत्तरों के लिए दंड

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-पत्रों में, ऐसे कुछेक प्रश्नों को छोड़कर जिनमें श्रृणात्मक अंकन (नेगेटिव मार्किंग) ऐसे प्रश्नों के लिए 'सर्वाधिक उपयुक्त' तथा 'इतना उपयुक्त नहीं' उत्तर को दिए जाने वाले विभिन्न अंकों के रूप में अन्तर्निहित होगी, उम्मीदवार द्वारा दिए गए गलत उत्तरों के लिए दंड (श्रृणात्मक अंकन) दिया जाएगा.

(i) प्रत्येक प्रश्न के लिए चार वै
उत्तर के लिए प्रश्न हेतु नियत किए गए अंकों का 1/3 (0.33) दंड के रूप में काटा जाएगा.

(ii) यदि कोई उम्मीदवार एक से अधिक उत्तर देता है **गलत उत्तर** माना जाएगा, यद्यपि दिए गए उत्तरों में से एक उत्तर सही होता है
दंड दिया जाएगा.

(iii) यदि उम्मीदवार द्वारा कोई प्रश्न हल नहीं किया जाता है
तो उस प्रश्न के लिए **कोई दंड नहीं** दिया जाएगा.

4. अनुचित तरीकों की सख्ती से मनाही

कोई भी उम्मीदवार किसी भी अन्य उम्मीदवार के पेपरों से न तो नकल करेगा न ही अपने पेपरों से नकल करवाएगा, न ही किसी अन्य तरह की अनियमित सहायता देगा, न ही सहायता देने का प्रयास करेगा, न ही सहायता प्राप्त करेगा और न ही प्राप्त करने का प्रयास करेगा.

5. परीक्षा भवन में आचरण

कोई भी परीक्षार्थी किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार न करें तथा परीक्षा हाल में अव्यवस्था न फैलाएं तथा परीक्षा के संचालन हेतु आयोग द्वारा तैनात स्टाफ को परेशान न करें. ऐसे किसी भी दुराचरण के लिए कठोर दंड दिया जाएगा.

6. उत्तर पत्रक विवरण

(i) उत्तर पत्रक के ऊपरी सिरे के निर्धारित स्थान पर आप अपना केन्द्र और विषय, परीक्षण पुस्तिका श्रृंखला (कोष्ठकों में) विषय कोड और अनुक्रमांक स्याही अथवा बाल प्वाइंट पैन से लिखें. उत्तर पत्रक में इस प्रयोजन के लिए निर्धारित वृतों में अपनी परीक्षण पुस्तिका श्रृंखला (ए.बी.सी.डी., यथास्थिति), विषय कोड तथा अनुक्रमांक (पेंसिल से) कूटबद्ध करें. उपर्युक्त विवरण लिखने तथा उपर्युक्त विवरण कूटबद्ध करने के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत अनुबंध में दिए गए हैं. यदि परीक्षण पुस्तिका पर पुस्तिका श्रृंखला मुद्रित न हुई हो अथवा उत्तर पत्रक बिना संख्या के हों तो कृपया निरीक्षक को तुरंत रिपोर्ट करें और परीक्षण पुस्तिका/उत्तर पत्रक को बदल लें.

(ii) अनुक्रमांक लिखते समय उम्मीदवार और निरीक्षक को सभी शुद्धियों और परिवर्तनों पर हस्ताक्षर करने चाहिए और पर्यवेक्षक द्वारा प्रतिहस्ताक्षर किए जाने चाहिए.

(iii) परीक्षा आरंभ होने के तत्काल बाद कृपया जांच कर लें कि आपको जो परीक्षण पुस्तिका दी गई है उसमें कोई पृष्ठ या मद आदि अमुद्रित या फटा हुआ अथवा गायब तो नहीं है. यदि ऐसा है तो उसे उसी श्रृंखला तथा विषय की पूर्ण परीक्षण पुस्तिका से बदल लेना चाहिए.

7. उत्तर पत्रक/परीक्षण पुस्तिका/कच्चे कार्य पत्रक में मांगी गई विशिष्ट मदों की सूचना के अलावा कहीं पर भी अपना नाम या अन्य कुछ नहीं लिखें.

8. उत्तर पत्रकों को न मोड़ें या न विकृत करें अथवा न बर्बाद करें अथवा उसमें न ही कोई अवांछित/असंगत निशान लगाएं. उत्तर पत्रक के पीछे की ओर कुछ भी न लिखें.

9. उत्तर अंकित करने के लिए एच.बी. पेंसिल का प्रयोग करें

चूंकि उत्तर पत्रकों का मूल्यांकन कम्प्यूटरीक त मशीनों द्वारा किया जाएगा, उम्मीदवार उत्तर पत्रकों को इस्तेमाल करने एवं भरने में समुचित सावधानी बरतें । उन्हें वृतों को काला करने के लिए केवल एच. बी. पेंसिल का ही इस्तेमाल करना चाहिए । बॉक्सों में लिखने के लिए, उन्हें नीला या काला पेन इस्तेमाल करना चाहिए । चूंकि उम्मीदवार द्वारा काले किए गए वृतों की प्रविष्टियों को, कम्प्यूटरीकृत मशीनों पर उत्तर पत्रकों का मूल्यांकन करते समय ध्यान में रखा जाएगा, उम्मीदवारों को इन प्रविष्टियों को बहुत सावधानीपूर्वक भरना चाहिए ।

10. उत्तर अंकित करने का तरीका

'वस्तुपरक परीक्षा' में, आप उत्तर नही लिखते है
के लिए कई सुझाए गए उत्तर (जिन्हें इसके बाद प्रत्युत्तर कहा जाएगा) दिए जाते है
के लिए आपको उनमें से एक प्रत्युत्तर चुनना है
प्रश्न पत्र परीक्षण - पुस्तिका के रूप में होगा । पुस्तिका में न म संख्या 1,2,3 .... आदि के न म में प्रश्नांश दिए गए होंगे । प्रत्येक प्रश्नांश के नीचे (ए) , (बी), (सी)औ
अंकित होंगे । आपका कार्य सही प्रत्युत्तर को चुनना होगा । यदि आपको एक से अधिक प्रत्युत्तर सही लगें, तो उनमें से आपको जो भी सर्वोत्तम प्रत्युत्तर लगे उसका चुनाव करें ।
किसी भी स्थिति में, प्रत्येक प्रश्नांश के लिए आपको एक ही प्रत्युत्तर का चुनाव करना होगा । यदि आप एक से अधिक प्रत्युत्तर चुनते है
उत्तर पत्रक में न म संख्या 1 से 160 छपी है
चिन्ह वाले वृत है
दिए गए प्रत्युत्तरों मे से कौ
पेंसिल से पूरी तरह से काला बनाकर अंकित करना है
स्याही का प्रयोग न करें।
उदाहरण के तौ
अनुसार पेंसिल से पूरी तरह काला कर देना चाहिए :-
उदाहरण (ए) ● (सी) (डी)
गलत अंकित करने पर उसे बदलने के लिए, इसे पूरी तरह मिटाकर, अपनी नई पसन्द के अनुसार पुन: - अंकित करें ।

11. उपस्थिति सूची पर हस्ताक्षर

आपको, दिए गए उत्तर पत्रक तथा परीक्षण पुस्तिका की न म संख्या तथा परीक्षण पुस्तिका की श्रृंखला उपस्थिति सूची में लिखनी है
में किसी भी परिवर्तन या संशोधन को, उम्मीदवार द्वारा अपने हस्ताक्षर से प्रमाणित किया जाना चाहिए ।

12. कृपया परीक्षण पुस्तिका के आवरण पर दिए गए अनुदेशों को पढ़ लें औ
उम्मीदवार अनियमित अथवा अनुचित व्यवहार करता है
द्वारा उचित समझे जाने वाले दंड का भागी होगा ।

अनुबंध
परीक्षा भवन में वस्तुपरक प्रकार के परीक्षणों के उत्तर पत्रक कै

कृपया इन अनुदेशों का अत्यन्त सावधानीपूर्वक पालन करें । आप यह नोट कर लें कि चूंकि उत्तर–पत्रक का अंकन मशीन द्वारा किया जाएगा, इन अनुदेशों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन आपके प्राप्तांकों को कम कर सकता है
उत्तर पत्रक पर अपना प्रत्युत्तर अंकित करने से पहले आपको इसमें कई तरह के विवरण भरने होंगे ।
उम्मीदवार को उत्तर–पत्रक प्राप्त होते ही यह जांच कर लेनी चाहिए कि इसमें नीचे संख्या दी गई है
संख्या न दी गई हो तो उम्मीदवार को उस पत्रक को किसी संख्या वाले पत्रक के साथ तत्काल बदल लेना चाहिए।
आप उत्तर–पत्रक में देखेंगे कि आपको सबसे ऊपर की पंक्ति में इस प्रकार लिखना होगा ।

केन्द्र	विषय	विषय–कोड			अनु मांक						

मान लें कि यदि आप के प्रश्नपत्र के लिए परीक्षा में दिल्ली केन्द्र पर उपस्थित हो रहे है
081276 है 'ए' है
भरना चाहिए :-
* यह एक उदाहरण मात्र है

केन्द्र	विषय	विषय–कोड			अनु मांक						
दिल्ली	प्रश्न पत्र-। (ए)		0	1		0	8	1	2	7	6

आप, केन्द्र औ
परीक्षण पुस्तिका की श्रृंखला, पुस्तिका के सबसे ऊपर दाहिनी तरफ के कोने पर वर्ण म ए ,बी ,सी अथवा डी के अनुसार निर्दिष्ट है
आप स्याही से अपना ठीक वही अनु मांक इस प्रयोजनार्थ दिए गए बॉक्स में लिखें जो आपके प्रवेश प्रमाण पत्र में है
आपको अगली कार्रवाई यह करनी है
पुस्तिका श्रृंखला, विषय कोड तथा अनु मांक को इस प्रयोजन के लिए निर्धारित वर्षो में कूटबद्ध करने का कार्य एच. बी. पै
परीक्षण पुस्तिका श्रृंखला को लिखने औ
श्रृंखला की पुष्टि करने के पश्चात् ही करना चाहिए ।
'ए' परीक्षण **पुस्तिका श्रृंखला के प्रश्न पत्र-।** के लिए आपको विषय कोड सं. 01 लिखनी है
लिखें ।

Booklet Series (A)
पुस्तिका क्रम (ए)
●
Ⓑ
Ⓒ
Ⓓ

Subject	0	1
विषय	0	1
	●	⓪
	①	●
	②	②
	③	③
	④	④
	⑤	⑤
	⑥	⑥
	⑦	⑦
	⑧	⑧
	⑨	⑨

बस इतना भर करना है कि परीक्षण पुस्तिका श्रृंखला के नीचे दिए गए अंकित वृत्त 'ए' को पूरी तरह से काला कर दें और विषय कोड के नीचे '0' के लिए (पहले उर्ध्वाधर कालम में) और 01 के लिए (दूसरे उर्ध्वाधर कालम में) वृत्तों को पूरी तरह काला कर दें. तब आप अनुक्रमांक 081276 को कूटबद्ध करें. इसे उसी के अनुरूप इस प्रकार करेंगे.

Roll Numbers
अनुक्रमांक

0	8	1	2	7	6
●	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪
①	①	●	①	①	①
②	②	②	●	②	②
③	③	③	③	③	③
④	④	④	④	④	④
⑤	⑤	⑤	⑤	⑤	⑤
⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	●
⑦	⑦	⑦	⑦	●	⑦
⑧	●	⑧	⑧	⑧	⑧
⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨

महत्वपूर्ण : कृपया यह सुनिश्चित कर लें कि आपने अपना विषय, परीक्षण पुस्तिका क्रम तथा अनुक्रमांक ठीक से कूटबद्ध किया है. यदि आपने कोई गलती कर दी है तो उसे पूरी तरह मिटाकर पुनः ठीक से भरें.

*यह केवल एक उदाहरण है और आपकी परीक्षा से संबंधित नहीं है।